

चिह्नी पत्रो

२

प्रमचंद

चिह्नी | पत्री

२

संकलन लिप्यंतर शास्त्रार्थ

अ मृ त पा य

हम प्रकाशन
इ ला हा बा य

प्रकाशक

राम प्रकाशम इलाहाबाद

मुद्रक

नारम प्रस इलाहाबाद

आवरण-मज्जा

हृदय चरम श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण

प्रेमचंद स्मृति दिवस १९५९

मूल्य—पाठ पाया

भूमिका

ब्रेनबॉर की बिदूषी-पत्नी का घेरा बहुत लंबा चौड़ा था। निचो दोस्तों के प्रताप दिव्यो घोर उबू के बहुत से गये घोर बुराने, नामी घोर गुमनाम सिकंदरों से उनकी बघबर लठ बितावत थी। हंस, बागरल घोर माधुरी के संपावन काल में संपावकीय पदम्यपहार भी बहुत काकी था। लेकिन इनका घोड़ा ही घेरा धन तक निल लका है। बाकी के मिलने की बहुत माता भी नहीं है। अमिनीय बिदुषी गण हा कुकी है। का कुछ घावर कहीं कोनों-घेतों में बची होयी उनको बाहर निकालने में भी इस संकट से बोझी-बहुत सहायता मिलेगी।

पत्र-साधिय जितनी अमजोल बिधि है, इसको बैतना इन लोगों को प्राप नहीं है। 'हम लोगों से मेरा अमिनीय बिधय कम से दिव्यी-काली लोगों से है, यमोति, यदिकम के देनों को तो घोड़ ही बीबिए को इस बिधय में बहुत ही लजेत है, हमारे यहाँ भी बंयला उर्दू, मरछी घादि को बों में बनों को लंजातकर रखने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

पत्रों को इकट्ठा करने के काम में डेर भी बहुत की पयी। सुंसीजी के बैहान के बरस से बरस के भीतर घावर इस काम में ह्राव लगाया का लटता तो निरवय हो घोर भी सखतता मिलतो। लेकिन वह न तो मेरे बिदू संजव हुआ घोर न मेरे रिती अम्य, अमिक बयस्क निर के लिए। बिस्ती के मेरे बंधु मरनमोपलजी ने इस संबंध में काटी बायककता का परिचय दिया घोर कुछ पत्रों का संघट्ट भी किया, पर अधिक लज्जता उन्हें भी नहीं मिली।

सतत बात यह है कि वह खजाना क्यादावर पावक हो हो गया। इस उदासीनता के बोधे कुछ तो निरवय हो बहुबनीबाय भी रहा होया जिस छिराक गोरखपुरी ने अपने लाक घंदाब में इस तरह बयान दिया—फिले कता था कि यह बमर्ब एक दिन इन्ना बड़ा भारमी हो जायगा। ...

सुंसीजी घोर छिराक का बहुत लंबा घोर बहुत आत्मीय संबंध रहा घोर घावर उन्होंने सुंसीजी की बिदुषिया लंजातकर रखी होती तो घात्र उनके पास एक बड़ा-का बुलिया होता।

घोरों के साथ कुछ आकस्मिक बिपत्तियाँ भी रहीं। ललननू झाड़ी अम्युल उद्वार के पास (को अमेली अम्युल हक के पामिस्तल बने बने के बाद अंहुनन तरबिए उर्दू के लंबेतर्वा बने) सुंसीजी घोर दुतरेलीमों के पत्रों का ५

संबद्ध था, जने उसकी पुत्रवधू ने अपनी हिस्टीरिया के एक दौर में मान भगा दी।

चंद्रमुक्त बिशालंकार धीरे सुरसंग को चिट्ठियाँ लिख के बिभाजन की भेंट बढ़ गयी।

चिट्ठियाँ संभासकर रखने में आचार्य शिवपूजन सहाय पंडित बनारसी बाल कपूरजी से कुछ ही घण्टा हो गये, लेकिन उनके ऊपर एक चोर ने हाथ लाठ कर दिया। शिवजी उन दिनों अपने तब पर हो थे जब कि उनके वहाँ चोरी हुई और और उन चिट्ठियोंवाली घंटीकी को कुछ दूसरे ही मान-भटा के बोके में उठा ले गया। बाहर जाकर जब उसने घंटीकी को लोभा तो उसे धीरे निराशा हुई और उसने चिट्ठियाँ सब की सब कुएँ में फेंक दीं। अपने रोज सवेरे वह पानी भर घतराती हुई दिखायी दी, मगर गल चुकी थी और छिड़ी कास की न रह गयी थी। कुछ घण्टा चिट्ठियाँ, जो शास्त्र कहीं धीरे थी, बच गयीं। बिहार राज्यनाथ परिवर्त के सौजन्य से उन्हें यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

पुंजी बपालरायन निगम को लिखी हुई चिट्ठियों का उद्धार किस तरह एक बड़े हुए भक्त की एक बिरों-पट्टी कोठरी में ही हुआ, इसकी कहानी 'चिट्ठी पत्रों' के पहले अंक की नुमिष में बड़ी है।

जैनगुरुमार्-वासी चिट्ठियों की टाइप की हुई प्रतिलिपि मुझे मदनमोचन की से मिली। उसमें कई स्थानों पर आख्यास छुट गये हैं। मैंने उसके संबंध में जिज्ञासा प्रकट की तो मदनमोचनजी ने बताया कि अब उसका कोई खबर संभव नहीं है क्योंकि मूल पत्र सब खो चुके हैं। पहली बार, टाइप करवाने में किसी कारण से ये छूटें रह गयीं। मूल पत्र जैनगुरुजी की इच्छानुसार उनकी सौदा बिये गये। दुर्भाग्य, प्रतिलिपि को मिलाने के लिए जब उन मूल पत्रों की जरूरत हुई, तो उनका कहीं पता न बना। लिखावा उन चिट्ठियों को बैठा हो जाता जा रहा है, हाँ, इसका मैंने जबर किया है कि जहाँ पूर्वपर सेन बैठा कर मैं किसी भाव को गुरा कर सकता जा वहाँ मैंने प्रकट लगाकर ऐसा कर दिया है। संयोग से मुत्तीजी के कागजों में जैनगुरुजी के कुछ पत्र भी मिल गये। उनमें से कुछ पत्र सुनकर, जो दोनों के पत्राचार की दृष्टि में आते थे, मैंने प्रकाशन के दिये हैं। दुर्भाग्यवश यह भीज धीरे किली के साथ न की जा सकी। बनारसीवासियों के कुछ पत्र जो उन्होंने पुंजीजी का लिखे मिले ऊपर लैरिन उनका सारसंग मुत्तीजी के पत्रों से न बँडने के कारण उन्हें छोड़ देना ही ठीक मान रहा।

बनारसीवासियों मुंजीजी को बरसर संवेजी में हो लिखने थे, लिखावा मुत्तीजी के बराबर भी बरसर संवेजी में है। इसी तरह धीरे भी कुछ पत्राचार संवेजी में

हैं—जैसे श्री इन्द्रनाथ मदान, श्री बशीराम सखरवाल, श्री श्रीराम शर्मा घादि के साथ। मैंने इनको धनुषबाद करके बेना ही ठोक समझा। पर जो पक्ष मूल संघेही में है उसके नीचे इस बात का जल्द कर दिया गया है। इनमें से तीन पक्षों का मूल संघेही जो लोगों को बिलबालों का व्यास करके परिशिष्ट में दे दिया गया है।

जुई बनों को ज्यों का त्यों छापकर, पुटनों में कठिन शायों का सब दे दिया गया है। एक बात धीर। मुंशी बयानरायन निमन-जाले धपिचांश पक्षों की, जो 'बिहुनी-पक्षी' के पहले छल में प्रकाशित है मूल निधि के साधने की। जहाँ मूल निधि नहीं थी थी, वहाँ उनकी छोटी-प्रतिनिधि थी। घात उनके पाठ की मुझता के लिए मैं पूरी तरह उत्तरदायी हूँ। लेकिन इस तरह में ऐसे की कुछ पर हैं जिनमें मुझे इस प्रकार की सुविधा न थी, जिनकी टाइप की हुई प्रतिनिधि ही मेरे सामने थी या जिन्हें मैंने कुछ पक्ष-व्यवहारों से संघट्ट दिया है। प्रकृति का घर उनमें भी कुछ घात नहीं है क्योंकि वह सभी विधेदार लोग हैं। ता भी अपनी यह कठिनाई मुझे सापके सामने रखने उचित जान पड़ी। बैसे, पाठ धनिक से धनिक शब्द हो इसकी पुरो कोशिश मैंने की है। निरास के लिए इन्द्रनाथ धनी ताज को मिले घरे बनों की जो नज़में मेरे पाठ की, उनमें यहाँ-वहाँ कुछ पाठ भ्रम का। इस प्रलय में मैंने ताज शाहब की तीन खान की वाकिफताथ भेजे। लेकिन जो भी बजह हो, मुझे कोई बचाव नहीं मिला। मगर धीरे इस कमी को मेरे दोस्त डाक्टर बमर रईम ने पूरा कर दिया जो उन दिनों दिल्ली यूनिवर्सिटी में जुई पड़ने से धीरे धात्रकल तात्रकल धनिर्वातरी में हैं। उनकी पैहरबाली से मुझे वाकिफताथ के मगहूर रिलाले 'नरगज का 'महातीव मंकर' मिला। उसमें ताज शाहब की निज घरे मुणोजी के सब घट मौजूब थे। मैंने अपनी तरह उसने मिलाकर अपने पाठ की ठीक कर दिया है।

मुंशीजी की पुर की बिहुनी लालाकर रखने की साधन न थी। बचाव देने ही पड़कर केन देने थे। तो भी न जाने कैसे धीरे बनों, उनके कापड़ों में बहुत-सी झल-झलन देकर बिहुनी के डेर में दल-वाक धपको बिहुनी जो मिल गयी—आचार्य नरेन्द्र देव की जो उन्होंने पंडित बहाहरताल मेहक की रिताव 'नेटर्ल काम ए कालर' के हिल्वा धनुषबाद के मिललिते में मुंशीजी की मिलो यों, बंदिन धमरताथ भा की, जो उन्होंने 'रंघमुनि पत्रकर १९२५ में देहताइन से लिप्री को बंदिन हजारीमनार डिनेरी की, जो उन्होंने मुंशीजी की धार्मिकन बने हुए धार्मिकनितन न लिप्री को; मौलवी धानुन एन की, जो उन्होंने धानी रिती

किताब के लिए मुंशीजी से काफी पर कोई लेख लिखवाने के तिलतिले में लिखी थी; जनाब अब्दुल माजिद साहब बरियाबारी की, जो उन्होंने 'बोबले हस्ती' पढ़कर मुंशीजी को लिखी थीं कबाला बुलासुस्तैयबन की जो उन्होंने मुंशीजी के साहित्य के प्रति अपना अनुराग व्यक्त करते हुए लिखी थी और जिसमें उन्होंने मुंशीजी से प्रार्थना की थी कि उद्द को धीरे नहीं; अशास्त्र हसन और सुवर्धन को जो उन्होंने मुंशीजी को बंबई की प्रिन्सी बुनिया से माता छोड़कर आने पर लिखी थी, शिराऊ घोरकपुरी की जो सुब उनको बहुत खुबनूरती से उजापर करती है।

पड़नेवाली को इनमें विलक्षत्पो होयो इस कपाल से इस पुटकर बिद्धियों को भी सामिल कर लिया गया है।

अमृतराय

पत्र-क्रम

| | |
|-----------------------------|-----|
| जैलाल कुमाव | १ |
| बनारसी दाम बनुरेवी | ११ |
| हस्तमात्र धनी 'ताव | १७ |
| मनेजर 'बुमाता | ११७ |
| महाराज राय | १४१ |
| हमाबुद्दीन छोरी हुंदाबाव | १५० |
| रामचन्द्र टण्डन | १५५ |
| बिनोद शंकर व्यास | १८२ |
| बसन्त प्रसाद त्रिबेदी | १८१ |
| उपादेवी मिश्रा | १८४ |
| बीरेरबर मिह | २०१ |
| मेनोराम मन्तरवान | २०४ |
| मीराम शर्मा | २०६ |
| इन्द्र बलाबद्धा | २१५ |
| शिवपूजन महाम | २२१ |
| गङ्गापुरारण्य धवस्त्री | २३० |
| इन्द्रनाथ मन्त्राल | २३४ |
| उपेन्द्रनाथ धरक | २३६ |
| मन्त्र धर्मद कीसस्यान | २४२ |
| दिण्णु प्रसाकर | २४३ |
| ममिताशंकर धमिहोत्री | २४५ |
| दुर्गागङ्गाय 'नकर बहामावादी | २४६ |
| मन्तर हुनेन 'रायपुरी | २५० |
| मुन्नीउद्दीन कावर 'बोर | २५१ |
| पद्मनाभ मानकीय | २५२ |

| | |
|---|-----|
| माधिकात्म जोशी | २६३ |
| 'मारत'-सम्पादक के नाम पत्र | २४६ |
| जे० पी० भायब | २६० |
| महामुर बन्धु छात्र | २६२ |
| राम किसोर चौधरी | २६३ |
| बी० सी० राम | २६४ |
| रसीद सिद्दीकी का छठ प्रेमचंद को | २६६ |
| सुब्रह्मण्य का छठ प्रेमचंद को | २६६ |
| रघुपत सहाय 'छिराक' के दो छठ प्रेमचंद को | २६७ |
| मीलबी भट्टनाथ हक का छठ प्रेमचंद को | २७० |
| प्रमत्ताम भट्ट का पत्र प्रेमचंद का | २७१ |
| नरेन्द्रदेव के लो पत्र प्रेमचंद को | २७२ |
| कन्हैया लाल मुन्शी का पत्र प्रेमचंद को | २७४ |
| हजारी प्रसाद त्रिवेदी का पत्र प्रेमचंद का | २७६ |
| धरमदास हुसैन | २७७ |
| क्यादा गुलाम उम्मीदवार | २७८ |
| मीलबी भट्टनाथ माजिद बगियाबादी | २७९ |
| मीलबी भट्टनाथ हक | २८१ |
| फिदबाई | २८३ |
| भास्कर कच्छेरी | २८६ |
| हजिर नाथ | २८६ |
| Appendix | २८७ |

चिह्नी पत्री—२

जनेन्द्र कुमार

२

पहाड़ी घोरख दिल्ली

२० फरवरी १९३०

मायू जी

घारवा पत्र मिला। बहुत बूढ़ा पांडोरामबाना भी कम एक Delirious है
स मुझे मिला गया। कहानी मैंने १४ को गुठ की थी पर एतम सब भी नहीं
हुई। शुरु करने के बाद ही मैं तो उत्तमन में पढ़ गया। इसपर घारके उत्साह
के बाद भी हैरतमयाना पत्र जान पड़ा। ये तो कृतान्वित भेज रहा हूँ। नायूराम
को प्रेमी (बम्बई) से बापम भेजा भी है। 'शिक्षी में' घारके लिए और 'प्रेम
शस्त्र' मारपी के लिए। इन्हीं से सभी तो संतोष मान में एमी प्रायना है।
इन्हीं से भी कोई प्रपुत्र बीज भेज पर इन्हीं पुरो न हूँ। पर सभी इन्हीं।
यह भी घारके पुरे मन की नहीं है फिर भी उम्मीद है बरी नहीं है। प्रतिम
(पाना) पिरादाह पत्र घार सहमत हों तो का' दोबारा। बिलकुल व्यर्थ है।
बाल्य में जोड़ा भी का' न गया है। घार यदि गान तीर पर उभे रचना चाहें
तो का' दूनी नहीं तो उड़ा ही हैं। उनमें ऐना भगता है जैसे भेगक जन-मुन
रहा है। भेगक की यह Melancholy हृदाय कौन प्रकट हो?

'योगशास्त्री' सेरी पहाड़ी बहली है। ता भी 'मापुते' के लिए बांधे स
परास ही प्रकटी है एना बिरबान है। न भी पत्रों बांधे तो गुर न होगा।

'मेरो भेगनीन' की घारने मिथारिहा ही थी। मुझे भी ऐसी ही घारा थी।
निगुप का सब ठह पड़ा बनेगा।

कहा घार भयभेद में जायेंगे? और क्या मुझे कहीं जान की मनाह देंगे?
परिचर का नाम हो यदि नाम भयभेद घार तो का' दूनी नहीं तो सत्येनन
में और निगुप का है? उन (सत्येननी) लोगों में है निगी के ररन की उत्कट
का' हो तो भी का' नहीं है। समाह हैं।

घारका उत्तमन रीहा कम रहा है? मुझे भी बहुत और बराबर निगुने का
मनुर बठाए न? जब के घारा हूँ बना बहूँ एक कहानी भी न थी। शुरु ही

न हुई — खरीद नहीं हाविर हुई । कोई इमान अवश्य बताए :
बिरोध मेरे योग्य सेवा बिधिये ।

आपका ही
बेनेन्द्र

२

सरस्वती प्रेस,
२५ नवम्बर १९३०

प्रिय मित्रवर,

बहि ! पत्र मिला । सच्चा आनंद हुआ । 'परल' मैं पढ़ लिखा था और पढ़ कर सुख हो गया था । इसकी आलोचना बिस्वर के 'हुस' में कर रहा हूँ जो बिरोधोक्त होगा । 'परल' के चारों बिध — सत्य, कट्टे, बिहारी और गरिमा — खूब हुए हैं । सत्य का संमीर, मानसिक संज्ञान । बिहारी का जमसे भी पवित्र किन्तु सरल और बिनोदमय जना । कट्टे तो बेसी हैं । आपकी सेमी और करिब प्रदर्शन का बग मुझे बहुत पसंद आया । मैंने सरस्वतीवासी आलोचना नहीं देखी लेकिन आपके उपन्यास की ठारीक तो जम्हे करना ही चाहिए था । मैं ऐसी रचना पर आप को बधाई देता हूँ ।

आप प्रकाशको की स्थिति इस समय अच्छी नहीं है । मौलिक उपन्यास तो कई अच्छे निकले हैं । प्रसाद जी का 'कंकाल' 'उर्ध्व' जी का शराबी बुबाचनमान बर्मा का 'मककुडार' । 'गडकुडार' तो रोमांस है पर 'कंकाल' बहुत ही सुंदर है । लेकिन मौलिक उपन्यासों को छोड़कर अनुवाकों का बाजार ठंडा पड़ा है । 'मैक्समीन' खूब अपने प्रेस में छपवाने का इरादा कर रहा हूँ । आनकल में 'उर्ध्व' छप रहा है, वह निकल जाने तो इसे शुरू करूँ ।

'हुस' के छ' अंक निकल चुके । सितंबर और अक्टूबर में प्रेस और पत्रिका जमाकत माने जाने के कारण बन्द पड़े रहे । प्रेस के आर्थिक सठ जाने पर फिर निकले हैं ।

मेरी पत्नी जी पिक्टिंग के धर्म में जो महीने की सखा पा गई । कम फँसता हुआ है । इधर पत्रक बिम से इसी में पण्ठाग रहा । मैं जाने का इरादा ही कर रहा था पर उन्होंने खुद जाकर मेरा रास्ता बंद कर दिया ।

और क्या लिखूँ ? मुझे यह जान कर हर्ष हुआ कि आप गुजरग में स्वस्थ और प्रसन्न हैं । हम लोग भी अच्छी तरह हैं ।

एक बार फिर 'परल' के लिए बधाई लीजिए । हिन्दी उपन्यास अब बेतेगा

इनमें सम्बन्ध नहीं। एक मान के समर 'कंकाल' परल 'गङ्गुहार', 'शरणी' बीसी पुस्तकें निरन बुकीं — यह यथिय के लिए शुभ सम्बन्ध है।

न जान सम से कम मुलाकात होगी। मानुम होता है मुय बीत गया।

मथरीय—

बनपठारम

स्नेहल बेन तुजरात (पंजाब)

४ दिसम्बर १९१०

बाबू जी

आपका बहुत समय पर मिल गया था। मैंने सोचा कि आपका विरोपाक निक सन म बनकाता हो एक कहानी लिख दारु उसके साथ ही पत्र का जवाब दे दूँगा। लेकिन यहाँ की बुधवार य कहानी तो लिखी न जा सकी और वह बरत आ गया कि उस के कबाल को और टाकना बूटता हो जायी। इससे इतनी बेर बार भी खाली कर ही मेव रहा हूँ। क्षमा करें।

क्या विरोपाक निकल गया? एक (मेरी) प्रति रोख मुहम्मद धमी साद्व मिल आनर, गुजरत के पते पर निबधा हैं। मेरा नाम न मिले। वह मुझे यहाँ पहुँच जायगी। बेन के पते पर मैंने यसे बखबार नहीं मिलने दिने जाते। आपका ध्यान रखकर बकरी शुचना बनारस है हैं।

यदा आपकी पत्नी के बेन जाने पर बन्धवार हूँ। यह इसलिए भी बन्धवार का निपय हो सकता है कि आपकी इस तरह बेन जाने की राह और बाबरबकता एक पत्नी। मिलने पतिपों ने पत्नियों को रोक रखा है लेकिन वे पति पन्थ हैं किन्ती पत्नियों आगे बढ़कर बेन में पहुँच महीं और उनको रुकने को साधार कर मयी।

'कंकाल' की बख-अकशित प्रति मैंने देखी थी। प्रसार की की वृत्ति है, बुते कैसे होती? 'उध' जी के 'शरणी' का समूना 'मथवास' के पुष्ठों में बचा बाध पड़ा है। 'गङ्गुहार' निमकुल ही गया नाम और गया नाम मानुम होता है। न नहीं जानता मैं यहाँ किनी के काई बीज मँपा सकता हूँ। हाँ 'शरणी' और 'गङ्गुहार' पढ़ना बकर बाहुँगा। आपके पास बाहुँ को कोई प्रति होमो? समर 'हं' के लिए प्रत्य हूँ वो प्रतियों में से एक यहाँ (अर्थात् ऊपर दिने पते पर) मेरी का सके तो मैं आनीजना 'हं' में मेव दूँगा।

अपमर्श का पक्ष मिला कि आप 'परब' का प्रसार स्कूल के अधिक निष्ठा समझते हैं। आपने सिखा है कि आपको वह पक्ष मायी है और आप समा-सोचना इस के हकी धक न दे रहे हैं। 'हंस' मिला तो आपसोचना में बढ़ेगा हो। पर परब में आपके अनुसार कहा गया अधिक और कहा कम होता चाहिए या वह मैं आपसे जान बिना संतुष्ट न हूँगा। परीक्षक के हंस से मैं उसे आपको माँगना चाहता हूँ धंतर केवल इतना ही कि परीक्षार्थी परीक्षक के सम्बर देने के हंस को भी समझना चाहता हूँ। अपमर्श में जो स्कूल की बात किसी संस्था में सुनाया मैं जानना चाहूँगा।

पता चलता है कि अवसरानुसार जी की आपसोचना देखीरत जी ने 'सरस्वती' न नहीं जारी। सब बात तो यह है कि वह भी भी इस मायक नहीं। लेकिन आपसोचना उन्हें पसन्द नहीं मायी इतना ही होता तो अचरब की बात न थी। सुनते हैं किताब उन्हें और भी मायस्य है। एक और मित्र के सम्बन्ध में मासूम हुआ है कि उन्हें 'रघु' मेरी प्रविष्टा के अनुकूल नहीं लगी। गोवा कि निम्नने ए पहले ही मेरी लेखनी की प्रविष्टा बन गयी थी। इन सब छटपटाई सम्मतिवों का क्या बलमा बाव। और मैं समझता हूँ कि अगर लोच आपको और प्रसार की को मगलाप्रसार पारितोषिक नहीं देते और फिर भी योग्य व्यक्ति को ही देना चाहते हैं तो वह मुझे ही दे सकते हैं। पारितोषिक का सम्मान इसी न है।

तो 'मेरी मेकलीन' आप छापेंगे? यह ठीक है। 'बनन कब तक चलता होगा? छिन्नी मोटी चीज है? कोई 'रंगमूमि' के टकर की दूसरी चीज भी लिखिय न? आप और क्या लिख रहे हैं? न जाने कौन कहता था कि एकेडमी के मित्र Chabworbey का अनुवाद करना आपने शुरू किया है? क्या यह ठीक है? मुझसे आप पूर्ण और मायक न हों तो मैं कहूँगा कि गास्सबरी के अनुवादक तो बहुतरे निष्ठा भावसे प्रेमचंद इस काम को करते हैं तो हिन्दी का दुर्माय है। गास्सबरी की चीजों को मैंने दिल्ली जेल में जब देखा था बिलासपीपन और बिलासपीपन माया के धर्मिबपन के मायक को दूर रखने के बाव क्या मैं बरा बेर के लिए भी गास्सबरी को प्रेमचंद से उँचा मान सकता हूँ? आप कृतानिधी निम्न रबमूमिनी निम्न पर मेरा निवेदन है कि गास्सबरी के अनुवाद न केनकर प्रेमचंद से संबंध रखने का अनुपकार हिन्दी साहित्य पर न करें।

'माधुरी' नामों ने मेरा पुरस्कार बर सेज ही दिया होगा। 'माधुरी' में 'परब' की समासोचना निष्कामी या नहीं? 'माधुरी' की जो मेरी प्रति शेख मुहम्मद अली के पते पर भेजने को कहें तो कृपा हो।

आपसे मिलने को केमा भी चाहता हूँ। सबेह साक्षात् और बर्तलाप नहीं

होना तब तक पत्र सं ही सही :

मैं यही मन्त्रा कुत्तान और घातक सं हूँ । घातकी बचावों पर प्रसन्न और
कृतज्ञ हूँ । शायद घात इस बात पर एक और बचाई भेज दें कि अभी कुछ दिन
हुए परमात्मा ने मुझे एक पुत्र का पिता बना दिया है ।

घातक
जैनग्र कुमार

४

मन्त्रा किशोर प्रेस
प्रकाशन बिमल
सदमल ।
१७ दिसम्बर १९७०

प्रिय जर्नेल जी

बंदे । पत्र मिला । बाह ! आने कड़ानी मिल सी होता ता क्या पूछना ।
मैं तो इस बजह से नहीं बरा का कि घात को कष्ट पर कष्ट बना हूँ । अभी तक
समय है, हालांकि घात शुरू हो गयी है । पर आप की कहानी मिल जाती ता
आधिर बजह भी दे देना । बरा अब भी मुश्किल है ?

'परम की आलोचना में 'मानुषी या 'हम में कर्मका । मरे पाप का प्रतिजो
में से एक भी नहीं बची । एक ता बेम भेज सी का दून्गी एक महिला से गरी
और अभी तक लौट रही है । इनलिए उमका अमर जो दिल पर पड़ा या बरा
मिलेगा । यह कष्ट तो गई बीज है मगर मेरा मन उसके पड़ने में न सया ।
तो एक जरिजों का चित्रण उसमें अच्छा हुआ है । उमकी आलोचना भी कर्मका ।

'उमका अभी लैला नहीं हुआ । चीन भी पृष्ठ घन चुके है । अभी एक भी
पृष्ठ और होंगे । यह एक सामाजिक कथा है । मैं पुराना हो गया हूँ और पुरानी
रीनी निभाते जाता हूँ । कथा को बीच में शुरू करना या इस तरह शुरू करना कि
उममें कृपा का अन्वय पैदा हो जाये मेरे लिए मुश्किल है । पुरस्कार का
विचार करना मैं छोड़ दिया । घात दिन आर तो मे गूना पर इस तरह जिय
तक पड़ा हुआ पत्र मिल जाय । घात या प्रमाण जो पा जाये तो मुझे समाप्त हो
होया । घातका उमका अन्वय है इसलिए उमका लुप्त होगा ।

पुत्र मुबारक । ईश्वर चिरायु कर । या या कहूँ चिरायु हो । मैं तो पुरान
अपान का घातकी हूँ । तो पुत्रों तक तो बचाई दूंगा इस के बाद उम मोर्चा ।

‘इंस’ और ‘माधुरी’ दोनों ही यथास्थान मेज भी धाएँगी । तराबी और ‘गड़बुहार’ दोनों ही की एक-एक प्रति मिली थी । वे दोनों भी मेरे पढ़कर जेल मेज थीं । अब तो उनके जाने पर विद्यार्थी बापस होंगी । बाहिर धाप कम तक धावेंगे । ‘माधुरी’ में दो में से एक भी सामान्यता के लिए नहीं आयी ।

अब आपके उस प्रश्न का जवाब कि ‘परल को मैं प्रसाद स्कूल के निकट क्यों सम्मिता हूँ । मैं तो कोई स्कूल नहीं मानता आपने ही एक बार ‘प्रसाद स्कूल’ ‘प्रेमचंद स्कूल’ की चर्चा की थी । शला में खरब कुछ अन्तर है मगर वह अन्तर कहाँ है यह मेरी समझ में कुछ नहीं आता । आपकी लेखी मे स्फूर्ति — मनीषिता — कहीं अधिक है । बुद्धिब्याँ बुलबुलान कही अधिक है । प्रसाद जी के यहाँ लम्बीरता और कविता अधिक है । *Recall* हम में से कोई भी नहीं है । हममें से कोई भी जीवन को उसके यथार्थ रूप में नहीं बिखाता बल्कि उसके बांझित रूप में ही बिखाता है । मैं लगन यथार्थवाद का प्रेमी भी नहीं हूँ । आपसे मिलने पर ‘परल’ के विषय में बातें होंगी — अब तक छजन भी ठीमार हो जायगी ।

आता है आप प्रसन्न होंगे ।

भवदीय—

अनन्तराम

P B अगर हो सका तो मैं तराबी और ‘गड़बुहार’ और ‘कंकाल’ तीनों ही छिपी तरह बेगवाकर भेजूंगा । सामान्यता अवरय कीजियेगा ‘इंस’ के लिए ।

५

स्नेहल जेल, सुबरत (पंजाब)

१० दिसम्बर १९३

बाबू जी

बहुत दिन हुए यहाँ से आपको अमीनूद्दीना पार्क के फते पर एक कत आता था । मालूम नहीं आपको वह मिला भी या नहीं । आपका कत न जाने से आज पड़ता है नहीं मिला ।

‘परल’ हिन्दी प्रश्न रत्नाकर ने ही छापी है । आपको अवश्य मिल गयी होगी । वह आपको प्यारी लगी ? आपकी जुबो सम्मति सुनने की बड़ी इच्छा है । माधुराम जी प्रेमी ने उस पर अवश्य उपाध्याय जी की विस्तृत सामान्यता की एक प्रति मेरे पास भेजी है । वह उपाध्याय जी ने लखनऊ में भेजी थी । मुझे

तो धक्काबार मिल पाते नहीं इससे मासूम नहीं रहता कहीं क्या निकलता है। क्या आपने भी उसके संबंध में 'हंस' या 'माधुरी' में कुछ लिखा है? उपाध्याय जी ने तो जितना बोल बेहद तारीफ़ कर ही है। आप जानते हैं मुझे उनकी परत पर बहुत मरोसा नहीं है। विज्ञान की तराजू पर तौल कर जो साहित्य पर निर्णय दिया जाता है, उसका मोह मैं मैं नहीं पकना चाहता लेकिन धास्की और दो एक सज्जनों की अच्छी सम्मति मुझे चाहिए ही। धास्की और उनकी मिठाइयों में पास समझ गया तो यही मेरे लिए सब कुछ है। शेष से तारीफ़ पाने की इच्छा जैसे या चिन्ता मुझे बिल्कुल भी नहीं है। धास्को मैं 'मेरी मेकअप' से आया था। नी-दस महीने हुए होंगे। उसके प्रकाशित होने का सब क्या हाल है? जैसे और जहाँ से उचित समझें छपवा दें और पैसा भर मित्रवा दें। मैं यहाँ जेल में हूँ पर पर हर तीरे के पैसे को जबरत है। इस सम्बन्ध में मैं यह भी धास्की मार्फ़त 'माधुरी' के व्यवस्थापक जी को धार मिलवाना चाहता हूँ कि शायद धास् (या धास्-धास् के) महीने की 'माधुरी' में प्रकाशित कहानी (विल्ली में) का पुरस्कार मुझे नहीं मिला है। वह कृपाकर जर भेज दिया जाना चाहिए। बोझ कष्ट उठकर यह नाम धास् करा सकें तो बड़ी कृपा होगी और 'मेरी मेकअप' का भी ध्यान रखेंगे तो धारा होगी।

आपने इस बीच क्या लिखा है? नई अपनी बीबी की एक-एक प्रति धास्म मित्रवा दीजिए। जेल में जितानों की कीमत और जबरत और बाह किठनी रहती है यह हमी जान सकते हैं।

और धास् जैसे है, यह धास्म लिखें। यही तो एक धास्के जबरत मुरीब है। जब उन्हें पता चला कि मैं आपसे *anybody* पर होने का सीमाग रहता हूँ तो उन्होंने मुझे शवश धास्के पूर्वक धास्की उनकी *anybody* लिख भेजने को कहा। वे धास्की कुशलता सुनने के बड़े धास्की है। मैं उन्हें उन धास्-दस बंटों का हाल सुना चुका हूँ जो मुझे अब तक धास्के साथ बिठाने के लिए मिले हैं। उनकी धास् मेरे भीतर बसी है। बड़े धास्की यह धास् है। लेकिन वह मैं धास्की नहीं सुनाऊँगा।

धारा है धास् प्रसन्न और स्वस्थ होने और घर रने।

मैं यहाँ इतनी अच्छी तरह हूँ कि क्या कहूँ। जाना बहुत अच्छा मिलता है, जेल के धास् पूजने की और खेलने को सब मिलता है। बस धास्बार नहीं मिलते यही बरत कमी है। तो यह भी कुछ नहीं धास् नई-नई जितान मिलती रहे।

चित्तोप नमस्कार और धास् के साथ

धास्का
बीनेन्द्र कुमार

हंस' और 'माधुरी' दोनों ही यथास्थान मेज भी बाँटनी। शराबी' और 'नङ्कूँडार' दोनों ही की एक-एक प्रति मिली थी। वे दोनों भी मेरे पड़कर पस मेज हो। अब तो उनके जाने पर किताबें बापस होंगी। बाँहिर आप कम तक भावेंगे। 'माधुरी' में दो में से एक भी धातोजनता के लिए नहीं था।

अब आपके उस प्रश्न का जवाब कि 'परख' को मैं प्रसाद स्कूल के निकट क्यों समझता हूँ। मैं तो कोई स्कूल नहीं जानता आपने ही एक बार 'प्रसाद स्कूल' 'प्रेमचंद स्कूल' की चर्चा की थी। शैली में बकर कुछ अन्तर है मगर वह अन्तर कहाँ है वह मेरी समझ में अब नहीं आता। आपकी शैली में स्फूर्ति — मचीबता — कहीं अधिक है। बुद्धिमत्ता बुलबुलान कहीं अधिक है। प्रभाव जी के यहाँ गम्भीरता और कविता अधिक है। Reddy हम में से कोई भी नहीं है। हमसे कोई भी जीवन को उसके यथार्थ रूप में नहीं दिखाता बल्कि उसको बाँधित रूप में ही दिखाता है। मैं जन्म यथावयास का प्रेमी भी नहीं हूँ। आपसे मिलने पर 'परख' के विषय में बातें होती — तब तक बचन भी ठीक हो जाती।

आता है आप प्रसन्न होंगे।

मचदीब—

बनपतराय

P. B. अगर हो सका तो मैं 'शराबी' और 'नङ्कूँडार' और 'कंकाल' तीनों ही किसी तरह मेंढाकर भेजूँगा। समालोचना अवश्य कीजिएगा 'हंस' के लिए।

५

स्पेशल जेल, जुजराल (बंगाल)

१७ दिसम्बर १९९

बाबू जी

बहुत दिन हुए यही से आपको अमीगुड़ीला पाक के पते पर एक लत आता था। मानूँ नहीं आपकी वह मित्रा भी या नहीं। आपका लत न जाने से जाल पड़ता है, नहीं मिला।

'परख' हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर ने ही धारी है। आपका अवश्य मिल गयी होगी। वह आपको कमी मनी? आपकी जुनी सम्मति जुनने की बड़ी इच्छा है। नाबूराम जी प्रेमी ने उस पर धन्य उपाध्याय जी की विस्तृत समालोचना की एक प्रति मेरे पास भेजी है। वह उपाध्याय जी ने तरहती में भेजी थी। मुझे

तो प्रसन्न हो मिल पाते नहीं। इससे भानुम भी रहता नहीं क्या निष्कर्षता है। क्या आपने भी उसके सम्बन्ध में 'हंस' या 'माधुरी' में कुछ लिखा है? उपाध्याय जी ने तो किताब की बेहद तारीफ़ कर दी है। आप जानते हैं मुझे सनकी परब पर बहुत मरोसा नहीं है। निष्ठा की तराजू पर तौल कर जो साहित्य पर निश्चय लिया जाता है, उसके मोह में मैं नहीं पड़ना चाहता लेकिन आत्मी और जो एक सज्जनों की अच्छी सम्प्रति मुझे चाहिए ही। आपकी और सनकी निगाहों में पास सम्बन्ध क्या तो यही मेरे लिए सब कुछ है। रोप से तारीफ़ पाने की इच्छा जैसे या किता मुझे बिलकुल भी नहीं है। आपकी मैं 'मेरी मण्डलीन' दे धाया था। नौ-दस महीने हुए हमें। उसके प्रकाशित होने का धक्का हान है? जैसे और जहाँ से उचित सम्बन्ध बनना है और पीछा कर निश्चय हैं। मैं यहाँ बेल में हूँ घर पर हर ताँके के पैरों की बकरत है। इस सम्बन्ध में मैं यह भी आपकी मार्फ़त 'माधुरी' के व्यवस्थापक की जो बार विलबाग़ा चाहता हूँ कि शायद धर्म (या धर्म-पाठ के) महीने की 'माधुरी' में प्रकाशित नज़ानी (बिल्की में) का पुरस्कार मुझे नहीं मिला है। वह इपाकर घर भेज दिया जाना चाहिए। बीड़ा कट उठकर यह नाम आप करा सकेंगे तो बड़ी कृपा होगी और 'मेरी मण्डलीन' का भी ध्यान रखेंगे तो धामार होगा।

आपने इस बीच क्या लिखा है? नई छपी चीज़ों की एक-एक प्रति सबरम भिजवा दीजिए। बेल में किताबों की कीमत और बकरत और चाह किताबी रहती है यह हमें जान सकते हैं।

और आप कैसे हैं, यह सबरम लिखें। यहाँ तो एक आपके सबरत मुठीर है। अब उन्हें पता चला कि मैं आपसे *writing paper* पर होने का सीमाय्य रहता हूँ तो उन्होंने मुझे सतत अनुरोधपूर्वक आपको उनकी *Respect* तिस भेजने को कहा। वे आपकी कुशलता सुनने के बड़े धारणी हैं। मैं उन्हें उन पाठ-उस बंटों का हाम भुना चुका हूँ जो मुझे अब तक आपके साथ मिलने के लिए मिले हैं। उनकी पाठ मेरे भीतर बसी है। बड़े भजे की वह बाध है। लेकिन वह मैं आपको नहीं भुगाऊँगा।

धारा है आप प्रसन्न और स्वस्थ होने और पच बेने।

मैं यहाँ इसी अच्छी तरह हूँ कि क्या नहीं। जाना बहुत अच्छा मिमता है, बेल के धर्मर धुमने की और बेलने की बूझ मिमता है। सब सबबार नहीं मिलते यही बरा कमी है। तो यह भी कुछ नहीं धरत नई-नई किताब मिमती रहे।

विशेष नमस्कार और धार के साथ

आपका
जैनेन्द्र कुमार

स्वेयं जैन गुजरप्र

७ जनवरी १९६१

श्रद्धा बाबू जी

आपका पत्र समय पर मिल गया था। उत्तर धाब इसलिए दे रहा हूँ कि जनवरी का पहला हफ्ता खत्म हो जाता है और 'हंस' के लिए कहानी मेजने के प्रयास को पास रखने की गुमावत भी बिलकुल खत्म हो जाती है। बात तो घसल में यह है कि कहानियाँ हो गई हैं पर मेजी नहीं। प्रेस आदिनेस की खबर पाते ही हर हफ्ता कि 'हंस' का यह धक निकल भी गया तो भले नहीं निकलने दिया जायगा। और क्या मामूम बिरोपांक भी निकल पाये या नहीं। फिर सँभा बना भी कि उन कहानियों को अच्छी ही हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर मेजना पड़ जाय। यह संग्रह छापत है और कुछ नयी प्रकाशित कहानियाँ चाहते हैं। बाद बन करी एक संग्रह के निकल जाने की भी। आपको कहानी मेजी गई और घसवार बग्न हो गया या बिरोपांक न उसके निकलने की संभावना न रही तो इस तरह उसके फिर अच्छे सम्बन्ध जाने में गड़बड़ पड़ जाती। इस तरह भी बार कहानियाँ इस बीच मिल जाती थीं हैं मेरे पास हैं। पुरानी प्रकाशित कहानियों को उनसे (नाचुरम की प्रमो से) पाने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ ताकि सतको एक बार फिर देखकर उनके साथ ही इन नयी को भी रवाना कर हूँ। कृपा कर लिखिये कि आदिनेस की कृपा आपके प्रेस और पत्र पर तो नहीं हो गई? पत्र निकलता हो तो कृपाकर मेरी मूल को जमा कर बीजिए। पत्र निकले तो अगर पहले मिले पते पर न भेजा गया हो तो जेल के पते पर हो जिनका बीजिएगा। 'माधुरी' भी। 'माधुरी' की उस कहानी के मेरे पुरस्कार के बारे में क्या हुआ सो आपने नहीं लिखा था। 'माधुरी' के नाम पर वह बात भी बाद का कभी है तो आपको भी बाध दिता देता हूँ।

'गढ़ कंधार' और 'शराबी' अगर आपको प्राप्त हो गये हैं तो मैं बेचना चाहूँगा। समालोचना जहाँ लिखेंगे भेज दूँगा।

'गहन' तैयार हो गया? इसके बाद ही 'मेरी मेकनीक' प्रस में जायगा न? तैयार हो गया हो तो पिछली किताबों के साथ 'गहन' की एक प्रति भी भेज दूँगा।

मात्र के धन्य तक मैं छुट्टी। लिखित नहीं ता सेवा में उपस्थित होकर मौखिक ही अत्यन्त अपनी रचना के सम्बन्ध में आवेष्ट और समालोचना प्राप्त

करेगा ।

लेकिन इतना शहर लिखिए कि आप की राय में 'बुसबुसाहट' कम होनी चाहिए न ? शायद मेरी कृति में यह पर्याप्त से अधिक मात्रा में होती है ।

मैंने अभी ठीक पारसी और आलोचक इन्डि से साहित्य को जीवना और बमाना (Assignment) नहीं सीखा । थोड़ी और 'स्कूल-विभाजन' का काम मैं अपने लिए मन चाहे बीसा कर भी मर्क बूखरे के लिए और अपने के लिए नहीं कर सकता लेकिन प्रमाद-स्कूल शब्द कारी में चुन पड़ा ना । स्वभावतः दूसरा स्कूल आपका ही होगा । खैर जो हो । मैं तो चाहता हूँ यह काम सब अपने लिए कर सिवा करे ।

मैं बिलकुल प्रयत्न और स्वस्थ हूँ ।

आपका

बीनेन्द्र कुमार

७

सरस्वती प्रेस

१२ मयवरी १९३१

प्रिय बीनेन्द्र जी

कम पत्र पाकर बड़ा आनन्द हुआ । आपको ज्ञान हुआ । आर्देनिम ता फिर जारी हुआ लेकिन अभी मुझसे बसलत नहीं मानी गयी इमतिन 'हम' का विशिष्टक छप रहा है । आप यदि अपनी कहानी मेज दें तो तुरन्त छपवाऊँ और आपका लालों यह मानूँ । फिर तो पत्रिका सब उठे । मुद्रान भी मे कहानी मेज ही है राजेश्वरी ने भी मेजी । कौत्तिक भी आनन्द इतना मिल रहे है, कि मैं उन्हें कष्ट देना व्यय नमस्स । नष्ट बहाना करते नाव जाने । आपकी कहानी या आप तो क्या पुष्पा ।

हमारे प्रोफेसर बाबू विष्णुनारायण भागवत का महाय में स्वगन्धित हो गया । बुधवार में मण्ड प्राची की बाजी हार गए । अब देखना है कि यहाँ कैसे काम होता है 'मायुरी' अब होती है या चलती है । मुझे तो इनसे चलने की धारा नहीं है ।

'गवन' के तीन फल और बाकी है । बेचैन हूँ कि कब छपें और कब आपका पत्र मेज । 'गड कुंशर' और 'शराबी' आब मेज रहा हूँ । मुझे तो 'गड कुंशर' कुछ (नहीं जैसा) । 'शराबी' अपने बग की कुरी बीज नहीं । आर इन बातों

की आलाचना कर सकें तो 'हंस' में आप हूँगा।

हैं 'शब्द' के साथ 'मध्यस्थ' प्रयोग। अब तक मेरा दूसरा सम्पाद भी निष्ठा का चुकेगा।

हैं पत्नी भी तो आ गई मगर शायद फिर आवें। अभी उन्हें सन्तोष नहीं। साथ स्वराज्य एवम् ही ले लेंगी। किन्तु मैं नहीं चाहती।

मैंने 'परम' की आलोचना 'हंस' में कर दी है। 'भाषा' का पुरस्कार तो मेरा का चुका है। बहुत पहले ही। अब कुछ बाकी नहीं।

और तो नहीं बात नहीं। आप बाहर आ जाएँ तो फिर बातें होंगी। उस छोटी बेर की मुलाकात से तो प्यार और भी बढ़ गई थी।

आपकी

बनपटराय

हैं सम्पाद हो या कहानी उसमें कुछबुझाहट न हो तो बेचनी-सा भोजन है। जरूर चाहिए। अरुण तो सम्पाद की जान है।

८

२० जनवरी १९३१

बाबू जी

पन्द्रह ता० को मैंने आपकी कहानी मेरी थी। रजिस्ट्री से भेजता कैसे इससे बरत भेजी ताकि ऐसे बसुन करने की बगल से तो आपकी को ससे टिक जगह पहुँचाने की चिन्ता रहे। वह आपको मिला गई न? वह लिखी तो बीरह को मपी थी लेकिन काम नहीं हुई थी। अब आपको मेरी दोस्ताप बेज भी न पाया। एक बगल एक शब्द छूट नहीं रहा था इससे Gap छोड़ दिया था। मुझे पीछे उसका इफाल था। और। जहाँ-तहाँ की गसतियों को आपने संभाल दिया होगा। 'हंस' अब तक आयेगा लिखिए। आपकी किताबें अब तक नहीं मिलीं। शायद भेजने में भूल हो गयी अब तक भेज नहीं पाये।

आपका

जेनेट कुमार

६

सोशल डेल पुस्तक

२२ फरवरी १९३१

मात्र जी

आपका पत्र मिला। उससे एक ही रोज पहले एक कार्ड भेजे सिखाया। 'हंस' की और किताबों की प्रत आ में हूँ। मैं स्वयं आपसे मिलने को भूला हूँ। आप ही घर पर रिस्की या सक्केले इससे ठो बहकर भाग्य ही क्या होगा। मैं मनने महीने की समाप्ति तक धूर्दूया। ठीक लिखि मिलाना तो संभव नहीं। 'कस्माय' का विरोधांक कब निकलता है? मैं आशय उनके लिए सिर्जना लेकिन जान पड़ता है अभी बन्दी नहीं है। आपकी सेवा और आशा पालन के लिए मैं तैयार हूँ ही। जब और बेसी आशा होगी इस के जाए मिलने का यत्न करेंगा। आपका फरवरी का प्रेस कब तक निकलेगा क्योंकि उस कहानी की हिन्दी धन्य एनाकर जो मेरा सग्रह निकाल रहे है उसके लिए आवश्यकता है। क्या यह हो सकेगा कि उसकी प्रतिलिपि बम्बई पहुँच जाय?

और आप क्या नवसक्रियता प्रेस से सम्बन्ध तोड़ने का इरादा रखते हैं जो गाँव में बैठ जाने के बारे में लिखते हैं? 'माधुरी' का क्या हाल है। विरोध सब कुशल है।

विनीत

जेनेट्र कुमार

२०

नवल निखोर रुक डिप्री, लखनऊ

१८ फरवरी १९३१

प्रिय जेनेट्र

आपकी आलोचनाएँ मुझे पहले ही मिल गई थीं पर जवाब की ऐसी कोई बात नहीं। इस से बिसम्ब से मिल रहा हूँ। अभी आलोचनाएँ 'हंस' में आ रही हैं। आपने 'गढ़ बंवार' की पसंद किया है। मैं तो पत्र न सका था। कनरूप यह है कि उसमें आगे चलकर कुछ रस आता है और मैं आदि के बस बीच पाने पढ़कर ही धीरे-धीरे क्या आगे पढ़ने का प्रेय न रहा।

'हंस' अभी तक नहीं आया। सायब आज मिल जाय। इतर-काशी में बुधवार में बहुत बड़ा रंदा हो रहा है अभी कारोबार बंद है प्रेस भी बंद है, यहाँ तक कि

× × भी बंद है। सामान्य एक रोज में सामान्य स्थिति था बाप।

इस बीच में मिरासा भी की 'अप्सरा' भी प्रकाशित हो गई। यह उनका पहला उपन्यास है, जिसने पर भेजूंगा। बाप जब तक बाहर आयेगे? एक बार हम लोगों का मिलना जरूरी है। मैं दिल्ली या आऊंगा। पूछा वहन भी से भी जल्दी में कुछ बातें न हुईं।

'श्रवण' की एक प्रति भी शीघ्र ही भेजूंगा। इस पर जो कुछ लिखता हो वह 'माधुरी' के लिए लिखिएगा। 'माधुरी' से अब मेरा सम्बन्ध नहीं रहा। मैं बुकडिपो में था गया। आ तो पहले ही गया था अब पूरा रूप से आ गया। पर्यंत तक समय यही और चूँगा फिर कासी जना आऊंगा और कहीं देहात में बैठकर कुछ लिखता पढ़ता चूँगा। हमें तो आपके लिए बाल हूँ। क्या बताऊँ अभी एक हजार भी आइक नहीं है। बाप लिपट आएंगे तो वह यहीने में दो हजार छोड़ा। उसके लिए प्रति मान एक गन्त लिखते आएँ और जो कुछ मित्रों में आन लिखिए।

'कल्याण' का कल्याण निकल रहा है। कुछ उत्तम भी लिखिए। वह पैने अच्छे होता है दिल्ली में सबसे पचास छपता है।

इस उर्दू की उत्पत्ति देखकर आश्चर्य हो रहा है। मज्हीर में एक पत्रिका ने घाट से पचास पृष्ठों का विशेषांक निकाला है।

रोप कुरास है।

शमशेर

बनपतख

२२

अजमेर कैम्प काप्रेस, कराची

२३ मार्च १९३१

श्रेय

आपका पत्र दिल्ली मिला था। 'श्रवण' भी मिला गया था पढ़ भी न जा कि अपमन्त्रण उठा ने गया। अब दिल्ली जाकर पढ़ेंगे और अपनी स्थिति भिखूंगा। सम्मति अच्छी के बजाय और कुछ तो होने में रही। कुछ ठ न पढ़ सेवा इतना तो अब भी कह सकता था। यही कम आया पत्रों या तरी को बम्बई आऊंगा। इस पत्र का उत्तर जो धार मिले बम्बई जेमी जो क पत्र पर रहे। 'हंस' का फरवरी का संक भी वहीं भिजवा दें। आपने 'मंजान और हराबी' का जिक्र तो किया भेजा नहीं। मिला आप तो उन्हें बम्बई भिजवा

नकल है। पोस्ता काटने को कुछ सामान मिलेगा। बल्कि साब में मेरे कोई किताब नहीं है।

विशेष कुरास है।

यहाँ बहुत-बहुत है। मौज-मनों में भीका देखा है उठ रहे हैं धीरे धीरे। का बेटा देना चाहते हैं। यह जानते नहीं कि गौरी मरकर ही बैठता। फूँ मिले घड़मम्य मौज-मनों की बात बाढ़-बहुत समझा अवश्य दिखायमी। देखें बना होता है। विशेष कुरास है।

आपका

जैनम्भ

२२

हिन्दी प्रथम रत्नाकर कार्यालय गिरवाव बम्बई

१ अप्रैल १९३१

आपकी

मैं करोड़ों से परमा यहाँ पहुँचा। सबन बज चलनेवाला ही था कि दिल्ली में निता था। कुछ सप्ते पढ़ पाता हूँ कि ज्ञापन उसे उठा ले गया। सम्मति अब दिल्ली से ही लिखें। फरवरी का 'हंस' का बंक मुझे यहाँ मिला। 'परम' को आपकी आलोचना तो चलती-सी रही जैसे बहुत भोड़ के बचन मिली गयी हो। यहाँ से दो-एक रोज में आँया। अभी भी ठहरने का विचार है। वहाँ सोचता हूँ सीधा बुराबनमान को बर्बा के यहाँ ही पहुँचें धीरे उहक। जानता नहीं तो क्या। आपकी 'हंस' की बहानी धुब है। आप दिल्ली के पते पर लिखिएगा कि आप दिल्ली कब पधारिएगा। मैं भी-इस तक दिल्ली अवश्य पहुँच जाऊँगा।

विशेष।

आपका

जैनम्भकुमार

२३

साहित्य सुपन माता कार्यालय

महाराष्ट्रकेन्द्र प्रेस बुक डिपो लखनऊ।

११ अप्रैल १९३१

प्रिय जेनेट जी

आपका पत्र मिला। मैं लाहौर गया पर आप दिल्ली न थे इसलिए मैं सोचा

झोट धारा । धारा है जब धाप दिल्ली धा गए होंगे । धापको कहानी का पुरस्कार सेजने के लिए मैंने तारीफ कर दी है । धारा है जस्य पहुँचेगा । 'गबन' धाप पढ़ में धीर मैं कुछ धापकी राय जानूँ तो मुझे खतोप हो । 'परब' की धालो-बना बन्दी में तो नहीं की लेकिन धापनी दानिस्त में मुझे जो कुछ कहना चाहिए था वह कह चुका । मैं समालोचक बहुत खराब हूँ । पुस्तक पर पाठक की दृष्टि से निगाह डालता हूँ । धीर जो भाव कम जाता है नहीं लिखता हूँ । × × × × धापी तो भी पर एक साहब लेकर मुद्राबाज बने गए वह भीन कर धावें तो सेजुँ ।

धारा है धाप (धान्य) है ।

नबदीय

बनपठराम

२४

पहली धीरक दिल्ली

१५ अर्ध १९३१

बाबू जी

धापका पत्र मिला । मैं यहाँ तेरा छापील की मुबह पहुँचा । उसी दिन श्री स्वामी धान्य मिश्र जी से मिलना हुआ था । उनसे मामूम हुआ था कि धाप देव शर्मा जी को साहीर बाटे हुए सहारनपुर के स्टेशन पर मिल गये थे । मैं इससे यह समझता था कि धाप अभी साहीर ही होने धीर लौटते हुए बहर दिल्ली चले गये । धीर मैं हर रोज धापके यहाँ जाने की धारा कर रहा था । उसके बरने में मिला धापका सब बिससे मामूम हुआ कि धाप लखनऊ पहुँच गए धीर अब बन्दी बहर धालेबासे है नहीं । यह तो सब कुछ बात न हुई । मैं यहाँ धापकी सहाह धीर मदद से कुछ धापनी बिन्दी की समस्याओं को हल करने की सोच रहा था । धीर ।

पुरस्कार के बीच व मुझे परतों मिल गये । खन अब पढ़ रहा हूँ । जल तक पढ़ चुकींगा । पत्र न धाये यह तो हो ही कैसे सकता है । ध्याना जग्य करने पर सिर्जना ।

स्वामी जी धाव मामूम हुआ लखनऊ ही गये हैं । वह शायद धापको मिर्से । उनसे धाप जानेगे कि यहाँ न धाकर धापने किता धालाबार किता । मैं धालिर दिल्ली धाला था ही । स्टेशन पर ही नहीं तो एक दिन बाद मही मैं यहाँ हाजिर हो ही जाता । मेठ धापको देखने का बड़ा भी है ।

‘परस’ की धाप्पी धातोचना से म असहमत हूँ तो बात नहीं। उस जिसका विवाह के बारे में तो मुझे सब ख्याल होता है कि शायद कुछ *Extraordinary* के मोह में पड़कर कि पुस्तक जिससे धाराधारण जैसे मीने वह बात उस तरह मिली। अब सचमुच अगता है कि वह धमधाम मोह या धीर मेरी कमी थी। धीर पुस्तक का परिचय देते-देते जो आप पुस्तककार पर कुछ शब्द लिख गये यह मुझे बड़ा प्रिय मया। जैसे आप उस लेखक को पाठक के निकट पहुँचा देना चाहते हैं और उनमें आपस में मेलबोल हो जाय। लेकिन पहले बात में जो मीने लिखा उसका आशय यह था कि पुस्तक पर आपका वक्तव्य इतना संक्षिप्त है कि पुस्तककार जिसे आप से उसके गुण-दोषों की समीक्षा और आलोचना सुनने की उत्कण्ठा थी संतुष्ट नहीं हो सकता। धीर वह भी वह जो आपस सरी बात सुनने की जिह करने का अपना अधिकार समझने लग गया है। आप चाहें तो ‘माधुरी’ या धीर किसी म या उससे भी अच्छा मुझे, समीक्षामय अपनी विस्तृत सम्मति भेज सकते हैं और इस ‘अनित-निज’ के बारे में भी अपनी राय लिखें। मेरे मन में हो रहा है न जाने कैसी है कैसी नहीं। बुझाए पढ़ें तो बीच बीच में कुछ बड़बड़-सी लगने लगती हैं। आप इस पर समीक्षक नहीं उस्ताद की हैसियत से मुझे कुछ लिखें। आपका बात हो कि उस मुलाकात के वक्त मैंने सब आपसे इस कहानी के सीम का निक क्रिया या तो आपने कुछ पढ़े-सा प्रकट किया था। तो ही समझकर आप मुझे लिखें।

मैं यहाँ बिलकुल स्वस्थ और प्रसन्न हूँ। और माता जी अच्छी तरह हैं। और सब भी कुछ न बुरा है।

मेरे शोभ्य सेवा लिखें।

आपका निर्भीक

बीनेन्द्र कुमार

२५

पहाड़ी धीरज विजयी

२६ जून १९३१

आप जी

आपके पत्र का जवाब मीने परसों दिया है या नभ। मिला होया। ‘बाल-यन’ वाली कहानी कम ही खाना कर चुका हूँ। आप ‘यवन’ की आलोचना लिखता था कि लक्ष्मणार बाबपेयी का बहुत-बहुत अनुरोध का पत्र था पहुँचा।

भारत' के लिए कहानी चाहते हैं। क्योंकि ऐसी घामाचमा मिल मुझे है जो मेरे बहुत अनुभूत न थी इसलिए भी उनके अनुरोध को मानना जरूरी हो गया है। कई बार और न समझे। इसलिए अब वहीं मिल रहा हूँ। यह इसलिए था कि मिलता हूँ कि घात 'भारत' में कहानी देखकर मुझे उताहना न दें। कल घातकी घामाचमा घोर फिर जरूरी हो कहानी मिलेगी। 'भारत' में घात हिन्दुस्तानी एकेडमी की पुरस्कार सूचना भीक पाई। 'परल' और नये जयते हुए सब 'बातावन' की बचावरक प्रतिगी बचास्वान मेजने के लिए बम्बई मिल रहा हूँ। मुझे विश्वास है, यह मेरा दुस्साहस नहीं है। 'बातावन' खरते ही घातके पास घायला। पत्नी ही कप जायगा।

विरोध कुत्सल है।

विनीत
जैनेन्द्र

२६

रिड्गल कैल, लाहौर
१९ जुलाई १९३२

बाबू जी

घातका पत्र मुस्तान में मिला था। क्याल का कि बचाव हूँ तो कहानी के साथ हूँ। कहानी जो शुरू की थी शुरू करते न करते छूट गई। और अब घातका पत्र घाया सब उन कुछ मिले पत्तों का भी पता न चला। दूसरी कहानी का बड़ी कहानी दूसरी बार मिलने का फिर न मन हुआ न मिला हुआ। यह भी ध्यान हुआ कि क्या आर्किनेस सब गया है, और अब घातका बिसेपाक क्या निकलेगा। क्या बिसेपाक निकल रहा है? और क्या उसमें कुछ देर है? सूचना मिली और थक निकलता हुआ और उसके निकलने और घातके पत्र में काफ़ी से कम बचत भी हुआ तो भी यहाँ से कहानी धवरम भेजीया। यहाँ मुस्तान जैसा बमबट नहीं है।

१३ ता० को मैं यहाँ घाया। राजनैतिक कैदियों को रिहाई की दिशि निकट घाते ही यहाँ भेज केते हैं, मुस्तान में रिहा नहीं करते। जो मेरी दिशि घटाराह है पर बुमनि का और बेड़ महीना यही काटना होया। सामान कुर्क करके बुमनि बसूल कर लिया जाय तो बात हमरी पर इसकी घाता कम है।

घातका 'कर्मभूमि' मिलना ही गया? जल्दी देखने की जतनता है। घातको

जाननेवाले हर जगह मिल जाते हैं। पर कठिनों से दूर-दूर से ऐसा जानते हैं कि यमार्ज ही आपकी जाननेवाले किसी को सामने पाकर उन्हें हृदयमय विस्मय होता है। तब आपके प्रति उनके धार्मिक भाव का कुछ प्रतिबिम्बित भंस्त प्रताप उस जागृकार को भी जाना होता है। इस पर उसे यह भी होता है, अच्छा भी। मुक्त धारर क्या मुक्त है मुक्त है इसलिये क्यों अच्छा नहीं? पर, मुक्त है इसलिये वह कठिन है, भारी जयता है। ऐसे ही एक महाशय अपना मिठाया और काष्ठ पेश करके हुज्जत मुझे आपके यह पत्र लिखता रहे है। तबमुक्त है बन्धन में है और आपको जानने के मेरे शीमाय के बर्धाई-स्वरूप मेरे प्रति अत्यन्त सेवोद्यत हो गये हैं। मुझे सिखाते हुए अपने पत्र में ध्यान उन्हें प्रवरम पार करें। जेल में निश्चय ही मीठा है और मैं जानकी लिख पड़ रहा है इसका समाप्त भय उनको है।

अब ध्यान योग में रहते हैं या शहर में मरान में मिया है? दोनों अच्छे कहाँ है? शहर में ही रहना होता होना उन्हें तो। अगर 'हृद' बंद है तो क्या ध्यान गया कुछ नहीं लिख रहे?

'मेरी मेरुमीन क्या अपना धारम्भ हो गया? और मैंने 'स्पर्श' कहानी टीक करके राम साहब को मित्रबानी भी बनाकि उन्होंने मुझे एक बार सानु रोष कहा था। क्या वह उन्हें मिल गयी? पुस्तकाकर धरम सृष्टि कीविए। क्योंकि इस काम के लिए एक धारमी की तत्परता के बिहान पर निर्भर करना हुआ था।

और कुछ समाचार और साहित्य समाचार लिखिए। की हृपापन मिन की जिस किताब का विक्र किया था वह भेज सकें तो धरम भेजें। लिखे सब ठीक है।

आपका
जीनेन्द्र

२७

सरस्वती मेड, काशी
१३ अगस्त १९१९

प्रिय जीनेन्द्र

मुझ्हा पत्र कई दिन हुए मिला। मैं धारा कर रहा था बेहती पहाड़ी और से था रहा होना पर भावालाहीर से। और माहीर मुम्तान से कुछ कम है। उधरे कई दिन पहले मुम्तान मैंने एक पत्र भेजा था। शायद वह गीट कर था

पया हो। घण्टा मेरी गाथा सुनो। 'हंस' पर जमानत लगी। मैंने समझ था आर्जिनेस के साथ जमानत भी समाप्त हो जायगी। पर नवा आर्जिनेस का पया और उसी के साथ जमानत भी बहाल कर दी गई। जून और जुलाई का बैंक हमने धावता शुरू कर दिया है। पर मैंनेवर साहित्य जब नवा डिक्लेरेशन देने गये तो मजिस्ट्रेट न पत्र जारी करने की आज्ञा न भी जमानत मानी। अब मैंने पब्लिशमेंट को एक स्टैटमेंट सिद्धकर भेजा है। अगर जमानत छठ गई तो पत्रिका तुरन्त ही निष्पन्न जायगी। अब कट, छिनकर तैयार रखी है। अगर आज्ञा न भी तो समस्या टेढ़ी हो जायगी। मेरे पास न रुपये हैं न प्रामेसरी नोट न सिक्कीट्टी। किसी से कर्ब लेना नहीं चाहता। यह शुरू सात है, बार पाँच सौ बी० पी० बस्ते कुछ रुपये हाथ आते। लेकिन यह नहीं होना है।

इस बीच मैंने 'जागरण' को संभाल लिया है। 'जापरख' के बारह बैंक निकले लेकिन बाह्य संस्था को ही से आगे न बढ़ी। चित्तपन तो व्यास भी ने बहुत किया लेकिन छिन्नी बजह से पत्र न चला। उन्हें उस पर समय पड़ूँ ही का बाटा रहा। यह सब बंद करने का रहे वे। मुझ कोसे यदि आप इसे निकालना चाहें तो निकालें मैंने उसे ले लिया। साप्ताहिक रूप में निकालने का निश्चय कर लिया है। पहला बैंक जम्मावटमी से निकलेगा। तुम्हारा इरादा भी एक साप्ताहिक निकालने का था। यह तुम्हारे लिए ही सामान है। मैं जब तक इसे चलाता हूँ फिर यह तुम्हारी ही चीज है। पत्र का प्रभाव है। 'हंस' में कई हजार का भाग चला चुका हूँ। लेकिन साप्ताहिक के प्रलोभन को न ठोक सका। कोशिश कर रहा हूँ कि सबसाधारण के अनुकूल पत्र हो। इसमें भी हजारों का बाटा होना। पर एक क्या। यहाँ तो जीवन ही एक सम्भा बना है। यह कुछ कम जायगा तो प्रेस के लिए काम की कमी की शिकार मत न रहूँगी। अभी तो मुझे ही पिछना पड़ा लेकिन सामग्री होने पर एक सम्भावक रख लूँगा। अपना काम कर्म एडिटोरियल लिखना होगा।

तुम्हारी कहानी 'स्पष्ट' अब रही है। राय साहित्य अबका रहे है। 'मैग्सेमीन' भी छपवानेवाले है।

'कमजुमी' के तीस प्रश्न अब चुके हैं। अभी करीब छ प्रश्न बाकी हैं। 'हंस' में हाथ लगा दिया। प्रेस को व्यवस्था न मिला। इसलिये अब तक पुस्तक तैयार न हुई। अब उसे जल्द समाप्त करता हूँ। सबसे पहले तुम्हारे पास मेरी जायगी और तुम्हारे समस्तानुप्य फैसले पर मेरी कामयाबी का नाकामी का निर्णय है। दो कहानियों के छोटे-छोटे संवाद और आते हैं। प० इलाहाबाद मिथ की 'ध्याम' भेज रहा हूँ। संभव हो तो इसकी प्रलोचना करना। अब मैं शहर में रह रहा

हैं। सड़के पड़ने वाले हैं। मैं भी प्रेम में बनी-बान बड़ी के लिए चला आता हूँ।

जिन भाई का आपन अपने पत्र में डिक्र किया है उन्हें भरा बड़े प्रेम से बंदे कहिएगा। भरे हृदय में उनकी सच्ची शपथामना है। उनका नाम न लिखता। मैं अपना नया उपन्यास उनके पास भेजूँगा।

श्री श्री आनन्दमित्र मरस्वती का पत्र आया। उन्हें मध्यप्रान्त और स्वाति-मर की माहित्य समाधों की ओर से 'भावना' पर पुरस्कार मिले हैं। 'भावना' है भा तो अच्छी चीज।

इधर प श्रीराम शर्मा का 'शिकार' स्वामी मरस्वती जी की कहानियों का संग्रह, डा० रत्नाप्रताप टाकुर को 'पोखरी' धारि पुस्तकें निहली हैं। का बुन्दा बनमान जी का 'कड़वीचक्र' मैंने बड़े ठीक न पड़ा। लकिन पढ़कर मन छीका हो गया। कही कभी नहीं मिली न चुन्की न कटक। शान्त मुझमें भावसूच्यता का दोष है।

और तो सब कुछ है। ईश्वर ने प्रामना करता हूँ कि तुम सुखी रहो।

तुम्हारा मन्ना भाई—

बनपत्रपत्र

२८

मरस्वती प्रत काशी।

७ दिसम्बर १९३२

जिन जैनेन्द्र बन्दे।

आइ मिला का। मरस्वती प्रेस और 'आमरण' स २६ १०-१२ को 'उमका धंठ नाम की कहानी के बंड में वो हज़ार की जमानत मांगी। बहुत परेशान हुआ भागा हुआ लखनऊ पहुँचा वहाँ Chief Secretary से मिलकर कहानी का धाराय समझना और भी अपनी Loyalty के प्रमाण दिये। अब धारा है जमानत समूह हो जानगी। जरा-अपनी बात में मरल पर घुरी चल जाती है।

'कममूमि' तुम्हें बहुत घुरी नहीं मगी हमने कुरी हुई। इसकी कहीं धापो बना कर दो।

तुम्हारी परशानियों की कहानी पढ़कर बड़ी चिन्ता में हूँ। इस माम में कुछ भेजूँगा जकर। 'आमरण' बड़ा फेद है और 'हम' ऐसे खाने में रोग।

बच्चों को धारावाहिक।

मप्रेम

बनपत्रपत्र

सरस्वती प्रसन्न काली ।

१० जनवरी १९३३

प्रिय जीर्णेश

प्रेम । पत्र मिला । छोटे लिपि की बीमारी की बुरी खबर सुनी है । सर्वो यहाँ भी जोरों की है । दिल्ली का क्या पूछना । ईश्वर उसे जल्द भस्मा कर दे

पं० बनारसीदास भी यहाँ रविवार को था रहे हैं । माकनसाल की फ़्त यहाँ घायल है । तुम्हारी कहानी मैंने कहीं नहीं देखी । यहाँ प्रसाद भी थे उस पर मेरी बातचीत हुई । एक वन तो उसे प्रवेश ही बसने दी कहेगा । वह सोम उसी दल में है । मैंने समझा यदि कोई उस पर कुछ मिलेगा तो उसका क्या किया जायगा । अपनी तरफ़ से माहक क्यों तुम्हें बड़ा किया जाय ।

हाँ मैं भी चाहता हूँ परन्तु पर कुछ निश्चिन्ता है । मुझे आलोचना नहीं करनी पड़ती । यहाँ आलोचना के लिए (बनारस प्रसाद और त्रिभू) सबसे अच्छे हैं । वह परीक्षा में सगे हुए हैं और तो मुझे कोई आलोचना नहीं दिखता ।

‘कमधूमि’ की आलोचना अब निकलनी चाहिए ।

सुमित्राकुमारी भी को बचाई तो वे भी थी । ‘इस’ में आलोचना कर रहा हूँ ।

स्वने नहीं आ सके मगर वो एक दिन मैं प्रवेश ही आदोंगे । हजारों रुपये बाकी पड़े हुए हैं, लेकिन अब तक अपने हाथ में न आ पाएँ क्या कहा जाय ? शिवपूजन प्रयास है । ज्यों ही आदोंगे कहानी में सुँबा ।

और सब कुशल है ।

तुम्हारा—

जनपदपद

सरस्वती प्रेस,

१७ जनवरी १९३३

प्रिय जीर्णेश

आलीबाब । तुम्हारे दोनों पत्र मिले । उसके वो दिन पहले मैंने एक कहानी ‘मास्त’ के लिए लिखी थी । बड़ी मनमूह कहानी लिखनी । कुछ रही तरह का

उसका विदम था ।

बच्चा क्या गया । सत पड़ते ही पड़ने लगे कसेबा सप्त हो गया लेकिन फिर मन शांत हो गया । वही जीवन क कड़वे अनुभव हैं । इन्हें जैसे जामो तो मख कुछ सरल हो जाता है । फिर रोमें भी तो जिस के समाने ? कौन देखनेवाला है ? किसी को करना समझें क्यों ? करना देखल करने ही के लिए समझो कि उनके प्रति हमारे कर्तव्य है । बाल-बाल तो मैं जानता नहीं । ऐसे माताओं से कसेबे पर धार भगता ही है । लेकिन लगना चाहिए नहीं । तुम रोमें नहीं इसमें मेरा भित बहल शांत हुआ । तुम यही होते तो तुम्हारी पीठ झेंकता । वही तो पीछा के धक्कर है ।

मयबनी और माया भी जो बहुत समझना । देखियों का हृदय कोमल होता है । बच्चा उसके संग का एक भाग-सा था । हाथ ही उसी क झगड़ों में लप जाती थी । सब उन्हें विठना सुना-मूना लगता होया । माया भी ने दुनिया के मुल-मुल देखे हैं । उनको मैं क्या समझाऊँ । लेकिन मयबनी मैं कर्तुया धय से काम लो । बच्चे को तुमने पाना-पोसा फिर भी वह तुमसे कठ कर बचा गया । उसकी स्मृति क्या उसमें कम प्यारी है ? मैं तो समझता हूँ वह और भी प्यार हो गया है, समझो कि धन तुम्हारी पोट में कम रहा है । बल्कि तुम्हारे हृदय के धरर है । कही पया नहीं भीतर जो बीटा है सब बाहर की धर्म लगी रोग व्याधि का इन पर कुछ धमर न होगा । फिर क्यों रोते हो ?

अनुबेरी भी धामे थे । दो दिन लूब बाणें हुए । प्रसार भी स भी मेट हुई । मैं समझता हूँ उनमें बहुत कुछ खड़ा हो गयी है । कहानी के बिच में मेरी उनसे बातचीत हुई मैंने उन्हें समझाने की चेष्टा की । वह अपनी तरफ से धके रदे । लेकिन उन इधर उधर भेजकर एक झगडा कहा करना उन्हें भी पमल गयी है ।.....

बैठ मे सोच दपये भेजता हूँ । रुपये मँपवाने में डाक का समय निकल गया ।

धमी निरपूजन छाया भी कर से नहीं लीटे । धाने ही कहानी मे लूया ।

मुरजल भी एक छिन्न कम्पनी में धा लो दपये पर लीकर हो गये ।

और तो सब मुशक है ।

तुम्हारा—

बनपतराय

२१

सरस्वती प्रेस
४ मार्च १९३३

प्रिय जीनेन्द्र

मेने कई दिनों में तुम्हें पत्र नहीं लिखा । कोई बात लिखने की ऐसी भी नहीं । तुम्हारा लेख सिद्धपूजन सहाय जी से मिल गया और जप भी गया मगर मैं बहुत लज्जा-सा । मेरा लेख भी इतना ही बड़ा होगा ।

तुम्हारा उपन्यास चल रहा है, या प्रारम्भ करने जवा ? मैं समझता हूँ अब तुम हर तरह से स्वस्थ हो ।

तीन बार दिन इसाहाबाद रहा और (जहाँ) तुम्हारी कृप बर्बा रही । इंडियन प्रेसवाले तुम्हें पत्र लिखेंगे ।

बुन्दू की अम्मा की किताब को भूलना नहीं । तुम्हारा (लिख देना) ही उन्हें आसमान पर बढ़ा देगा ।

और तो गई बात नहीं ।

तुम्हारा—
बनपतराय

तुम अपना ठीमिया यहाँ छोड़ गये जिससे बड़ा बेह पोछता है ।

२२

सरस्वती प्रेस बनारस ।
६ मार्च १९३३

प्रिय जीनेन्द्र

पत्र मिला । मैं सागर गया था । कम शाम को बीटा हूँ । बेटी के बातक हुआ पर चौथे दिन उसे ज्वर आ गया और प्रभुत ज्वर के लक्षण सामुम हुए । यहाँ तार धामा । हम दोनों प्राणी भागे हुए गये । मैं तो सीट धामा तुम्हारी माँ की धम्मी बड़ी है । 'हंस' निकल गया । कम खाना होगा । सब की बड़ी देर हो गयी । तस्वीरों का इंतजार था । तस्वीर तो न आयी देर हो गई । यह सुन कर कुरी हुई कि 'रंजनी' वालों से तुम्हारा मामला हो गया । बड़ी धम्मी बात हुई । मगर भाई 'हंस' को महीने में एक गोटी न भागे तो बेचारा जियेगा

कैसे ? यह प्रश्न भी बिना तुम्हारी कहानी के गया ।

धीरे धीरे सब कुछ है । 'बाग़रछ' सभी एक जगह नहीं हुआ बिखर रहा है ।

मनमंती को मेरा बातीबान कहना धीरे महारमा भी को प्रखाम । किसी को प्यार ।

तुम्हारा —
जनपदरम्य

२३

प्रिय जैनेन्द्र

सरस्वती प्रेस,
१७ मार्च १९३३

कई सेल आलोचना धीरे पत्र मिले । मनमंती । तुम्हारी कहानी धब के चकर रहे ।

पुस्तकों का हाथ न पुछो । प्रेम की बेदी' धीरे 'फाँसी' का महीनों से निता-पन हो रहा है, पर मुश्किल से सब बाहर आये होंगे । यह हाथ है पुस्तकों का । एक एजेंट रखा है, पर वह निश्चय है पाठ्यक्रम धीरे नामों की पुस्तकों की माँग अधिक है । 'फाँसी' वहाँ किसी बुकसेलर को बुकान पर रख दो कुछ न कुछ बिकती रहेगी । आजकल पुस्तकों का बाजार ठंडा है । सतत शास्त्र कुछ बिकता है या वह जिससे जीवन का कोई प्रश्न हल होता है ।

दैनिक 'बाग़रछ' के विषय में मैं सबसे अधिक धीरे कुछ नहीं जानता कि वह लोग उद्योग कर रहे हैं । क्याबा परबाह भी नहीं है ।

कमला को प्रसन्न कर है । तुम्हारी धम्मा धमी नहीं है । एक जगह से मामूय होता है हाथ धाँची है, दूसरा पत्र आकर बिम्बा में काम देता है । पि० किसी तो सब स्वस्थ है । मैं समझता था महारमा भी आ गये होंगे । मनमंती को यहाँ सेजाने ? एक-दो महीना हमें जीवन से दो । मगर तुम सोचोये यहाँ क्या होगा ? सारा स्वामी है ही । कहानियों की सेल तो आजकल बहुत कम है । मेरी बीच कहानियाँ पड़ी हुई हैं, छापने की हिम्मत नहीं पड़ती । सभी तो 'मैथिली' भिन्न सने दो । कहानी धरम्य । मैं आज तैयार हो गया । मैं का मैं मे । किसी सारी की बात है ।

तुम्हारा —

बनारस सिटी,

१० जुलाई १९३३

प्रिय जीनेन्द्र

आपसबधर्ष । मई बाह ! मानता हूँ । बून गया बुलाई क्या और बगस्त का मैटर भी बालेबाला है । बुलाई बीस तक निकल आया । लेकिन हथूर को पार ही नहीं । क्यों पार आये । बड़े आसानी होने में यही तो ऐब है । रुपये तो सभी कहीं मिले नहीं । लेकिन यस्त तो जिस ही गया है और यस्त के घनी बन के घनी से क्या कुछ कम समकर और मुलककड़ होते हैं ।

अन्धा हिस्सगी छोड़ो । यह बात क्या है ? तुम क्यों मुझसे उने बैठो हो ? न क्हानी मेकते हो न क्खत मेकते हो । मैं तो इधर बहुत परेशान रहा । पाव नहीं आता अपनी क्वा कह चुका हूँ । बेटी के पुत्र हुआ और उसे प्रसूत ब्बर ने पकड़ लिया । मरते-मरते बची । अभी तक बचमपी-सी है । बच्चा भी किसी तरह बच गया । पाव बीस पिल हुए यहाँ आ गयी है । उसकी माँ भी बो यहीने उसके साथ रही । मैं अकेला रह गया था । बीमार पड़ा, दाँतों ने क्खट दिया । महीनों उसमें सप सपे । बस्त आये और अभी तक कुछ न कुछ शिकायत बाकी है । दाँतों के बर्द से सी गला नहीं छूटा । बुढ़ापा स्वयं रोय है और बाब मुझे उसने स्वीकार करा दिया कि अब मैं उसके पंजे में आ गया हूँ ।

काम की कुछ न पूछो । बेहूषा काम कर रहा हूँ । क्खानियाँ केवल दो लिखी हैं, उर्दू और हिन्दी में । हाँ कुछ अनुबाब का काम किया है ।

तुमने क्या कर डाला अब यह बताओ ? 'रंजभूमि' से क्या रहा ? लिखा जाता है या नहीं ? कोई नयी चीज क्वा आ रही है ? बच्चा कैसा है ? भयमती बेबी कैसी है ? माता बी कैसी है ? महात्मा बी कैसे हैं ? चाँची बुनिया लिखने को पड़ी है, तुम आमोस हो ।

'सरस्वती' में यह नोट तुमने देखा ? पाव पं बनारसीदास जी के पत्र से मानूम हुआ कि यह शास्त्री जी की क्या है । ठीक है । मैं तो जेर बुढ़ा हो गया हूँ और जो कुछ लिख सकता था लिख चुका और निर्भो ने मुझे आसमान पर भी बढ़ा दिया । लेकिन तुम्हारे साथ यह क्या व्यवहार । भयमतीप्रसाद बाजपेयी की क्खानी बहुत सुंदर को और इन अतुल्य को क्या हो गया है कि 'इस्ताम क्वा बिल-बुब्' लिख डाला । इसकी एक भासोचना तुम लिखो और यह पुस्तक मेरे पास भेजो । मैंने अदुर्बेहो जी से प्रस्ताव माँगी है । इस कम्युनल प्रोग्रेस का जोरों से

मुकाबला करना होगा और यह ज्ञापन भले पाठवी भी इन बातों से बन सकता
जाता है।
यही एक कवि-सम्मेलन रूप हुआ। साथ हुआ है। शीघ्र पत्र लिखो।
कहानी पीछे भेजना।

३३ / जीनेत्र

गुम्हाप —
धनपतराय

२५

प्रिय जीनेत्र
गुम्हारा पत्र मिला। (बच्चे) का हाम मुगकर पिता हुई। अब तो अच्छा
हो रहा होगा। अगर मैं भी स्वस्थ नहीं हूँ लेकिन काम किये जाता हूँ।
आजकल हिन्दी में आजीन बाबली है। जिसकी पुस्तक की बुरी आलोचना
कर दो वह लड़ने पर तैयार हो जाता है। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कहानी
और उपन्यासों की आलोचना करना ही छोड़ दूँ। जिस की तारीफ़ कर सकूँगा
उसकी आलोचना करूँगा जिसकी तारीफ़ न कर सकूँगा उसे फिर से रस दूँगा।
'सरस्वती' ने दो बह (लेख) छापा ही या अब 'मुन्ना' और 'माबुरी' भी लिख
दिया करते जाते हैं।
पुस्तकों की बस्त बहुत कम है। फिर भी 'घञ्ज' की भी पुस्तकें मिलवा
देना। 'हस्त रेखा' की आलोचना अच्छी हो दो करवा देना।
बच्चा अच्छा होगा। गणवती को आशीर्वाद कहना। बेटी अच्छी है और
सभी बने जा रहे हैं।

सरस्वती प्रस,
१ अगस्त १९३३

गुम्हारा —
धनपतराय

२६

प्रिय जीनेत्र
गुम्हाप पत्र मिला। हाँ भाई गुम्हारी कहानी, आभार
आभार का आभार
१ सितम्बर १९३३

सितम्बर में तुम्हारी धीर प्रत्यक्ष भी की दोनों ही जा रही है। बुलाई में प्रतिकारी की माँ नाम की कहानी 'हंस' में धीर भी उस पर सरकार ने जमानत की प्रमकी दी।

आमकन इसकी मयी है कि समय म मही आता काम कैसे जमेगा। मजदूरों को बेतन बुकाने में कठिनाई पड़ रही है। इसलिए तुम्हारे पास कुछ न भेज सका। जिनके जिम्मे बाकी है वह साँस ही नहीं लेते। हमने मिलते ही मझापीर के काम के लिए भी रुपये भेज द्या और तुम उन्हें लाठीच कर देना कि मेरठ और बोलीन राहों का दौरा करते और एजेंटों से बातचीत करते हुए आओ। यहाँ आने पर मैं उन्हें विहार की ओर भेजूँगा। 'मेल्बोर्न' तुम्हारे आदेशानुसार कार्यालय में पहुँचे ही सवाये देता हूँ।

मेरा भी इतने छोटे से काम में हार नहीं मानना चाहता। 'आमरण' जब तक नज़ा देता यदि मैं 'हंस' और मुँदर निष्कास सकता इसकी सामग्री और सवर बना सकता इसमें दो-आर बिजु दे सकता। लेकिन जब का काम जब समय से मेरा पड़ेगा। मैं चाहता हूँ कि तुम यह समझो कि मुझी यह पत्र निष्कास रहे हो और इसके मुकदमा म नहीं मके में जी उत्तम ही शरीक हो जितना मैं। मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ कार्यालय इतना सम्पन्न हो जाये कि हमें किसी प्रकारक का मुँह न दखना पड़े। हम दोनों मिलकर इसे सफल न बना सके तो खेद की बात होती। 'स्टेटसमन्त' 'नेशनल काम' और जितने ही पत्रिका पत्र वहाँ मिल सकते हैं उनमें से Informative सामग्री भी जा सकती है। दो बार नोट लिखना मुश्किल नहीं। हाँ इच्छा होनी चाहिए। मैटर बख्शा जाने पर इस पर बनता की निमाई जमेगी। म एक पृष्ठ बिजु के देने की फिक्र में भी हूँ। पुस्तकें लगातार लिखते रहना अपने मन की बात नहीं है। कभी-कभी महीनों काम नहीं होता और न पुस्तकों से इतने रुपये मिल सकते हैं कि उन पर depend किया जा सके। यह भी तो चिन्ता रहती है कि कोई कठपट्टी बिल न मिल दी जाय। समाचारपत्र तो बूझा है। एक बार जब निकले तो उसने बाड़े परिषद में धामरणी हो सकती है और जब पुस्तक भी मिली जा सकती है। यह (ठीक बात) है कि मेरी उम्र एक नय व्यवसाय में पड़न की नहीं है, लेकिन मैं उस को और स्वस्थ की बाधक नहीं बनाना चाहता। तुम कम से कम दो कासम का एक लेख व्यवस्था दे दिया करो। किसी मामले पर टिप्पणियाँ करना चाहो तो वह भी बैरंग बहुस्वत एक मुझे दे दो।

समाचारपत्रों की धामरणी का बारोमशर निजापनों पर है। मैंने बिड़ला से मित्रों को कहा था। अपनी सरकार से मत निभी मरी सरकार से मिलो पत्र रिलायो

उनकी बर्बाद करो। और उनसे औरत तो कुछ माँगते नहीं। बिनापन गिना देने का अनुरोध करो। यह कह सकते हो कि इस पत्र को बाग हो रहा है, और बोझ से सड़ारे से यह बहुत उपयोगी हो सकता है। उनके पास कई मिलें हैं। एकाद पृष्ठ का बिनापन उनके लिए तो कुछ नहीं है। लेकिन मेरे और तुम्हारे लिए यह बावग अपने महीना का सहारा है। आई, यह ससार तुम्हारे से राममरोमे बैठनेवालों के लिए नहा है। यहाँ तो अंत समय तक (अन्ता) और लड़ना है। उनसे कुछ मदद पा सकते हो। यहाँ अब और मेरे जैसे शर्मिले घासमियों का गुबारानही। उनके लिए तो कोई स्वागत ही नहीं। तुम अपने में यह ऐब न धाले दो। है भी नहीं। मैं तो कौनी दाम का नहीं हूँ। अलवार निकालना मेरी (हठबर्मी) है। कुछ (बिही) हूँ और हार नहीं। मानना) बाइठा। बेटी करता तो उसमें भी इसी तरह बिमटता।

महाँ बर्पा कम हुई। बर के और सब सोच मजे में है। रिसेप तो अच्छा है। भदबठी से मेरा घासीबाई कहना।

मकरीम

बनपतरान

२७

सरस्वती प्रेस

१ सितम्बर १९११

प्रिय जैनेन्द्र

पत्र मिला। कहानी फिर न भेजी। धून का अंक छप रहा है। चीन गिन के अंक कहानी का जानी चाहिए।

'बिनापन' देखा। अच्छा है। बेटी अच्छी हो रही है। तब गिन में यहाँ का आगरी। X X X तैयार हो रहा है। बड़े हफ को बाग है। क्या देखा? 'प्रेम की बेटी' की जिल्द बन रही है।

मोमवार को भेजा जायगा।

तुम्हारा —

बनपतरान

२८

सरस्वती प्रेस बनारस सिटी

२७ सितम्बर १९११

प्रिय जैनेन्द्र

तुम बिनाह रहे हमो कि पत्र क्यों नहीं लिखा। मैंने सोचा था मइबौर के

लिए बाहक सूची से एक प्रोवाम बनाकर कुछ रुपये के साथ पत्र लिखें। पर न सूची देखने का बखतर मिला न रुपये नहीं से धाये और मे एक सप्ताह के लिए प्रयाग जाता गया। वहीं से आया तो घर के लोग प्रयाग जाने गये। मैं प्रस न आ सका। 'बाई' के लिए एक कहानी लिखनी थी इधर-उधर के अंशु। रह गया। महाम्बीर या गये हैं। अभी मेरा विचार है उन्हें घासपास के शहरों में मेजने का। बाबा बाहर जाने का अय्यास हो बाबा तो सी० पी० बिहार की ओर भेजू। बाबा कल न जाने क्यों पुस्तकों की बिबि बंब है। बाबा धनमेर में जो मेजा समझाना है, उसके कारण वो एक $\times \times \times$ मिते है। 'हंस' का काशी बंक निकल रहा है। सितम्बर के बंक न फिर बेर हो गयी। बाबा अक्टूबर के पहले सप्ताह न जायगा। वो दिन के प्रेस बंब है। अमेव की यह कहानी बहुत अच्छी थी। उनकी कविताओं के विषय में यही यह राय है कि बाबा तो उत्कृष्ट है पर हाथ में बा हुपा नहीं है। लोग कहते हैं कविताओं में उनकी स्थानिर्वा और मधकाम्ब बढ़कर है।

वनपतराय

२६

बापराज कार्बालय,
२४ अक्टूबर १९५३

प्रिय जीनेन्द्र

मालूम नहीं महाश्वीर ने तुम्हारे पाम काई छत लिखा बा या नहीं यहाँ तो उनकी कोई खबर नहीं। जिस दिन यहाँ से गए उसके तीसरे दिन प्रयाग से लगे आया बा फिर कुछ न मालूम हुपा वहाँ से गए बा नहीं है। बाबा बीबीस दिन हो गए, कपड़े-लते सब यहाँ है। पुस्तकों को वह दिल्ली से लाए वे सब यहाँ रखी हुई हैं। बिबिज आदमी है। धनमेर ईश्वर न करे, कहीं बीमार हो गए तो एक मरक तो लिख देना बा। मुझे तो मालूम होता है वह सफन न हुए, और केर्म क मारे गुप सावे बैठे हैं। इस काम में सफन होने के लिए बड़े अनुभव और बेह बाई की जरूरत है और धायमी भी ऐसा चाहिए जो गर्मी-सर्दी झुल-व्याप्त सह सके। इतना बड़ा कार्बालय तो है नहीं कि अपने एजेंटों को अम्मा अमार्तस या अेतन दे सके और जितना वह दे सकता है उससे रोज परदेस में नहीं रहा बा सकता। होटल तो छोटे शहरों में होते नहीं और बखतर पुरियों पर मुआरा करना पड़ता है। महाम्बीर का स्वास्थ्य साधक इन दिक्कतों को न भ्रम सके।

तुमने कई बार रुपये के लिए मिला है। मैं दिस मघोसकर रह गया। जो कुछ ग्रामवनी होती है वह ऊपर उठ जाती है। बेसन तो पूरा नहीं पकता। काढ़ब के कई सौ रुपये बाकी पड़े हुए हैं। खर्च पाँच सौ रुपये महीने का ग्रामवनी क्रुस मिलाकर चार सौ रुपये से ज्यादा नहीं। मैं अपनी सामियों को समझ रहा हूँ। अपनी उम्तिमों को बेच रहा हूँ। पर यह धारा है कि शाबब कुछ होना। हिम्मत बाँध हुए हैं। इधर एक महात्म्य फिर एक लिमिटेड प्रकटेशन सब जोसने का निचार कर रहे हैं। मैं भी शरीक हो गया। कुछ लोगों ने हिस्से लेने का बचन भी दिया। मगर वह ऐसे शामब हुए कि कुछ पता ही नहीं कहाँ है। मरदूबर का 'हंस' कासी धक होना। मगर बीच काम का निकालना पड़ा और मरदूबर का धक भी उसमें मिलाता पड़ेगा। इन दोनों धकों से नाम में बम है। मगर प्रवा ऐसी चलती है कि मोटों के साथ बुबल भी पिसे जा रहे हैं। 'बाँद' और 'सरस्वती' बिरोबाक निकल सकते हैं। 'हंस' में बम नहीं है, पर फिर भी राहीवों में शामिल होना चाहता है। मैं सोच लिया है जनवरी तक और बेखूमा। मगर उस वक्त 'जावरण' कुछ डग पर न माया तो इसे बंद कर दूँगा। बी तो चाहता है कि 'हंस' का नाम बढ़ाकर पाँच रुपये कर दूँ और एक सौ पृष्ठों का निकालूँ और तुम उसका सम्पादन करो। मैं असग बैठकर पुस्तकें लिखूँ। ज्यादा काम मैं तो नहीं कर सकता। लेकिन शामब मेरी कामनाएँ सब यों ही रह जायेंगी। मुस्किन तो यह है कि ब्यवसाय में जितना मैं कच्चा हूँ उतने ही तुम भी कच्चे हो। बरना क्या बात है कि जपमचरख तो सफल हों और हम सोय असफल रहे। उपन्यास लिखता या वह भी बंद है। लेकिन अब ज्यादा प्रतीक्षा न करेंगे। जनवरी तक और देखता हूँ। तुम्हारी समाह न मानी बरना इतना बाटा क्यों सखता। लेकिन कोई काम बंद कप्टे बरनामी होती है और बही नाम हो रहा हूँ।

'हंस' का बिरोबाक निकल रहा है। शामब कुछ रुपये बच जायेंगे। उस वक्त जो भी कुछ हो सकेगा तुम्हारे पास भेजूँगा। मैं तुमसे सब कहता हूँ प्रेस और पत्रों पर मैं भर जा रहा हूँ। कुछ सेबों से कुछ रायस्तिमों से कुछ उर्दू पुस्तकों से अपना पुश्त कर रहा हूँ। लेकिन बहुत देर चुका अब यह तमाम बंद करेंगे।

पर मैं सब जोम कुतल से हूँ। 'कर्मभूमि' का जर्न अनुबाब बामिया मिलिमा से शामब निकल नाम।

और क्या लिखें। धारा है तुम प्रसन्न हो।

सप्रेम तुम्हारा

बदपवरण

प्रिय बनेन्द्र

तुम्हारा पत्र अनी मिठा। प्रमाण से तुमने क्या बात में पत्र लिखा था। बात यह है कि मैं कई दिन प्रेस नहीं आया काम प्रायः बंद था। सब सब काम ठीक हो गया है।

'आगरा' का भार मेरे सर से उतरा जा रहा है। यहाँ से बा० सम्पूर्णानन्द जी उसे भव-साप्ताहिक रूप में निकालने जा रहे हैं। जाता है दो-तीन दिन में सब बात तय हो जायगी। 'हंस' के भी सब तीन फार्म धीरे रहे गए हैं। अब यदि हम प्रेस को छ। रुपये की बी० पी० करें तो भय होता है कि बहुत से पत्र वापस आरें। इस प्रेस पर लगभग आठ सौ रुपये से अधिक खर्च हो गए। आगरा के प्राहक तो अब 'हंस' में मिलने से रहे 'हंस' के प्राहकों पर ही संतोष करना पड़ेगा। मगर एक इबार पाठकों में से बाधे निकल गए तो मुश्किल पड़ जायगी। इसलिए मैं फिर बुनिया में पड़ गया हूँ। प्रसाद जी की राय है कि 'आगरा' के आगरा का अर्थ-आसक्ति निकाला जाय और छ। रुपये बाम रखा जाय। इसमें तुम्हारी क्या राय है। यहाँ लोगों की राय में बिना किसी का पत्र नहीं मुश्किल से चलगा। कुछ समय में नहीं था रहा है। मुकमान से भी डरता है, सड़ने की शक्ति नहीं रही। अगर 'आगरा' मेरा पक्का धोड़ता है तो अभी 'हंस' रहे जायगा। उसमें भांडे से भीर पृष्ठ बढ़कर क्यों का क्यों निकालता रहूँगा।

बैसी तुम्हारी राय है बैसी ही मेरी राय है। मर्दान्ता की राय शायद ऐसी नहीं। वह तो बिना चाहती है। साहित्यिक पाठकों की संख्या इतनी है या नहीं जो हमारे पत्र का आधार करें इस विषय में बड़ा मतभेद हो रहा है। जो कुछ भी हो मैं एक सप्ताह के अन्दर निश्चय कर सकूँगा। इस विषय पर फिर जल्द ही लिखूँगा।

धन्यवाद

३२

सरस्वती प्रेस, बंगाल सिटी

१९ दिसम्बर १९३३

प्रिय बनेन्द्र

कल एक पत्र लिख चुका हूँ। प्रसाद जी के एक मित्र यह जानने के लिए

बड़े उत्सुक हैं कि 'बावपख' निकल रहा है या नहीं और यदि नहीं निकल रहा है तो क्यों? वहने थक में उठका कैता स्वागत हुआ? क्या उसके संघामक उसे निकालना चाहते हैं? अगर किसी कारण से वे न निकालना चाहते हों तो क्या वे उसके निकालने का अधिकार किसी दूसरे को देंगे?

हुआ कर के इसका जवाब लौटती बाक से देना। वह महाराज दिल्ली से एक पत्रिका निकालने की बात सोच रहे हैं और 'बावपख' मिस जाम तो उसे ही ले लेंगे।

अबदीप —

मनपराय

३२

सरस्वती प्रेस,

१५ दिसम्बर १९३३

प्रिय जैनेन्द्र

तुम्हारा पत्र कई दिन हुए मिला गया था। उसके पहुँचनेवाला इलाहाबाद का पत्र भी कारखानों में लौटने से मिला गया।

'बावपख' साबिक बस्तूर बन रहा है। बा सम्पूर्णानन्द को शायद उनके मित्रों ने मदद नहीं दी। धन में उसको बन्द करने की चिन्ता में हूँ। इसके पृष्ठ बटा दिने हैं। इस रूप में शायद इससे ज्यादा मुकसान नहीं है। फिर भी कम्बट तो है ही।

'हंस' की तुम्हारी स्कीम लखस जा रही है, और जो इस बन्द हालत में उसमें वह स्कीम नहीं मुश्किल से चलेगी। कागजवालों के काटने रुपये बाकी हैं और कोई (नयी) बात चलने की हिम्मत नहीं पड़ती। नयी स्कीम के धनुषार तुरन्त ही तीन हजार रुपये महीने का लक्ष बढ़ जाता है। पहले से पात्रों की कुछ कटौती नहीं गया और एक बार के कहने से कोई घरदार भी न पड़ेगा। बार-बार कहने की जरूरत है। इसलिए इन छ' महीनों में तो हमें जमीन तैयार करनी चाहिए। अभी मुझे कोई स्कीम पेश करने का मौह भी तो नहीं है। प्रस्तुत वर-मचम्बर का संयुक्त धन अभी नहीं निकला था वर-मचम्बर भी हो गई अभी पाँच-छ' दिन से कम न लगे। ऐसी दशा में पात्रों से सहानुभूति-सहयोग की धप्पा में नहीं करता। बाबे भी पी० नहीं लौट बाबें भय तो यह है। शायद शारोमदार भी पी० पर हैं। अगर हमने कुछ भोग्य हलका होगा तो फिर

साहस बड़ेया । बिसम्बर का घेड़ अधिक से अधिक इस तरह निकल देना चाहता हूँ । यह सब हो जान तो घरील से बाहर बहाने की बात बने ।

महावीर धमी पटने में है । उसने पुस्तकों के बांडर भेजे वे पर सब बाहर की पुस्तकें हैं और मिठनी ही यहाँ मिलती थी नहीं । और उन पर कभी-कान भी बहुत कम मिलता है । मैंने उनसे पूछा है क्या कमीशन का बचन है उनके हैं । बचान जाने पर पुस्तकें जमा करके भेजी जायेगी ।

'सिवासरन' के विषय में तुमने पूछा । बम्बई की एक कम्पनी से कुछ बातचीत की थी । उसी का यह तुम्हारे बीच दिया । उन्होंने मुझे बात ही पचास बांडर भी किया था । मैंने बात ही पचास ही बहुत समझ में कर लिया लेकिन कम्पने नहीं मिले ।

'कमसूमि' के अनुबाव के बार ही रुपये एक बुझासो प्रकाशन से ठग हुए थे । बीबानी के बाद रुपये भेजने का वायदा था । मगर वह भी रुप छाव गया । हा एत भी लिले जवान नदारत ।

और भी कई जगह से क्या मिलने की आशा थी । पर कहीं से कोई खबर नहीं है । इससे कोई Rocky काम करते और भी हिचकता हूँ ।

और तो कोई नई बात नहीं है । सट्टर पट्टर बना जाता है ।

सुभाष
जनपतराज

३३

बाबरल आकिल
१४ फरवरी १९१४

मित्र बीनेम

नहीं जानता तुमसे किन सज्जों में जमा माँयू और अपनी चुप्पी का क्या महला करूँ । काशी घेड़ निकलता बार ही बी०पी० मये एक ही पचाहत्तर बहुत हुए दो ही पचास बापस भाये । बस बधिया बैठ गयी । मेरा आशावा था कि तीन ही बी० पी० पकर बसूक होंगे । इस बापसी का नहींना वहकि काबज जाने को ठेक ही में कुछ तीन ही है सका । एक हजार पूरे उसके सर पर सवार है । 'बाबरल' के काबजबाने का भी एक हजार रुपये से कुछ ऊपर ही पड़ा हुआ । जो-जो बावें छोपी बी, वे सब वापस हो गई । ऐसी मात्ती हालत में क्या कोई प्रोबान बावूँ क्या कहें । तुम्हें मामूय होयारकुष दिनों से बीडर प्रेसबानों से इस सारे संकट को मिटा

बेने का प्रस्ताव था। बीच में वह प्रस्ताव स्थगित कर दिया था। पर जब ऐसी परिस्थिति सा पड़ी है तो अब इसके सिवा कोई राह नहीं है कि किसी तरह इस भय से बचा छुड़ाकर माप निकालूँ। सीडर को एक प्रस्ताव भिज भेजा है, वे वहाँ १८ को जानेवाले हैं। छाया करता हूँ कि उस दिन यह मामला तय हो जायगा। पहले इराधा था कि 'हंग' उन्हें दे दूँ और प्रसन्न करता हूँ। लेकिन सारी विपत्ति की वजह तो यह प्रसन्न है। न जाने किस बुरी साइत में उनकी बुद्धि माप पड़ी थी। दस हजार रुपये और ग्यारह सान की मेहनत और परेशानियाँ प्रकारब हा गयीं। इन्हीं प्रसन्न के पीछे कितने मित्रों से बुरा बना कितनों से बायदा देखने न पड़ा। मेरी जिन्दगी की यह सबसे बड़ी समस्या है।

महामौर प्रभाव ने कुछ दिखावें बची। (११०) माये भी व फिर पटना बापस गये और शहर कुछ हल-हलाम नहीं लगा। मासूम हुआ रिनीय के काम में लगी है। तीन छी की गयी दिखावें बुद्धिमानों को दे चुके हैं। बसूम भी कर पते हैं या वह भी बुरा है, राम जाने।

साहीर में मेरे लगभग ?) उठू दिखावों के बाड़ी व। बरखो के तकान के बार धम मासूम हुआ कि उनसे रुपये बसूम नहीं हो सकते। नासिर करने पर सायर कुछ निकले।

एक सुखखरी यही है कि सेवासदन का छिन्न हो रहा है। उस पर मुफ्त ७२०) मिले। अगर इस तंगी में वह रुपये न मिल जाते तो न जाने क्या दशा होती और ही जाने। लेकिन तंगी में जब कोई रकम हाथ आ जाती है तो वे सारी बख्तरों को मुँह दवाने पड़ी थी यकायक बीच मारने लगती हैं। किसी के पास रुपये नहीं हैं, किसी के पास बूटें नहीं हैं। किसी की लकड़ी की सारी के लिए कुछ देना चाहिए। वरन् वह रुपये दो-चार दिन में हवा हो जाते हैं। वही यहाँ हो रहा है। जहाँ में गुम्हारा भी बोझ-सा हिस्सा है।

सीडर से अगर बातचीत तय हो गयी तो मैं प्रस्ताव करूँगा कि वह तुम्हें 'हंग' का एडिटर बना दें। वे लोग इसे ज्वाला सान के साथ निकाल चकेंगे और तुम्हें अपने विचारों को कामकाज में माने का अवसर मिल जायगा। मैं एकान्त में बैठकर कुछ बोझ-बहुत लिख लिया करूँगा। इस अन्तर्गत में तो लिखना एक तरह से बन्ध ही हो गया। तब गुम्हारी पुस्तकें छट से निकलेंगी और सग पर रायस्ती मिलेगी।

और क्या लिखूँ। बापू विंग बम्बई रहा। प्रेमी भी से भिजा। उनके यहाँ भोजन किया। बेचारे बहुत बीमार थे। मर कर जिये। धम भी बड़ा

हैं। इसके बाद जो पत्र लिखूंगा उसमें यहाँ के development का पूरा वृत्तान्त होगा। मुबनेरवर की खूब लिखते हैं और साहित्य के रसिक हैं।

तुम्हारा—

जनपदपत्र

३५

सरस्वती प्रेस, बनारस सिटी।

१५ मार्च १९३४

प्रिय अनेक

पत्र लिखने ही का रज़ा था कि तुम्हारा जवाब मिल गया। मैंने X X X X जो जो पत्र लिखा था और जिस काम में उन्होंने स्वीम को मेरे सामने रखा था वह मुझे इस बख़्त से पसंद आती थी कि उसमें X X X की कोई परेशानी नहीं थी। बमा-अमात्मा काम था। केवल बिम्बेसारी मेरे घर से हट जाती थी लेकिन उनका जो जवाब आया है वह कुछ संतोष के भावक नहीं है। और मैं तो (इस काम) से संतुष्ट था गया हूँ और कोई सहयोगी लोग रहा हूँ। केवल साहित्यिक सहयोगी नहीं बल्कि कारोबारी सहयोगी भी। अगर तुम्हें साहित्यिक और किसी बिम्बेसारी या कारोबारी का सहयोग प्राप्त हो जाए तो मैं अपने घर से थोड़ा टाककर हट आऊँ। अगर वास्तविकता भी ग्री मिल जाए तो और भी अच्छा। बरता रही हूँ कि यहाँ से (आमकर) किसी पहुँच और वहाँ भी यही चेला रहे तो अच्छा हो कि नाटक आये।

देशबन्धु की बाले प्रोपोज़स को क्यों तुमने प्रसीकार कर दिया। अगर पत्रों (कागज) की छठों पर काम किया जाए तो कोई बख़्त नहीं कि हमें भोला हो। किसी की Personality से क्यों निम्न? हमें तो काम करने के लिए वह योग चाहिए। वह जहाँ से भी मिले उसे ले लो। देशबन्धु बिम्बेसारी है, इसने तो सन्देह है ही नहीं।

मीडिअलों ने धमी तक कोई जवाब नहीं दिया। यही २० तारीख उनके कैलेंडर की है। अगर माइकेल्स ने अनुकूल राय दी तो काम हो जाएगा। इसी लिए धमी एक मीने धर्मा का 'हंस' प्रेस में नहीं दिया। उनका जवाब मिल जाने पर 'हंस' प्रेस में जाएगा।

धर्मात्मक में बाक़तें जाने के सिवाय और कुछ न हुआ। हमारी स्कीम को लोगों से पसंद तो बहुत किया मगर उन दिनों यूनिवर्सिटी क्लब की और Old

Boys Association के जस्टे हो रहे थे। इससे कुछ बोलने का अवसर न मिला। उन लोगों ने जिस तरह मेरा स्वागत किया उससे मेरा चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। मुझे आश्चर्य हुआ कि वहाँ कितनी ही मुस्लिम लड़कियाँ परदा नहीं करती थीर वे सब मेरी गयी से गयी जर्बू प्रकाशित किया 'अबन' पक चुकी थी। मैंने पुनः धीर मोस्त जाया उन्ही के बस्तरखान पर धीर यहाँ आकर दो-तीन दिन बुरन जाणा पड़ा। धीर गया मिले, काम जाता जा रहा है। 'हंस के लिए कुछ लिख भेजो। अबर यहाँ से निकला तो दे दूंगा। प्रयाप से निकला तो वहाँ भेज दूंगा।

महावीर प्रसाद का कोई पत्र नहीं आया। बार महीने हो गये। कई टी की पुस्तकें इबर-उबर आत बी है। न कुछ पता सिखा कि मार बेहानी करता। कुछ किताबें पटने से आत बी है, कुछ कहीं। उन्ही किताबों के लिए पटने से वहाँ आत थे। यहाँ से प्रयाप गये थे। फिर पटने गये थे। बस्वी-बस्वी किताबें आता की लेकिन वह आमोश हो गये। रितीक एक तो बहुत अच्छा है, लेकिन कुछ अपनी जिम्मेदारी का जवाब भी तो होना चाहिए। मेरे कपड़े 'बाद' पर आते हैं, कुछ उनसे उकावा करता लेकिन अब उस्ते में उनका देनदार हूँ। तुम उन्हें एक पत्र लिखकर लाकौब कर दो कि वो पुस्तकें न निक सक्ती हों उनका हिसाब लिख भेजें। हिसाब बड़ा मोलमान है। १) से उमर की पुस्तकें उनके पास होंगी। आता भी कुछ उमर से आयेगा तो कागज का बिल कम होमा मबर ब्यर्थ।

आजपत राय को मैंने छठ सिखा। उसने जवाब नहीं दिया। मैंने यहाँ तक सिखा था कि थोड़ा-बोड़ा बे बी लेकिन अब कोई पत्रों का जवाब ही न दे तो क्या किया आत। अगर तुम जाओ तो पत्र लिखाकर उनसे साफ-साफ जवाब सेना वह किस तरह सज्जद आहूते हैं। ८ ७ का मामला है। यहाँ मेरे सर पर ऊब है धीर वहाँ एक-एक आसानी इतनी-इतनी रकमें बचाये बैठ है। जमा वह मही आहूता है कि हम लौम अवामत में आमने-सामने खाड़े हों। आता आदमी छत का जवाब नहीं देता। मजबूर होकर रजिस्टर्ड नोटिस देना पड़ेगा। टोप कुरान।

कुम्हार—

बनफ्टराय

हंस प्रामिस,

१० अप्रैल १९१४

प्रिय बीनेज

तुम्हारा पत्र येन इन्तजार की हासत में मिला। तुम्हें सप्ताह करने की एक बात बक्यत था पढ़ी है। यमोन बताऊँगा। जब धामोने लमी इस विषय में बातें होंगी। मगर जब तुम्हें क्यों Bazaar की हासत में रजू। बम्बई की एक फ़िल्म कम्पनी मुझे बुला रही है। बतन की बात नहीं बट्टी की बात है। ५ ०) सल। मैं उस प्रस्ताव को पहुँच गया हूँ जब मेरे लिए हों के सिवा कोई उपाय नहीं रह गया कि या तो वहाँ जाता जाऊँ या अपने उपन्यास को बाजार में बेचूँ। मैं इस विषय में तुम्हारी राय जाननी समझता हूँ। कम्पनीवाले हावरी की कोई फ़ैर नहीं रखते। मैं जो चाहूँ लिखूँ, वहाँ चाहूँ लिखूँ उनके लिए बार-बार चीतरियो तैयार कर हूँ। मैं सोचता हूँ क्यों न एक साथ क लिए जाता जाऊँ। वहाँ सल मर रहने के बाद कुछ ऐसा कट्टी कर लूँगा कि मैं वहाँ बैठे-बैठे तीन बार कहानियाँ लिख दिया कर और बार-बार हजार रुपये मिल जाय करे। उससे 'आगरख' और 'हंस' दोनों मने से बनेंगे और पैसों का सफ़ट कट जायगा। फिर इमाने लोगों की नीचे बड़से से निकलेगी सेमिन तुम यहाँ या जाओगे तो कठई राय होगी। धमी तो मन बोझा रहा हूँ।

तुम्हारी स्कीम मुझे बिलकुल पसन्द है। जब पसंद है। लीडर से बनाव मिल गया वे लोग हिम्मी काम का नहीं बड़ाना चाहते। उनके बनाव के इंतजार में अप्रैल का 'हंस' २२ तक रुका रहा। २३ को बनाव मिला तब लेख बुटने गए और सब बनाव और मई का 'हंस' एक साथ छप कर १५ २० मई तक रवाना होगा।

लीडरवालों से बात बीत इस साधारण पर की कि 'हंस' का और पुस्तकों का मूल्य जोड़ दिया जाय और उसने हिंसे मुझे लीडर कम्पनी में मिल जायें। 'हंस' के लिए मैंने जो इतबार माँगे थे हालाँकि इस पर मैं ०) में ज्यादा रोज़ कर चुका हूँ। पुस्तकों का मुद्रामला साठ है। पुस्तकों की घसली भावत निदान लो जाय। 'आगरख' की बनाना भूल हो तो इसे बनाया जाय। घसली सोलमिल पत्र बना दिया जाय। रहा यह प्रेश यहाँ रहे या कही और मुझे इसमें कोई एतराज नहीं। हों काम ऐसे हानो में हो जो मरुद परभावत न हों बीसा मैं हूँ और तुम हो बल्कि कुछ व्यावसायिक बुद्धि भी रखते हैं। कम्पनी में भी

सुमीठा है क्योंकि प्रेस बला-बलाया है। यहाँ लोगों से बड़ी धासानी से सहयोग मिल सकता है। कुछ बेचे-बेचाए जाहूँ भी है। समझ है बग धाते देख कर यहाँ कुछ लोग भी रुपये लगाने पर तैयार हो जायें। अगर हम तीन घाबमी धीर कृष्ण बज भी ही मिल जायें तो क्या कहना। मैं हर तरह से सहयोग देने को तैयार हूँ। रोप कुराफ है, बच्चे मजे में हैं।

बच्चों को धातीबार्ड

तुम्हारा
बनसतपय

३७

सरस्वती प्रेस
५ मई १९३४

प्रिय बीनेन्द्र

मने घाबमी मकान छोड़ा था तो बाकिए से इतना तो कह दिया होता कि मेरी बिट्टियाँ छलाँ पते पर मेज देना। बस बोरिया-बिस्तर सँवाला धीर बन लड़े हुए। मैंने तुम्हारे फवाब मे एक बड़ा-सा Dettol बत मिला था। वह शामद मुवाँ बिट्टियों के बफतर मे पड़ा होया। लीडरबालों से सोया ठीक नहीं हुआ। मे सोम हिन्दी का काम नाम की बात नहीं समझते धीरकारोबार बड़ाना नहीं चाहते। 'हंस को (रोके) रखा। अगर अब धर्मेन धीर मई का (संयुक्त धंर) निकल रहा है। तुम्हारी कहानी का इतबार है।

मैं बात्स्यम्य भी के प्रस्ताव को बिससे स्वीकार करता हूँ। अगर ५०००) धीर बात्स्यम्य भी धीर तुम या मिलो तो बहुत बड़ा काम हो जाय। मैं हर तरह से तैयार हूँ। बड़ी चाहता हूँ कि जो काम शुरू किया गया है वह बंद न हो उसकी उपवीधिता बड़े धीर वह एक सस्था बन जाए। तुमने धाने की बात मिला भी। बहुत बकरी। मिता-प्ली से तय न होयी। मेरी तरफ से बिस्तुन दिक्क नहीं है। हाँ अगर नारी से काम बने तो कई तरह से सुमीठा है। मई प्रेस बला-बलाया है। कुछ पत्रों का प्रचार बड जाय धीर धामबनी प्यारा हो जाय तो प्रेस को बाहरी काम करने को क्यारा फुरसत ही न रहेगी धीर प्रेस को बड़ाना पड़ेगा। 'हंस' अगर २ • धपे धीर 'बागरब' ४००० तो प्रेस को धीर कोई काम करने की बकरत नहीं। धपनी कितान धान भर में ५ | ९ फार्म धाप भेगा। हाँ बिजनी जया पी जाय तो क्यारा काम हो

सकेगा। यही सहयोग भी काफ़ी मिल सकता है। इस एक Private Limited Company बना लो। हम तीनों अपने-अपने हिस्से का काम करें। अबस्थानुसार काम बाँट दो। मैं इसमें जीत में खूँया। धांधो जस्ट। लेकिन कुछ निरवम हो गया हो उस। मुझ में किराया देने के पक्ष में मैं नहीं हूँ। मुसकात तो पक्की से ही हो जाये। और पक्ष न भी धाये तो भी मैं तुम्हें अपने समीप पाठा हूँ।

मुझे एक बम्बई की कम्पनी बुझा रही है। क्या सलाह है। मुझे तो कोई हरकत यही साधुम होता अगर बेतन सल-बाठ लो मिले। काम-बो सल करके बसा जायेगा। अगर अभी मैंने बसाव नहीं दिया है। उसके दो छार भा चुके हैं। प्रस व भी की सलाह है आप बम्बई न जायें। तुम्हारी भी अगर यही राय है तो मैं न जाऊँगा। जोहरी की कहते हैं बस्तर बाइर और चिरसिंगीनी इरिस्ता नी क्यूटी है, बसो। जीवन का यह भी एक अनुभव है।

महावीर का कोई पक्ष नहीं। एक बम्बई के सज्जन की X X X से दफा आप से। महावीर से सलका सम्पर्क रहता बा। वह तो सलके कुछ Impressions नहीं हुए।

मुझे कम बुझार का मया। आज नी बोझा है। अगर यों बंगा हूँ। जिला की बात नहीं।

धीरे तो कोई गई बात नहीं। X X ने सलाह-मशविद X X अब मुझ-मझे को तुल दिया। और तुम्हारी X X मुझे पसंद आई।

तुम्हारा
बलराम

३८

अलहा सिनेडोन लि., कोल, बम्बई
१२ जून १९३४

प्रिय जीनेन्द्र

कार्ड मिला। मैं कुछ ऐसा परेशान रहा कि इच्छा होने पर भी पक्ष न मिल सका। १ को आ गया मकाम से जिबा बाहर में हीटन में जाता हूँ और पड़ा हूँ। वहाँ बुनियाद डूबती है वहाँ की क्यूटी क्यूटी है। धांधी तो समझने की कोशिश कर रहा हूँ इस विषय की किरानें पड़ रहा हूँ। जिबा कुछ नहीं। ज़ुताई में बर के लोग जून को थोड़कर, आ जायेंगे। मात भर जिकी तरह काटोया धागे देखी जायगी।

तुमने तो जैसे जिसने की कसम खा ली। 'हंस' में कुछ न लिखा। महीने में दो दोन कहानियाँ लिखना तुम्हारे लिए क्या मुश्किल है। एक 'हंस' को दो दो एक 'भाएली' को दो दो और एक 'बाई' या 'बिनामभारत' को। बाई ! आइडिबलिस्ट बनने से काम न चलेगा। जिदियाँ उड़ती आसमान पर हैं लेकिन मोहन के लिए धरती पर ही धरती है। कुलाई के लिए कहानी अमर्य्य यैमो। यहाँ बपी हो गई और बड़ा अच्छा मौसम है।

हाँ ! 'हंस' के लिए कुछ साहित्यिक नाट कदों नहीं लिख दिया करते। हिन्दु स्तान टाइम्स में सारी दुनिया की पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं उनमें साहित्योत्सवक चीजें मिल सकती हैं। आ-सात नृपों की कहानी तीन बार पठों की टिप्पणियाँ। इतना 'हंस' के लिए करते जानो और माहवार हिमाचल साठ कर दिया करेंना। आन नहीं तो कम यह पत्र तुम्हारे हाथ में आया ही। शेष कुतन।

जनपतराज

३६

अलेटासिनेटोन लि०, पोल, बम्बई १२
१ जुलाई १९१४

प्रिय जैनेन्द्र

पत्र मिला था। याता है तुमने अपनी ओर 'अजय' की की कहानियाँ भेज दी होती। अगर नहीं भेजी हों तो अब कुलाई मंजर के लिए जल्द से जल्द भेज दो। बिनाम भी उन कारखों में एक है जो 'हंस' को उठने नहीं देते।

मे मने में हूँ। एक स्टोरी लिख जाती। जा रही है। दूसरी शुरू कर रहा हूँ। तुम्हारे चेहरे में कोई प्लोट हो तो एक जुलासा भेज दो। यहाँ कई ठाहरे करो से आन-पहचान हो गई है। संभव है कहीं निकल आय। बहुत से सड़ितल मोनों की चीजें निकलती हैं तो फिर तुम्हारी क्यों न निकलनी ?

रस-रिज बपी। नाकों बय है। महावीर पतुष भया या नहीं ? प्रवासी नाम में लिखा था कोई हिमाच नहीं दिया। बरा बाद लिखा देना। हायज का पैट तो भगना ही चाहिए।

अजय

जनपतराज

४०

अर्जंटो सिनेटोन, परेल बम्बई १२

३ अगस्त १९३१

प्रिय जीनेन्द्र

पत्र मिला । मैं २३ को बगारत गया था । ३१ को वापस आया । बेटी भी उसकी माँ को लेता आया । सबको को प्रयाग कापल पाठशाला में भरती कर दिया । तुम्हारा लेख कहानी 'अज्ञेय' जी की कहानी और मेरी कहानी सब छप रही है ।

सिनेमा के लिए कहानियाँ लिखना मुश्किल हो रहा है । लेकिन जरूरत ऐसी कहानियों की है जो बेसी भी आ सके जो ऐक्टर्स के लिए सुलभ हो । किसी भी अच्छी कहानी हो अगर दोस्त पात्र न मिलें तो वह कौन लेनेगा । अवसुत की जरूरत में नहीं समझता । मेरी बोलों कहानियाँ साधारण हैं । अगर तुम (कोई) बीच लिखो तो यहाँ (कुछ प्रबंध) हो सकता है । पहले मिनापसिस ही लिख भेजो । उससे कहानी के प्लॉट का संशय हो जायगा ।

'जागरण' (सोशलिस्ट) पेपर हो गया है । काशी में आ सञ्जुर्गान्त्र से जो चारों हूँ उनसे मासूम हुआ कि बड़ एक (पत्र) निकालना चाहते हैं । बड़ा प्रस्ताव है किसी तरह (निष्पन्न) जाय तो मेरे घर से एक बना दसे । तुमने 'अज्ञेय' जी के साथ पत्र निकालने का विचार क्यों छोड़ दिया ।

मैं सज्जन हूँ ।

तुम्हारा
जनपतराय

४१

अर्जंटो सिनेटोन परेल बम्बई १२

८ सितम्बर १९३४

प्रिय जीनेन्द्र

धाया है तुम बुरात से हो । धावकन क्या कर रहे हो ? मिलने पढ़न की क्या खबर है । मैं तो वैसे (अपाहिष) हो गया हूँ । 'हृष' के लिए एक बीच मिलना भी मुश्किल है । तुमने अपनी कहानी और नि अज्ञेय की मेर की होबी । सितम्बर का चंक १५ तक निष्पन्न देने का इरादा है । एक दिन प्रेमी जी के बेटे हेमचन्द्र भाए से । अच्छी-अच्छी पुस्तकों के बहुत मस्ते एशियन निष्पन्नने को स्कीम सोच रहे हैं । चार पाँच जाने में बग फाय की किताब देते और बग

हजार के एडिशन निकालेंगे। देखें स्कीम पुरी होती है या यूँ ही रह जाती है। मैंने सुना है जोशी बम्बुओं ने 'निश्चयि' से संबंध तोड़ लिया है।

धर तुमने अपनी कहाणी न भेजी हो तो अब धरय भेज दो।

धीर तो भ्राम है।

भाषका—

जनपतराय

४२

अमटा सिनेटोन बम्बई १२,

२६ सितम्बर १९३४

प्रिय भ्राम

धर तुम्हारा पत्र मिला। जवाब दे दिया है। नाटक पत्रे कराव दिये। मैं तुम्हारी राय के धीरे धीरे यह मोशन करता हूँ। बात यों है कि प्रेस में भाग तो है ही। तीन महीनों की प्रेमवालों की मजदूरी बाकी पड़ी है। जून की तो अवस्था में दे रहे थे। धीरे धीरे अवस्था में लिए धरनुकर का बयान या अब हमें कभी भी पी० बाएँ। इसी बीच में प्रेमवालों ने प्रेस कमिटी धर का धीरे धीरे हड़ताल कर दी। मैंने सोचा तीन महीने की मजदूरी (१०) से कम न होगी, कलाशवालों के भी २०) देने हैं। क्यों न हमें धीरे धीरे स्ट्राइक किया को देकर उसके रुपये में तो धीरे सब कलाश चुकाकर प्रेस से हमें ता के लिये पिछ छोड़ा तो। अभी दो-तीन जगह पत्र लिखे। एक पत्र आपस जी को भी मिला। स्ट्राइक सेना तो सबने स्वीकार किया पर हमें पर कोई न खाना हुआ। इस बीच में हड़ताल टूट गयी। एक महीने का बतन लेकर सब काम करने आ गये। अब दो महीने का नवम्बर में लेंगे। कलाशवालों को भी कुछ रुपये दे दिये। 'जागरण' कर दे दिया। अब आता है काम साधारण धीरे धीरे चलता रहेगा। हमें के ३३ की पी बाएँ। धर १० बसुल हो जायें तो मजदूरी पाक हो जाय धीरे कुछ कामशवालों को भी दे दूँ। 'जागरण' में कम से कम ३०) की अवस्था है। महत्व छोड़कर। 'हस' का मजदूर एक मिल रहा है। तुम्हारी धीरे 'अमेव' जी की कोई कहानी अब तक नहीं आयी। क्यों? जून में जून भेजी तो इस साल 'हस' का ठीक करके धरन साल में १) का कर दूँ। काम बढ़ाने के पहले साल भर तक पत्र को ठीक समय पर धीरे प्रेस के में निरापना चाहिए। धर एक हजार बाहर १) के हो जायें तो फिर ठहर में निश्चित हो जाऊँ। दिल्ली में कई महिलाएँ भी मिलती हैं। एकाध में हमें के

मिये लेख सो ।

यहाँ काप्रेस में था रहे हो न ? काप्रेस तो धन बजान-भी चीज होती बा रही है । मगर तमाशा तो रहेगा ही ।

एक दिन हिमोशु राम से मिला बा । वह कोई स्तोरी बाहते से । पौराणिक हो या सामाजिक । धरर कोई स्तोरी स्याल में हो तो उसका हो पेज का Synopsis मिल भेजो । मैं उनसे जाकर मिर्नुया धीर दे दूँगा । अगर बँच गयी तो बड़ा काम हो जायगा ।

शेय कुशल । बच्चों को प्यार । मकनगी बेबी से मेरा आसीर्वाद कहना । धीर क्हाली बकर मिल जकर लिखना । प्रसाद भी से भी क्हाली माँमी है । सामर बे भी हैं ।

तुम्हारा—

कनकलाल

४३

छावटा लिनेटोल, परैल, बम्बई १२

२८ नवम्बर १९३४

प्रिय जीनेन्द्र,

धरर बहुत दिनों से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला । धारा है धन तुम स्वस्थ हो गये हो । प्रभाधीनाल जी से मानूँ तुम्हारा कोई क्हाली 'हंस' के लिए आयी है । बड़ी लुत्ती हुई ।

साहित्य सम्मेलनवासों ने मुझे उपग्यास्त कला पर एक लेख लिखने का कहा है जो साहित्य परिषद् में पढ़ा जाय । मैंने ताँ मिल दिया मुझे ऐसे लालों की उपयोमिता से विश्वास नहीं । जिनमें प्रतिभा है व धार लिखने सकते हैं जेमे बरतल का बच्चा ठहरने लगता है । जिनमें प्रतिभा नहीं उन्हें लाल कला का उप देश कीजिये कुछ नहीं कर सकते ।

इन्द्रनारायण धनबाल को तो जानते हो । वही मुक्क जा दिल्ली व कई बार मुझे मिलने आया बा जिनके घर एक दिन मैं श्पोटा खाने भी गया बा । परमों उसका पत्र मिला । तपेविक हो गया धीर लखनऊ के टी० बी० प्रस्यठान म पड़ा है । कोई महामक नहीं कोई हमरर नहीं । ऐसे मेहनती धीर प्रतिभा के बनी धाडमी कम होंगे । बार एंड पीग रिजरेक्शन बेनिटी ग्रेयर धारि पुस्तकों के अनुबाव कर वाले लेकिन रिजरेक्शन के सिवा कोई पुस्तक न धपी प्रकाशनों के पास पड़ो हुई है धीर धान वह गरीब मर रहा है । यह है आभावे साहित्य-

सेवियों का हाल ।

प्रथम में 'लेबरर संघ' का बिबरण तुम्हें मिला होगा । बहुत ही साहित्यिक उसमें मिल गये हैं, लेकिन कोई विमात्रवाला धारणी धर्मी नहीं नजर आता । यूँ हमारे यहाँ विमात्रवाले धारणी हैं ही फिटने । तुम इन संघ में आ मिलो और ऐक्टिव इंड्रिस्ट को तो शायद कुछ हो । मेरा नाम समापति के लिए पेश किया गया है । मेरे जैसा समापति जिस संस्था का हो वह बड़ा हीमी । मैंने डा० भगवान दास पं० बैकटेशानारायण तिवारी या पं० मरेन्द्रदेव जी का नाम प्रोपोज किया है ।

जिसी हाल बड़ा सिधूँ । 'मिल' यहाँ पास न हुआ । माहीर में पान हो गया और दिखाया जा रहा है । मैं जिन इरादों से आया था उनमें एक भी पूरे होते नजर नहीं आते । ये प्रोब्लमसर जिस डंग की कहानियाँ बनाते जाये हैं उसकी सीक से जी भर जी नहीं हूँ सकते । बर्सेरिटी का यह लोग एंटरटेनमेंट बैल्यू कहते हैं । धर्मपुत्र ही में इनका बिबरण है । रामा-रानी उनके रसियों के पद्मन नकसी लड़ाई, बोले-बाजी यही इनके मुख्य मायन हैं । मैंने सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं, जिन्हें लिखित समाज भी देखना चाहे लेकिन उनको प्रिन्ट करके इन सोपों को सहेह होता है कि जले या न जले । यह साल तो पूरा करना है ही । कबहार हो गया था । ऊर्जा पटा रूँपा । मगर धीर कोई नाम नहीं । उपम्यास के अंतिम पृष्ठ लिखने बाकी है उम्बर मन ही नहीं आता । यहाँ से छुट्टी पाकर अपने पुराने घरों पर आ बैठूँ । वहाँ धन नहीं है मगर संतोष अवरय है । यहाँ तो बान पड़ा है कि जीवन नष्ट कर रहा है ।

सेठ योगिन्ध बाबू जी यहाँ जाये हुए हैं । उनकी भी सिनेमा कम्पनी खुली है । माहीर कहाँ है ?

धीर सब कुशल है ।

मम्रेम

धनपत

४४

१५६ लखनौ लखन, बाबर, कम्बई १४

७ फरवरी १९३३

प्रिय जैनेन्द्र

तुम्हारा पत्र मिला । हाँ बाबर मैंने तुम्हें कोई पत्र न लिखा । आपन भी जाये थे । उनसे तुम्हारी कैरियर का हाल मिल गया था । कुछ ऐसा ब्यस्त तो

नहीं रहता। ही काम नहीं करता। सस्त बजे उठता हूँ। सस्ते घाठ पर भूम कर जाता हूँ। मारता करता हूँ। नी बजे धलधार पड़ता हूँ। कभी बग्घा भर कभी इससे ज्यादा समय लग जाता है। कभी कोई मिलने या जाता है। म्याग् बज जाता है। महान-काकर स्टूडियो जाता हूँ। कुछ काम हुआ तो किया नहीं उपन्यास पढ़ा। पाँच बजे नीटता हूँ। हिन्दी के पर्शो-पत्रिकाओं को उमटता-पलटता हूँ। बिट्टी-पत्र लिखता हूँ जाता हूँ और सो जाता हूँ। यही दिनचर्या है। एकाच कहानी महीने में लिखता हूँ और दो-एक पृष्ठ के मोठे 'हंस' के लिए। बस।

'मजदूर' तुम्हें पसन्द न थाया। यह मैं जानता था। मैं इसे अपना कह भी सकता हूँ। नहीं भी कह सकता। इसके बाव एक रोमांस था रहा है। वह भी मेरा नहीं है। मैं उसमें बहुत थोड़ा-सा हूँ। 'मजदूर' में भी मैं इतना थोड़ा-सा थाया हूँ कि नहीं के बराबर। फ़िल्म में डाइरेक्टर सब कुछ है। मेसक कमर का बारशाह क्यों न हो यहाँ डाइरेक्टर की धमनधारी है और उसके राज्य में उसकी हुकूमत नहीं चल सकती। हुकूमत माने तभी वह रह सकता है। वह यह कहने का साहस नहीं रखता मैं बनफ़ि को जानता हूँ। इनके बिना डाइरेक्टर ओर से कहता है आप नहीं जानते मैं जानता हूँ जानता क्या चाहती है और हम अपना की इससाह करने नहीं पाए हैं। हमने व्यवसाय बोला है, धन कमता हमारी गरज है। जो बीज जानता मंगेयी वह हम बने। इसका जबाब यही है 'मजदूर' साहब। हमारा समाज नीजिए। हम कर जाते हैं। वही मैं कर रहा हूँ। मैं के घंठ में कासी में क्या उपन्यास लिख रहा होबा। और कुछ मुझ में नहीं कला न सीक सकने की भी शिकत है। फ़िल्म में मेरे मन को संतोष नहीं मिला। संतोष डाइरेक्टरों को भी नहीं मिलता मेस्कि वे और कुछ नहीं कर सकते सन मारकर पड़े हुए हैं। मैं और कुछ कर सकता हूँ चाहे वह बगार ही क्यों न हो इनलिध जमा था रहा हूँ। मैं जो जान तोचता हूँ उनम भावनावाय भुल जाता है और कहा जाता है उसमें Entertainment Value नह होता। इसे मैं स्वीकार करता हूँ। मुझे धारमी भी ऐसे मिले जो न हिन्दी जानते हैं और न उहू। अंग्रेजी में अनुवाय करके उन्हें कथा का मम समझना पड़ता है और काम कुछ नहीं बनता। मेरे लिए अपनी नहीं पुरानी भाइन नख की है। जो जाहा मिला।

'हंस' बरस्तूर बना जाता है। जून से अब तक ८००) बस की मजूर कर चुका हूँ। व्यापार जानता नहीं कोन बैठा तुकान पाग थाप होबा। न किसी ऐम धारमी का सहयोग ही पा सका जो व्यापार जानता हो।

अपम भी आये थे। वह ऐसी कोई धायोजना बना रहे हैं जिसमें तुम हम

बहु और अन्य कुछ लोग मिलकर एक सिमिन्ट फर्म बना लें। ऐसे ही एक समझ बनते हैं, मैं अपनी दुकान ठठाकर प्रयाग जाऊँ। मेरी समझ में कुछ नहीं आता। जैसे बसता है वैसे बसा जाता हूँ।

सेवक संघ की निम्नावली सुनूँ किसी होगी। काम की बात कोई नहीं। सहयोग विज्ञान पर प्रकाशन किया जाय और साहित्य का प्रचार बढ़ाय जाय सभी नेचकों को रोटी मिल सकती है। जब तक प्रचार नहीं बढ़ता न प्रकाशक ही पतन संकेता न सेवक ही। अगर Cooperative Publication के लिए बन जाऊँ है। अगर संघ यह न कर सके तो कुछ न कर संकेता।

दुम्हारी कई चीजें पड़ीं। 'समोकोन' का रिकार्ड तो झाल म पड़ा है। वह रिमाय में है। पुरानी छराब कमजोर हीरी में ज्यादा मोहक हो गयी है। अगर वह औरत घर क्यों जाती मयी वह मेरी समझ में नहीं आया। शायद वह बपट्री लिखी थी। अगर बपट्री-लिखी औरतों की समय बान्ने का रोग नहीं होता। यह रोग तो उन छोटी-या नयी रोसनी की बेटियों का है, जिसके लिए जीवन में एक दिन कुछ न कुछ कंपन और छगलनी चाहिए जो बख़्तर भी घर में नहीं बैठ सकती। अगर इस तरह सभी औरतों का समय काटना बूमर हो जाय और मनमोहन की बैरिस्टरों की बुनिया में कमी है ही नहीं तब तो सभी आत्माएँ बिरवात्मा में मिल जायें और कहीं वह (मर्यादा) रहे ही नहीं जो मनुष्य को मनुष्य बनाये हुए है। सुलासा यह है कि इस कहानी का क्या मतलब है यह मैं न समझ सका। शायद कोई मतलब समझने की बात ही मेरी भूल है। एक बुबली के मनोभावों का गहरा खमीर बिजय है। बस।

मश्रास गया था वहाँ से मीनूर और बंमन्य भी गया। अपना यात्रा-बुताउ लिख रहा हूँ। कुछ नोट तो किया नहीं। वो कुछ पार है वही लिखता हूँ। हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है, यह देखकर खुशी हुई। वो लोग राज की मोर कोई धर नहीं कर सकते वे इसी क्षण में मरने हैं कि वे राष्ट्र भाषा सीख रहे हैं। मुझे वह प्रेरित बना सुन्दर लगा। वाले बमसे का बर-बर प्रचार है। मोहल्ले-मोहल्ले स्थलों के समाज है और प्राय सभी में हिन्दी की क्रांति है। मैं कुछ भी तरह भाला पहनकर रह गया। बोल न सकने की कमी उस बमश भाग्य हुई। जनता समझती है कि हिन्दी का एक बड़ा लेखक है जाने क्या-क्या मोठी उपसेवा और यही है कि कुछ समझ में नहीं आता क्या बहूँ। खैर। फिर प्रश्ना रहा। प्रती भी भी साथ थे। वे बेचारे भी इसी मरक में मुबतिला है।

और क्या लिखूँ, मेरा जीवन यहाँ भी बीता ही है, बीना काशी में था। न किसी से दोस्ती न किसी से भुलाकाठ। मुझा की बीड़ मस्तिष्क तक। स्टूडियो

नहीं रहता । हाँ काम नहीं करता । सारा बजें उठता हूँ । सप्ते घाट पर बूम कर खाता हूँ । नाश्ता करता हूँ । पी बजे घसघार पड़ता हूँ । कमी कम्पा भर कमी इससे ज्यादा समय लग जाता है । कमी कोई मिलने का जाता है । म्या रह बज जाता है । नहाना-साफर स्टूडियो जाता हूँ । कुछ काम हुआ तो किया नहीं उपन्यास पढ़ा । पीच बजे सीटता हूँ । हिन्दी के पत्रो-पत्रिकाधो को समेटता-ममेटता हूँ । बिंदी-पत्र मिलता हूँ जाता हूँ और तो जाता हूँ । यही दिनचर्या है । एकाच कहाली महीने में लिखता हूँ और दो-एक पृष्ठ के लो 'हंस' के लिए । बस ।

'मजदूर' मुझे पसन्द न आया । यह मैं जानता था । मैं इसे अपना कह भी सकता हूँ नहीं भी कह सकता । इसके बाद एक रोमांस आ रहा है । वह भी मेरा नहीं है । मैं उसमें बहुत मोड़-सा हूँ । 'मजदूर' में भी मैं इतना मोड़-सा आया हूँ कि नहीं के बराबर । फिल्म में डाइरेक्टर सब कुछ है । लेखक कमल का बाइराह क्यों न हो यहाँ डाइरेक्टर की घमसवारी है और उसके राज्य में उसकी हुकूमत नहीं कम सकती । हुकूमत मान ली वह रह सकता है । वह यह कहने का साहस नहीं रखता मैं जनसर्ज को जानता हूँ । इसके बिन्दु डाइरेक्टर और से कहता है, आप नहीं जानते मैं जानता हूँ जनता क्या चाहती है और हम जनता की इसलाह करने नहीं आए हैं । हमने व्यवसाय खोला है, कम कमला हमारी बरब है । जो जीवन जनता माँगेगी वह हम देंगे । इसका अर्थ नहीं है 'अच्छा साहब' । हमारा सामान सीजिए । हम बर आते हैं । यही मैं कर रहा हूँ । मैं के धंध से काशी में बन्धा उपन्यास लिख रहा होना । और कुछ मुझ में नयी कला न सीख सकने की भी शिष्टता है । क्रिम में मेरे मन को संतोष नहीं मिला । संतोष डाइरेक्टरों को भी नहीं मिलना लेकिन वे और कुछ नहीं कर सकते अन्त मारकर पडे हुए हैं । मैं और कुछ कर सकता हूँ बाहे वह बेगार ही क्यों न हो इसलिए जाता आ रहा हूँ । मैं जो प्लाट सोचता हूँ उसमें प्राक्शबाध बस आता है और कहा जाता है उसमें Entertainment Value मह होता । इसे मैं स्वीकार करता हूँ । मुझे धारमी भी ऐसे भिसे जो न हिन्दी जानते हैं और न उछ । अंग्रेजी में अनुबाध करके उन्हें कथा का मर्म समझना पड़ता है और काम कुछ नहीं बनता । मेरे लिए अपनी यही पुरानी लाइन मने की है । जो जाहा सिखा ।

'हंस' बरस्तूर जमा जाता है । जून से धन तक ५०) प्रेस की मदद कर चुका हूँ । व्यापार जानता नहीं जोन बीठा दुकान बाट घाय होया । न किसी ऐसे धारमी का सहयोग ही या सफा जो व्यापार जानता है ।

आप भी आये थे । वह ऐसी कोई धायोजना बना रहे है जिसमें दुन हम

वह और धन्य कुछ लोग मिलकर एक लिमिटेड फर्म बना लें। ऐसे ही एक उद्योग कहते हैं, मे अपनी दुकान उठाकर प्रयाग जाऊँ। मेरी समझ में कुछ नहीं आता। जैसे बजटा है वैसे बका जाता है।

सेबक संघ की निमामावली तुम्हें मिली होगी। काम की बात कोई नहीं। सहृदय सिद्धांत पर प्रकाशन किया जाए और साहित्य का प्रचार बढ़ाना जाए तभी लेखकों को रोटी मिल सकती है। जब तक प्रचार नहीं बढ़ता न प्रकाशक ही पनप सकेगा न सेबक ही। मगर Cooperative Publication के लिए धन कहां है। अगर संघ यह न कर सके तो कुछ न कर सकेगा।

तुम्हारी कई चीजें पढ़ीं। 'ग्रामोफोन का रिफाइट तो हज़म में पड़ा है। वह दिमाग में है। पुरानी शरण चमकदार छीछी में ब्यापा मोहक हो गयी है। मगर वह औरत घर क्यों जाती यही यह मेरी समझ में नहीं आया। शायद वह बेपड़ी लिखी थी। मगर बपट्टी-लिखी औरतों को समय काटने का रोग नहीं होता। यह रोग तो उन धैर्य की या नयी रोशनी की बेनियों का है, जिनके लिए जीवन में एक दिन कुछ न कुछ कपन और सनसनी चाहिए, जो जब घर भी घर में नहीं बैठ सकती। अगर इस तरह सभी औरतों का समय काटना दूसरों हो जाए और मनमोहन की बैरिस्टरों की दुनिया में कमी है ही नहीं तब तो सभी आसपास बिजलीघरों में मिल जायें और कहीं वह (मर्यादा) रहे ही नहीं जो मनुष्य को मनुष्य बनाने हुए है। सुभाषा यह है कि इस कहानी का ज़पा यथार्थ है, यह मैं न समझ सका। शायद कोई भवभाव समझने की बात ही मेरी मूल है। एक बुद्धि के मनोमन्त्रों का गहरा सजीव निजय है। बस।

मज़ाठ गया का जहाँ से मैसूर और बंगलौर भी गया। अपना माना-बुझाठ लिख रहा हूँ। कुछ गोट तो किया नहीं। जो कुछ पार है वही लिखता हूँ। हिन्दी का प्रचार बढ़ रहा है, वह देखकर खुशी हुई। जो लोग राष्ट्र की ओर कोई सेवा नहीं कर सकते वे इसी जमान में मगन हैं कि वे राष्ट्र धारा पीछे रहे हैं। मुझे वह प्रेरित बड़ा सुन्दर लगा। जाने बखान का घर-घर प्रचार है। मोहम्मद-मोहम्मद स्थानों के समाज है और प्रायः सभी में हिन्दी की कलासेव है। मैं कुछ की तरह माला पहनकर रहे गया। बोल न सकने की कमी उस बहुत मालूम हुई। कलठा समझती है कि हिन्दी का एक बड़ा लेखक है जाने क्या-क्या मोठी जगलेया और यही है कि कुछ समझ में नहीं आता क्या कहीं। और। द्विप प्रख्या रहा। प्रती की भी साथ न। वे बचारे भी इसी तरह न मुबतिला है।

और क्या लिखूँ, मेरा जीवन यही भी सेवा ही है, जैसा कारी में था। न किसी से बोसती न किसी से मुलाकात। मुस्मा की बीड़ मस्तिष्क तक। स्टूडियो

गये घर आ गये । हिन्दी के दो-चार प्रेमी कभी-कभी आ जाते हैं । वस ।
मनबंदी देवी का मेरा आशीर्वाद कहना ।

दुम्हार-

मनपतराप

४५

७ हरिमार्ग

१ मार्च १९३१

मायू जी

पत्र का उत्तर देना बाल-बूझकर टालता रहा । उसका कारण था । एक
बगह स कुछ मुलने की आत्मा थी और सोचता था वहाँ से पत्र आ बात उसी
आपको मिले । धन मुना है आपकी कम्पनी टूट गयी और अब इस पत्र को यदि
पाएँगे भी तो आने की तैयारी में । ऐसी क्या बात हुई यह शायद आप अनुमान
मिलेंगे ही । क्या आप नहीं आ रहे हैं ? क्या वहाँ से इस ओर आबें ? मेरी
कम्पना है कि बनारसीबास जी आपको उस ओर मिलेंगे । वह फिर शान्ति निरु-
तन में उसी तरह का प्रभाव करने की मुग में है । क्या आप आबें ।

इस से एक कहानी (एक रात) आपका मिली होगी । अरा मंत्री हा गयी ।
सेकिंग वीर से पडे और मुझे अपनी रात मिले । और वह अपनी भी चाहिए ।

आपके पत्र में 'सामोज्ञान का रेकार्ड' कहानी का विषय था । उस रानी के
दिलसने के चारों ओर जो एक बायबल और बातावरण कहानी में भर दिया गया
है उसमें क्या रानी की ओर से Self-deception की रस आपको विस्तृत नहीं
मिली ? उसे वहाँ से विस्तृत अनुपस्थित करने का मेरा अभिप्राय न था । बल्कि
मुझे मान्य होता है वह व्यक्ति है । वह व्यक्ति न हो तो संपूर्ण रूप मित्र
Juxtaposition टकराता है । लेकिन वह मेरा अभिप्राय नहीं है । मेरा तो इष्ट मात्र
इतना है कि हम कहानी में उस गरी के स्वतन्त्र पर बुद्धा से न बर बार्ने प्रत्युत
हमें अच्छा हो और वह गरी हमारी सद्भावना से सर्वथा वंचित न हो जाय ।
विस्तारमा अति-आदि बातों के समावेश की इतनी ही आवश्यकता है । कहानी में
यह तो स्पष्ट ही है कि गरी में अपराध-चेतना Guilty Conscience हो जाती
है । फिर यह Guilty Conscience ही उसे अपने पति के प्रेय और संरक्षण की
प्राप्ति के नीचे से हटकर उसे जाने को बाधित करती है । लेकिन क्या वह अपना
आत्मिक रूप बाहर की ओर करने दे ? यह वह नहीं कर सकती । उसी से

पति स भगइ मील लेन को उतावली और तत्पर बहु दिखायी देती है। मे समझता हूँ इन मेरे ऊपर की बातों के प्रकाश में बहु कहानी आपको असंभव का समझन करती न जान पड़ेगी बसी कि इस समय आपको सयी है।

और घाट घटने सम्बन्ध में कृतासा लिखियेगा। अभी तक किसी भी भाँति 'हंस' के बारे में मे पुरानों बातें सोचना नहीं छोड़ सका हूँ। मे अब भी यही सत्यता है कि 'हंस' का सम्पादन आप विमकुल मुक्त पर छोड़ दें। एक *Organ* का बड़ी सफल बरकत जान पड़ती है। कहानी यहीने में कितना लप सकती है, मुश्किल से तीन। तीन कहानियाँ मेरा कुछ भी समय नहीं भरती और न तीन कहानियों का *Production* कोई मन में *Purpose* की भाँति बन पाता है। इस *Purpose* को सामने या में उसी के सहार कोई बड़ी किताब उपस्थान यदि हाथ में ली जा सकती है धन्यता खासी खासी लगता है। अभी यो भी कितने हिन्दी में पब है। मन कोई भी नहीं बडता। एक बड़िया ठम स्पैण्ड पत्र की जमी हिन्दी में लमती ही है।

मे इसर मध्य माघ में आपकी और जरा सैर करने के मंझूरे बनाने में लगा था कि आप ही बस लिए।

बर्बा जारें और पाँची भी से मिलें तो मेरा प्रणाम कहिएगा और कहिएगा कि जैनेन्द्र को आपका पत्र मिला है और बहु साक्षर संग्रह कर लेमा तब उन्हें उत्तर लिखेगा। पत्र बीजिएगा।

आपका

जैनेन्द्र

४६

प्रयाग,

४ मई १९३५

प्रिय जैनेन्द्र

मे तो ईश्वर जाते-जाते रह गया। सबसे बायदे कर लिये मे एक भी पुरा न कर सका। इस उम्मीद से कि तुमसे इसीर में वफाव होगी तुम्हें सत भी नहीं लिखा। जब पुरा भोजन मिशन की धास्ता हो तो वाली पी-पीकर क्यों मूल को दुबस बनाया जाय। लेकिन कछ तो प्रेमी भी के न घाले और कुछ गल्लेबारियों में जाकर मिसने-मिसान के बारण सारा प्रोग्राम भ्रष्ट हो गया। अब बुन्नु को बेचक निकल आयी है, और २७ से बहु पड़े हुए है। हम भी उसके साथ है

माता करने के लालक हो जाय तो माता को यहाँ से उठे ले कर बनें जायें ।
बेचक हल्की है । यही कृपाण है । दाने मुरझ गए हैं । भयर धमी सफर करने में
गर्मी लगने से मुमकिन है उनके अच्छे होने में क्यावा समय नय जाय ।

परसों श्री कन्हैयालाल गूठी के पत्र से मायूम हुआ कि सम्मेलन ने राष्ट्र
साहित्य-बौद्ध-निर्माण के संबंध में एक प्रस्ताव पास किया है । यह तो मुश्किल न
बा भगर उस प्रस्ताव को कार्यरूप देने का मार किस परसोंपा गया ? मुसी साहब
से तुम्हारी नया बातचीत हुई और कार्यक्रम का क्या ईय रहेगा ? 'हंस' तो इस
काम के लिए यही एक तैयार है कि धन्य प्रान्तीय लोगों से पत्र-व्यवहार करके
उनसे हिन्दी में लेख और कहानियाँ लिखवा कर छाते भगर क्या इतना ही सम
संस्था को सजीव बनाने के लिए काफी होगा ? (बिस्तार से) लिखना । मैंने
'भारत' में तुम्हारे भाषण की रिपोर्ट पढ़ी बहुत अच्छी है ।

मैंने इरादा किया है कि जून से हंस को और प्रस को प्रभाव साठें और नुब
भी सही रहें । कभी म न तो काम है और न साहित्यवालों का सहयोग । वहाँ
जितने हैं, वह सभी सम्राट है कोई व्यक्ति-सम्राट कोई धातोचना-सम्राट कोई
प्रहसन-सम्राट । यह गौरव तो काली ही को है कि वहाँ सभी सम्राट मौजूद हैं
भगर सम्राटों की सम्राटो से पटेगी ? शिष्टाचार की बात और है हादिक
सहयोग की बात और । मुझे डर लग रहा है कि कभी तुम भी साम्रज्ञ महीन
में सम्राट हो जाओ तो मेरा काम ही समाप्त हो जाय । फिर तुमसे कोई लख
माँगने का सहस्र भी न कर सकूँ । इसलिए अब प्रयाग या रहा हूँ जहाँ सम्राट
कम है ।

भगर कोई कहानी भेज सकी तो बहुत अच्छा भगर उस धाबिरी कहानी
की तरह पूरा उपन्यास नहीं ।

और क्या बिजुई । प्रती जी तो नहीं आए थे । हाँ सम्मेलन पर अपने
Impressions लिख दो ता 'हंस' में निकाल हूँ । तुम्हारी नया समाग्र है 'हम को
बिलकुल कहानी पत्र बना हूँ, और धाबी धनुभावित और धाबी मौलिक कहानियाँ
दिया कर ?

माता जी को मेरा प्रणाम कहना और भयवती को भारतीय ।

तुम्हाए—

बनपुत्राय

४७

७ हरिषाचन्द्र

७ मई १९३३

बाबू जी

पत्र मिला । कितनी मुह्त मार मिला है । इन्दौर में मैंने पहली बात यह पूछी कि धान आये है ? पता लगा नहीं आये । तब साचा सार है । लेकिन प्रमी जी जो स्टेशन पर ही मिल गये थे बोले — धान का न मकैय सार देना ठिकून होगा । हमने यह पया । उता भी जानता कि धान इन्दौर आने के लिए उबल बैठे है तो बकर धानको बुला ही लिया जाता । वही धानका मिलने की वृत्त ही जी नम्रता रहा ।

हाँ मुसी जी वहाँ मिले थे । बापों भी कुछ । जो माया या वह तो न हुआ । उनका भी इतिहास है । एक सीमा साचा-सा प्रस्ताव व्यवस्था हुआ है । कमीटी बनी है जिसमें मुसी संयोजक है । सब सब उन पर है ।

काम का बड़ा बग हो । धान आने में अब तो बहुत पड़ता है लेकिन पाँच धानमिनों का मिल बना चाहिए तब काम आये बड़ सकता है । गांधी जी मुसी कातलकर धान धीरे में य सब सोच बर्बा में ही यवासीय सुबिधानुसार मिल में लेकिन यह मुसी पर है । उनका पत्र धाया था । लेकिन मैंने हजर उनका जवाब भी नहीं दिया है, सब दूया ।

यह भी बात हुई थी कि अपना समय पत्र न निरामकर आये 'हस ही देन के लिए बड़ा जान । मैं समझता हूँ इनमें धानके लिए भी अयुक्त कुछ नहीं है । अब तब इस सम्बन्ध में धाये बापों हों धान 'हस में विशेष परिश्रम न करिए ।

धानकी काशी छोड़ने की बात तो समझ में आती है । साहित्यिक चरित्र का *Edwards* होता है । हममें उस बिचारे का बाप उतना क्यों कहिये क्योंकि वह तो *Edwards* का शिकार होता है । काशी में मैंने यह देन मिया है । पर प्रमाण में भा ऐसा नहीं होना एसी भाषा धांपको लिख अब पर होती है ? किन्तु फिर प्रश्न है प्रपाय की बधि नहीं तो क्या किया जय । हमका उत्तर मेर पान नहीं है । दिल्ली — मैं एकाएक नहीं कह सकता क्योंकि बुझ धांपका भी सवाल है । इन्दौर में मेरे मन में आता था कि प्रमी जी का कारोबार भी कुछ *Institution* की शक में नहीं है न धांपका ही तब क्यों न दोनों की मिलाकर एक समितिलिख (*Limited*) फर्म की शक में काम दिया जाने योग्य बनाया जाय । लेकिन यह सब बीड़-बुप के बिना कैसे हो । यह कीम बरे ? मैं हजर बहुत

Handicapped हा रहा हूँ जलना-फिरना भी सरल नहीं होता। फिर भी यह बेसत है कि आप कोई रास्ता नहीं हैं। जानता नहीं आप बम्बई से कितना पैसा जमा करके जाये हैं। लेकिन बितना भी मुझे दीजता है सब इस कारोबार में ही भुकेगा।

मैंने प्रजासीनाथ जी को सिखाया कि मीटर की पत्र बकल हो दो रोड का नाटिस देकर मुझे जिला में। सोलह सप्ते तक की पारखी मीन बी बी। अब मेरा इसमें दोष नहीं है कि वह बसुन न किया जाना। जब कलक पास हो तो मीटर देवे में कठिनाई क्या होती है। इधर इस विनों से कलक नहीं या इससे काम सब ठग जा। अब है तो मीटर की क्या चिन्ता।

कहानी मेज रहा हूँ।

हैं साहित्य परिषद् (इन्वीर) में मैं बोला था पर 'भारत' में तो बाबल का कबूमर था। जगमग बाबल बहते तो मैं बोला हूँगा। और 'भारत' में बा बा उसका तो सब भी कुछ न बनता था। हैं जगमग उसमें मुझे बबल्य अपनी ही जान पड़ी। बाल पड़ता है लाट्टीरक की रिपोर्ट उसकी भी गयी है। आप उन्हें लिखिये न कि यदि रिपोर्ट हो तो उसकी प्रति वह आपका चेक ब मैं भी यहाँ से मिलूँगा। यहाँ सम्मेलन के बारे में एक ने Information ली थी। वह मैं कल या परमों आपका मिलवा दूँगा।

इलाहाबाद में क्या आपका मकान बाबि पकटा कर लिया है? यदि बिस्ती की बात किन्ही तरह भी व्यवहार्य जान पड़े और सब बम्बोवस्तु सिद्धि का न हुआ है तो उस पर सोचियेगा। मैं आपका बहुत कुछ जगमग सभी कुछ बोले इसका कर पकटा हूँ ऐसा मुझे लगता है।

और आप पत्र देने के बारे में ऐसा प्रभाव न किया कीजिये। इस बीच आपका पत्र न पाने से सब जानिये मुझे बहुत नीच रहा।

बाकी ठीक ही-सा है।

आपका
जैन

४८

सरस्वती प्रस,
१४ मई १९६६

प्रिय जैन

मुम्बई कहानी क्या हुआ आपका और सम्मेलन पर प्रकाशित नभ मिले।

बन्धवान् । पत्र तैयार हो गया है । अबसे ग्रहीत काम धारेंगे ।

बम्बई से क्या लाया ? कुल ६३००) मिने । इसमें १५) लड़कों में मिने ३००) सड़की न ५ ०) प्रेष न । उस महीने में बम्बई का बाब बड़ी फिकसत से भी २५) से कम न हा सदा । वही से कुल १४०) लेकर अपना-सा मुँह मिले बसें प्रायः । बाब ये यहाँ से प्रस के उठाने में बाब हो जायेगे । प्रयाग में शायद वहाँ से पक्की तरह काम बसे । लालक सब के दो-एक सज्जन कुछ मदद करेंगे । एकदमी से कुछ काम मिल जायगा और बाहर का कुछ काम मिलने की उम्मीद है । अगर वह बिचार पुरा हो गया तो वह बत्ता सर से टल गयो । इसके बिना मुक्त तो कोई दूसरा उपाय नहीं मुमकिन । अगर वा एक साधेसाग मिल जायें जो बत-बाब हुंकार हमसे जयाने और काम धपने हाथ में न लें मुझे केवल ऊपरी सलाह का काम लेते रहें तो और भी पक्का । नहीं भिमिटेड ही नहीं । इन सभी बातों के लिए प्रयाग पक्का बाब है । नमस्त तो केवल X X X बातता है । अगर ऐसी कोई मूर्ख निकल पावे तो बेरी हारिक इच्छा है कि हम सोन लाय रहते । अभी तो यह हाल है कि बाब प्रस पर मकान के किराने की मागित हुई है । ३० ०) बाकी है । जिस कार्यालय में मजदूरों की मजदूरी और मकान का किराना भी न निकल सके उसकी हानत का अनुमान कर सकते हो । किसे दोस्र है ? प्रवासीनाम की से जो हो सक्ता है करते हैं । इससे ज्यादा एक मादमी और क्या कर सक्ता है ? अगर वह क्या-बा दीक-बुप कर सकते तो शायद बरा इतनी खराब न होती । लेकिन जो काम उनसे नहीं हो सक्ता तो शायद उन्हें उनके लिए मजदूर भी तो नहीं किया जा सकता ।

मैंने नि के० एम० मुरी को पत्र लिखा है । बेजो । क्या जवाब देते हैं ।

इस वक्त को केवल निकली थी । उन्हें प्रयाग से यहाँ जाये । यहाँ बम्बू की भी निकल माई और छ दिन से यह पड़ा हुआ है । मैं तो शहर पधा भी नहीं । पर रैल-बीड केवल बिट्टी-पत्र लिख सैता हूँ ।

प्रयाग से मुक्त कुछ समाधों की राय है कि हंस केवल कहानियों पर पत्र बना दिया जाय । मुन्हारी क्या राय है ? इस विषय में शायद हमारी बलवती हो चुकी है । लेकिन भाव नहीं थाता कि तुमने क्या राय की थी ।

लेप कुछन है ।

२ मई १९३८

बाबू जी

पत्र मिला। मीने तो समझा था कि आपने चिट्ठी लिखी है इससे सुरक्ष ही कहानी की जरूरत होगी जो भेज दी थी। दर है वह भगसे महीने तक पुरानी न हो जाय क्योंकि बम्बई से छपनेवाले संघर्ष में भी उसे भेजा है।

‘हंस’ कहानियों का हो। हाँ इसमें क्या बुरा है बल्कि एक Specialisation की विधा ही बनेगी लेकिन इतनी धक्को कहानियाँ मिलेंगी? और तब जब कि ‘हंस’ की हानत पैसा देने की नहीं है? न ‘हंस’ स्टाफ़ ही धक्का रख सकता है। मेरा तो क्याम है कि मुसी की स्क्रीम कुछ बन तो हंस छोड़कर आप छुटिये। छुट्टा मात्र अम्बट से होगा। क्योंकि तब भी पत्र तो सम्पादन के सिद्धान्त से आपका ही होया। मुझे पहले तो मेरे मन में यह भी है कि कहीं कि ‘हंस’ का सम्पादन मुझे दे दे।

इसाहाबाबू का ही रहे है तो जाकर देखिये। मुझे तो वहाँ का क्या भरोसा नहीं होता। भारतीय जी को मैं नहीं जानता। धक्का ही है कि उनसे आपका सहायता मिल। बम्बई से पाये पैसे में से इतना भी क्या कि एक ठमुराँ किया जाय ता क्या बुरा है। वहाँ कहीं बनने का ठीक किया है।

इस सबक से मुझे क्या दर लगता है। अब बन्नु की क्या हालत है बकर लिखियेगा। क्या Acute case है? यों तो साठ-आठ रोज़ में बाने मुरम्भ भाते और ढङ्गे लगते है, क्या वहाँ Epidemic हो पड़ा या क्या ब्रेक का?

यहाँ यों सब ठीक-ठाक है। इधर आप मुह्त बे नहीं पाये। कभी दो रोज़ की छुट्टी निकाल सकेंगे कि यहाँ पावे? अर्जी जूब पड़ने लगी है। पहाड़ यात्र जाता है लेकिन जाना कहीं होता है। अम्मा जी को मेरा प्रणाम।

आपका

जेनेन्द्र

५०

बनारस

२७ सितम्बर १९३८

प्रिय जेनेन्द्र

पुन्हारा काय मिला। चिट्ठा हो रही थी कि क्यों कोई पत्र नहीं आ रहा

दुध कार्यालय, बनारस ।

८ दिसम्बर १९३५

प्रिय बनेन्द्र

कल तुम्हारा पत्र मिला । मुझे यह शंका पहले ही थी । इस मर्च में शायद ही कोई बचता है । पहले ऐसी दृष्टि की कि विस्मयी आर्जें लेकिन मेरे सामान तीन दिन से भाने हुए हैं और शायद बेटे का रही हैं । फिर यह भी सोचा कि तुम्हें समझने की तो कोई बात है ही नहीं । यह तो एक दिन होगा ही बा । हाँ जब यह सोचता हूँ कि वह तुम्हारे लिये क्या भी और तुम उनके कल म प्राप्त भी लड़के व बने फिरते वे तब भी चाहता है तुम्हारे बने मिलकर रोऊँ । उनका लह लोह । वह तुम्हारे लिए जो कुछ भी वह तो भी ही मगर उनके लिए तो तुम प्राण थे । धीरे से । सब कुछ व । बिरसे ही सम्पत्तियों को ऐसी माता मिलती है । मैं बेल रहा हूँ तुम कुली हो और चाहता हूँ यह कुछ धाधा-धाधा बाँट नूँ मगर तुम हो । मगर तुम बोले नहीं । इसे तो तुम सारे का माया अपने अपने निष्कट स्नान म स्वरचित रखो ।

कल से छुट्टी पाले ही मगर का सका तो जल्द का बाधो । मिले बहुत दिन हो गये । मन तो मेरा भी भाने को चाहता है, लेकिन मैं प्राण तो तीमरे दिन रस्ती तुझकर आर्मुगा । तुम — मगर जब तो तुम भी मेरे बसे ही भाई । जब वह बेचिरी के मर्च कहाँ ।

और सब पुछो तो मेरी रीर्ष्या ने तुम्हें प्रभाव कर दिया । क्यों न रीर्ष्या करता म सतत वय का का जब माता की जमी गयी । तुम २७ के होकर मातावाले बने रहे । यह मुझने कम बेला प्राण । जब बस हम बसे तुम । बलि में तुमने प्रच्छा हूँ । मुक माता की मूरत भी पाद नहीं जाती । तुम्हारी माता तुम्हारे मामने है और बोलती नहीं मिलती नहीं ।

महारमा की तो वहाँ होंगे ?

और तो सब ठीक है । जगुर्बेदी की ने कमकसे बुलाया था कि आकर तानुची आपानी कब का मापण पुन आधो । वहाँ तानुची हिन्दू मूर्तिबन्धित प्राये उनका व्याख्यात भी हो गया मगर मैं न जा सका । मरण की बार्ने मुनतें और पक्ष उस बीत गयी । ईश्वर पर विश्वास नहीं पाता कम थडा होती । तुम प्रास्तिकता की ओर जा रहे हो । जा नहीं रहे पक्षे मरण वन रह हो । मैं मरिच मे पक्ष प्रास्तिक होता जा रहा हूँ ।

बेचारी भयवती प्रेक्षी हो गयी ।

‘सुनीता’ जाने कहीं रास्ते में रह गयी। यहाँ कहीं बाजार में भी नहीं। बिजपट के पुराने धंक उठाकर पड़े पर मुश्किल से तीन धम्मियाँ मिले। तुमने बड़ा जबरजस्त Ideal रख दिया। महात्मा जी के एक साल में स्वराज्य पानेवाले आन्दोलन की तरह। मगर तमवार पर पाँव रखना है।

सुम्हार
बनपतय

५२

हंस कपारीमय, बजारत।

२४ विसम्बर १९३५

प्रिय जीनेन्द्र

‘सुनीता’ सब क्या। घापी दूर तक तो कुछ रस न आया लेकिन पिछला आभा सुंदर है। नाट्यत्व का जो आरस तुमने रखा है वही सच्चा आनंद है। नाट्य केवल गृहिणी क्यों हो गृहिणी से घलग भी उसका जीवन है। अगर उसमें गृहिणीत्व से आगे बढ़ने की सामर्थ्य है तो वह क्यों न आगे अडे। सुनीता के मन में इस नये खेल से आगे से जो संकल्प हुआ है वह उसके रक्त में घने हुए गृहिणी जीवन के अनुकूल है। मगर तुम्हारा हरिप्रसन्न धर्म में जाकर मुझे कुछ X X X होता जान पड़ता है। शायद मुझे भ्रम हो। लेकिन धीकान्त से छिपकर वह कल्प क्यों किया गया? इनमें मुझे नैतिक बुद्धता का भय होता है। धीकान्त की पूरी अनुमति से वह काम किया जा सकता था। धीकान्त बीसा उधारकेता मनुष्य ‘सुनीता’ के इस नये माग में बाधक न होता और होता तो सुनीता को अपने निश्चय पर दृढ़ रहना और उसके मतीजे (वर्धित कर) लेना चाहिए था। हरिप्रसन्न ने सुनीता को Seduce किया कुछ ऐसा भावित होता है। सुनीता व्यवहारिणी बने इसमें कोई हान नहीं नहीं वह धीरज की बात है। उसके लिए भी और देश के लिए भी। लेकिन हरिप्रसन्न के मन में यह कुत्सित भावना क्यों? व्यवहारिणी के पर त विराजित उसे व्यवहारिणी के पर पर क्यों जाना चाहता है? अगर सुनीता विवाहित न होती अगर यह प्रेम सत्या के माय निभाता तो कोई बात न थी। लेकिन अब धीकान्त और सुनीता में एक मध्यस्थता हो चुका है और वह मध्यस्थता उन स्वीकार है तो फिर यह व्यवहार क्यों? अगर सुनीता हरिप्रसन्न को जी से चाहती है, तो उसे अपने पति से स्वयं कह बना चाहिए था। यह बोना और फरेव क्यों? मगर सुनीता वहीं भी हरिप्रसन्न को चाहती नहीं बिपत्ती की। बिपत्ती का धर्मतोष की वहाँ गब भी नहीं फिर वह क्यों हरिप्रसन्न के सामने इन तरह

हृदय कायास्थ, बनारस ।

६ विजय १९५३

प्रिय जीनेन्द्र

कल तुम्हारा पत्र मिला । मुझे यह शंका पहले ही थी । इस पत्र में सामान्य ही कोई बात है । पहले ऐसी दृष्टि थी कि किसी घाई लेकिन मेरे सामान्य तीन दिन से घाई हुए हैं, और शायद बेटी का रही है । फिर यह भी माया कि तुम्हें समझने की तो कोई बात है ही नहीं । यह तो एक दिन होना ही था । हाँ जब यह सोचता हूँ कि वह तुम्हारे सिये क्या भी और तुम उनके कल में माया भी सड़के से बने फिरते थे तब भी चाहता हूँ तुम्हारे गले मिलकर रोऊँ । उनका वह स्नेह । वह तुम्हारे लिए जो कुछ भी वह तो भी ही मगर उनके लिए तो तुम माया थे । और वह । सब कुछ थे । बिरसे ही भावनाओं को ऐसी माया मिलती है । मैं देख रहा हूँ तुम दुःखी हो और चाहता हूँ यह दुःख माया-माया माया से भरा तुम हो । मगर तुम बोलो नहीं । इसे तो तुम घाई का माया अपने सबसे निकट स्थान में स्वरचित रखोगे ।

काम से छुट्टी पाते ही मगर माया सको तो बकर माया जाओ । मैं बहुत दिन हो गये । मन तो मेरा तो घाई को चाहता है, लेकिन मैं माया तो तीसरे दिन रस्सी तुझकर माया । तुम — मगर माया तो तुम भी मेरे जैसे हूँ । माया वह बकिरसे के माया कहीं ।

और सब पृथ्वी तो मेरी ईर्ष्या न तुम्हें घनाय कर दिया । क्यों न ईर्ष्या करता मैं सदा सब का माया माया भी जाती गयी । तुम २७ क होकर माया-माया बने रहे । वह मुझे कब देखा जाता । माया जैसे हम जैसे तुम । बकिरसे मैं तुम्हें माया हूँ । मुझे माया की मृत्यु भी माया नहीं आती । तुम्हारे माया तुम्हारे माया है और बकिरसे नहीं मिलती नहीं ।

महामाया भी तो नहीं होते ?

और तो सब ठीक है । जगदीश्वरी भी मेरे कलकल मायाया या कि माया मोमूची आपनी कवि का मायाय तुम जाओ । यही मोमूची हिन्दू मूनी-मिटी माया उनका व्याख्या भी हो गया मगर मैं न जा सका । माया की माया तुम्हें और पदों पर भीत गयी । ईश्वर पर विराम नहीं पाता केम भ्रष्ट होती । तुम माया-माया की घोर का रहे हो । जा नहीं रहे पत्रके माया बन रहे हो । मैं मरिह न पत्रका माया-माया होता जा रहा हूँ ।

बेचारी माया-माया माया-माया हो गयी ।

‘सुनीता’ जाने कहीं रास्ते में रह गयी। यहाँ कभी बाजार में भी नहीं। मित्रपट के पुराने झंके उठाकर पड़े पर मुश्किल से तीन घण्टाय़ मिले। तुमने बड़ा खबरबस्त Ideas रखा दिया। महारत्ना जी के एक सास में स्वराज्य पानेवासे धार्मिकता की तरह। अगर सत्तार पर पाँव रखना है।

तुम्हारा
मनपतराम

५२

हंस कर्मास्य, बनारस।

२४ दिसम्बर १९३३

प्रिय जैनेत्र

‘सुनीता’ पढ़ गया। धापी दूर तक तो कुछ रस न आया लेकिन पिछला धापा मुरर है। गीतिका का जो आग्रह तुमने रखा है वही सच्चा धापा है। नाटी कमल गृहिणी क्यों हो गृहिणी से अलग भी उसका जीवन है। अगर उसमें गृहिणीत्व से आने बहने की सामर्थ्य है तो वह क्यों न आने बड़े। सुनीता के मन में इस नये ज्ञान में आने से जो संघर्ष हुआ है वह उसके रक्त में सने हुए गृहिणी जीवन के अनुकूल है। अगर तुम्हारा हरिप्रसन्न भक्त में जाकर मुझे कुछ × × × होता जान पड़ता है। तब मैं मुझे भ्रम हो। लेकिन श्रीकान्त से लिपिकर वह कृत्य क्यों किया गया? इसमें मुझे नैतिक दुर्बलता का भ्रम होता है। श्रीकान्त की पूरी अनुमति से वह काम किया जा सकता था। श्रीकान्त बीसा उचारचेता मनुष्य ‘सुनीता’ के इस नये मान में बाधक न होना और होता तो सुनीता की अपने निरचय पर बड़ रहना और उसके नतीजे (बर्दाश्त कर) सेना चाहिए था। हरिप्रसन्न ने सुनीता को Scold किया कुछ ऐसा भासित होता है। सुनीता ध्वजाधारिणी बने इसमें कोई हान नहीं नहीं वह औरत की बात है। उसके लिए भी और देश के लिए भी। लेकिन हरिप्रसन्न के मन में यह क्लिप्त भावना क्यों? ध्वजाधारिणी के पद में गिराकर उसे ध्वजाधारिणी के पद पर क्यों जाना चाहता है? अगर सुनीता विवाहित न होती अगर यह प्रेम सत्या के मातृ निमग्नता तो कोई बात न थी। लेकिन अब श्रीकान्त और सुनीता में एक भ्रष्टाचार हो चुका है और वह भ्रष्टाचार उभे स्त्रीधर है तो फिर यह व्यवहार क्यों? अगर सुनीता हरिप्रसन्न को भी से चाहती है, तो उसे अपने पति से स्वयं कह देना चाहिए था। यह प्रस्ताव और फरेब क्यों? अगर सुनीता कहीं भी हरिप्रसन्न को चाहती नहीं बिनाभी थी। मित्रोह या धर्मदोष की वहाँ संक भी नहीं फिर वह क्यों हरिप्रसन्न के सामने इस तरह

मर ॥ जाती है। क्या हरिप्रसन्न का Personal Magnetism उस पर प्रसर करता है। अगर ऐसा है तो यह भी हरिप्रसन्न की मोचता और चापरवाही है मित्र के साथ बगा है। उस मित्र के साथ जो उसे अपने भाई से भी प्रिय रखता हो? क्रांतिकारी नीति में बिबाह हथ बस्तु हो सकती है। अगर इस सामाजिक (बचन) का महत्व कर्मों भूषण पार्य। स्त्री पत्नी रहते हुए भी अभिनेत्री बन सकती है, और अगर पति पुराचार करे तो उसे लेकर मार सकती है। लेकिन इस तरह एक युवक के पंजे में फँस जाना न उस क्रांतिकारी युवक को शान्ता देता है न नारी को।

अगर मरे समझने में सक्ती हो तो सुचार देना।

मेरे 'कमभूमि' का उद्गु एडिशन बाबिबा निम्निका ने निकाला है।

हो सके तो काली मन्वर 'हंस' के लिए कुछ लिखना।

तुम्हारा

अमरतराय

५३

हंस बाबनिम

अनारस कैंड

१ जून १९३६

प्रिय अनेत्र

तुम दिल्ली कम पहुँच गये? मैं तो समझ रहा था अभी बिरपाव में ही हो। हाँ वह राष्ट्रभाषाबासा कटिब का तो मन्वर न जान कहाँ रह गया। मित्र नहीं रहा है।

'गोदान' निकल गया। बस तुम्हारे पास बाबगा। जून मोटा हो गया है ६० से (अगर) गया। अपना विचार लिखना।

परिपद् तो साविक बस्तुर (धिसट) रहा है। परिपद् का निर्मास हो जाने से इसमें कुछ गया जीवन तो आया नहीं।

आजकल 'हंस' में ३३०) महीने की कमी पड़ रही है। १००) का सब और १३) की आमदनी। सोना का काका लाहव के जाने से इसकी बहा मेंमसेमी मन्वर अभी तो कोई फल नहीं हुआ। आज जून की मक्या निकल कमी कम मेरी आयगी।

हाँ सौरियल नाविल रीक से लिखो। मुझे डर यही है कि 'हंस' की माली

हासत खराब है। और। मिलना शुरू करो। कुछ न कुछ करना चाहिए। बेकार बैठने से कसे काम चलेगा। मैं ऐसा करूँगा कि वो हज़ार हज़ार महीने धापता बाढ़ें। इस तरह (खड़े) प्रकाशन में सुविधा हो जायगी। पुस्तक बहुत कम खर्च में तैयार हो जायगी। हाँ यह चाहता हूँ कि मरीजी भी का उपन्यास खत्म हो जाय तो शुरू करो।

कुम्हार
जनपतराय

५४

बनारस सेंट
२९ जून १९३६

प्रिय बीनेन्द्र

मह संस तो अगस्त में जायगा। दर में धाया और डिग्री के चारों छान भर गये। राष्ट्र भागनाला लेख क्या कोई प्रिन्ट का? याद नहीं आ रहा है जब धाया। महीने तो मिलता ही नहीं।

'हंस' का पैरेवाला बार कम्पनी पर है मुझ पर नहीं। हाँ कम्पनी इसके खर्च से $\times \times \times$ हुई है। ४ जुलाई को बर्षा में भारतीय परिषद् की काय कमेटी की बैठक है। इसमें फैसला किया जायगा कि 'हंस' का क्या किया जाय। शान्त में भी बाढ़ें। धात्र भी बम्बई में काका और मुशी बैठे कुछ चलाऊ कर ग्वे है। मुझे तार दिया का लेकिन धात्री बम्बई जाता और ४ को बर्षा। बर्षा जाला ही मुश्किल हो रहा है। कबीरदा भी बम्बई नहीं है।

अनभामालों का बह (राय) किसी तरह हूर हो जाय तो क्या कहना। काम मिलने-मिलाने का है और महीने की को फुलत नहीं। जब तक कोई एक धात्री पीछे न पड़ जाय तो जीवन कहीं ले धाये।

धात्र 'गोदान' भेज रहा हूँ। पटना और बम्बई लगे तो वही 'धर्मन' या 'विशाल भारत' या 'हंस' में धालाचना करना। बम्बई न लय तो मुझे सिर्फ देना धालोचना मत मिलना ...

५५

बनारस,
५ जुलाई १९३६

प्रिय बीनेन्द्र

'मुनीता' मैं धापूर्व। जिन वजन तुम यहाँ धाधोय टाइप काउच धाम धादि

का निश्चय किया जायगा।

४ को बर्षा में भारतीय साहित्य परिषद् की मीटिंग है। इस मिमिटेड हंस को परिषद् के हाथ छीपेगा। छपायी धादि का प्रबन्ध काफ़ी शुरू करेगी मेरा केवल नाम रहेगा सम्पादको मे। यहाँ छापने मे उन लोगों के विचार से सब क्या पड़ता है।

धन तक कम्पनी मे मुझे कुल १४) दिये हैं। मगर मुझे भ्रष्ट से निवात मिल जायगी।

(जोपामुद्रा) समाप्त हो गई। अस्त मे तुम्हारा उपस्थापना सक्ता है। मुसी को एक पत्र भिज दो। अगर 'हंस' यहाँ रहा तो कोई बात नहीं लेकिन वहाँ गया तो वे लोग पैसला करेंगे। मैं तो बनबरी से एक और पत्र निकालूँगा। तुम आग्रोवे तो सारी बात तय होंगी। भगवती को साथ लाना। मैं १५ दिन से बस्ता न मुबतिला हूँ।

तुम्हारा
बगपतरान

५६

बनारस

१६ अगस्त १९३३

प्रिय जीवन

ब्रह्मनिर्वाही और पत्र टीक-टीक पहुँच गया। बन्धवान। ठाकुर बीनाब सिंह को बानी अगस्त्य कुरुचिपूख बी और अल्पकित्तियों से मरी हुई। मैंने हम न एक लिपिही बी। यह लोग मस्ती क्याति क पीछे पड़े हैं और सनसनीखेड पत्र कारिता उसके लिए राजमाग है। मुझे उम्मीद है कि बीनाब सिंह इन तयगत को सहाराएंग नहीं।

मुझे यह जानकर अफ़सास हुआ कि तुम्हारे मामले काफ़ी परेशान कर रहे हैं। ऐसा लगता है कि रंगभूमि का कारबार ठीक से नहीं चला। साहित्यिक उद्योग से तुम धाता भी धीन क्या कर सकते थे? हाँ जगह वही पुरानी कहानी है। बिज्याओं की बिज्जे इतनी निरप्रायमक है कि भविष्य की बात सोचकर कसेरा भाम सेवा पड़ता है। तुम मुझसे जागरण बन्द करन को कहते हो। एक से क्या सनबा उनके बारे में सोच चुका हूँ। लेकिन चूँकि मैं उस पत्र पर करीब तीन हजार का बाटा उठा चुका हूँ उसे बच कर देने न मुझे कठिनाई हो रही है।

साहित्य सचि प्रनिश्चित-धी चीज है। उस पर मरोसा नहीं किया जा सकता। यनाबा इसके उनके लिए मानसिक शक्ति और बातावरण की शक्ति अपेक्षित है जो कि वतमान स्थितियों में हाथ नहीं पाती। प्रेस को बनाना ही पड़ेगा। मैं अपने माई का क्या उनमें क्या दिया है और अपनी जिम्मेदारियों से धन नहीं बच सकता। यहाँ पर काम बहुत कम है। बोझा-बहुत जो है वह यपारा सबसे प्रेस हविमा लेते हैं। प्रेस को काम देना है। बागरण से घासतन करीब बार ली कसे बसुम होते हैं। इसका मतलब है कि सबसे प्रेस का कर्ना निकल जाता है। बागरण में जो कणस हस्तेमान होता है उसकी कीमत लगभग डेढ़ ली कसे होती है। बर रकम हर महीने इस में और कितारा की बिछो से पूरी करनी पड़ती है। बिछो बागर मतोपजनक होता तो सब छीक-डोक रहता। हमने 'कासी' कपरशि बिछो पूरा और 'ग्रम की बेरी' छापी है। धन हम 'प्रतिज्ञा' बाप रहे हैं और उसके लतम होते हो 'कायाकर' शुरू करदे। हम तरह तुम बेसोये कि यहाँ तक ग्रमाने को बात है हम एक से काम कर रहे हैं। सकल काम का समुख यमान है। कोई भी कितार नहीं बिक रही है मेरे एक-दो मरह जो स्कूलों में मंजूर है वहीं किसी तरह स्थिति का सम्भालने हुए हैं। कमभूमि ली बाकी बांधी बिक रही है। बागरण बड़े मज में मुनाके की चीज हो नकली है धर में औरन के साथ लतमें लगा रह मर्। उससे धर मुझे महोने में ली कसे की ली धामशनी हो बाव तो मैं समुख हूँ। मुझे उम्मीद है कि दूसर बप क धन तक वह मेरे लिए बोझ न रह जायगा।

'कायाकर' के लम्ब होते ही मैं तुम्हारे मंगलार्थ हाथ में लूँगा। मैं किना बाछा हूँ कि तुम्हारे सब रचनाएँ प्रकाशित कर और तुमको तुम्हारी छोटी-छोटी वित्तार्थों में मुक्त कर दूँ।

तुमने 'यामा' का अनुबा शुरू किया है, बहुत अच्छी बात है। बिरब का मग इतिहास समाप्त हो गया है। धन मैं फिर अपना 'मोशन' उठाऊँगा।

मुझे उम्मीद है कि मैं बहुत जल्द ही तुमको कुछ भेजूँगा। यहाँ तक महावीर का बात है धन तुम सोचते हो कि वह बाछा सेलमैन हो सकता है और बाछा विजनम सा लकता है तो मुझे उसका धन पाठ रबाकर खुशी होती। मज पर बँटकर करने लामक कोई काम नहीं है। लमको बिहार, राजदुताला भाति का बीरा करना पड़ेगा। धर वह बाछा काम करता है तो कोई बरह नहीं है कि लल यों हमारा स्वामी सेलमैन न बने। शुरू में मैं लमके कन्वैरन के लिए छुट देने को तयार हूँ और करोब ध' महीने तक का दायम लमको दूँगा। धर वह महीने में ली ली लमके की बिछो कर मके या हम और बागरण के

बौस-बीस ग्राहक भा सके धीरे एक-सो रुपये को कितार्ह बच सके तो उसकी तनखवाह और सफर खर्च निकस जायेगा और वह एक कमाऊ धारमा सक्ति होगा बोझ नहीं बनेगा । अगर तुम सतुष्ट हो कि वह इतना सब कर सकता है तो तुम उसको मेरे पास भेज दो या टके रहा जब तक कि मैं तुमका खयाल नहीं सेजता ।

तुम मेरी कुछ मदद क्यों नहीं करते ? साप्ताहिक पत्र को मुनाफे की बीज बनाया जा सकता है और जब भी एक-दो ऐसे पत्र हैं । अगर हम और भी धन्नी सामग्री दे सकें और विज्ञापन हासिल करने के लिए अपना कुछ खोस सकें तो हम अपने प्रकाशनों को धामे बढा सकते हैं और फिर प्रकाशकों को टोह में जाने की जरूरत न होगी । दुनिया बेबइक उत्साही लोगों के लिए बनी है जो अपने मौकों का अधिक से अधिक लाभ उठा सकते हैं । तुम रोजमर्रा की बीबी पर गिप्पियों के रूप में कामम हो कामम बड़े मजे से बसीट सकते हो । बड़े घर-घोस को बात है कि इतना सब बिनाब रखकर भी हम एक साप्ताहिक को काम पावों के साथ नहीं चला सकते । तुम मिलर बिरला से मिलो और उनको हम दोनों के काम का महत्व समझाओ और बतलाओ कि हम कसी-कसी परेशानियाँ उठाते हैं । वह एक बड़े विज्ञापनवाला है । वह अपनी कपड़े की मिमों बूट केट उद्योग और बीमे के व्यवसाय का विज्ञापन करते हैं । हमको भी अपना संरक्षण वह क्यों नहीं दे सकते ? अगर तुम सोचते हो कि सुख-सुविधा और जन-मम्मल अपने आप या बायबी और नरमी तुम्हारी प्रतिभा के कारण तुम पर इतनी सीझ बायेगी कि आकर तुम्हारे पैरों पर जिर पड़ेगी तो तुम चोले में हो । या तो सम्झानी हो जाओ और भासारिक अभिजातों के तबाना हो । बहुत हीकर जब कि एक परिवार का बोझ हमारे कंधों पर है हमें कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा । जब मेरे जैसा एक टूटा-फूटा बुझा धारमी बिलक भर पर भर कि तुमसे ज्यादा बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं अपनेसे कम इतना सब कर सकता है तो फिर तुम्हारे जैसा प्रतिभाशाली व्यक्ति तो कमत्कार कर सकता है ।

शुभाकामनाएँ सो । हम सब कुशलपूवक हैं ।

मल्ल —

वनारसीदास चतुर्वेदी

५७

विशाल भारत कार्यालय

२१ अपर सरकुलर रोड कलकत्ता

२८ मार्च १९२४

श्रीमान् प्रेमचन्द जी

सादर बन्दे ।

'माइन रिम्यू' के जूल के एक म जो दो तीन दिन बाद निकल जायेगा आपकी कहानी छप गयी है । दार्जिल बचाई देता हूँ । मुझे इससे उत्तमा ही हूँ हुमा है जितना आपनी ही किसी रचना के प्रकाशित होने से होता ।

कहानी की माया को ठीक कराने के लिए मुझे मि० ऐण्ड्रू को कष्ट देना पड़ा था यद्यपि करेकसन उन्हें बोले ही करने पड़े । पर उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और बड़ी प्रसन्नतापूर्वक यह काय कर दिया । श्री रामानन्द बाबू से भी मैंने यह कह दिया था कि यदि वे ठीक समझें तो छाप नहीं तो मुझे वापिस दे दें । पहले उनका सम्प्रेत आया था 'प्रेमचन्द जी की सर्वोत्तम कहानी हम पहले छापना चाहते हैं और यह कहानी छपने योग्य होने पर भी प्रेमचन्द की कीर्ति के प्रति न्याय नहीं करती । इस पर मैंने यही कहना मेवा कि आप इसे न आपसिने हुमरी में चुनकर मिश्रमाझे । रामानन्द बाबू के सुयोग्य पुत्र अशोक चटर्जी ने जो केनिज के भी० ए है मुझसे कहा है कि मैं स्वयं आपकी गल्प का अनुवाद करके और वे (अशोक बाबू) उस ठीक कर लेंगे । पर मुझे आपकी कहानियों का अनुवाद करने की हिम्मत नहीं पड़ती क्योंकि जैसी बहिया हिन्दी आप लिखते हैं मैं उतनी तो क्या उसका बगर्बी हिस्सा अच्छी धंसेनी नहीं मिल सकता ।

कृपया एक नाम कीजिए । 'ललनिधि' इत्यादि कहानियों की आपनी सभी पुस्तकें मुझे भेज दीजिए । श्री रामेश्वरप्रसाद सिंह जी का पता भी बतलाइये ।

श्री रामानन्द बाबू अशोक बाबू 'प्रबन्धी' के उप-सम्पादकवृत्त इत्यादि सभी सम्बन्ध आपकी रचनाओं को पढ़ने के लिए उत्सुक हैं और मेरी सम्मति में 'बेस्ट स्टोरीज' का पहले अनुबा होगा चाहिए । इसीलिए मैंने रामानन्द बाबू से

कहना मेरा था कि उस घाप पहले न घाप पर फिर उम्हान स्वयं ही घाप थी । यह भी एक प्रकार से अच्छा ही हुआ । मैं यह नहीं चाहता था कि मेरी सिफारिश से घापकी रचना छूटे । You don't stand in need of my recommendation

मुझे धरपन्त खेर होता यदि वे कबल इमी कारण से कि मैं कह रहा हूँ घापकी कहानी घापव ।

मैं उस दिन का स्वप्न देख रहा हूँ जब कि किसी हिन्दा गल्प लेखक की कहानियाँ का अनुवाद रचितयन जमल कब इत्यादि भाषाओं में होया । यदि घाप ही को यह गौरव प्राप्त हो तब ता बात ही क्या है । मेरे हृदय में घापके प्रति श्रद्धा इसलिए है कि घाप हमारी भाषावत्तों का कुछ बंदर हिन्दी का माया ऊँचा कर सकते हैं । बँगला इत्यादि से दान लेते-लेते हमारा गौरव बंद नहीं रहा ।

आता है कि घाप सक्लस है ।

प्रबन्धीय

बनामसौदास चतुर्वेदी

मी खबरत थी के विषय में लिखूँ ।

भकेला होने से काम करते-करते तंग आ जाता हूँ ।

मि एड्डूब ने मुझसे कहा था कि प्रेमचन्द जी को बिल सेवना कि धरेबी मे उनकी गल्प का अनुवाद के प्रकाशित होने पर मैं उनका धर्मिबन्धन करता हूँ । मे बिलायत चले गये हैं ।

घाप स्वयं अपनी किसी साम्य जीवन से सम्बन्ध रखनेवासी गल्प का धरेबी अनुवाद क्यों न मेरे ।

५८

२१ अपर सरकुजर रोड कलकत्ता

१७ जनवरी १९२८

प्रिय प्रेमचन्द जी

पत्र के लिय धन्यवाद । मैं बीम लाल को घर आ रहा हूँ और घापको सूचना हूँ कि हमारी मुलाकात का गवने अच्छा तरीका क्या होगा । सीटल बस्त मैं इसाहाबाद में बसने का इरादा रखता हूँ इसलिय शायद मरा जलनऊ घाना मुमकिन न हो पर मैं कोशिश करूँगा ।

मैं मुन्तरालन जी को एक दिन के लिये फीरोजाबाद घाने को कह रहा हूँ । वे घापकी रचनाओं के बहुत बड़े प्रशंसक हैं और घापके घनाप्रशंसक

बिचारो को बिहाप रूप से पसन्द करते हैं। धातने देखा होया कि मैने धातने पत्र म एक भी बीज साम्प्रदायिकता के समर्थन में नहीं छापी। इतना ही नहीं मैं बहुत बार उसकी तीव्र आलोचना कर चुका हूँ। पहले धर्म में ही मैने बिहाप या नि साम्प्रदायिकता एक ऐसा पाप है जिसका कोई प्राप्तिपत्र नहीं है। मुझे बटी सुरा है कि इस प्रश्न पर हम दोनों मिलकर सहमत हैं। सुन्दरदास जी के बिचार तो इस प्रश्न पर और भी बुरा है। अगर वे छीरोबात्सार धाना संभूर कर लेते हैं तो मैं आपसे भी धाने की प्राप्ता कर्न्या और अगर आप नहीं धा सकते हो फिर मैं सबनक धाने की कोशिश करूँगा।

हमारे बनवरी के स्वराज्यो के सिधे धातको एक कहानी लिखनी होगी। रूपमा उसे सहीने मर के धरर मेरवे। प्रेमाधम के डग की कोई बीज बहुत धन्वी रहेगी। लेकिन मैं धपनी बात धातके उमर साधना नहीं चाहता। धात कमाकार हैं और वो मग बाहे लिखने के सिधे धातको स्वतः छोड़ना ही ठीक है। तारा-चव राय को धातकी कहानी 'मर' बहुत धन्वी सगी पर उनका धवास है कि क्काली 'एक बिलम समाज का भी रबादार न हूया' के साथ साथ हो जाना बाहिये भी और मैं उनसे सहमत हूँ। धात क्या बेबोव या बूसरे किसी लेखक की कुछ कहानियाँ अनुबाव के लिय मुझपने। तुगनेव का 'मूँ हूँ सोग इस धंक में धात रहे हैं।

धातका
बनारसी दास

गुप्त जी पर निगम का लेख जिसकी धातने सिद्धरिष्ठ की भी धधमुच बहुत सुन्दर है—बितने लेख उनके बारे में लिखे गये हैं सबसे धन्वा।

क्या धात कुछ उहु या हिन्वी लेखकों या कवियों के संस्मरण लिखन की हपा करेंगे ?

५६

बिहाप भारत कार्यालय
२१ धपर सरकुमर रोड कलकत्ता
१० जून १९५५

प्रिय प्रेमाधम जी

रूपमा धपनी सब पुस्तकें—मेरा मतलब उपन्यासों और कहानियों से हैं—

मेरे मित्र—

Mr Tarachand Roy
Professor of Hindi
Berlin University
Hohenzollernstrasse 161 b
Berlin — Wilmersdorf
Germany

को भेज दें।

मिस्टर राय को जमान भाषा पर अद्भुत अधिकार है। यहाँ पर मैं इतना घीर बोझ हूँ कि टैबोर की संपूर्ण जमान भाषा में बही उनके दुर्भाग्य है। मिस्टर राय हमारे सम्बन्धित लेखकों की कहानियाँ का अनुवाद करना चाहता है और मैं उनसे कह रहा हूँ कि आप ही से शुरू करें। आपकी कहानियों को जर्मन में देख कर मुझे कितनी खुशी होगी जो मैं उस भाषा का एक शब्द भी नहीं जानता। मिस्टर राय को आप के एक सज्जित जीवन-वृत्त की भी जरूरत होगी। प्रोफेसर गौडबाला मुझको अच्छा नहीं लगता। उसमें आत्मीयता नहीं है। क्या आप मुझे अपने जीवन के बारे में कुछ मोटस देने की हुपा करेंगे? अपने मौलवी साहब के कमरे से शुरू कीजिये—वही मौलवी जिन्हें आप इतना प्यार करते थे। मैं कुछ निजी डग की छोटी-मोटी चम्पाएँ चाहता हूँ। मैं बहुत से लेखकों से ज्यादा अच्छा स्केच लिख सकता हूँ क्योंकि मुझे वह काम पसंद है। आपके बारे में मैंने कुछ बार्ड टॉक रखी थी लेकिन वह कहीं इधर उधर हो गयी है। इसलिये आपको मुझे पूरे मोटस देने पड़ेंगे। मिस्टर बीड ने विद्वान आलोचक की तरह लिखा है। मेरे पास उनकी निदृष्टता नहीं है। मैं आपको आधुनी के रूप में जानता चाहता हूँ। कृपया मुझे अपना एक अच्छा चित्र भेज दें। अगर आपके पास अपनी कहानी पुस्तकों और जपानिया की अतिरिक्त प्रतियाँ हों तो कृपया मुझे सबकी एक-एक प्रति भेज दें। रंगभूमि आपने मुझे जखनऊ में दी थी।

मैं १९१६ में ही आपकी कहानियों का एक तुच्छ प्रसंग रखा हूँ। उस समय मैं बीसम बार्मेज इंजीनियर में छ साल से अध्यापक का और मैंने आपकी एक पुस्तक 'नवनिधि' पाठ्यक्रम में रखी थी। मिस्टर राय ने मुझको लिखा है कि अब तक किसी हिन्दी पुस्तक का अनुवाद जर्मन भाषा में नहीं हुआ। विश्वास आपकी कहानियाँ पहली चीज होंगी। है न और की बात? मैं आपकी कहानियों को जर्मन में देखने के लिये धीर हो रहा हूँ। उन्हें देख कर किसी का जमान खुशी न हानी कितनी कि मुझे।

आपका तुच्छ प्रसंग
बनारसी बाग बनारसी

आपको मेरा आशिर्वाद मिले ? मोहन सिंह का लेख आज तक नहीं निकला ।

६०

विशाल भारत कार्यालय

१२ १२ अपर सरकुलर रोड, कलकत्ता

१३ नवम्बर १९३८

प्रिय प्रमोद जी

प्रशाम ! आपका माहित्व के बिन्दु को ध्यानोत्पन्न में कर रहा था — उसी मैंने धन इतिमी कर दो है और अन्तिम लेख 'बालमोट-विरोधी आशोसन का अपसहार विशाल भारत' में लिख रहा हूँ । इस अवसर पर मैं आपकी सम्मति इस आशोसन के विषय में चाहता हूँ । मैंने सुना था कि आपने 'भारत' में मेरे सम्बन्धन में एक चिट्ठी लिखी थी । क्या उसकी प्रतिमिति आपके पास है ? मैंने उस छोड़ी थी पर वह का नहीं ।

वीरुत सुन्दरनाम जी ने मैं अभी प्रशाम में लिखा था । उन्होंने मुझसे कहा मुझे इस गाने साहित्य के बिन्दु ध्यानोत्पन्न उठकर सबकुछ बहुत अच्छा कर दिया । किसी न किसी का यह करण करना ही चाहिए था । यद्यपि इससे प्रारम्भ में बाधनटी लेखकों को कुछ विज्ञापन बनकर मिला फिर भी यह करण बहुत लाभदायक था ।

मेरा विश्वास है कि आपकी इस ध्यानोत्पन्न में मेरे साथ सहानुभूति थी । साहित्यिक दृष्टि से बाधनटी साहित्य सबकुछ उत्पन्न भनकर है । मुझे ज्ञेय है कि 'प्रधान ठका 'कनको' जैसे राष्ट्रीय पत्रों ने इस ध्यानोत्पन्न का वितरण प्रारम्भ किया । इसका विस्तार पुनः अपनी सम्मति इस विषय में मेजिये । मैं उसे अपने लेख में उद्धृत करूँगा ।

विनीत

बनारसीवास जगुबेदी

६१

१० १२ अपर सरकुलर रोड, कलकत्ता

११ मई १९३०

प्रिय प्रमोद जी

प्रशाम ! आपका धन्य मिलता । मैं आपकी जन्मदिनों में सम्बन्धित

हम सब को ही

परिचित हैं। इसलिये भुल नहीं मानता। जब कभी आपको धक्काठ मिसे विशाख भारत के लिए कोई कहानी लिखिये।

सुन्दरलाल जी बाबा स्केच आपको पसन्द आया यह पढ़कर मुझे हँस हुआ। मेरा उनका साक्षात् परिचय तो सन् १९१८ में हुआ था पर तबसे अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने उनके कमयोगी से बहुत लाभ उठाया था। मेरे ठमर उनकी बड़ी कृपा है बसिक मैं कहना चाहिए कि उन्हीं का भेषा हुआ मैं थाब यहाँ 'विशाल धारत' में काम कर रहा हूँ।

आपके पत्र के विषय में क्या लिखूँ। एक छोटे ही व्यक्ति के धन्य निब पढ़ने के लिए मैं गये और मुझे अभी तक नहीं मिला। अब पढ़कर अवश्य लिखूँगा।

'हंस' के लिए धक्काठ मिशने पर डकर कुछ लिखना चाहता हूँ लेकिन एक शर्त पर, वह यह कि आप अपना निब मुझे भेज दें और किसी से biographical notes लिखवा दें। साथ ही इन प्रश्नों का उत्तर भी दें। मैं किसी धर्मवी पत्र (सम्भवत बीडर) में आप पर कुछ लिखना चाहता हूँ।

१—आपने मध्य लिखना क्या प्रारम्भ किया?

२—अपनी कौन-कौन सी रत्न आपको सर्वोत्तम लगती है?

३—आपकी लेख-शैली पर देशी या विदेशी किन-किन रत्न लेखकों की रचना का प्रभाव पड़ा है?

४—आपको अपने धन्यो से रचनाओं से क्या मासिक आप हा जाती है?

५—हिन्दी में रत्न-साहित्य की वर्तमान प्रगति के विषय में आपके क्या विचार हैं?

६—आपकी रचनाओं का अनुबाब किन-किन भाषाओं में हुआ है?

७—आपकी आकाशाएँ क्या-क्या हैं?

मैं एक बार आपकी मध्य पढ़ जाना चाहता हूँ और फिर उसके विषय में अपनी बार से कुछ लिखना चाहता हूँ। इन प्रश्नों का उत्तर अपना विस्तार पूर्वक चिट्ठी के रूप में मुझे दीजिये। मैं प्रतीक्षा करूँगा। उत्तर आने पर मैं 'हंस' के लिए कोई सख आरकी सेवा में भेजने का प्रयत्न करूँगा। तब मैंने इसलिए रक्खी है कि आपने निब माँगते-माँगते क्यों बीत गये पर आपने अभी तक न भेज। इतना ही कहना चाहता हूँ।

कृपा बनी रहे

चिनीठ

बनारसीराम बनुरेरी

पुनरुत्थ

एक सपना प्रख्या विज्र भाप 'विहास भारत के लिए specially लिखवा बीबिए धीर उसका बिस मरे नाम सेव दीबिए । विज्र की तीन प्रतिर्वा मेबिये । यह arrangement ठीक रहेगा 'कमल' के २६ रु० बि० भा से मित्रवा ऊँया । लकावा कर रहा हूँ ।

६२

छरस्यती प्रेस कम्पनी

३ जुन १९३२

प्रिय भाई साहब बरे ।

भाप का पत्र कई दिना म घासा हुआ है । पहले ता कई बरतों म जाना पडा फिर नैनीताल जाने की जरूरत पटगयी । पहला तारीख को वहाँ से घासा तो वहाँ काँग्रेस की उत्सवों में पडा रहा । शहर पर क्रीम का कम्पा है । प्रमी-नामाय में लोगो पाकों में मिपायी धीर धीर डेर जाने पडे हुए है । १७४ बारा मया हुई है पुमिम लोगो का गिरफ्तार कर रहीं है धीर कपेम तो १७४ बारा योगन की फ़िऊ म है । उडे की गई पासिमी ने लोगो की हिम्मत तोड दी है ।

भाप मुममे भेटा विज्र मायते है । एक विज्र कथ दिन हुए लिखवासा था । वह साहीर सेव दिया । वहाँ मे क्वाक मोगवाकर क्वाकियों के एक संग्रह 'पाँच फूल म छापा । उनी की एक परत फाड़कर सेव रहा हूँ । धगर हममे नाम बस नाम तो क्यो नई तनवीर लिखवाऊँ । मैं तो समझता हूँ वह कासी प्रच्छी है । धगर बरतन हली तो हुका क्वाक सेव हुआ हालाँकि ठीक नहीं कह सक्ता क्वाक प्रेम में है या नहीं क्योंकि 'बोम्बा ने माया बा । धगर वहाँ जता मया होमा ना वहाँ स घाने पर सेव हुआ । हूँ धगर बिलकल नई तनवीर धरकर हो तो मुझे तुम्हें लिबिए, लिखवाकर सेव हूँ ।

मरे विषय में आसन जो प्रश्न पूछे है उसका उत्तर यों है—

१—मिने १९०७ में गल्प लिखना शुरू किया । मरम पहले १९०८ में मेरा 'मोडे बरतन जो पाँच क्वाकियों का संग्रह है जमाना प्रेम मे लिखवा था पर उस हुमीरपुर क बनेकर ने मुझसे लेकर चलवा जमा था । उनके ज्ञाप में वह बिडाहात्मक था हालाँकि तब स उसका अनुबार कई संग्रहों धीर पत्रिकाया में निकल चुका है ।

२—इस बरतन का जबाब बना कठिन है । दो यी म ऊपर गप्पों में वहाँ

एक नुनू सेकिल स्मृति से काम लेकर लिखता हूँ—

१—बड़े घर की बेटी २—रानी सारजा ३—तमक का बरोपा ४—सोत
५—धामूपख ६—मायस्त्रियत ७—कामना तल ८—मदिर और मसजिद ९—
बासनामी १०—महासीर्य ११—सत्याग्रह १२—माधन १३—मती १४—लेजा
१५—यत्र ।

मजिसे मन्सूब' नामक छद्म कहानी बहुत सुन्दर है । जिसने ही मुसलमान
मिर्चों ने उसकी बड़ी प्रशंसा की है, पर अभी तक उसका अनुबाव नहीं हो सका ।
अनुबाव में भाषा-सारस्य साव्य हो जायगा ।

१—मेरे ऊपर किसी विरोध लेखक की शैली का प्रभाव नहीं पड़ा । बहुत
कुछ पं० रतननाथ वर मकलमी और कुछ डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर का प्रसर पना
है ।

४—धाय की कल न पूछिए । पहले की सब किताबों का अधिकार प्रकाशकों
को दे दिया । प्रेम पञ्चीशी सेवासदन सप्त सरोज वेमात्म्य संप्रदान आदि के लिए
एकमुस्त चीन हज़ार रुपये हिन्दी पुस्तक एजेंसी ने दिया । लक्ष्मि के लिए शायद
अब तक वो ही रुपये मिले हैं । रंघभूमि के लिए अट्ठारह सौ रुपये बुलारेमान में
दिये । और सग्रहों के लिए सी बी सी मिल रुपये । काव्यकल्प आकाश-कवा प्रेमतीव
प्रमप्रतिमा प्रतिज्ञा मेरे कुछ खाया पर अभी तक मुश्किल से १) रुपये बमूल
हुए हैं । और प्रतिमा पड़ी हुई है । फुटकस धामवभी लेखों में शायद २५ रुपये
माहवार हो जाती हो । मगर इतनी भी नहीं होती । मैं अब 'हंस' और 'माधुरी'
के सिवा कहीं लिखता ही नहीं । कभी-कभी विशाल भारद्वाज और 'मरस्वती' में
लिखता हूँ । अब ही अनुबावों से भी अब तक शायद वो हज़ार में अधिक
न मिला होगा । बाठ सी रुपये में रंघभूमि और प्रमाधम बोना का अनुबाव दे दिया
वा । कोई खपनेवाला ही न मिलता वा ।

५—हिन्दी में गल्प साहित्य अभी अत्यन्त प्रागम्भिक रहा न है । कहानी
लिखनेवालों में गुरदास कौशिक जैनन् कुमार, उक्त प्रकार रामेश्वरी यही
मकर धाते हैं । मुझे जैनन् और उक्त में भीमिकता और बाहुल्य के चिह्न मिलन
ह । प्रसाद भी की कहानियाँ आवात्मक होती हैं realistic नहीं राक्षसटी
धन्दा लिखते हैं मगर बहुत कम । मुबसल भी की गचनाएँ सुन्दर होती हैं पर
महुराई नहीं होती चीन कौशिक भी अक्सर बात को बहलरत बड़ा देते हैं । किसी
ने अभी तक समाज के निम्न विंशत धंग का विशेषक्य में ध्व्ययन नहीं किया ।
उक्त न किया मगर बहुत कम । मेरे कृपक समाज को लिया मगर अभी जितने ही
मेरे समाज पड़ हैं जिनपर रोशनी डालने की जरूरत है । साधुधा के समाज को

किसी ने स्पष्ट नक नहीं किया। हमारे यहाँ कल्पना की प्रभावता है, धनुमूव की नहीं। बाप यह है कि धमी तक साहित्य को हम व्यवसाय के रूप से नहीं ग्रहण कर सकें। मेरा जीवन तो धार्मिक दृष्टि से व्यसक्त है और रहेगा। 'हंस' निकालकर देने किताबों की बचत का भी बारा-बारा कर दिया। वो शायद इन मान-बार ध भी मिल जाय पर सब धारा नहीं।

६—मेरी रचनाओं का धनुबाय मराठी गुजरानी जूहू तामिस मापाओं में हुआ है। सब का नहीं। सबने बताया जूहू में उनके बाय मराठी में। तामिस और तनगू क कई मजबूतों न मुझे धारा मांगी वो मैंने दे दी। धनुबाय हुआ या नहीं मैं नहीं कह सकता। जापानी में तीन-बार कथानियों का धनुबाय हुआ है जिसके महाराज मत्स्यवान न मुझे धमी कई दिन हुए ५) रुपये भेजे हैं। मैं उनका धामारी हूँ। दो-तीन कथानियों का धनुबाय में धनुबाय हुआ है। सब।

७—मेरी धाकाबाएँ कछ नहीं हैं। इस समय तो सबसे बड़ी धाकाबा यही है कि हम स्वराज्य-संघाम में बिजयी हो। बन या यश की भावना मुझे नहीं रही। नाम भर को मिल ही जता है। मोटर और बँगले की मुझे इच्छा नहीं। हाँ यह उबर बाइता हूँ कि दो-बार ऊँची कोटि की पुस्तकें सिन्धु पर उनका उद्देश्य भी स्वराज्य-विजय ही है। मुझे अपने दोनों लन्को के नियम में कोई बड़ी भावना नहीं है। यही बाहता हूँ कि वह ईमानदार, मज्जे और वक्के दरारे के हों। बिलाली बनी कुशामयी मन्थल मे मुझे बुझा है। मैं शक्ति से बैठना भी नहीं चाहता। साहित्य और स्वदेश के लिए कुछ न कछ करते रहना चाहता हूँ। हाँ रोटी-वाल और ठोला भर की धीर मामूली कपडे मयस्सर हावे रहे।

बम धारके प्ररनों का जबाब हो गया। मेरे जन्मधारि का ध्योरा धारके ही पत्र न धाप बुझा है सब धाप धपना बचन पूरा कीमिए धीर हंस के लिए कुछ पिन भेजिए। बैसा ही स्केच हो बैसा पं धुरमात की का या तो क्या कहना। रोप सङ्कटन है। धारा है धाप भी सङ्कटन होंगे।

धनदीप
बनपुरदास

उस वक्त बातता कि यह सेव सिखना पड़ेगा तो सर्मा जी का एक-एक बाल बोट कर लेता ।

‘हूँ’ का स्वयंसेवक निकलने जा रहा है । पत्र सेवा में पहुँचेगा । सब की तो गिरावट न कीजिएगा ।

धनवीर
चमपतराय

६४

सरस्वती प्रेस बनारस
१ अक्टूबर १९३२

प्रिय बनारसीदास जी

बनारस से बाहर होने के कारण आपके कर्तों का बचाव देने में मुझे बंध हो गयी । आप चाहते हैं कि मैं आपके लिए एक कहानी लिखूँ । मैं इन दिनों बुरा फाट न बुरी तरह पैंसा हुआ हूँ । आपके वक्त ‘बनारस’ निकल रहा हूँ । मेरा साग बक्त उठी मैं बसा बसता हूँ । तो भी मैं एक कहानी लिखने की कोशिश करूँगा ।

मैंने गिरावट का सेव नहीं पडा । मुझे समता है कि आप इन छोटी-छोटी बातों को लेकर बालबाहू इतना परेशान होते हैं । सोच व्यर्थ ही हमको बाढ़-बिबाह में बीबने की कोशिश करत है । अपनी तरफ से उन्हें न्योता क्यों दिया जाय ?

आपको ‘कंकाल’ पसन्द नहीं आया । इसका मुझे खेद है । मैं बड़ी उदास रहि का आदमी हूँ और आलोचना-बुद्धि मझमें बहुत कम है । कंशाम में मुझको सच्चा आनन्द मिला । और मैं पुस्तक से भी अधिक उस आदमी का प्रशंसक हूँ । वह बहुत बुझे हुए और स्पष्टवाणी आदमी है ।

अपने कहानी-सेव के लिए आप हिन्दी के जाने-माने लेखकों में बीबें माँगिये उसे बीनेत्र मुरसल कीतिक प्रयास द्विज हिन्दू इन्स्टीट्यूट प्रयाग के बीरेन्द्र मित्र । इनके अलावा आप चाहें तो गुजरगोत्री बीबला उर्दू और मराठी कहानीकारों को भी अपनी-अपनी भाषा में एक कहानी लिखन के लिए आमन्त्रित कर सकते हैं । फिर उसमें योरोप और अमेरिका के आधुनिक कहानीकारों के अनुबाव होने चाहिए । कहानी के मूल सिद्धांतों पर एक सेव भी सेवा न होगा ।

सुनकरमनाधों के माथ

आपका
चमपतराय

६५

सरस्वती प्रेस बनारस

१४ नवम्बर १९३२

प्रिय बभारसीवास भी नमस्ते ।

कृपापत्र के लिए धन्यवाद । मैंने सत्रा आपको अपना सबसे अच्छा दोस्त समझा है और आप मेरे साहित्यिक सलाहकारों में से एक हैं जिसकी आलोचना की मैं सबसे ज्यादा कब्र करता हूँ क्योंकि वह सहानुभूतिपूर्ण होती है और व्याप-बुद्धि पर आधारित होती है । आलोचकों का मुख्यकर्म होता कि आप कुछ बोलते हैं मेहकों के लिए बहुत संतोष की चीज नहीं होती और वह तो सबग मित्र ही हैं जिनको कि वह मर्यादा अपनी आँखों के सामने रखता है । आपने जो-जो कुछ मेरे लिए किया है उन सब का हवाला देने की तकलीफ आपने माहक की । मैं उन चीजों को सारी बिन्दवी नहीं भूल सकता । जब कोई मौका आया है मैं आपकी तरफ से हमेशा मर्यादा हूँ । और मैं जिस रूप में आपको देखता हूँ उस रूप में मैंने आपको पेश करने की कोशिश की है । मैं इस बात से इन्कार नहीं करता कि साहित्यिकों में कुछ ऐसे लोग हैं जो आपकी प्रशंसा करते हैं और आपकी अच्छी मर्तब के लिए आपको अपना उचित प्राप्ति नहीं देते । इतना ही नहीं कुछ लोग उससे भी बहुत आगे बसे जाते हैं । मगर किसीकी बुराई करनेवाले लोग नहीं हैं । कुछ मेरे चारों तरफ बुरा-मर्यादा कहनेवाले लोग बसा है जो मुझ पर चोट करने का एक भी मौका हाथ में न जाने देंगे । दुर्भाग्य की बात है कि हमारे साहित्यिक कर्मियों में विचारों की उदारता और सौहार्द का भाव नहीं है । एक अच्छी ऐसे लोगों की है जिन्हें किसी की कीर्ति का ध्वंस करने में आनन्द आता है जिन कीर्ति को बनाने में बुरे आचारी की बरतों लगे हैं । मगर उससे क्या ? हमें अपना अस्त-करछ स्वच्छ रखना चाहिए । और वही आचारी चीज है । ऐसा लगता है कि आप मर्यादा में की गयी छोटकरी को बुरा बतला महत्त्व देते हैं । मैं मानता हूँ कि मैंने बुद्धिराज का लेख नहीं पढ़ा और मैं खोजती ली का । आपको पता ही होगा खोजती ली ने 'आज' में मेरी अच्छी कब्र की है । मगर मैंने उसको यही रिबेरी के साथ बुरा किया । आपका सयोग सब हो जाता है जब नियत पर शक किया जाने लगता है । यह मैं कभी किसी हालत में बर्बर नहीं कर सकता । साफ़ दिन से की गयी छोटकरी का आपकी बुरा न मानना चाहिए अगर आप इतने अनुकूलभाव हो जायेंगे तो आप अपनी बुराई करनेवालों को और प्रोत्साहन देंगे कि वह आपको चुटकी काटें ।

मुस्कराते हुए चेहरे के साथ उनका सामना कीजिए । एक समय ऐसा था जब क्रिस्ती की एक धर्मिजातापूर्वक चोट से मैं रात की रात जागता रह जाता था। भाँसों की नींद उठ जाती थी । मगर अब वह हासत भुजर चुकी है और मैं अपने भाग को पहले से कहीं ज्यादा धन्यी तरह जानता हूँ । मरमर सवा रहेने लेकिन उसकी चिन्ता हम क्यों करें । सब सोच मेरी प्रशंसा नहीं करने और न मही कहा जा सकता है कि मेने वो कुछ मिखा है सब का सब निर्योप है । आपको 'कंकास' धन्यता नहीं लगता मुझको लगता है । बात खतम । प्रभाव की बहुत धन्ये धावमी है अनायास उनसे मुहम्मद हो जाती है । अब जब कि मैं उन्हें पास से देख रहा हूँ तो मैं पता हूँ कि साल भर पहले मैं उनके बारे में जो सोचता था वह उसके काफी बिपरीत है । तत्कालमियी बलिष्ठ सम्पक से ही दूर हो सकती है । मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं आपकी क्वाश में बराबर ऊठ करता हूँ । कोई चीज आपको हिता नहीं सकती । वास्तविक म वो ईर्ष्या और सकीर्णता छादी हुई है उसकी सफाई के लिए मैं क्या कुछ न बूँबा । हम बिचारों की उदारता से काम लेना चाहिए । आप हम मिद्वान्त को मुझमें ज्यादा धन्यी तरह समझते हैं ।

'कर्मभूमि आपको निश्चय ही जेट की जायगी । वो भी प्रतिभा जिनकी जिये बैबी भी बनी गयो । नयी प्रतिभो की जिस्वरणी हो गयी है । अब बस बन्द बिनो की बात है ।

मैं इस महीने के अन्त तक आपको अपनी कहानी सुना ।

आपकी 'आगच्छ' वाली समालोचना बहुत धन्यी है ।

अभ्यवाह—

आपका
जनमगम

६६

सरस्वती प्रसन्न बनारस
१३ फरवरी १९३३

प्रिय बनारसीवास की पापागम ।

आपके धरपन्त मुन्ना पत्र के लिए अभ्यवाह । आपके भाव जो दिन मुझे उनकी मधुर स्मृति में मईव मेवाकर रचूँगा । मेरी किन्ती इच्छा है कि तेम

हृदय बर बंदेबा मे

अक्सर बार-बार धायेँ ।

मेने आपके कहानी थक की समालोचना लिखी है । लेकिन स्वाभाविक के कारण मुझे उसको छोटा करना पड़ा । आपकी इष्टगन्धू मुझको सबसे ज्यादा पसन्द आती । और मुझे को नहीं तकल बनाइम और बूमरों को भी । इसमिण नहीं कि आपम उसमे मेरी तारीफ की है बल्कि इसलिए कि यह मजबूत बहुत अच्छे और सुबरे डय स मिथी गयी है । मेने आपकी 'समाधि' आत्मपूर्वक पढी । आप साधू को उसमे क्यों ले आये ? कहानी और समाधि अच्छी बसती अगर आप अपने आत्मिक स्वर म पत्नी की बबसापा के साथ एक सम्पन्नक के जीवन क कष्टों और आपदाओं का विवरण कर सकने ।

आपकी समालोचना पाकर श्रीमती प्रेमचंद को बहुत ही खुशी होगी । साहित्यिक मयार स अब तक उन्हें न्याय नहीं मिला है क्योंकि मैं उनके ऊपर छाया डूपा हूँ या इसलिए कि हा सकता है कुछ चमकमनों का यह जमान हा कि मैं ही उन कहानियों का असल लेखक हूँ । मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि मैं उनके साहित्यिक जगत-नैवार के लिए जिम्मेदार हूँ मगर कल्पना और लेखन पूरी तरह उनकी का होता है । एक-एक पंक्ति म एक सचर्यपरायणा नारी बसती है । मेरे जैसे आत्म स्वभाव का व्यक्ति इस प्रकार के भीषण नारी परक कबलको भी कल्पना भी नहीं कर सकता । म उनका बिना आपको भेज सकता हूँ । उन्हें कोई आपत्ति न होगी । जहाँ तक उनके हाथ की बड़ी की बात है जब कोई सख्ती पत्रकार उनको पैर बेने सब बसपा बे आप ही उनका बबोबस्त कर सगी या हो सकता है कि कोई उन्हें मर में बे व ।

आप जब भी चाहें मैं कलकत्ता आने के लिए तैयार हूँ कोई मौका हीना चाहिए । मिफ तमाराजीनी के लिए आना और बूमरों से उसका बच उठाने की जम्मीद करना मजाक की बात है । जब ऐसा कोई अवसर होवा ता आप मुझको सपत्नीक वहाँ पावेंगे ।

हजार-हजार अच्छोय नि केवल सापरबाही के कारण ब छ स्वदेशीक अब तक नहीं भेज जा सके । अब पैकेट तैयार है और कल भेज दिया जायगा ।

शुभकामनाओं क साथ ।

आपका

बनपुत्राय

पुनरुच —यंच परमेश्वर सप्त मरोज की एक कहानी है । आप इपया हिन्दी पुस्तक एजेन्सी से एक प्रति देने क लिए कहें । व बुरा होगा ।

६७

सरस्वती प्रेम काशी

१९ जून १९३३

प्रिय बतारसीदास जी बंधे ।

आपका तो मैंने कमकता पत्र लिखा था । आज जबकि आप कि आप नहीं है । आप ही कुछ लिखेंगे ? दो-एक पृष्ठ सहो । अपह रिक्त एक छोटी है ।

पुष्ट भी को मेरा नमस्कार कहियेगा ।

आपका

बनपतराय

६८

सरस्वती प्रेम बतारस

१७ जून १९३३

प्रिय भाई

मैं अनुमान लगाने की कोशिश कर रहा था कि यह मनीराम कीन हो सकता है और इन मन्त्रों के बारे में मेरे मन में एक इस्का-ना संशय था । तो अब बात साफ हो गयी । यह महात्म्य धामकन कक्षाविर्मा लिख रहे हैं और हिन्दी की बुनियाद में एक महमका मन्त्राने की कोशिश कर रहे हैं । मगर अब तक उनकी कोशिशों माकाम-की मामूम पड़ती हैं ।

'इस्लाम का विप-बुद्ध' मैंने नहीं बना है । मगर 'विपपट' में उसका जो विज्ञापन निकल रहा है उसमें मैं यथोचित तरह समझ सकता हूँ कि वह क्या है । यह साम्प्रदायिकता फैलाने की एक बेहद सार्वजनिक और नीच कोशिश है और जनता पर्याप्त करना ही होगा । किताब पढ़ने के बाद मैं कुछ उनके बारे में मिलने की सोच रहा था और अब जब कि आपने इन भावों को उल पिया है मैं बिलोबाल से आपके माथ हूँ । इसकी परवाह मत कीजिये कि हम लोग धर्ममत में हैं । हमारा लक्ष्य पवित्र है । जुलाई का ईस पुरा ही गया है, इसलिए मैं आपका मोन जागरूक से कर रहा हूँ । अगर आप मेरे पास किताब भेज दें ता मैं इस समय पर एक पुरा सम्पादकीय लिखूँ ।

एक बात और । मेरे पास आपका एक जीबनवस्तु है और मैं उस में देना

चाहता हूँ। क्या आप मुझे अपना ज्ञात या घमर ज्ञात न हो तो अपनी मर्जसे
नयी तसखोर भेज सकते हैं बहुत इंतज हुआ

सन्तुष्ट

आपका
धनपतराय

६६

सरस्वती प्रेस बनारस

६ अगस्त १९३६

प्रिय बनारसीवास जी

जानरख में जो मन्त्राख्या नोट निकला था उसका मुझे विमर्श पता न था।
मन कइता हूँ सरस्वती में जो सब कुराकाल लिखी गयी थी उन पर मैंने एक चर
के लिए निरुत्पन्न नहीं किया। मे डोरल ममक यथा कि मुक से लेकर आबिर
तक वह बरमासी है। उस आयमी ने आपने और सारी कृमिया में रार पैदा
करने की कोशिश की है। मगर माफ कीजिएगा। आपको भी चाहिए कि ऐसे बेई
मान स्वार्थसेवियों से बच कर रहें। कभी कोई ऐसी बात न कहिये जो आप पूरी
संजीवनी में कहना न चाहते हों। मैं इस इस्टरब्यू के बारे में 'इस' में एक मॉट
निकले जा रहा हूँ। आपको अवगत में इस मामले को उठाना चाहिए। परिस्मिति
का यही उदाहरण है। जब उसने माफ-माफ तीर पर यह नहीं कहा कि वह किमी
पत्र के लिए इस्टरब्यू ले रहा है और आपको उस इस्टरब्यू की काफी नहीं लिखायी
तब वह कंस इस तरह की भयानक बाने आपके मुँह में डालकर आपकी क्पाति
को ऐसी अपूरणीय क्षति पहुँचा सकता है।

क्या आप यह चाहेंगे कि न उन बात का धनुवार छाप हूँ, जो आपने
लिखा है ?

आपका
प्रेमर्षद

७०

सरस्वती प्रेस, बनारस

१८ अगस्त १९३६

प्रिय बनारसीवास जी

कृपापत्र के लिए धन्यवाद। मुझे यह जानकर पुरो हूँ कि विशाप भारत

अपनी मुसियतों से उबर आया और अब उसे कोई कतरा नहीं है। बचारी।

मेरे 'हंस-बाछी' में एक छिपछिप लिवी है। एक-दो गोड म आपके पास पहुँचेगी। डिम्बेन कस से शुरू होया। आपको पसन्द आवेये। मैं पूरी सच्चाई और भद्रभाव में लिखा है। आपको उमका स्वर पसन्द आया या नहीं लिखियेगा।

बड़े दुःख की बात है कि अब तक मेरी बचारी हुई कोई चीज अपने पैरों पर नहीं खड़ी हो सकी। 'हंस' पर मुझे बहुत खर्चा नहो आता मगर 'बागरछ' प्रभाव होता आ रहा है। मैं सोच-सोचकर हीराज दुआ आता हूँ कि कैसे इस परिस्थिति से बाहर निकलूँ। हर महीने मुझे कोई दो सौ रुपये का आग आता है। यह चीज अब तक चल सकती है? एक बार उसको शुरू करने की एमती कर चुकने पर अब उसको बन्द करने के रास्ते में अपना धन्य आये आता है। लोग कैसे हँसेंगे और जिसकी उड़ावेगे। अगर मझे कुछ अच्छे विज्ञापन मिल जाये तो मैं बसीट ले जाता। इसमें आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं? बंगाल केमिकल न्यू इन्स्टिट्यूट कर रहा है। 'जायरछ' म विज्ञापन देने के लिए उनसे कहा जा सकता है। मैं आपका बड़ा कज्र होऊँगा अगर आपका कोई मित्र यह विज्ञापन हमारे लिए हासिल कर सके। फिर बिरला बन्दू है और उनकी पूर की चीजें हैं। वे भी अब विज्ञापन करते हैं। उनसे आप मेरी ओर से प्रार्थना कर सकते हैं। अगर मुझे सिर्फ़ दो रुपये महीने की आगवनी हा आप तो स्थिति सम्हाली जा सकती है। अपनी निजी आवश्यकताओं की मुझे चिन्ता नहीं है। अपनी पुस्तकों और लेखन से मुझको ज्ञान भर को मिल जाता है। मगर इन पत्तों को कैसे बसाऊँ यही समस्या है। अगर मुझमें यह साहस होता कि इनको बंद कर सकता तो मैं इन सारी परेशानियों से बच जाता मगर यह साहस नहीं आता। यह अपनी धनोन्मत्ता की एक दुःखद स्वीकृति होगी जिससे मैं अपनी समित भर बचना चाहता हूँ। मैंने आपको दोस्त जानकर अपना विल आपके सामने जोस दिया है और मुझे धारा है कि यह बात आप ही तक रहेगी। अगर आपको ऐसा कुछ जपान हो कि मैं आप पर बहुत भारी बोझ डाल रहा हूँ तो आप कोई चिन्ता न करें।

धारा है आप मागध है।

आपका

मनमनराय

७२

सरस्वती प्रेस बनारस

२४ अगस्त १९३३

प्रिय भाई,

बम्बई । आप अपनी सेवा के लिए तीन-चार-पाँच पेज ले लें । उसमें कोई बात नहीं है । आप अपनी बात कहिये इस कब को ज़्यादा में मत जाइयें । मुझे यह देखकर खुशी हुई कि हम लोग जो काम बढाने जा रहे हैं आप उसके विस्तार चक्र को समझ रहे हैं ।

आपके अत्यन्त वैनीपुल परामर्श के लिए मैं सचमुच धन्यवाद लिख रहा हूँ । उस आदमी के बिना मेरे मन में चक्र भी बुराई नहीं है । सब तो यह है कि मुझे उसका लिए कुछ है । लेकिन हिन्दी पाठक इन्होंने अपने धीरे आलोचना-बुद्धि से रहित है कि वे ऊटपटांग से ऊटपटांग बात को जो बार-बार उनके काम में डाली जाती है मान लेने के लिए हरबल तैयार रहते हैं । मगर आपके से मैं अपने ऊपर अधिक संयम रखूँगा ।

'मविष्य निकल' है एक बड़ा विषय है और मैंने कभी उसके बारे में सोचा नहीं । इन्होंने लिखनेवाले हैं कि उनमें से कुछ को विशेषकर से मिलाने के लिए चुनना बड़ा कठिन है । साहित्य केवल कहानी नहीं है । उसमें नाटक है कविता है आलोचना है, कहानी है, उपन्यास है, निबन्ध है । हमको उन्हें इस तरह विषयानुसार लेना पड़ेगा । माधुरी के दो धर्मों में साल भर से क्या कहना उमर सम्मान पर जो सेवा निरुत्था या उससे अधिक सुन्दर आलोचना हिन्दी में मेरे देखने में नहीं आती । जेकर का नाम सायब रामदयाल तिवारी था । जिन दिनों मैं सम्पादक था उन दिनों मैं माधुरी में एक बड़ी जवाब आलोचना कामिनाथ के 'आधु मंदार' पर लिखी थी । जेकर का नाम मैं भूल गया हूँ लेकिन वह बड़ी सज्जन है तो आनन्द मधुरा म्युजियम के कपूरेटर है । मन्त्रदुसारे बाजपेयी में भी धर्मपुत्र व्याकरण-विश्लेषणात्मक शक्ति है । नाटक हमारे पास बहुत ही कम है । रोमांचिक स्कूल के प्रसार है, बुद्धिवादी स्कूल के परिचित लक्ष्मीनारायण मिश्र है हस्तरस के श्री श्री० पी० श्रीवास्तव है । सबसे नया आदमी इस मास में मुबने-शहर है जिसने हाल ही में अपने छोटे-छोटे एजेंसियों का संग्रह 'कारण' के नाम से प्रकाशित है । मेरे देखने में मुबनेशहर सबसे अधिक प्रतिभा-सम्पन्न है, अगर वह अपनी प्रतिभा को आत्मस्थ बेहिर-नैर के अपने बैलमें सिंगरेंट पीने और इन्द्रबाजी

में बर्बाद न कर दे । इसमें अभिव्यक्ति की सम्पन्न शक्ति है, छास्कर बाइबल और शां का रस जिसे हुए । मित्र भी को मैं पसन्द नहीं कर सका । उनके पास विचार हो सकते हैं मगर अभिव्यक्ति की शक्ति और शक्ति नहीं है । मित्र और हरिश्चन्द्र प्रेमी है, दोनों में मानवीय शक्ति है पर मानव की आधुनिक पक्ष और मूर्ख-मूर्ख नहीं है ।

उपभासकारों में—बुद्धावनमान बर्मा भगवतीचरख बर्मा निराला सिपायन सरख मुष्ट प्रसार प्रसारनायक अधिस्तव धारि है । मैं समझता हूँ कि इनमें बुद्धावनमान बर्मा सबसे अधिक उत्तेजनीय हैं वा उन्होंने अब बकासत शुरू कर दी है और मित्रता तावत बन्द कर दिया है ।

कहानीकारों में बुनाव और भी अधिक कठिन है—जैनेन्द्र सबसे प्रथम अपनी एक हस्ती रखते हैं । नम्र लोपा में प्रवेश चन्द्रबुष्ट कमसा देवी सुचन्द्र अपा मित्रा सत्यजीवन भुवनेश्वर, जनावन भद्र जगन्मन राव तावर प्रथम प्रथम रामकृष्ण बीरेन्द्र कुमार (जिन्होंने हृष्ट में 'बुनड़ी के प्रथम में' लिखा था) और भा बहुत से लोग हैं । इनमें प्रथम बीरेन्द्र कुमार, सत्य जीवन में सबसे अधिक सम्मानार्थ है ।

हास्य-रस के विद्वानों में प्रथमपुष्पिन्द बेजोड़ है मगर वह बहुत ही कम लिखते हैं । जगन्मन भद्र भी योग्य लेखक है मगर उनमें प्रतिभा की स्फूर्ति या प्रत्युष्टि बहुत नहीं है । साहित्यिक आत्मानों के क्षेत्र में पं दीराम शर्मा प्रथम हैं ।

मूकनशीलता ही प्रथम बीज है मूल शक्ति । सूचनशील प्रतिभाएँ हमारे बहुत बहुत कम हैं । कहानीकारों में जैनेन्द्र प्रधान सम्माने हुए हैं । बुनरी कदर में बहुत से लोग हैं ।

यहाँ एक निबन्धों की बात है, पं० रामचन्द्र सुक्त प्रधान है । हैमचन्द्र बोटी न कुछ सुन्दर निबन्ध लिखे हैं ।

आपके मित्र बाबू ब्रजमोहन बर्मा भी हास्य-व्यंग्य के बड़े प्यारे लेखक हैं और डिबरी पंथ में प्रकाश 'रोस' मास्टरपीस वा ।

वह सरकारी रावें हैं जिनसे आपको नयी कोई बात न मायूम होयी शक्ति में समीचाबुद्धि-व्यंग्य पाठक भी हो नहीं हैं । सब तो यह है कि बुद्ध में आलोचना-बुद्धि शक्ति की नहीं है ।

ध्यान वा विषय बुना है उसका विस्तार साहित्य वा पुरा सब है लेकिन इनमें ध्या कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकते । जिनमें आज सबने अधिक सम्मानार्थ दिशापी पड़ती है । हाँ सफ़ा है कि वे विद्वान् बादे शक्ति श्रौं और जो बोरे मगर

घाते हैं वे बसक उठे ।

घापका

धनपतराय

पुनरुच —

घाप घापना जर कदा नहीं बसाते भय्यास से रहें हैं जब कि घापको गृहस्थ होना चाहिए । भसा हो बिपदा-बिबाह का घापको घटने लिए कन्या पाने में कोई कठिनाई न होगी । समय एक बरवान है मगर हत्या करना अभिहात । एक बाड़ी बहुत पड़ी-लिखी मुनस्कृत प्रबन्ध माहंसा घापके लिए आवश होती । तब घापका यही-वही भुकी हुई, रमायी हुई, मांस-डी माँपटी हुई नजरें बालने की उकरत न रहती । वह मानसिक और भावनात्मक दोनों रूपों में घापकी रक्षा करेगी ।

७२

सरस्वती प्रस, बनारस

१२ जनवरी १९१४

प्रिय बनारसीवास जी

बम्बई । मैंने वह दुकान 'बागरछ म द बिदा ह जो कि परसों सनीयर क दिन निकसेगा ।

निमल जी को बधाई देते हुए मैंने 'बागरछ म जो लेख लिखा था क्या आपने उसको देखा ? यह निमल विनम्र सिद्धमन्त्रीन भारमी है । जिन जिनो पार्षिक 'बागरछ बाबू शिवपूजन महाय के हाथों में था मेरे और 'बागरछ क बीच एक बिबाह उठ खड़ा हुआ । प गन्धवुमारे बाबूजी ने कुछ लिखा था उसी को लेकर यह भ्रमना खड़ा हो गया । उस समय निमल ने 'बागरछ म एक लेख लिखा था जिसमें मेरे साहित्यिक काय का मुख्य विषया क्या था और मुझको ममाह दी यमी थी कि अब मैं और कुछ न लिखूँ । क्योंकि मेरे दिन बीत चुके और अब मैं पुराना पड़ गया । शिवपूजन महाय ने इस लेख को नहीं छापा । कुछ समय बाद जब 'बागरछ मेरे हाथ में आया तो इसी निमल ने एक लेख मेरी तारीफ म जमीन और प्राकृमिक के कुमाव मिलाते हुए लिखा जिसको मैंन छाप दिया । इससे पता चलता है कि वह धारणी निम्न बात का बना है । उसन मुझपर यह दोष लगाया है कि मैं बाहर का बस का छोड़ी हूँ सिर्फ इसलिए कि मैंन इन पुस्तकों और यहाँ और धार्मिक लुब्धे-लुब्धों के कुछ पाठकों का यजाक उड़ाया है । उनकी वह बाह्यता बहुत है और जरा भी नहीं सोचता कि उनकी

बाइया कहकर वह धकै-मले बाइयाओं का किटना प्रपमान करता है। बाइय का मेरा आदर सेवा और त्याग है वह कोई भी है। पम्बंड और कट्टरता और सीधे-साधे हिन्दू समाज के सम्बन्धितवास का फायदा उठाना इन पुबारियों और पंथों का बंधा है और इसीलिए मैं उन्हें हिन्दू समाज का एक अभिशाप समझता हूँ और उन्हें प्रपन्न प्रपन्न के लिए उत्तरदायी समझता हूँ। वे इसी काबिल हैं कि उनका मन्त्रोक्त उदात्त भाव और यही मैंने किया है। यह निमन और उमी बेसी के बट्ट-बट्टे दूसरे लोग ऊपर से बहुत राष्ट्रीयतावादी बनते हैं मगर उनके जिन में पुबारों का की मारी कमजोरियाँ भरी पड़ी हैं और इसीलिए वे हम लोगों को घामियाँ देते हैं जो स्थिति में पुबार बनने की कोशिश कर रहे हैं।

मैं कुछ समझ नहीं सका कि आप किम चीज में पंच बनने का रहे हैं और मेरे खिलाफ फरें जुम क्या है। क्या वे कड़ानियाँ जिनमें मैं इन पम्बंडियों का मन्त्रोक्त उदात्त है / बराय मेहरबानी उन्हें पढ़ जान्य। बहुत नहीं है। मन्त्रोक्त की प्रसन्न चीज बात को बढ़ा-बढ़ाकर नमक-मिच मकाकर कहना जाता है। और यही मैंने किया है। मगर यह काम मैंने साफ दिल से हौसी-बिम्बरी के रंग में किया है। वह रूप और विष में पूरी तरह मुक्त है।

मेरी हालत बहुत खम्बी नहीं है। इस मास मुझे कोई बड़ा हबार अपने का बाटा हुआ। उसल मरी कमर ताड़ बी है। मैं यह सब प्रस और प्रकाशन और पत्र सीडर प्रेम को छीप देने के लिए बातचीत कर रहा हूँ। देखूँ इसका क्या मतीबा निकलता है।

आशा है आप सब म है।

आपका
अनपतराय

७३

अजन्ता लिनेटीय लिमिटेड, परेल, बाध्य १९
२७ सितम्बर १९४४

प्रिय बमारभीराम जी

बाला पर्वों के लिए पम्बंडा एक डाक में और दूसरा हम दोनों के सम्पत्ति के बारे में।

कुछ पत्र बंभरी में

८६ / बनारसीदास बतुबे

जैसे ही प्रिण्ट मिल्मेंगे मैं आपके धादेश का पालन करने की कोशिश करूँगा।
धन्यवाद यह मिसे नहीं।
यहाँ की हानतों सेरे लिए कायों ठीक है क्योंकि इस उम्र में धन मेरे बहकने
का कार्य कर नहीं है। इसके विपरीत हो सकता है कि मेरा इन लाइन में रहना
कुछ रोक-बाम करे।
आशा है आप मजे में हैं।
शुभकामनाओं के साथ

७४

आपका
धनपतय

सरस्वती प्रेस, बनारस
२५ मई १९५९

प्रिय बनारसीदास जी

आपकी उस प्रस्ताव का पता चला होगा जो साहित्य सम्मेलन में एक अर्थ
प्राप्त साहित्यिक सच बनाने के सम्बन्ध में पाठ किया है जिसका काम राष्ट्र
भाषा का माध्यम से साहित्यिक भाई-भाऊ पैदा करने के तरीके और उस्तों पर
विचार करना होगा ताकि बीरे-बीरे हिन्दुस्तान के पालन करना एक राष्ट्रीय
साहित्य और अपनी एक राष्ट्रभाषा हो सके। जैसा कि धार देखा ही सकते हैं
इन प्रस्ताव में बड़ी सम्भावनाएँ हैं और आवश्यक है कि धारकी तरह के लोग
इन सच के समर्थन में जनमत तैयार करें। मैं के धर्म में इन विषय पर अपनी
सम्प्रादायीय टिप्पणी से निभा है। मैं आपने प्राचना करूँगा कि अगर आपने धन
तक नहीं किया है तो धन अपने सम्प्रादायीय में इस बीज के बारे में अपने मुझ
और निष्पक्षी हैं। श्री गुरी ने मुझको मुझा दिया है कि 'हंस' परिपक्व का
मुनवन बना दिया था और मैंने सम्भवतः इन सुभाव को मान लिया है। मैं
इनके प्रस्तावों के साहित्यकारों को इन धान्दोलन में दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित
कर रहा है और अगर धन्य समर्थन मिला तो आपापी वय एक अक्षिप्त भारतीय
भाषा है आप हमेशा की तरह प्रमत्त हैं।

आपका
धनपतय

हस्त कार्यालय, बनारस

९ अगस्त १९३५

प्रिय बनारसीदास जी

आपका पत्र पाकर कृतज्ञ हूँ और आपको अपने काम में इतना दिल बसो सेते देखकर कृतज्ञ हूँ। मगर जब तक कि मुझे कोई योग्य अनुबादक नहीं मिल जाता तब तक ऐवदुब को कामकाज तकमील देना ठीक नहीं। जब तक समय बकत नहीं आया। जब बकत आयेगा तब तब तब ठठ खड़े होंगे।

जहाँ तक तुलसी कव्यन्ती की बात है, मैं इस काम के लिए सबसे कम योग्य व्यक्ति हूँ। एक ऐसे उत्सव कि बाध्यता करना जिसमें मैंने कभी कोई रुचि नहीं ली हात्वास्पद बात है। मुझे अपने भीतर आत्मविरास की कमी जान पड़ती है, डर लगता है। सब बात तो यह है कि मैंने रामायण भी बाबि छ प्रन्त तक नहीं पढ़ी है। यह एक सम्मानजनक स्वीकारोक्ति है, मगर बात ठीक है।

सम्प्रति मैं बहुत व्यस्त हूँ। मैं अपना कार्यालय और निवास एक नये मोहल्ले में ले जा रहा हूँ और मेरी उपस्थिति बहुत बाध्यता है। कृपया मुझे क्षमा करें। बीच जब बल निकलेगी तो समय है कि मैं आऊँ।

आपको मेरा पत्र मिला होगा। मैं 'हंस' के लिए आपकी ओर से किसी साहित्यकार जैसे कि पं० पद्म सिंह शर्मा के स्वर की सम्मील लगाये हूँ। पहला श्रृंखल पद्मी भक्तद्वार को निकलेगा। आप कृपया अपनी रचना इस महीने में प्रन्त तक भेज दें।

आपका

प्रेमचंद

हस्त कार्यालय व्यस्तमय बनारस कौट

१० अगस्त १९३५

प्रिय बनारसीदास जी

कृपा पत्र के लिए कृतज्ञ हूँ। मैं खुद ऐसे भागों में पढ़ना पसन्द नहीं करता मकिन जब कोई मुझसे आपका गला बचा रहा है तो आपको अपना रचा करनी

कृत पत्र बंदकी है

हो पड़ेगी बाड़े घाप शक्तिहीन ही क्यों न हों। जब मुझे पक्का बिरबास हो गया है, कि उस घायली का चिन्ता घति भावुक है, भावुक नहीं द्वेषपूर्ण। सापस उसको मक्ता है कि दुनिया से उसको घपना प्राप्य नहीं मिल रहा है और इसलिये उसको बच-सब घपने घायल को घावे मारना चाहिए और घपनी श्रेष्ठता की घोषणा करनी चाहिए। मैंने तो जो कुछ महसूस किया धोखे-सीधे शब्दों में लिख दिया और अगर वह चुन नहीं हो जाता तो मैं उसका सिर तोड़ दूँगा। बरा उसकी श्रेष्ठता तो देखिये।

मैं नहीं नहीं या सका इसके लिये घाप मुझे यादियाँ न बीजियेगा। अगर घापने तुमही उत्सव मेरे ऊपर न मगा दिया होता तो मैं घाता। लेकिन एक ऐसे व्यक्ति का तुमही बननी में समारोह करना बिमने कभी उन्हें पता नहीं और जो उनके संबंध में कही जानेवाली घतिमानवी बातों में बिरबास नहीं करता हास्यास्पद है। उन्होंने राम और हनुमान को देखा और वह बन्दरवासी बनना सब पुरासत। अगर क्या तुमही मक्त जोय मेरी काफिराँ बीसी बात पसंद करों / इससे क्या एक पक्ता है कि वह बिना सम्बन्ध उस में पैदा हुए या बीस में या जालीन में? क्यों घपनी बुद्धि सामान्य इसके पीछे बर्बाद करो जब कि और भी न जाने कितनी चीजें करने को पड़ी हैं। वह एक महान कवि ने उनकी व्याख्या करो धार्मिक व्याख्या मनोबलानिक व्याख्या प्राविश्यास्त्रीय व्याख्या शरीरशास्त्रीय व्याख्या जो बाड़े करो अगर उन्हें ईश्वर काहे बनाते हो।

'हंस' सब एक कंपनी के हाथ में डे दिया गया है और कन्हैयालाल मास्टरलाल मुंशी और मैं इसके धर्मेतिक सम्पादक हैं। देखिये यह व्यवस्था कैसी बनती है। हम बिचार को हमें सफल बनाना ही होगा। क्या घाप नहीं सोचते कि सभी (मास्टरलाल) साहित्यों की हिन्दी के माध्यम से उपलब्ध करना एक ऐसा बिचार है जिसे परीक्षा करके देखना चाहिए? यह ठीक है कि बच-सब हमारी पत्रिकाओं में बँगला मराठी उर्दू के धनुवार निकलते रहते हैं। कुछ अन्धे और दोष्य उर्दू लेखकों और बगालियों को सामने लाकर बिनास घाप न एक उन्नेलनीय सेवा की है। हमारी सारी शक्ति इसी काम में लगेगी। अनेसा नबाल यह है कि अन्धवी मामवी हमें बसे मिले। पारिभाषिक हम डे नहीं सजने और केवल धनुवारों का सहारा लेना नहीं चाहते। हम एस बीमिक लेख चाहते हैं या पहली बार 'हंस' में छपें। कोशिश करके देखें कि यह बिचार हमारे साहित्यिक मन्त्रों को कैसा पसन्द आता है। बगाली और मराठी और कुछ मुसलमान हो सक्ता है कि हिन्दी को यह स्थान दिये जाने पर नाक भी निकोड़ें अगर सत्य बाबू और रवि बाबू दोनों को यह बिचार पसन्द आया है। उर्दू लेखकों ने

मरे निर्ममखण्ड का उत्तर बड़ी उत्तरता से और सीधे से दिया है। और इमर हिन्दी महारथियों को लिके गये तमाम पत्रों में से साम्य ही किसी पत्र का उत्तर प्राप्त हो। बाबू मैबिलीशरख भी धकेसे धावमी है जिन्होंने जबाब दिया है। दूसरों ने पत्र की प्राप्ति को स्वीकार भी नहीं किया। यह है हमारे हिन्दी लेखकों की मनोवृत्ति। अगर सम्भव हो तो आप पहली सितम्बर तक फ्रम सिंह जी का स्वेच भेज दें। मस्येप में लिखियेगा—वो पृष्ठ कापी होंगे।

अगर पहल फ्रक के लिए आप शुक्ल भी बेनेख और मैं लिखूँ और और भी कुछ सोय तो बगह भर जाती है। हिन्दी के लिए हमारे पास २ पृष्ठ से अधिक नहीं है।

तुर्गतिय की जो चीज आपने बड़ी मेहरबानी से नकल की है मैं उसका धनु बाह कहेंगे और उस प्रकाशन करेंगा।

आपका
बनपतराय

७७

सरस्वती प्रस, बनारस
१ दिसम्बर १९३६

प्रिय बनारसीबास जी

आपका कार्य मुझे मिला था उसके लिए धन्यवाद। मेरी किस्ती इच्छा है कास कि मैं लोगूनी के व्याख्यान सुन सकता मगर मजबूर हूँ। बरबानों का कैस प्राङ्क बही समस्या है। सबक इलाहाबाद में है और मैं बसा आऊँ तो मेरी पत्नी बेहद प्रकेसा और बेबस महसूस करेंगी। अगर मैं उनका भी अपने साथ लेता थाऊँ तो इसके लिए धन्यही लासी गद्य लर्ष करने के लिए बाझि। इसलिए धन्य है कि वह ही पर पडे रहो बसाम इसक कि पैमे की तबी महसूस हो। और वहाँ तक जवान बने रहने की बात है वह एक स्वभाव की बात है। बहुत से नीयवान हैं जो मुझे बुद्धे हैं और बुद्धे हैं बा कि मुझे जवान है। लेकिन मैं तो सोचता हूँ कि मैं रोड व रोड जवान होता जा रहा हूँ। परलोक में मेरा विश्वास नहीं है इसलिए धम्यारम का बिचार हो कि जीवन का सबसे बड़ा बाधक है मेरे पास नहीं फरकता। हाँ यह जकर है कि एक चीज स्वभाव जीवन होती है और दूसरी जम्मत जीवन। स्वकन जीवन जीवन ॥ प्राति एक प्रगतिशील और धातावारी कुटिकास में होता है और उसके साथ गहों से बचता है। जम्मत जीवन का

मतलब है बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठना और अपनी समताओं और स्वप्नों को बढ़ा-बढ़ाकर देखना। मैंने अपने देखना बन्द नहीं किया है और सोचा-बहुत बन्दबाज भी हूँ बिना सोचे-विचारे कुछ कर बैठता हूँ। लेकिन खुशी की बात है कि प्रतिरचना की प्रवृत्ति बसी गयी है। इस तरह पापसपन का भी बड़ा हिस्सा मेरे पस्से पड़ा है। मैं समझने लगा हूँ कि संतुष्ट पारिवारिक जीवन एक बड़ा बरदान है। और बड़े-बड़े दिमागों की दुनिया में कमी नहीं है डेरों पड़े हैं। सच्ची महानता और नकली महानता में फर्क कर सकने के लिए बड़ी न्यायबुद्धि चाहिये। मैं ऐसे महान धारमी की कल्पना ही नहीं कर सकता जो धन-संपत्ति में दूबा हुआ हो। जैसे ही मैं किसी धारमी को धनी देखता हूँ उसकी कला और ज्ञान की सब बातें मेरे लिए बेकार हो जाती हैं। मुझको ऐसा लगने लगता है कि इन धारमी ने बतमान समाज व्यवस्था को जो धमोरों द्वारा गटोबो के शीपण पर आधारित है स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार कोई भी बड़ा नाम जो सचमी से सम्पन्न नहीं है मुझको धार्कपित नहीं करता। यह बहुत सम्भव है कि मेरे मन के इन बाँचे के पीछे जीवन में मेरी अपनी असफलता हो। हो सकता है कि बैंक में धारमी रकम रखकर मैं भी धीरे-धीरे हो जाता—उस बोम का मबरण न कर पाता। लेकिन मैं खुश हूँ कि प्रकृति और भाग्य ने मेरी मदद की है और मुझ गरीबी के साथ ज्ञान दिया है। इसने मुझ मानसिक शान्ति मिली है।

आज बितनी ही बार मोघलसराय से मुझे मगर कभी यह तकनीक नहीं की कि एक दिन के लिए यहाँ बने आये। और फिर आप मुझसे उम्मीद करते हैं कि मैं यहाँ से कमकले तक का मकर कहीं और अपनी बीबी को माराब कर लूँ। आन्तरिक शान्ति मेरा सिद्धांत है।

आपका
धनपतराज

७८

हंस काशीनाथ, बनारस
१५ मार्च १९३५

प्रिय बनारसीनाथ जी

कल्पबाप। हंस बन रहा है। चाहक पीरे-पीरे घा रहे हैं। अब भी हमने दो नौ रुपये महीने का भाग है जब कि हमने मग्यारसों को कोई तनखाद नहीं हैनी पड़ती और गारे लेख मुफ्त होते हैं।

एक बर बनेगी मे

मुझे जानकर कुछ हुआ कि विशाल भारत अब भी बाटा दे रहा है। कितने अज्ञानों की बात है कि पहला हिन्दी पत्र बिसे सब सबसे छेड़ हिन्दी मासिक के रूप में जानते-मानते हैं, इस हालत में ही। इसके हमारी सांस्कृतिक मनोवृत्ति का पता चलता है। उर्दू पत्र घाये बढ़ रहे हैं। पचास से अधिक प्रथम श्रेणी के मासिक पत्र हैं, और उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसका दो-दो रुपये वाम का पौष ही पृष्ठों का एक बाकिर्लाक न निकलता हो। निस्सन्देह उनकी साहित्यिक रसि और अन्तर्दृष्टि क्या अच्छी है। वे मुस्लिम करना जानते हैं। उनके यहाँ कविता में बड़ी संघर्ष मिलता है जो हमें जीवन में मिलता है, हिन्दी कविता अब भी व्यक्तिवादी और गिरी भावुकतापुत्र होती है। उसमें निम्नरी की हरकत नहीं है वह बिम्बगी की उबागर नहीं करती। वह बस तुमको हतास-निरास बना देती है। मैं समझ नहीं पाता कि क्यों हमारे सब कवि निराशा के दर्शन से इस तरह अस्मिन्त हैं। उर्दू कवि बार्शनिक है, यथावतारी है और आत्मावारी है। भाव दबान कवि हथौड़े मार-मारकर मुस्लिम जाति का समता और अस्तुत्व और बन ताज के नव धावकों में डाल रहे हैं। मुस्लिम कवि कम्युनिस्ट होता है, यहाँ तक कि इन्जाल भी।

बार धर्मस को बर्षा में एक अखिल भारतीय साहित्यिक सम्मेलन होने आ रहा है। इस को हर हालत में सब तक निकल जाना चाहिए। मैं यहाँ पर मौजूद रहने की उम्मीद करता हूँ।

मैं शान्ति निकेतन नहीं आ सका। यहाँ पर मेरे लिए कोई आकरास नहीं है। वे लोग मुझे उम्मीद करते कि मैं बड़ा विज्ञानपूर्ण भाषण दूँ जो कि मैं कर नहीं सकता। मैं कोई विज्ञान आत्मी नहीं हूँ। तो भी अगर वे लोग मुझे बरफ़ी पहने में बुलाते तो मैं जाने की कोशिश कर सकता हूँ। मिनट भर की तार की सूचना पर मैं तैयारी नहीं कर सकता।

आगे गया बा और यहाँ मैंने आपके लीनो छोटे बच्चे देखे। आपका भाई एक आग्रह भाई है। मैं आपको बधाई देता हूँ।

आपने मुझको विशाल भारत में मिलने के लिए आमंत्रित किया है। मैं निनी पत्र के लिए नहीं मिल रहा हूँ। इस के लिए भी पिछले तीन-चार महीनों में मैंने कुछ नहीं किया। जब तक कि कोई विशाल बीज मेरी कम्पना को फूँड़े नहीं मैं कोई अच्छी बीज पत्र करने में किसकुल असमर्थ हूँ। तब क्यों जाने रिमाय वे नाम और-अवस्थी बरा। मैं अपने भाव को जाल में बा-बहानियाँ और हर दूसरे नाम एक आग्रहम एक नीमित रतना जाता हूँ। मुझे ब्यापे बनने के लिए इतना बारी है। इसके अधिक की समता मेरे अन्दर नहीं है।

समापति के लिए आपने मेरा नाम प्रस्तावित क्यों किया ? दूसरों ने भी आपका अनुकरण किया है । मैं उत्सुक नहीं हूँ । मेरी प्रतिभालावा कभी उस दिशा में नहीं रही । बल्कि मैं उसे पसन्द भी न करूँगा ।

सुमकामनार्थ के साथ

आपका

बनारसबाघ

७६

साल्वती प्रेस, बनारस

२१ मार्च १९

प्रिय बनारसीबाघ जी

पत्र के लिए धन्यवाद । हूँ। अगर आप अंग्रेजी पाठको से हिन्दी लेखकों का परिचय करा सकते तो यह एक सच्ची सेवा होगी । लेकिन आप तो हिन्दी लेखकों की प्रवृत्ति जानते हैं । किन-किनको आप जोड़ेंगे उन सब की तरफ से बीमुख हमने को अवगत करने के लिए आपको तैयार रहना चाहिए । निर्दोष से निर्दोष बात की भी व्याख्या इन तरफ की जा सकती है कि उसमें सफल भरी हुई मान्य हो ।

नामपुर समा ने बाबू रामेन्द्रप्रसाद को चुना है, इससे अच्छा चुनाव वे नहीं कर सकते थे । सम्मेलन में ठीक होने का मेरा कोई इरादा न था । जब तक मैं कन्नड दिल्ली अधिवेशन में सम्मिलित हुआ हूँ और वह भी बीनेन्द्र के दबाव में पहुँकर । लेकिन इन बार भारतीय साहित्य परिषद् जो तीन और बार धर्म के बर्षों में होने वाला था नामपुर सम्मेलन के लिए स्थापित कर दिया गया है । इसलिए मैं वहाँ जाऊँगा जो अभी तक पक्का नहीं है, क्योंकि यह वनट का समय है ।

दिल्ली की हिन्दुस्थानी समा मेरे और बीनेन्द्र के सलाह-मसविरे का भतीजा है । जब तक हम दूसरी जायाओं के लेखकों से मिलें-जुलें नहीं होसती न बनावें साहित्यिक समस्याओं पर एक-दूसरे से रोशनी न लें बिचारों का आदान-आदान न करें करने नतीजों का आन बँटकर मिलान न करें, तब तक हममें कँडे दुष्टि की वह व्यापकता और मन की वह उदाराता या सकती है जो साहित्यिक कमियों के लिए अपरिहार्य है ? योरोप में उनक अन्तराष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन होछे है और उनमें वे उन खमी नियमों पर बिचार

बिगड़ कर रहे हैं जिसका साहित्य से संबंध है । हमने अब तक दूसरों भाषाओं के अपने भाष्यों से भाईचारा कायम करने की कोशिश नहीं की । उन्हीं के पास निस्संशय एक सांस्कृतिक परम्परा है और उनके सम्पर्क में आने पर हमको अपनी कमजोरियाँ मान्य होनी हैं । अब तो यह है कि मैंने उनको अधिक सामाजिक और सहानुभूतिशील पाया और बीमोह मेरी बात की ठसरीक करेये । वह अभी हाल में साहूँर नये थे और वहाँ पर उन्होंने कई व्याख्यान दिये और हिन्दुस्तानी समाज संगठित की । उरसाह में भरे हुए थे वहाँ से छोटे हैं और उनके प्रशंसक हो गये हैं । इस बड़ती हुई सार्व को कैसे पाटा जाय ? इन राजनीतिज्ञों से तो कोई सम्मीलन रक्खनी न चाहिए, बिलकुल बेमसहूँ मोग है । उनसे जवाफ मनस्क होने की आशा ही न करनी चाहिए । लेखकों ही को भावे भासा पड़ेगा । और उन्हीं से अधिक मित्र के रूप में वे क्यासा धम्मी तरह अनुमई कर सकते हैं । हिन्दुस्तानी समाज पाषिक मीटिंगों का संगठन करेगी जिसमें साहित्यिक और भाषा शास्त्रीय विषयों पर निबन्ध और भाषण दिया करते । जब थोड़ा-मएकी मिले खुले बंग को होनी तब बस्ताओं को भी अत्यधिक साहित्यिक होने के मोम का समन करना पड़ेगा और वह क्यासा सरल रूप में अपनी बात कहने के लिए मजबूर होंगे ताकि सब लोग उन्हें समझ सकें । अगर हम सभी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्रों में ऐसी समारोहों की व्यवस्था कर सकें तो हम बडमान संकोख और पार्वन्यवादी दृष्टि को व्यापक बना सकेंगे । तब हमारा साहित्य अधिक समृद्ध अधिक पूर्ण होगा और यही एक मिली-जुली भाषा की समस्या का प्रकला इन होया ।

आन्वीयता एक नया सक्त है और हमको सावधान होना पड़ेगा । अगर आप कमकते में एक हिन्दी-बंगाली या हिन्दोस्तानी समाज का समन कर सकें और समय-समय पर उन्हीं हिन्दी और बंगला लेखकों को एक जगह पर जमा कर सकें तो यह एक असनी काम होया ।

आपका
जनपदराज

इस्तियाज़ अली 'ताज'

८०

नार्मस स्कूल, गोरखपुर
२७ जुलाई १८

बन्दाबान

उसलीम ! हमने जिने और रखीर न भेज सका । आप ही का काम कर रहा था । 'कहकशा' के लिये यह किस्ता ज़मीरे हबस इरसान है । इसकी आपसे बार माहूदा हुई । इसकी X X X मूरत पर न बाइयेगा । इसके मानी पर और फरमाइयेगा ।

अगर मुमकिन हो तो मौलाना रासिद की कोई किताब मुझे बेचने के लिए रखाना फरमाइये । जब यह मुमकिन हो कि 'कहकशा' में मेरा नाबिल बाबारे हुसन् बिस्तरतीर निकल सके । मुमकिन है कि इसके निकलने से पर्चे की इना घट पर कुछ बचकर पड़े । यह नाबिल कोई तीन सौ मुफ्हास का है । इसके मिलने में मैंने अपनी कोई कोशिश उठ नहीं रखी । किताब की सुरत में अब तक इसलिये नहीं निकाल सका कि मुझे इतनी कुरसत ही नहीं मिलती कि तमाम-धो-कमात्र एक बार साफ़ कर सकूँ । माहूबार हम बीच सफे तो मुमकिन है मगर एकबारगी १०० मुफ्हास का ख्याल करके हीससा छूट जाता है । मगर जब तक 'कहकशा' की इनामत माफ़ूस न हो जाय नाबिल निकालने का खयाल कम-बख-बकत माफ़ूस होता है ।

बारिदा नहीं हुई । कहत का मामल है । उम्मीद है कि आप ज़मीरोम्याकियत होये । सैमश मुमताज धामी साहिब की तिवसत में आशारे इस्तवस्ता बच्चे हैं । अगर जिमी बजह से 'कहकशा' में न निकल सके तो यह मजमून बापस करना इयेगा । 'तहजीब' में इसे नहीं बेना चाहता ।

नियाज़मश
बनपतराय

८१

नार्मल स्कूल बोरकपुर

२० मार्च १९१६

मुखिफकीधो भुकरमे बप्पा

उसलीम । मसफूर हूँ । सकल गादिम^१ हूँ कि अब तक 'बागारे हुल' के मुतासिक ईफ्राबावा^२ न कर सका । बार बार कोशिश की कि मुस्तकिम तीर पर साफ कर डालूँ लेकिन एक न एक इकावट आ जाती है । कितना एक बीपारी साफ करके पड़ी हुई है । अब तो १५ अप्रैल तक मुझे मरने की पुसत नहीं है । ईशा बख्ताह^३ १ मई तक । जिस 'कहक्या' में 'बप्पा' का हिस्सा छपा था वह मेरी काइल में नहीं है । कोई साहब उड़ा ले गये । इरबन्त तलाश किया मगर बेसुब । मजबूर हूँ । कहक्या^४ में अबकी रखाइले^५ पर तन कीब मुझे बेहब पसन्द आई । मगर उसका टाइल का डिजाइन बाबजूद मिस्टर चुगवाई के तबाबाव^६ होने के मुझे कुछ नहीं बँचता । शायब यह मेरी गमनासी^७ का बाइस है । मजामीन भी गई ही न लिखूँगा । राजीर के भिद् मुघाटी का सानिब हूँ ।

बंदरामेरा

बनफतराम

८२

नार्मल स्कूल बोरकपुर

२ अप्रैल १९१६

जगन्ने मुखिफकी

उसलीम ।

मुकससल खस मिता । प्रम बसीसी^१ की तबाबान शुरू नहीं हुई । काउज से मजबूरी है । मुझे उम्मीद है कि धाय साहूरे हमकी^२ करने । तसाबीर का मैं बहुत गिरबोबा^३ नहीं हूँ । इससे बन्ने जुश हो सकत है । मगर धहले मजक को तसाबीर की जकरत नहीं । मैं भी इस जमेले में नहीं पड़ना चाहता ।

धामने कमम^४ का मजमूदा जरूर साया कीजिये । मुझे यकीन है कबून हाबा । कल की डाक से 'बागारे हुल' बजरिये रजिस्टर्ड पैकट त्रिभमत में

अभिमत १ बाबा पूरा २ बरिफाजो ३ बीजिक ४ बामबली की बनी
५ बबालनव ६ बेबी रिम्नो

पहुँचेगा। जल्म हो गया। पैकेट बना हुआ तैयार है। घाव बाँधना बन्द है। आप इसे एक बार सरसरी तौर पर देख लीजिए और तब इसके मुताबिक अपनी राय से मुक्तता करवायें। जबकी हिन्दी के मशहूर रिवाजे 'सरस्वती' में हम पर एक मुफ्तसम तबसरा निकला है। अगर वहाँ कहीं पर्चा मिले तो मात्र नम्बर में देखें।

प्रम बत्तीसी' हिस्सा प्रत्यक्ष के १२ फर्में आप चुके हैं। 'सबाबे चक्र' में मुझे पत्र किया है। लेकिन यहाँ कुर्सत नहीं। बग पड़ेगा तो कुछ लिखूँगा। 'कठकली' व लिये प्रसी तक कोई मजबूत नहीं मिल सका। मगर जल्दी शुरू करूँगा।

जबतब से जल्द सरफराज फरमाइयेगा।

निमाजमंद

बनपतराय

८३

नार्मल स्कूल, गोरखपुर

१६ अगस्त १९११

मुरिफकीमो मुररमेबन्दा

उत्तमीम। कम अलाहाबाद से वापस आया। 'कठकली' मिला। आपके 'कठकली' मुहम्मद की बात बताई है। मुहम्मद का मरबोनुमा^१ जूय है। बिस्मिल हमने जितल^२। आप मुझे मजबूर कर रहे हैं कि छोटी कहानियाँ लिखना छोड़ दें।

जब मजामीन और 'बाबारे हुस' में लिपटा है। खुदा करे माहौर में प्रमग हो। एक बिस्म 'माझे प्रमम बजरिये की पी० किस्म प्रमम इरखाल फरमायें। मशहूर होगा।

सैरप्रमेश

बनपतराय

८४

कानपुर

१७ अगस्त १९११

जनाबे मुररम-मो-मुताफिक मन

उत्तमीम। मुझे कई दिन हुए आपका काह मिला था। उस वक़्त मैं मीरें रामपुर में था। कई सरहुवात के बाहम जबाब न हो सका। मुझाफ फरमाइयेगा।

इस ठाणीक में कुछ नहीं मिल सकता। इस बजह से तामीने इरशाद^१ में आसिर^२ हूँ। हाँ यह बतला करता हूँ कि पन्द्रह जून तक कुछ न कुछ बखर हाथिब करूँगा। मेरा 'कहकशी' मामूम नहीं कहाँ-कहाँ ठोकर खाता होगा।

'माझरे हुस' के मुताबिक आप इसे धपर हमेशा के लिये चाहते हैं वो मुझे कोई उख नहीं है। मैं उर्ख पब्लिक से बाकिफ हूँ। कहाँ हमेशा के मानी है बयादा स बयादा तीन एडीशन और वह भी बम सार्नों में या इससे बयादा। इस लिये मैं ऐसी शर्तें हथिब पेश नहीं कर सकता जो मामूम हो। मेरे लयाक में पहले एडीशन के लिये आप बीम फीमबी रखें और बकिया वो एडीशनों के लिये बम फी सबी। मानी कुम रकम तीन सौ पचास रुपये होती है। यह हिस्सा मेने कृन् उमुर को महेमबर रखकर पेश किया है और मुझे यकीन है कि आप को मापबार में होगा।

आपकी मजमूए की निम्बत क्या राय है।

प्रम बचीसी^३ हिस्सा बज्जल के एक सौ बारह सफ़हात खपे हैं। सभी मम्बी सफ़हात बाकी है। हिस्सा दोयम की किताबत खरम हो गयी या नहीं। कागज आब कम बेहद गरी हो रहा है। एक तो यह काम यूँ ही नुकसानात से पुर^४ बा उस पर ये मन्दीर^५ आप्तों शायब इसे तबाह ही कर छोडें। मजबूरत मज्जसत के ब्याम को तक करना पड़ता। मेरे ब्याम में तसनीफ की इताबत को मज्जनन पर कुर्बान न करना चाहिये।

'तबावे उर्ख' निकला बकर मगर मेरी लजर स नहीं गुबरा। हजरते तगित ने मेजा है। कहाँ गोरखपुर में पड़ा होगा। यहाँ बपतर 'बमाना' में भी इसका पता नहीं। और फिर देख लूँगा। उर्ख में किताबें बहुत कम बिकती हैं। मामूम नहीं यह मेरा ही तजरबा है या और लोगों का।

'प्रम पचीसी' हिस्सा दोयम की जिस्में अगर बरकार हों तो मैं आपके पाल मेजता हूँ। किमी तरह यह एडीशन खम्प हो जाने तो दूसरी बार बयादा एडिशन और सफ़ाई से आपबाने की कोशिश की जाय।

और तो कोई ताबा हान नहीं है। यहाँ बेट के महीन में बारित हा गयी। अग्रेम में बो-बार दिन गर्मी हुई थी। मगर बस मई में फिर गर्म होटी है और दिन को भी जू का पता नहीं। इरादा था कि बैरुा जाऊँ। मगर अब यहाँ बेहरा हो रहा है तो गामब्राह मकरवी जहमत कौन उठाये। हाँ कह नहीं सकता जून बया रक लामे। मुजबकडा का मुमान है कि जून में शिख की गर्मी होयी।

बसलाम

अनपतगय

८५

नार्मल स्कूल गोरखपुर

१४ जुलाई १९१३

बराबरम

तसबीम । आप के दो नवाबिरानामे एक साथ आये । मरकूर हूँ । तबाल्हे^१ मजामीन का मुझे अफ़जोस इमनिये है कि आपका किस्सा अधूरा रह गया और लुरी इसनिये कि हमार बरमियाग कोई कहानी^२ या बासिनी^३ ठाम्मूक बकर है बर्ना घीरों को बही बातें क्यों नहीं सुन्नी । पर आप अपना किस्सा बहर तमाम करें । हर गुने रा रंगा बू बीगर^४ ।

संस्कृत मिटरेवर पर निखम का मैने इराश किया था । मगर उसके लिये वो मबाय जमा किया था बहु सब इमार-उमर हो गया । अब बिहारी के मुतास्कि कोई मजमून धक्करीब^५ भेजूया ।

प्रेम पचीसी^६ के लिये आप गहब हिचाब कर दें तो क्याश बेहतर । कुम ज़ेमत पर चासीस ज़ेसरी कमीशन और सिर्फा रेत बजा कर में । यू बीस रुपये निकल्लेमे । किस्स का हिचाब मिला कर तीस रुपये का मनीषार्डर इरसास फरमा दें ता ऐन इनायत हो ।

मैं अब तक आप से अपने मजमूनों के लिय बस रुपये लिया करता था । मुझे अब भी कोई इन्कार नहीं है । मगर चूँकि बाब बीमर रसाइस इससे बेहतर तरायत करने पर आमादा है इसलिये मुझे एह्तमाल^७ है कि मेरा गहब^८ कही इन तरायत पर ऊरफता^९ न हो जाये और मुझे अपनी स्वाहिस के खिलाफ़ अपने अच्छे मजामीन उनके पास भेजने के लिये मजबूर न करे ।

'सुबहे तम्मीर' के मुतबातिर जुतुत आ रहे हैं और वह मुझे पन्ध्र रुपये से बीस रुपये तक मजबूर कर रहा है । अब मुझे मजबूरन उसके तरायत मंजूर करने पड़ बर्ना आपन देखा होगा कि मेने अब तक उसमें एक सतर भी न लिखी थी । अब किस हीने स इन्कार करें । यह सब बुलगा आपसे गहब रिमी ठाम्मूक के बाइस कर रहा हूँ ।

मैं हप्ता वह नहीं कहता कि आप भी मुझ पन्ध्र रुपये दिया करें । अपने इन्दीम^{१०} समझीते पर क़म^{११} थो शाकिर हूँ । पर अगर मेरे मजामीन 'सुबहे तम्मीर' म निकलें और मुझ जैसा मुस्त-कलम धायमी 'कहकशा' में हमसे भी खयादा तमाजुन^{१२}

१. टप्कर २. आगिक ३. खिला हुआ ४. हर गुने का अरथ गहब रेत और नू होती है ५. कदर ६. डर मम ७. आहूत ८. डरने ९. उगु १०. डीक

करे तो मुझे माबूर जमान करमाइयेगा ।

मेरी बजा या कृपा^१ और लकड़ो-सबाह^२ के मुतासिलक आपन जो कयास किया है उससे क्हाभी तास्मुक का धुमान और भी पुष्टा हो जाता है । बसक मेरा सित जालीस सास है । मैं बन्ध काजर का कोट और सीमा पानामा पहनता हूँ और पबकी बाँधता हूँ । एक पूरबी आम्मी का पहमाबा फ्रस्ट कैप है । आपने पगड़ी का धुमान क्यों किया । क्या आपकोइस्का^३ हुषा है । मैं अपने १५ मुसलमानों तमूमों के बिलाफ अपना एक कोने भी हरसामे खिरमत करता हूँ इस सठ तर कि वह बाह मुसाहबा आपिस कर दिया जाये । और या अगर आप बलीर एक बोस्त की याबगार के रखना चाहें तो उसका किसी प्राटिस् से एक बड़े पैमाने का बस्त बनवा लें ।

धीर क्या भय कर ।

कहकहाँ का इन्तबार है ।

खीन बाबू की कीन-कीन-मी तसमीक के तर्जुम जनाब के खतर से साया होनेवाले हैं ?

धबकी 'जमाना बुलाई' में खीन पर एक बिलवस्य मजमून निकल रहा है । आपकी नजर से गुजरेगा ।

जनाब जिम्मा सपर मुमताज अभी साहित्य की खिरमत में मेरा इस्तवस्ता आराध कुबूल हो

लिपाबमन्

प्रेमचंद

८६

नार्मल स्कूल, धोरकपुर

४ जुलाई १९१९

मेहरबान बन्या

तमलीम । चिट्ठी ही जताओं की माछी का उपस्तगार हूँ । धात्र बी माह ८ बार यहाँ आया हूँ और कामिल बार माह के बाव कलम जडाया है । बी महीन तो इधर उधर आवाग किरछा रहा बी महीने इम्तहान की नजर हुए मकर मेहनत निजमे मबी । अब मुस्तकिल दौर पर काम करेगा ।

एक मुकतमर सा जिस्मा हरसामे खिरमत है । पदन्द चाय ती रन सीरिय । 'बाजार हुल' का बिक करते हुए खीन मानुम हाता है, इससिये अब बादे न

करेगा।

'प्रेम पचीसों' की सगळ जिस्से बनारस से मेरी थीं। आपने रसीद से इतना नहीं भी या भी हो तो मुझे भिनी नहीं। उम्मीद है कि आपके दफ्तर से यह किताबें जस्य निकल जाएंगी।

घौर क्या मर्द कहें। यहाँ कुछ खड़ी-सी बारिश हुई है पर बहुत से बहुत कम। शुक्र है कि पंजाब में धब धबूँ हुआ। कम मैंने 'बम्मा' को जस्य घोर से पढ़ा। मुस्लिम ने कुछ लिखा है। अगर कोई हिन्दू साहब हैं तो और। घौर अगर मुसलमान साहिब हैं तो उनकी कलम की बस बेता है। किस्सा खूब बताया गया है। श्रीकांत का कैरेक्टर काबिले तारीफ है। मैंने इस किस्से का हिन्दी में तर्जुमा करने का प्रयत्न कर लिया है।

उम्मीद है कि आप बड़े-से आडिमत होंगे। जबाब से जस्य सरफराज का मास्मेया हाताकि इसका मुझे इस्तेफादा नहीं।

धइकर

वनपतराम

८७

मोरङपुर

११ अगस्त १९१६

मुरिछके मन

तसमीम। लिखाता मिता। मरापूर है। मई-जून के पर्वे खूब पड़े घौर हज उठामा। मैं बिना मुबालता क्यूँता है कि ऐसा बिलजस्य रखाता इस बज्ज उठू बजाल में नहीं है। पब्लिक अगर का न करे तो मजबूरी है। बिलबुलस 'इर्रका' घौर अस्त मनबा पर जो मजबूत किस्सा सैयद मुमताज अपनी सख्त ने तहरीर करमाया है वह रिशाले की बाल है। इन मीबूपात पर ऐसा साऊ और रौशन मजबूत मेरी बजर से नहीं बुझा। मुझे अब तक न मामूम बा कि हजरते मयूह इस्मी मजा मीन में इतनी दस्तरख है। कुछ जबाबा बिलजस्य नहीं लेकिन 'शबनम की घर गुजरत' बहुत धण्डा है। 'गुलकरी' पर उठू रिशालों में कोई मुबस्तिराना तनखीव नहीं लिखी। इस सिहाब से ब मीज तककीव की जूनी के एवबा से आपका रिशाला धम्यल है। उर्दू के नाक़ाब पर धण्डी बोट की है, हाताकि किसी ऊबर और-मुसिफाला। 'धालमे खाब' मुझे बहुत पर्ये धाया। 'इलाज बे-रवा खूब है। मामूम नहीं तबाबा है या कुछ घोर। इस्तेफाज गरम भी

बीयर रिसेप्शंस से कभी बसल्लतर है। मैं तारीफ़ करने का धारी नहीं हूँ हक़ का इजहार कर रहा हूँ। गुमनाम साहब तो बड़े भिक्काड़ माधुम होते हैं और हक़ यह है कि ज़ूब भिखते हैं।

प्रेम पत्नीसी' हिस्सा दोम की सी भिखे आपके यहाँ भिक्का दी है। 'प्रेम पत्नीसी' हिस्सा धम्मम छाप रही है। धम्मिबन दो महीने में तैयार हो जायगी। क्या 'पत्नीसी' का हिस्सा दोम अपने एह्तमाय से नहीं छाया कर सकते? 'बाबारे हुस्न' का धमी माधुम नहीं कम तक तैयार हो इस असना में समर 'पत्नीसी' हिस्सा दोम आप छाया कर सकें तो ज़ूब हो। कुछ हिस्से आप ही के बोनो पत्रों में निकले हैं; बहिन्या वस ये बे हुँका। कोई वस ज़ूब की किताब होनी। आपके लिए एक किस्सा लिख रहा हूँ। जूने ज़िबर तो बहुत सर्फ़ कर रहा हूँ पर माधुम नहीं कुछ रंग भी धायगा या नहीं। ज़ूब ही नहीं है वो रंग क्या बाक पैदा हो! और क्या इस्तमाय कर्क। अपने वालिद साहिब किम्मा की खिरमत्त में मरा इस्तबस्ता सलाम कहियेया। आप के ज़ुतुब से ऐसा लुलुस^२ टपकता है कि बे-असलियार मिलने को भी चाहता है। पर मुलामी की ऊँच और सफ़र की बराबरी हिम्मत ठोड़ बेची है।

बस्तलाम

निमाबमंद

अनपतराम

८८

नामक रकूम, योरकपुर

१० सितंबर १९१८

अन्वालबाज

तसमीम। 'जंबीर हक्स' कोई तारीफ़ी बालमा नहीं है और न किसी तारीफ़ी बालमे से इसका बरायेलाम भी तास्तुक है। कामिम बाल्य छातिहे सिब का नाम है और उसकी ज़िबवी में एक बाकबा एसा है भी जो किस्से के काम का मकता है लेकिन इन किम्मे को उसने तास्तुक नहीं। यहाँ तक कि मैंने बेहनी के किसी बाबराह का नाम भी नहीं दिया ताकि किसी को इसलज्जमी न हो — न मुक्तान के प्रमरिबा^३ का नाम दिया है। इनमें यह रिस्साला मेरा मकमूर है कि इतल हक्स के बाबों किताब रंधा हो जाता है और यह हक्स रिस्स तख़्क़ तेरी से बढ़ती जागी है और कुछ नहीं।

अब बाजार हुस्न के मुतास्तिक — यह माजिस तकरीमन्-तीन चौ सुझाव का होगा। सिखा हुआ तैयार है मगर यह अभीम-उल-फुगतो^१ के बाइस^२ साज न कर सका। अगर आप इतनी बड़ी किताब छाप सकें तो मैं साज करना खुद करके बर्ना अभी बर्मी की तालीस तक मुस्तबी रखूँ। आपको साज करने की तकलीफ न होगी क्योंकि साज करने में अकसर किसी के तीन के तीन पलट जाते हैं। हम किसी म में एक अक्षमाफी^३ बेरामी यानी बाजार इस्तकरोसी^४ पर चोट कर है। अगर आप यही बेतना चाहें तो इसके मुतास्तिक अक्षमा^५ आपके पास नंग हूँ। मुभाज के मुतास्तिक किसी जब आप बेस मेंगे तब। 'कहकरी' के लिए मैं पहले अब की भी कि मैं चाहन्दा कई माह तक बहुत कम सिखा सकूँगा। मगर इता अम्माह कोई मौका निकाल कर आपके इराज की तामीस करूँगा।

बाजिस इपर भी बाजिसी हुई है और अस्से खराब हो गई है। जबाब से मुम ताज कर्माय।

नियाजमद

मनपतरम

८६

मार्मल स्कूल मोरखपूर

११ सितम्बर १९१९

जनाब बन्दानबाज

तसलीम। जबाजिरामे क लिए मशकूर हूँ। आप कहकरी के हर नम्बर के लिये कुछ मिलने को कहते हैं। और कई माह से एडीटर साहब जमाला नाचाव हैं इसलिए कि मैं अपने मजामीन दूसरे रिसालों को क्यों बेता हूँ। उनकी रबा-आई^६ भी जरूरी है। उस पर अपने कारे-मनमबी^७ के अयाला से मयी सलमने सेहत माजिस^८ जुबा ही हाफिज है।

मैंने "प्रेम पत्नीसी" के दोनों हिस्से जुब ही खाना किये थे। लेकिन पजिरार और भुसफिज दो जुबा-जुबा हस्तियाँ हैं। मुझे हम काम में बाध रहा। जना यह मुमकिन है कि बाहीर में मेरे प्रेम पत्नीसी के लिए कोई पजिरार मिल जाये। मैं अपने ३२ कहानियों के मजमूअ को दो हिस्सों में निकामता चाहता हूँ। दोनों हिस्से मिलकर सालिकन २०० सुझाव की किताब होगी। हमने ५०

१. फुर्त न दोमे २. काजल ३. नैतिक ४. बेरबा हाफि ५. अक्षम-अनम दुबरी
६. सुज एजरा ७. कहकरी ८. जुरी

जिन्हें मैं जागत की कीमत पर खरीद सकूँगा। अगर तो जड़ के पत्थरों का झूठ है। एक मजलफिस्तोर है। उसने इराफत का काम बन्द-गा कर रखा है। अगर आप की माफत कुछ इन्तजाम हो सके तो फर्माइयेगा। किसी सब 'जमाना और दूसरे रसायन में रखा हो चुके है। सिर्फ इन्तजाम' और उरलीब देना बाकी है। इसमें मरी गरफ सिफ इतनी है कि किताब सावा हो बाय और उसकी हस्ती महज प्रसवारी न रहे। मुझे जो कुछ ऊपर कलौस भिन्न रहेगा उसी पर शाकर रहेगा।

एक और तकलीफ देता हूँ। साहीर में किताबत और छपाई का नियम क्या है? इससे भी मुत्तिना करमाइय। अगर मैं 'प्रेम बत्तीसी' बाइर पीठ के काबज पर छपाई तो ३२ बुख की किताब पर क्या बाबत धामयो। मुमकिन है छपाई घरवाँ पड़े तो मैं खुद ही बुरमत कर जाऊँ।

एक ताजा किस्ता हूजे अकबर दरसाले जियमत है। पसन्द धामे ता रम लें। आपने जमाना के जित मजमून की तरह इतारा किया है उसका नाम 'मंजिले मकसूद' है। वह मुझे खुश ब इन्तहा पसन्द है और बाइर बाइता हूँ उसी रंग में फिर कुछ निर्ज। पर कसम नहीं चलता। प्रेम पचीसी हिस्सा बायन में बह खप गया है। उम्मीद है कि जगत सैमव मुमताब अपनी साहिब किम्बा बकैरित्त हांग। उनकी जियमत में मेरा मनाम घब कीबियेगा।

बन्धुताम

पनपठराय

६०

नामज स्कूल मोरबपुर

२३ सितम्बर १९१६

मुशिकके मन

उसलीप। 'बपतरी' आपकी जियमत में बन्धवस्ता हाबिर होता है। इस पर निगाइ करम कीजिय। यह हम घब का सबूत है कि मजामीन के हुकूम के मुतास्किर में फरा भी $\times \times$ नहीं है। अगर 'बपतरी' इन तरायत की इन साइ करेगा। यह हम जामीनी का पहला निरमा है। 'कठकती' बाइर अम्बल इराफत के साथ अलम हो जायगा। बैग यह जामीना कब तक गाय होता है। बसिबन को शात लगेने।

प्रम पचीमी" और 'प्रेम बत्तीसी' के मुतास्किर। बत्तीसी का पहला

हिस्सा छप रहा है। धापने शरामत का बार मुम्मे पर जाता है। मैं बाहटा बा कि इसका कैसला धाप चुन कर सकते। 'ग्रम पचीसी' धाह्या इस सान म नासिबन दो एकीशन निकल सकते। धयर धाप मतबूधा कीमत पर मुम्मे पन्डह छी सही तँ धीर छी एकीशन एक हजार कापियाँ रने तो बहिसान एक रुपये बार धापा की नस्का मध्ये कमोबेश एक छी घसी रुपये मिलते हैं। बत्ती चौव्ह नौ पचास रुपये पर पन्डह छी सही। धीर दो एकीशन के इसी हिस्सा से तीन छी नाठ रुपये हो जायेंगे। बूकि धाप को मुम्मे दपन तक किठारें बेचने के बाद नफा होगा इसलिये इस तीन छी साठ रुपये म धाप तछछीक बा मुताबिका कर सकते हैं। वह धाप शीक से करें। 'बत्तीमी' के तीन एकीशन होने। धापके किस्से निकालने के बाद मेरे लिए यह भी पचीसी हो रह जायपी धीर उसी युगने हिस्सा से मुम्मे पाँच छी बत्तीस रुपये मिलने बाहिए। इसम ती धाह्या धीर हान का खयाल करके मुम्मे को तछछीक बाहें करें। मैं उस छठर पर लूक गौर करूँगा। धाप बिसा तछाम्मुम^१ धपना बयाल बाहिर करवायं। 'बाहारे हुल' मे तालीर हूँ। यह खयाल हुआ कि दन दिन की तछीस रही है। मुमकोम है मुफ्दहत धीर नकल हो जायें तो इक्कठ मेरू^२। इसलिये रोह लिया है।

मैंने इन्ही दिनों एक धीर किस्सा लिखा है 'घाल्वा राम'। वह बयाना में धेव रहा हूँ। वह इस कदर दिन्नु हो गया कि 'कहक्या' के लायक नहीं। धाप चुप हिन्नु सही लेविन धाप के नाबरीन^३ तो हिन्नु नहीं है। 'दण्टरी' बिल्कुल लाइफ से लिया गया है। तछीमुम^४ का बहुत कम वखम है। मुमकिन है कि वह सुरक मामूम हो। धाप बिसा तछत्तुक बापिध कर्मा बीजियेवा। मुम्मे एक कास ऐब यह है—धीर वह जय के साथ बगवा जावा है—कि मैं कहानियो में हुल-धो-इरक की बटपटी बारागी नहीं से सज्जा। वह दिन घब नहीं रहे। इकरते मियाब की-सी बयान तबीयत नहीं से लाई। धीर क्या धरुं करूँ।

एक बात धाप से राख की कह हूँ। मुम्मे 'पचीसी' धीर 'बत्तीसी' के लिए बीरह छी सही का धाकर हो चुका है धीर बर्रर तछम्पुट^५ धाह्या ब हान। रबीन्ध बाबु को वीकमिसन बीस छी सही देता है। मैं रबीन्ध बाबु नहीं हूँ। इसलिये बाव्ह धीर बीस के दरमियान १५ पर जाने होगा बाह्या हूँ।

अन्तर्गत

तसलीम । मित्राग्ने मानी । मन्ना रेनी । लुब है । जिस कमरे से मन्ना निकल सकती है उससे आयज्जा मुझे खानाबद का मन्नेरा हो तो काबिले मुघाबे है । बकिम्मा का इरिक्का है । छोटी कहानियों को कई हिस्सों में बांटने से मुत्त बाठा रहता है ।

क्याये मित्र गये । ममनून हैं । पैमान बड़ा यहबाबे कबीर के गज हुआ । आपके सिये दूसरी फिक कर्हैया ।

'काबारे हुस्न' खता खता छाक हो रहा है । इरम्मा है कि एक मुहरिर रखकर काम बन्नी से काम कर बागु ।

क्याबा बस्तुनाम

प्रहृष्ट

अनपठ्य

अन्तर्गत मकरमे बन्ना

तसलीम । मैं यहाँ तीन दिन से आपका इन्तजार कर रहा हूँ । मगर बानि बन आप सखनऊ से बापिस या बये । मेरी बचनसीबी । प्रम बलीसी हिस्सा रोम के सिय सैन कौन-कौन से फिस्ते तसलीम किये से उनकी एक केहरिस्त मुझे मेज बीजिये । मुझे याद नहीं आता । जिसतर इन्कीस मरगै ही होभा बाहिन । इस जिसतर पर हिस्सा बन्ना बन्ना रहा है । कागज मने हिस्सा बन्ना के मित्र भीम पीछ भगाया है । अगर आप भी यही कागज भगायें तो दोनों हिस्सों में बकनानियत या आय और तब भीमस भी बकसा रनी जा नकेगी । यहिया कागज तयाना बैजोड हाया ।

मेरी शर्तें क्या थीं इसकी भी एक नज़र बरकार है । बैरा हाफिजा ने नास्मि है और याददास्त का मोट भी नहीं रनता । याद 'कहक्या' दोनों दिठम्बर और अक्टूबर मिसे । लुब है । बककर तसलीम कर्हैया ।

बाजारों 'हुस्न' के तीन ही मुफ्फ़ात हो गये। सिक हो छो घीर बाकी है। घाप को घायर फुरसत हो वो मै यह तीन ही मुफ्फ़ात बमता करूँ। जब तक घाप बेहोने कातिब मिलेगा उस तक मै वो ही मुफ्फ़ात पूरे कर दूँगा जो हो बटा रोमांग के हिसाब से दो-एक माह का काम है। बूने हुमत' से हज़रते 'तमबुन' कितने बरहम' हुए। बेसी घापने इन साहबों की भुमघतरिमो'। बड़ा मुई न 'तमबुन' को भेजा है। घायर घपा सो और बर्ना 'बमता' म निकसेपा। किम्पा सैयद मुमताब धमी के रिमात में गालिबन उससफ़्त यानी मसाहल का बखीरा मौनूर है। हर माह निकमत ही घाटा है। इस मौनू पर उन्हें निहामत मुहकि-क्राना' बस्ताहाह' है। जनबटी से रिमाता बमता में रंगीत तमबीरे भी होंगी। घापने मुफ़ से कुछ जनबटी के लिए माँगा है। मै मुस्तकिम बादा नहीं कर सकता क्योंकि मै धायकत घापने बहोश गालिम में किताबान से लिपटा हुआ हूँ। इसे दिसम्बर इकतीम तक ख़त्म करना चाहता हूँ। क्याय बस्ताम। बमता से जल्द बाह फरमाइयेगा।

६३

बहुकर
जनपतरा

बनाब मुसिकी

गोरखपुर,

१६ दिसम्बर १९१९

तमलोम। शूफ़ घीर नबाबिशानामा कई रोज़ गुजरे मिले। बाघर बुप नहीं है। इसी पर घापने वीजिये। घापे हुए फार्म रह कर बेने से मुकमान होगा। मरघ बाघर इमसे कहीं बेहतर है। लेकिन कोई मुकामका नहीं। सस्ता बाघर रहगा तो किताब भी खर्ची होगी। मिस्तर यही रहना चाहिए, मयर कातिब को ताकीर कर दी जाने कि मक़दलमे इमेशा नई मतरों से शुरु किया करें। किस्वों को अश्रिस्त बकर रहाना फ़रमाइयेगा। 'कहकसा' सितम्बर घीर बरबुदर दोनों मिले। बेहतरीन मजबूत मौनागा माहब किम्पा का है। इन मौनूघात पर ऐसे बाबे मजामीन मेरी मजर से नहीं गुजरे। 'हिजाबे जलअत' कूब है। हाँ फाट बमबोर है घीर नहीं-नहीं मसासते' बयान फ़ायम नहीं रहने पायी है। बीगर मजामीन धीमस बने के हैं। बन्गू इबाय बिलुन तारीफ़ी मजमून है।

१ मताब

२ इदतता

३ कातिबान कूर्व

४ कातिबान ५ बन्गी

६ बरबता

इससे धरम को क्या बिसरसी होगी । मैं धनकरीब वास्तु डिपेंस का एक क्रिस्ता मेर्जुमा । नागिर^१ क्रिस्ता है । तर्जुमा मुकम्मल है । धरीम-तन-पुमती के बाइस एक साहिब से मकल करा रहा हूँ । बत्तीसी का काम जारी रखिदेगा ताकि क्रिस्ता धरम का दोम साब-साब निकसे । बाबा रे हुस्न की काफी भी क्रिस्ता मौकदा^२ के साथ रवाना बिधमत होनी ।

‘एक रात’ मुझे बहुत पसन्द आया । ओरे क्याग है उसकी हस्त नाबिर । रसाइफिक^३ की बार देता हूँ । कुछ ‘क्यावे परीश’ से मिलता हुआ मालूम होता है । उसकीहूँ कई बहुत खुश है । बस्तनाम

नियामत

धनपतराय

६४

गोरखपुर,

११ फरवरी १८९०

नानिबान

तसलीम ।

खुद का जबाब देने में देर हुई । मुझको क्षीयिमा ।

इसलाह हमने बाबा इरसामे बिधमत है । हमे धाय कशानी की निपाह से नहीं खपाता की निगाह से देखने की हमायत कीजियेगा ।

बन्धु नरम मुसी योरलप्रसाद ‘इबरत’ मरहूम की भी इरसाम है । पसन्द आये तो दज कीजियेगा ।

बनवरी नम्बर मिला । हस्त मामूल फिरवा मुमताज धाली का मजबन बेइतरीन है । बहूनिमत मजबूई बहुत ही अच्छा नम्बर है । नरम का दिम्मा मान और पर बिमकल है । तपिरा और भरतर की गजला में खुब खुश आया ।

‘बाबा रे हुस्न’ का मुजरती एडीशन निकल रहा है । गूब-गूब तमबीरे निकल रही है । धाय बाहूने का ब्याक बिबदा हूँमा मुमकमल गडीरान निकल आया और मजा ।

दुर्गा का मन्दिर ‘कमीरा’ में धाय का । ‘कमीरे’ के फरह म देखे । मिल आये तो बेइतर । बनी मुझे इतना कीजिये । नकल करने में हूँ ।

‘मेकी की लडा’ हिली में निकल आ । इनका मुमकमल^४ भी मेरे पास

है। तब तक करने की जरूरत है। 'ईमान का फेंसना' और 'छठेह' भाषा की निरुपम म पहुँच गये होंगे। उज्ज्वल में हूँ। मुझाफ कीजियेगा।

नियाममं
बमपतराम

सैयद इस्तिपाज धमी ठाज को सन् १९२० १९२१

६५

मुस्लिमी

पोरबपुर

१४ भाग, १९२०

मयसीम। यह लमोली क्यों? दो बात मिले बचाव नकार। प्रेम पुष्टिमा मज की रमीन नकार। मरुत उरदुदुर है। बल रफा कीजिए। मार्च का रितामा देखा। मीतामा रातिन और नजर मियाज दोनों साहबों के मजानीन काबिले बाज है। मूब मुल्क धापा।

मसूरी चलने की बात ही थी। मैं तैयार हूँ। मगर धाप बाध करके भूल गए। जरूर फेंसना कीजिए ताकि उबर स मासुसी हो तो मैं देहरादून जाने का इरादा कर लूँ। और तो कोई हान ठाज नहीं। 'प्रेम बलीसी' का क्या हान है? कितनी हुई और कितनी बाकी है? बाजारे हुस्न के सब कुछ धरतीति मुहताव बाकी है। पहली धर्म को धापके पान रमिस्ट पहुँच जायगी।

बस्मान

बमपतराम

६६

मुस्लिमी

पोरबपुर, नामन स्कूल

१४ भाग, १९२०

मयसीम। मुहम्मस छत मिला लेकिन मुहम्मस बचाव उत बकत हुआ जब धार बाजारे हुस्न' लमाम-मी-कमाल पड चुकने। उनके मुहम्मस धापने को बुध फरमाया वह सब धापकी कुर-मरुदाई है। मैं बहुत ममनून हुआ धपर जनाब उत पर धपनी मुहम्मस लबसताना रस से मुझे मुहताव फरमाये। "ममें

१ दूर

भारत होने की कौन बात है । गङ्गा^१ है कहाँ ? मुझे तो इसकी धार न रखती है कि कोई मुझे सब मेक-धौ-बह समझाए । इसकी तबाधत हक-उल-सिद्धमत बनेरु के मुताबिक आप मुझसे नहीं बेहतर फैसला कर सकते हैं । किन्ना सैयद मुमताज अली साहब को मेरी जानिब से सलाम^२ बना लीबिएगा । मुझमा आपके लिए लिख रहा हूँ । यदि मैं हर्ष हो सक्ता ।

बसमत
जनपतराय

६७

गोरखपुर
२९ अगस्त १९२०

मुरिफके मत

तसलीम । गङ्गाजिरामा मिला । 'बाबारे हुप्प' आप साध करें । सराफत के मुताबिक यह धर्म है कि आप पहले एबीशन के लिये मुझे बीय की सही रायमती भवा परमावे । पहला एबीशन बारह सौ मुस्को का हो । गानिबन सवा रुपय डीमर रखी जाय । मुझे २४० जिस्में मिलेगी । यह जिस्में क्वाड मुझे जिम्मा की सुरत में दे दें या रुपये की सुरत में । रुपये की सुरत में देने से बड़ी कमीशन जो मैं किसी दूसरे बुफ्तेलर मसजून गिरामा 'जामा' का हुँगा आपके बजा कर हुँगा । अगर आप इस पसन्द न करमावे तो आप मुझे जिस्में ही दे दें । मैं जिम्मी तरह बेच या बिकवा भूंगा । अगर इन सुरतों में कोई पसन्द न हो तो मुझे पाने एबीशन के लिए वा सो पचास रुपये भवा परमावे । जिम्मी में मुझे पाँच सौ रुपय मिले थे । बुजराती एबीशन के मुझे सौ रुपये मिले । आप जिन तरह चाह फैमाग करें । सो सौ पचास रुपये गानिबन कम्परा से बचावा मुताबिक^३ नहीं है । मेरी बेइ सल की मेहमत और सामाकरसाई^४ का नतीजा यह फिदा है । अगर यह सब शर्तें आपको नामवार मानूम हों तो अपनी बर्ती के मुताबिक फिदाब सामा करके मझे वा चाहें दे दें । मैं आपका बरकूर हूँ । मुझे यह सक्त जिस्मत मानूम होती है कि अपनी फिदाब के लिए पक्षिपतों की लुताम^५ करता जिस्में ।

'प्रेम बलीगी' गिरा साध का जिस्सा 'लूने पञ्चमत मसफर' है । पहला हिस्सा अलङ्करीय सैयाग है । दूसरा हिस्सा भी अलङ्करीय सैयाग है । तीसरा हिस्सा भी अलङ्करीय सैयाग है । मरे जिम्मी पक्षिपत कमपरा में आपने

लिए हर एक क्रिस्म का काबूज मुभीते के साथ घेबने पर धामारा हैं। निस्सुई
क्रेमल पेशमी बरकार होमी। धगर धाप इते मंजूर करमार्ने छी काउज भा जावगा।
धागर बहैरा इस पने से दे सकते हैं। मीरा ह्वाला देना डकरी होमा

भीपुत महारौर प्रमार पोहाग

हिन्दी पुस्तक एम्बो

१२६ हरीचम रोड कमकता।

मुरी योरलप्रमार माहब 'इबरल मरकम की नरम 'पाने मिक्की' धारने
शावा की। इसके लिए शक्तिवा कबूज करमाइये। धमी इनका कलाम धाप के पन
गानिजन पांच नजमें छीर हो नरम है। इन्हें भी शावा कर हैं। धीर इन नरमा
की एह-एक काफी बराइँ करम धीन के पन से बना करमाब

बाबु रघुपति महाम

महमी धवन योगलनुर मु० पो।

यह साहब बिम्बाविल धारमी हैं धीर उम्मीर हैं कि धारमी तरदुशन म
कुनत पाकर 'कहकरी' की कुछ जियमल कर सकेंगे। इन कलाम की इलाधन
का मंता निऊ बहु है कि रमायन में ठबाने हो जाने के बार इसकी बिनाबी मूरन
शावा हो। इनलिए जिस बजर बाब मुमकिन हो लके इन्हें धाप निरान हैं।

धात्रकल कलम बिम्बुन मुप्त है। एक क्रिस्मा बिम्बुन धपुग पड़ा हुआ
है। मुबह का मरना हा गया है। हम बज जोटकल डिग बार बजे तब बीटने
की हिम्मत नहीं होता। धीर यह बजन धनधारबीनी का है न कि समनीऊ का।

दरादा बस्मनाम। बबाब नम मे बरब मरछराड करमार्ने।

निपाडमंद

धनपनगय

६८

रेल्ट हाउस, नीपर रेलवे स्टेशन, देहरादून

६ जून १९२०

मुद्रितक मल

उपनीम। ई धात्रकल कलमल अधिवेश बरीय का सफर करता हुआ देहरादून
धा पहुँचा। मीन कमकल स एक लन धात्रकी जियमल में खाला किया बा। भापुन
नहीं पहुँचा था नहीं। मुझे उमका बबाब नहीं मिला। धान इबर धान का इम्प
रकने हो छी बराह करम एक भापुनी छार से मुत्तिला करमाइये ताकि धात्रका

१ धारी २ नकादिन ३ कलवार ईसने ४ रचना।

इस्तफार कर्के । जर्ना में बहुत बस्त यहाँ से जमा बाउँगा । मेरी तबीयत बीराने छफर में कपाश मुजमहिन् हा भयी है । धाया बा कि हरिद्वार की धाबोइबा से कुछ फायदा होगा लेकिन नतीजा इसका जसटा हुआ । पेचिस ने जिससे मेरी पुरानी बोस्ती है, बहुत बिक कर रखा है । इस बात क पाये ही अपने फ्रैसमे से मुत्ता फरमाइए । अगर यहाँ न था तर्के तो बेहमी मे मिलने का फ्रैससा कौजिमे धीर मुत्ता कीजिये कि धाप जहाँ कम तक पहुँचये धीर म कड़ा धाप से मिलू ।

कपाश बस्तमाम

निवाबमर्ब

बनपतराय

६६

मया बीक, कानपुर

११ जून १९२०

मुश्फिके मज

तसलीम । धापका गजिस्ट्र लिफाफा मुझे छफर 'जमाना' म धाकर मिला । बस्तमाम है कि कस्त यह बात बहराबून म मिल गया होला तो मैं धाप लोबों की हमगही म मसूरी की सैर कर लेता । मुझे धाबकी छऊ मे यह तनुबाँ हुआ कि मैं बाँर किसी रखीय या बोस्त के तनहा नहीं रह सकता ।

यह सुनकर बरायत^१ जुती हुई कि कायज धा बया धीर ग्रेन बत्तीसी की कितारत मुकम्मल हो गई । अब उसे छपवा नी जामे । हिस्सा धाबल भी बादिबन धालिर जुभाई तक तैयार हो जावेगा ।

'बाबारे हुस्न' के मुतामिक अगर धापको मरी शर्तें मंजूर हैं तो रुपये के लिए छिद्र न कीजिए । मुझे मिलाना जशब बकरत नहीं धाकिर बयस्त तक भेज दें तब भी कोई हज नहीं ।

अब उम्मे मुनाह—धापके लिए बीराने मफर मे मजमून मिला धीर भेजने ही वाला बा । अगर यहाँ धाये ही जाने बह मेरे कब्जे म मिक्म बया । मेहरे-निडा^२ नाम बा । धामे लामिने इशारे के लिए भाक कीजिये । धात्र धीरलपुर बापम जाया हैं । पेचिस का बाकायश इलाज कर्केगा । धीर गिरता-ए धारजू का रुक कर चुका है जन्म ही हाजिरे निजमत होगा ।

बस्तमाम

बनपतराय

-आई जान

गोरखपुर

२३ जून १९९०

तमसीम ! मैं बच यहाँ था पहुँचा । कम घापका लत मिला और घाव अपनी तमसीम देखी । छोटी कूब है । मुझे उम्मीद न थी कि घाप इसे सुप में से इतनी मलाई से ढुंगा कर सकेंगे । और, घापकी बर्बलत मुझे अपनी सूरत को मजदूरी

बहुतर है । बाजारों हुम्न दो हिस्से में शाया हो । मेरे जवाब में भी यही तमसीम थी । 'मीन की लैला' का बीबाबा बकर भिन्नूया मगर किताब जून जून के बाद गाम्बिन डिवाडा सहसत होगी । प्रेम बत्तीमी' अगर सिठम्बर तक लैबार हो जाय तो मे गमीमल समझूँ ।

घर मजमून की बात । मजमून फ्लिडाम मेरे पास थे हैं । मगर सफर भी पकान और लबीयत के मुकमलिन हो जाने के बाइस साफ नहीं कर सका । इरादा था कि लत का जवाब और मजमून पाव-घाव में लकिन छोटी की रसीर देखी जगरी थी । कम जल्ता धम्माह एक मजमून साठ करना शुरू करवाया और गाम्बिन २६ जून को यहाँ से रवाना कर दूँगा । इस तालीर के लिए मुझे माबूर समझिया । सेहत से मजबूर हूँ । उम्मीद है कि घाव जुरा होवे । कमसीर की त्रियागत मुबारिक ।

२०२

निवाजमंद

बनपठघर

मुस्लिमों

गोरखपुर

२६ जून १९९०

तमसीम ! मेरी परेशानियों का खाला नहीं हुआ । छोटे बच्चे को बैचक निकल घाई है । उनके रोने-झाने का तदभाव कोई काम नहीं करने देता । यह मजमून घास्कर काहड के एक किस्से Canterbury's ghost का तमुमा है । पगल घावे को हल लें । मगर इसके धाकिर में मेरा नाम देने की जरूरत नहीं

क्याकि आबे हयात' और 'अरके गहामत' के बाब से अब मैंने बहुत कर लिया है कि तबुमे न कहेगा।

और तो कोई ताजा हाल नहीं।

बससलाम

बनपराम

१०२

ममिल स्कूल पोरबणुर

२८ जुलाई १९२०

भाईजान

तससीम। आपका एक काब कई दिन हुए आया था। कलकत्ता भी मिला। मजबूत की फरमाइश अभी तक पूरी न कर सका। आबकल मुसीबतों की दूरित है। यहाँ २६ जून को आया ६ जुलाई को छोटा बच्चा बेबक मे मुबसिला हो गया और हमेशा के लिए दाम बे गया। अभी तक इस गम से निजाम नहीं हुई। सब तो हो गया मगर याद बाकी है। और लामब ताबीन्त रहेगी। इसे अपने आमल^२ का गतीका नमकता है और क्या।

अब तक बिल न सेमने मजबूत कहीं से आये। गतों का जवाब देना भी शक है। मुझाफ कीबियगा।

'मेम बलीसी और 'आवारे' हुस्न की क्या हालत है। उम्मीद है कि आप खुश होंगे।

हुसामा

बनपराम

१०३

पोरबणुर

२८ अक्टूबर १९२०

भाईजान

तससीम। तार मिला था मगर खन का हस्तकार करते-करते बक गया। इरादा था कि जवाब मे मरा मजबूत पहुँचे रात न लिये। लेकिन महत और कुछ सोच विन्ती^३ ने ऐसा मजबूर कर रखा है कि आज मजबूरन खन लिख रहा हूँ।

करा करके कई काम होव रखे से सारी धबूरे पड़े हुए हैं। माकाम नामुकम्मल है। उनका हिन्दी ठगुमा नामुकम्मल है। बार मुक्तसर कहानियाँ धबूरी एक नामा धरे तजबीज। मगर सेहत कुछ करने ही नहीं देनी।

माजूम नहीं 'प्रेम बत्तीसी' इस जिन्दगी में शायद होती या नहीं। 'बाक़ारे हुस्न' का सम्बाह ही हाकिम है और 'माकाम' का तो धमो बिक्र ही क्या। न जमाना प्रेम का फुलत न बार-उम-इसाफत को मोहकल।

मिस्तम्बर के महोमे में कुछ ज़रूर हाबिर कर्बगा।

बस्साम

महफ़ा

बनपतराय

२०४

गोरखपुर

२५ अक्टूबर १९२०

जनाब मुस्लिमी

तसलीम। नवाबिखाना साबिर हुषा। घाय धपने सिमसिका-ए-इसाफत को ठोमीह करवा चाहते हैं। यह धाव मेरे लिए ज़ात तौर पर बाइसे इस्मीनल है। जूँ में रिखाने और भजवारात तो बहुत निकलते हैं। सायब ज़रूरत से क्या। इसलिए कि मुसमसाल एक मिट्टी की है और हन लाकीययाफ़ा तक धपने तई मुसमसाल होने के काबिल समझता है। लेकिन पम्पिसारों का बकसर बहुत है। सारे कलमसे-हिन्द में एक भी बंग का पम्पिसार मौजूद नहीं। बाइबोई उनका धवम और ज़रूरत बराबर है क्योंकि उनकी सारी कापनात बंद रही नाबिल है जिनसे मुक्त या जमान को कोई फायदा नहीं। धसा हुषा 'बावर' तुम धवम बैहली में कापम हुषा वा और बहु तमसरक से क्या लेकिन बोड़े ही रिनों में उसके नाज़िम माहिब का जोश करो हो पना और बहु कुछ इस तरह धायब हो यथ कि मुधामसेबारी का हिस्सा तक न साक किया। इसमिद् में धानकी हम तजबीज से बहुत मुसमसल हैं। लेकिन मुधाम ज़रमाइयेना एक धरबी रिगल का बार धपने मर पर रखे हुए धाय धपनी नबी तजबीज में कामबाव हो सकते हैं हमम मुके तक है। एक धवमस में का ज़रूर रिखाना एव

आदमी की हमारा मसकफ^१ रखने के लिए काफी से खयाल है। करना उसका मेयार^२ से बिर बागा यकीनी है। ऐसी हालत में आप दोनों काम कामयाबी के साथ नहीं कर सकते ताबज्जे कि आपकी कोई होशियार एसिस्टेंट न मिल जाये। और चूँकि आपका बाहोर में विसा माकूम मुआयजे के होशियार आदमी मिल नहीं सकता और 'कहकशों' के लिए यह बार शायद नाकामिसे बदस्त हो इसलिये आपको इसके सिवा और मफर^३ नहीं कि या तो इलाक़ के हों या कहकशों के। मेरी ताबीज राय है कि अगर आप इलाक़ का काम सरपचाय में सकते हैं तो 'कहकशों' को औरबार कहिये। 'कहकशों' को काम कर रहा है वही काम और भी कई मुमताज गिनाय कर रहे हैं या करने का इरादा रखते हैं। मगर पम्पिलिंग का मेदान बिस्कुन आमी है और जवान की खिदमत करन के जितने मौके इलाक़ के कुतुब के जगिये मिल सकते हैं माहवार रिसाले में मुमकिन नहीं। मैं यह नहीं कहता कि माहवारी सहाइफ^४ से जवान को खिदमत नहीं होती मगर रसायन के बसायन महबूब होते हैं और उनके हुकूम उसे तमनीफ के अफसर शोबो से बेपैज रखते हैं। उर्दू गिनायो में आप कोई जल्लोम और मुस्लिम जाला^५ तारीखों तमनीफ नहीं चाये कर सकते ताबज्जे कि वह आप के मजबूब सुर्दबीनी सुरत में पशन की जायें। अमाहारा अफसफ़ और "मजरदान कीमियात^६" वगैरह बगरा सभी मसनाफे कसाम का दरबाजा आप के लिए बन्द है। आपको बनते हुए मजामीन तकरीहबस्त^७ नुटनुने दिलचस्प सायरना तब फिरे रंजीन फिस्ते चाहिए। यहाँ तक कि आप कोई जमीन ताबिल हाथ में लेने हुए डप्टे हैं। तो बनाय अटपन मजामीन से नाबरीन की बियाफ़ते तथा बाहे हो जाये लेकिन जवान की कोई मुस्तफिल खिदमत नहीं हो सकती। ऐसे मजामीन में जवान के मुस्तफिल सगमाये में कोई काबिले कर इलाक़ नहीं होगा। उरू को हर एक सोबे^८ की अफ़्दी और मुस्तनद^९ फ़ितार की जितनी उम्बरन है वह मोहताजे बयान नहीं। और हालांकि इन बाबजामतो^{१०} का बाइन एक बड़ी हद तक हमारी गियाती बेइम्तयानो^{११} है ताज़म हमने धान मिटरेजर की छण्ट धनी उतनी तबज्जे नहीं की जिसका वह मुस्तहक है। अगर हम यानी साथ रखनी हैं तो धरने मिटरेजर को फरीग बेला पड़ेगा। और बाहे यह काम अक़ाद^{१२} करें या मजमुआए अफ़्गए मगर इसे कारोबारी उरूमों पर किय बहैर इम्तज़ाम^{१३} नहीं हो सकता। अगर आप एक मुस्तफ़िका गरमाय से का^{१४} परिनिशिय काम जारी

| | | | | | |
|-------------|----------|-------------|---------------|--------------|----------|
| १ कुरी सरत | २ अवरत | ३ इन्डर | ४ अफ़्द | ५ बरिदाजी | ६ कबीर |
| ७ अदिरबार्न | ८ अर्ज | ९ काय | १० पिदायत बाल | ११ अबायन जाल | |
| १२ अनीरक | १३ गिलाय | १४ नायाफ़िक | १५ अरिदुता | १६ अरिद | १७ गिलाय |

कर सके तो क्या कहना। साहीर जैसे विजारी मक़ाम पर ऐसी कम्पनी खोसनी बहुत मुश्किल न होनी चाहिए। बहरहाल अगर आप इलाक़ के कारख़ानों में काम डालना चाहते हैं तो बहक़्तों का बन् बनीजिये। बिमलभूष ऐसी हाथल जब कि आपको इसके जारी रखने में सग़रम ख़यारा है। यही मेरी खोस्ताना मनाह है। ज़म्मीय है आप मेरी माफ़नोई को मुघाफ़ करवायेंगे।

११६ / इन्तबाज़ धनी 'ताज़

२०५

लाक़नार
प्रमक़द

माहिबान

गोरखपुर

२६ अगस्त १९२०

तसलीम। छठ इन्तबार के बार मिला। मसकूर है। बनीसो छप गयी
शुक्र है। 'बाबार हुस्न की क़ितावत होने लगी बड़ी कुली की बात है। हिस्ना
धन्यवश धनी तक मुसी बयानाख़बन साहिब की बेतबज़ा ही के सबब मन्तारिज
इस्वबा^१ में पडा हुआ है। मगर ज़म्मीय है कि हिस्नाए शाय का ख़ाया हुआ
ताबियाने का काम होगा। धीर यही मेरी तरब बी।
'बहक़्तों' आप बन् करना चाहते हैं। जब मुक़साब हा रहा है ता ज़रूर
बन्द कीजिये। जब आपको बिनायत जाने का मौक़ा मिले तो इससे आपश न
रदनना अपने ऊपर धीर ज़ीम क ऊपर बुन्स है। यह ज़मन क दो-बार माय
निकल जायेंगे तो मेरी तरफ़ आपकी भी पछतावा पड़ेगा। क़सत मैंने धरामने
जब मैं एम ए० तक हासिल कर लिया होता तो यह क़सम-गुर्खी की हामन
न होखी। बर्ना वह बनाता इस्लामिगारी क नज़ हुआ धीर जब क़रवें रिखी
के लिए मजबूर करती है। धाय बी ए पंजाब से कीजिये धीर धीरन बिनायन
का सफ़र कीजिये। हा-सीन ख़ासा मैं आप पाँच छ नी ख़पये हासिल करम क
मुस्तरक़ हो जायेंगे धीर अगर धन्यकारनबीसो की तरफ़ मायन होने ता यहाँ भी
धन्यवश बर्ने का धर्मबी रिखामा निकल मक़ने। धन्यसाबी धीर कहनी इबायद
को हासिल हुआ ज़मन को ज़ीम नही। मने धपनी कानिब स एक ख़ास्ताना
तब लिया है। मुनामिब समक़ें तो इमे शाय कर दीजिये। मुझे इस तरफ़ में
बूबयूरती से निकल जान का इसक़ सिबाय धीर काई रास्ता मज़र न थापा।
मन्तायदज्ज-होत के ज़न में भी ज़म्मीय है। माक़-साक़ कहना जानता है।

१. क़दाई

२. हुक़ुम

३. बीकनी

४. धरे

५. बहानावा

६. मज़ल

‘बत्तीसी’ और दीगर कुतुब लेकर खाना करें। आपने मालवी के हातात मिले थे उसकी किताबी बिल्लें निकल गयीं। ‘प्रेम बत्तीसी’ आपके यहाँ से किताबी निकल बायमी। अब तो ‘कहकथा’ का बगियाए इस्तहार भी न रहेगा।

यहाँ बारिश कमजोर बरत बन्य हो गयी। फसल का मुकसान हो रहा है।

मेरे कमकसे के एक हिन्दी प्रस म शिरकत कर ली है। व्याख्य आपने मेरे एक दोस्त का होया और पाँच साल मेरे। मुझे अपने हिन्दी के खयों की फिक्र करनी है। अगर काम चल गया तो पचास-साठ रुपये माहवार का फवदा हा सकेगा। अगर आपको तरबुब न हो तो सितम्बर म मशूरा^१ हिमाज ठी फरमा दीजियेगा। फूस प्रस सोलह हजार का है। ठाबियत^२ के लिए मरुहूर है। दो कम्बे के एक ने मुफाक़्त^३ को अब एक बहागसाला^४ सीरकार^५ गढ़ गया और एक सड़की। परमारमा इन्ही दोनों को जिन्दा रखे। धम जो कुछ होना बा हा चुका। मशीयत^६ यही थी। मुझे भी अब उसकी ममलहत तबदल पा रही है। शामक मुझे अलामक^७ की जंजीरे-मरी^८ से कुछ आजाद करना सम्भव बा। छत अन्दर लिखियेगा। आपके कुतुब से तसकीन होती है।

आपके बालिद साहिब बुजुर्गवार ने जिन अलफाज मे मुझे तसल्ली-सब^९ और तबक़ुल^{१०} करमाया है उनके मिये तहैदिल से ममनून है। ईद-उरबुहा का दिन है दो-बार अलफाज मिसल खाते होंगे। इसलिए अब क़ससत। ईद मुबारक। ज़यास में आप ने भी बराकभीर हो रहा है।

बम्सलाम

मियाजमब

बनपतपम

२०६

मार्शल स्कूल गोरखपुर

१४ सितम्बर १९२०

मार्शलाम

तसलीम। आपका महाबिशालामा कई रोज़ हुए मिला बा धबर हम आलमे जर्नी^{११} कल्प-मर-मर^{१२} में एम० ए० पास करने की खून सवार हो गयी है। इस बजह से बल का बहाला करता रहा। मुबह की शाम के लिए रम छोड़ता

१ फर्जिया हुआ २ बलमबुली ३ चिरीय ४ बार बाल की ५ दुक-बली ६ ईदी इन्दा ७ मुबीयती ८ मरी बंयोर ९-१० अब करने और ईदकेबा के जाने फिर मुकामे की हिदायत ११-१२ अलफाज बालमब

या ताम को सुबह के लिए। आपन 'कहकरी' को बन्द कर देने का प्रसन्नता किया। बूझ किया। मुकुसुम उठाना उस पर दूँ सर। इस बन्ना से निजात ही पच्छी। मगर इस बड़े कुसुत को या तो अपनी आहवा तरुकी या उसनीक म सऊ कीजिये। क्यों आप के स्नेह जाने की तबबीब क्या प्रिक^१ हो गयी? मगर आप के मासी ह्वास्त इजाजत दें तो आप जैसे तम्बा^२ नौबवान का बहाना क्रिस्मत आबमाई करने जाना पकरी है। वहाँ से लौटकर आप किसी कानिन के प्रोफेसर और फिर प्रिंसिपल हो सकते हैं। सिद्ध हो चान की विभावतनी^३ है।

महात्मा गांधी को अगर सिद्ध ह्जार जेक ह्जार मिले ही निकलीं तब ता आपको हायर इसम भी बचारा ही रहा हो। 'प्रेम बसीसी' का मुस्तबिर है। 'बमाना' को भी उकाडा से बँन नहीं लेने देता। गानिबन धक्कुर में बोना हिस्ते निकल जायेंगे। आपको 'तहसीब' की माऊत मेरी पाँच सौ मिले म से भी कुछ निकल जायें तो क्या कहना।

'बमाना' का हाल मुझ मामूम है। सल भर म ताम^४ बड़ सी दा सी मिले निकलीं और कहीं हरितहार बेना नहीं पाइता। सबकी 'बुबड़े उम्मीद' म भी कुछ बिस्दे बेजुमा। इसके लिए एक क्रिस्ता 'बाव घब मग' लिखा है। क्रिस्ता क्या है एक दोस्त की हूडीकत है। सिद्ध आखिर म बोड़ी-बो उपब है। पढ़कर अपनी तनकीर और मुमकिन हो तो हजरते 'पितरस' की तनकीर से मुत्तिसा करमाइयेगा।

मुझे स्वयं की बकरत तो भी थी है। इसलिये कि मैं प्रेस में छिरकत कर चुका हूँ और उसके अपने धरा करने लाबिम है। लेकिन बूँकि मेरा तरीक मेरा ऊँचा है, उसकी जानिब से लपयो का उकाडा नहीं है और शायद न हो। मगर आपको किसहाल तरबुद है तो मुजायडा नहीं। जब आपको सहूलियत हो उस वक़्त छड़ी।

'पबीसी' भी लोगों हिस्से बरम हो चुकी है। शायद हिस्सा दोम की बन् मिलें बाड़ी हों। बूँसी इतायत का मरहता बरपेश है। 'बमाना' के मैनेजर सऊब इसपर कर रहे हैं मगर मैने धह^५ कर लिखा है कि बमाने की मरिश म न पड़िया। अगर आप इसे निकाल सके तो बरी बेहतर।

१—भी हाँ मरामराय म ही बा लेकिन जब 'सोने बदन' लिखने के बाद मुझे मेरे डिपार्टमेंट में मजामीन लिखने से मजबूर कर दिया और डिपार्टमेंट सक्तिवा शुरू की तो मैंने मुहिम्मी^६ बाबू दयालरायन के मस्तबिरे से यह नाम

तकबीर कर लिया।

२—‘सैरे घरबेह’ ‘जमाना’ ने शापा किया है। मगर उसके हुक्म मेरे ही पास है। अगर आप पुरतन्त्रमुफ़ चाप सकें तो शीक से आपिये।

३—भी नहीं ‘मक्काब’ मेरे पास इततजामन कभी नहीं आया। और न इसम कभी लिखने की शुरुत की। विसगीर साहब ने दो-एक बार कर्मास्त जकर की थी मगर मैं बन्दए बाय^२ और नहीं क़द्रबानी और ठहरीन। इससे मेरा काम न चला। हजरत लियाब क़तेहपुरी के जन्म मन्नामीन मार्कें क ने। उन्हें जमाना के उपतर म देख आया बा। मक्काब अन्तर बोचने बहुत करता है। मुझे यह जनागपन पसंद नहीं। मैं मिटरचर को *Masculine* देखना चाहता हूँ। *Feminine* कहाँ वह किसी शुरुत म हो मुझे पसंद नहीं। इसी वजह से मुझे तैयोर की अन्तर नल्लें नहीं माली। यह मेरा छिरी मुस्त है। क्या कर्क। अतयार भी मुझे बही अपील करते हैं जिनम कोई बिदूत हो। गालिब के रंग का मैं पारिज हूँ। यहीज जलनगी के मुलकदे की सूज सैर की थी मगर बयकिस्मती से आप तक एक सेर भी मीजू नहीं कर सका। न भी चाहता है। गालिबन शायराना हिस्^३ जिस म है ही नहीं। आपके सुन्दर मुरली और ‘मंगा अस्मान’ क देखने का इतकाक नहीं हुआ। अगर आपके पास उनकी नकल हो तो मंजने की इनामत कीबियेगा। मैंने तो अब तक आप की बितनी चीजें देखी हैं उनमें गाबीना बबान सबसे प्यारा पमन आया। आपने प्रजब किया बा। शायब उर्दू में ऐसा तजमुम और नहीं नबर आ सकता। ‘माला ए सहरा’ म भी फोर सूज बा। मगर वह बात न थी।

आपकी शब्दों को सूज और से देखा। ‘माना आखरीनी’ को शर देता हूँ। यह सेर बहुत सूज है। सुबहान अस्ता।

दुनिया बिबाई देरी थी मखमूर नी मुन्द
वह देखना तेरी गियहै नीमबाब का

‘दाम्नी मेरी’ माला सेर बहुत सूज है। अमीती क्या है ईरते हुम्न म राब। हुम्न बपूरे जन्नात। यहाँ भी इशवार को बाबू रघुपतिशहाय के मकान पर एक छोटा-सा मकामी मुसाफर हुआ बा। तरह भी

सो गया आपनेबापा शरें तगहई का—

बाबू रघुपति सहाय डिगारिन शायर है। जन्होंने भी आपनी शब्दों की सूज शर दी। बर आपने ‘माला ए सहरा’ का तजुमा अमरी में करना चाहत थे मगर बहुत दिक्कतमल बैगा तो इरादा ठक कर दिया।

१२१ / इन्तपात्र वाली ठाक
धीर क्या मिलूँ। तेहल बसतूर मसकड़ियात रोड मजदूरी बारिश
रोजाना। कड़कती का पुताई नम्बर लूब बा।
बसतलाम

१०७

बनपठपत्र

मार्शल स्कूल गोरखपुर
३ अक्टूबर १९२०

जनाब मुकरमे मन्
उसलीम। फिदाबो का पापल पहुँचा। 'प्रेम बलीसी' देखी। बाघ-बाघ
हो गया। मुझे वह मजदूरी निहायत पसन्द आया। फिदाबत बरा धीर बनी
होती तो बेहतर होता। लेकिन सब कीमत धीर क्याया रखनी पड़ती। फिन कुमला
फिदाब लूब छपी ह धीर मैं इसके मिर आपका तहेबिस से मसमूम हूँ। देखें
पसिह इसकी क्या कर करती है। पहला हिस्सा भी खायर इस माह में तैयार
हो जाय। मैंने बसतूर 'कमाना' को लिख दिया है कि आपके यहाँ पाँच सौ सिक्
मेज दें। आप भी उनके यहाँ इतनी ही सिक्के का इससे बस पाँच कम मेज
जीजियेया। मुफ्तसल सब बाघ को मिलूँया।

महकर
बनपठपत्र

१०८

गोरखपुर
२० अक्टूबर १९२०

बनपठपत्र
उसलीम। आपकी सुलानी जामोरी ने सबब किया। कड़कती भी सब
रक नहीं आया। क्या मुधापला है? क्या कपड़े सब हुरी? आपने धाइया के
लिए कोन सबीस निकामी। मुफ्तसल सब बाइया हूँ। 'प्रेम बलीसी' की बित्री
की क्या जीजियत है? कुछ निकल रही है? कानपुर बाते धमी डेर कर रहे हैं।
नाक में बन हो गया है। अब भूल कर भी अपनी जिम्मेदारी पर कोई फिदाब
न करवाऊँगा। 'प्रेम बलीसी' के डूबरे एजीशन का मसला बरपेस है। आपका
१२ दिनी रिब बलीसी हई जलपठाई

हिर्मा-नसीब मुझे कुछ पसन्द न आया। मोहम्मद-सी किताब माफूम होती है।
हैं रोस हसन के इन्तजार् हिस्से रिमजस है। हालाँकि आगिरी हिस्सा उम्मीद
के खिलाफ है। ईश्वर ने चाहा तो अन्य माह में मेरा अपना माजिल 'माकाम'
तैयार हो आया। 'सरे दरवेश की निस्वत आपने क्या छैयसा किया ?
'बत्तीसी रिम्पू के लिए कहीं मेरी या नहीं ? क्या मुमकिन है कि पंजाब टेक्न
मुक क्रमेटीबाने उस कुतुब में से लें। लेकिन नहीं पब्लिक की कब्रानी ही पर
छोड़िये।

बारिश बन्द हो गयी। बहुत माजिल हो गया। मुक पर उस्त मुसीबत है।
बेह परमारमा केस नाम पार सगाते हैं।

घोर क्या सिद्ध। हूँ मेने कमकता में प्रेम लेने का हराबा ठक कर दिया।
दूर-दराम का मामला था। अब इसी सूबे में हराबा है। कानपुर में एक प्रस बिक
रहा है। 'साइट प्रस नाम है। इसके मुतास्निक कताफियाबत कर रहा है।
तय ही बान्य ठी भौकरी से मुस्ताजरी हो जाईगा। अब यह ठीक नहीं सहा जाता।
आमिजन मजम्बर में आप मुक बिना तरबुस रुपये दे सकेंगे।

क्या बस्सनाम

अक्षर
धनपतराम

२०६

नार्मल लून पोरखपुर
२६ अक्टूबर १९९०

मार्जिल

उससीम। काह मिला। महापुर है। ईश्वर मरीब का बन्द रिछर घोर
आपको तीमारबारी की मुसीबत से नजात दे। बहुत कुत है कि 'बायरी हूस्'
की फिदाबत करीब खतम है। बेशक साता के सत का एक हिस्सा मजम करने
से रह गया। आपने लून विरिफत की। उस पूरा फिये देता हूँ—

मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। मुक पर रहम कीजिय। यहाँ की हानत
क्या सिद्ध। पिता जी गंगा में डूब गये। आप मोबा पर मुकुरमा
अमान की सगाह ही रही है। मरी बोमारा शारी होमी कपार पार्
है। जन्म खबर बीजिय। एक हफ्ते तक आप की राह बैरूगी। उसके
बाद इस बेचम मरीब की इरियाद आपके कर्मों तक न पहुँचेगी।

‘प्रेम बचोनी’ अगर इन धर्म में एक ही निकल यही तो धारणा^१ कुछ न समझता चाहिये। ‘बमाला’ प्रेम धर्मी तक बायो ही पर टाल रहा है। तंग था गया। किसी तरह धर्म की नज़ात हो फिर उसके बंजाल में न फँसना। मेरे प्रेम की शरणागत का मयमा बिल्कुल धर्मी एक तय नहीं हुआ। उहू हिन्दी धर्मजो बमाला नमी कुछ जानने का इरादा है। मरा धांश माई मैनेबरी के काम में होशियार है। इस बमह से शायद मुझे स्थाय्य सबे सर न हो। सोर फिर फ़िर कारोबार न परेशानियाँ नहीं हैं, करामत तो जमानए हास की एक साबिमी कैफ़ियत है। इससे अन्कारा कही।

धारके मुफ़्तमस सत का इन्तज़ार कर रहा हूँ। मुझे लाहौर से आप सरमाई^२ चीजें कुछ भज सकते हैं। यहाँ असबान धीर साम बरीरह नापाव है। मेरे सुस्क भी बाबा के मोम क्रिमिल बड कये सेर। बाशम सेर। लाहौर से यह चीजें शायद कुछ भर्बा हों। एन असबान जम्हा आपके बयामस न मिलने का मिल आपमा। यहाँ तो लाहौर न कम पर न मिले। अगर तकमीक न हो तो बरा रेन दर्याफ़्त करके मुझे क्रमाइयेवा धीर हुकान का पठा भी नाकि मैं खुश मैंगवा हूँ। आपको तकलीफ़ नहीं देना चाहता।

‘प्रेम पचासी धान ही के गम पड़ेगे। हूँ अगर मेरा प्रेम नम निकला तो मुमकिन है इसी न आप आय। अगर जहाँ तक मेरा बयाम है मेरे माई माहब सिबो का काम पसब न करेंगे। टाइप के काम न सलूमियत होती है। काठिबों की पलकासिकली^३ ने सिबो का काम बहुत निश्कलतमब बना दिया है।

धीर क्या धर्म कहे। अहूत पड़ गया। गेहूँ का निर्बा पौष सेर है। बी छ धर्मीक खनकर तो नापाव है। अपने की सेर भर भी नहीं। बीरह धर्मीक है। कान् क्या आप धीर कैने बिना रह।

मल का बयाम जन्म बीबिए। उनी^४ हूँ आप मयम-बैर^५ होंगे। नानको-भापरशम ने तो लाहौर का कचूमर निकाल दिया। देखिय यह कैट फ़िर करअन बीटना है।

बस्मलाम

धनपतगम

११०

गोरखपुर

१० नवम्बर १९२०

बन्धानबाह

तसबीम ।

इनामतनामा मिला । मशकूर है । कहकरी' सी नम्बर घन्ना से बेहतर है । मुबारकबाद । बीबर रसाहल पर मोट सिखने की छिन्न बकर कीमिब । इससे रसाहल मजबूत होया ।

एक क्रिस्ता 'बैक का बीबाला' जाता है । जम्मा हो गया है । बेसिमे पर्व धाये तो रख बीजिये । वो नम्बरों मे निफस बायबा । क्रिस्ता रमा है । बस्तात नहीं धाने पाये ।

नाबिल के मुतास्मिक तसबीरो की राय फिन्क हो गयी । हिन्दी का पामिलतर इसे बस्त निफासमा बाहूठा है । इससे एबीराल म तस्बीरों की बायगी । इसनिए फिन्कहस्त इनका बिक फिन्क । रहा मुधावमा बहु फिन्मा पड लेने पर बाप बुर छप कर लगे । हिन्दीबालों ने मुझे बार सी छपये दिये है । उर्र से इतनी उम्मीद नहीं । मगर इसकीस सतरी सजे के बारह धाने क हिस्सा से क्नुन कर लेने में मुझे ताम्मुन म होगा । यह मेरा पहला बचीन नाबिल है । मुझे इसकी इराफ्त की फिन्क है । इसरा नाबिल भी शुरू कर चुका है । और क्या भय करें । सैयद मुमताज धली फिन्मा की सिबमन मे धाराब क्नुन हो । बबाब से याद कीमिएमा ।

बस्तनाम

बमपतगय

१११

नामल स्कूल गोरखपुर

२५ नवम्बर १९२०

भाईबाल

तसबीम ।

काड मिला । मशकूर है । धागरी परेशानियों और नीड नामाशिए तबीयन है ठाहर है । बिबर बापकी इन भमेनों से भुगत है ।

'बाजारे हुस्न' का मुयाजजा दो सौ पचास तय हुए थे। 'प्रेम पत्नीसी' के लिए बक सब। हुस्न छोड़े तीन सौ रुपये होते हैं। बजरिया रजिस्ट्री मिथवा ब। किफायत होगी।

मेरे छठ के बीमार उमूर^१ का जबाब आपने कुछ न दिया। आपके दूसरे कत का इन्तजार कर रहा हूँ। तब तक हिस्सा बख्श 'प्रेम पत्नीसी' का टाइटल बीरा भी तैयार हो जाना।

धीरे क्या सब कर्ते।

निराजमन्त्र

जनपतराय

२२२

नार्मल स्कूल बोरखपुर

१ जनवरी ९१

जनाब मुस्तफिजो ब मकरमे बन्वा

तसलीम।

असल से हाजाते मिजाब से मुत्तमा नहीं हुआ। तरह्व है। बरखे करम हाजात से मुत्तमा फरमाइये। मैंने बख्तर जमाना को तस्दीद की थी कि आपकी खियमत में 'प्रेम पत्नीसी' को छ सौ बिस्वें खाना कर दें। लकड़ी के संझूक में फिटारें बर करा के स्टेशन भेजी गयी लेकिन मातगाड़ी बंद थी। इस बख्श से फिलहाल सौ बिस्वें बखरिये रसदे खियमते बाला में भेजी गयीं। ज्योंही पाकी खुलेगी बकिमा पाँच सौ बिस्वें भेज दी जायगी। आप भी एक सौ बिस्वें हिस्सा दोम को बज दिया पानस खाना करमाब। कागपुर के पते से। धीरे धीरे लाहौर से मातगाड़ी मिल सके तो पूरी बार सौ बिस्वें भेज दें। ताकि सर्ज खपल न पड़े। बीसा मुना खिब मानुम हो बह कीजिये। पाँच सौ बिस्वें गालिबन इसी माह में आप के पास पहुँच जायेंगी।

प्रेम पत्नीसी के मुतासिलक आपने कुछ तहरीर न करमाया। उम्मीद है कि आप कुस ब खुरम हागे।

बह्तर

जनपतराय

बार्मल स्कूल, बोरघपुर

२६ जनवरी १९२१

भारद्वाज

तससीम । बाप इन्तजार^१ शरीर-मरीद^२ इनायतनामे के दशन हुए । मरकूर हैं । फिताबे आपने गाभिलन कानपुर मेज बी होनी । मालमाही मिलने पर वही से आपकी खिदमत में पाँच सौ बिल्ले घीर पहुँचेंगी । आप भी उनके पहुँचन पर तीन सौ बिल्ले घीर मेज बीजिएगा । सरं बरख का मुझे सल्ल बज्रसोस है यह मोहूतमिम^३ साहब प्रस की इनायत का गदीबा है । मुमकिन ही तो आप मरे बरख हुसय लगबा में खिदमत मुम्मेले बजा कर नें ।

‘सैरे हरबेश घीर प्रेम पचीसी’ की एक बिन्द भी मेरे पाम नहीं । बिपाश तसहीह^४ की बकरत नहीं । फिताबत बा प्रूफ के साब-भाज तसहीह भी होसी जायगी । बस कातिब ने पैरघाफ़ बलव नहीं किये हैं । अकबर को पैरघाफ़ मिला बिमे है । इसके सिवा मुझे तो बिपाश भगमत मालूम नहीं होये । आप फिताबत शुरू करवा दें और यानों ‘बाजारे हुस ही के साइब पर छपवायें । मुझे भी एक ही माहज की फिताबे पनय है । आप इन दोनों फिताबी का कापी राइ^५ बाइते हैं या महज हमारे एडीशन का एक इतायत है ?

मैंने इमर को-लीन क्रिस्ते लिखे हैं एक ‘सुबहे उम्मीद’ में है ‘बाद भज मय हुसय ‘जमाना में है ‘नीक शोक’ । एक घीर ‘जमाना’ में रना हुमा है । ‘मसरते हुमत’ । एक बीबा मेरे पाम है बसो बीब पाँचवाँ बरे तह रीर है बिममें गाल कोधाररेखन का रंग नजर आवेगा । इनके मुठास्मिफ़ में आपकी मुकलाबीगी का शोक से इन्तजार करूँगा । आपकी मेरी तहरीरें अब नजर आयें जरूर इजहारे क्वाय कर दिया करें । इमम मुझ बिभी तमरीन इप्पी है । इन क्रिम्पों के अमाश एक नाबिल ‘नाकाम’ भाऊ कर रहा हूँ या तम नीफ़ न कम जमीन काम नहीं है । यह नरम हो जाये तो काम में हाथ मवाई । इनका प्पाट तैयार है ‘बार ही ऐक’ में लग्य हो जायगा मगर नील पत्र-सोमह म कम न हो सकेंगे । जामपाव हो मकूगा या नहीं ईस्बर ही जान । ‘नाराम’ ज्यों ही नैपार हुआ आपके मुलाहिज के लिए भेजूँगा । मैं अपनी फिताबी की छोटीए इतायत के एनवार से पंजाब के किसी रिमाया में लिखना चाहता हूँ ।

मेजिल 'कहक्या' के बाद अब मुझे कोई ऐसा रिवाज़ा नज़र नहीं आया। अब आपका ज़ख्म क्या रहता है ?

मेरे एक गस्त घासकी फ़िठाव भारत सपूत का हिन्दी उन्मा कराना चाहते हैं। उनका इरादा उसे पाँच हजार घास का है। अगर आप पसन्द कर मायें तो हम फ़िठाव को एक विश्व मेरे पास भेज दे। जो नुस्खा आपने नम लिखा था वह कोई माहव उड़ा न मये। मैं हिन्दी में गोपी जी की कई सभाने-उद्दिष्टों भी भूष है। आपके आपकी उद्योगिक म धीरे ही मुक्त है। इसी बबह से मेरे दोस्त मीमूठ उसे हिन्दी बाभा पहनाने के शायक है। धीरे बरा भिन्न ? क्या मदी धीरे आपकी मुलाकात कभी न हो सकेगी ? बुनिया में मेरे सिद्ध मित्र गिनावे दोस्त है। आप को हम निहायत माहुर तावाय के हज्जे-खस्त है। अगर प्रकल्प कि प्रमो तक सूरत-बाधनाह भी नहीं। धीरे न हो तो धपना कोटो ही भन्न दीजिए। हाँ 'हम खुदमा-यो-हम' सबस न 'विष्णा' बगैरु मेरी इन्तर्वाई उद्योगिक है। पहली फ़िठाव तो मजनऊ के मजन प्रेस में शायी की थी दूसरी फ़िठाव बनारस के मद्रिकल हाल प्रस ने। यह पाणिजन उन्नीस ती की उद्योगिक है। मेरे पास इनमे स एक विश्व भी नहीं धीरे न शायर पम्पिशरों के यहाँ ही निम्न सब धीरे न उनके देखने का उत्तर ही है। गोमरका क मारे उम्न उनमें भी भूष है। गोवाना मुमनाह घरा माहुर फ़िठाव की विन्मय म दम्तवस्ता धावाह क्रमा दीजिएगा।

भायका
वामपक्षराय

१२४

२५ फरवरी, १९२१

मार्ग-आव

तसबीब ! तमबीर जिनी ! बहुत ममनून हूँ ! इसल मुताफात की धारजू रह-रह कर दी ! याफकी मेरे बेहून में जो तसबीर भी वह कुछ थीर ही थी ! मैं अन्तर 'मुसम्मिर होता तो 'थोर थीर मयब' को गाबियन मई तमबीर बनाता !

महात्मा भी गांधी मिले^१ : (यात्रे यहाँ जमकी धाम है ।)

घातने शायद सभी तक 'प्रेम बलीसी' हिस्सा पाठ की जिम्मे कायम नहीं

विभिन्न महान्वय ए वीररत ए वीररत 'अवतार' नामी' नामी विनाय विनाय

इसका करमाई । वहाँ की कमर्शियें खरी हुई हैं । बराह करम अब तासीर न कमर्शिये । अगर माझपाड़ी से न मेज सके तो क्रिमहास १०० बिस्वें ही खाना कमर्शिये ।

इससे पहले के बात के जबाब का मुत्तबिर हूँ ।

बल्लभाम

बल्लभाम

२२५

बाल भंडल बनारस

१८ अगस्त, १९५१

मकरमे बाला

तत्तसीम ।

अनाप दरवाज से आपकी खेरियत से मुत्तला नहीं हूँ । सम्मीद हूँ बल्लभाम आपकी हस्ति ।

मैं इस एक माह से अपने घर आ गया हूँ । मुलाजमत से मुत्तला हो गया हूँ । कुछ निटरेरी काम करता हूँ और कुछ इलाफती । आपका शुगल नाम कम क्या है ?

'अम पत्नीसी' की इलाफत के मुत्तानिक क्या कैमता किया ? 'बाजार' हस्त की क्या हासत है ?

'अम पत्नीसी' की जिस्से आपक यहाँ कितनी पहुँच गयी और उनकी जिस्से बीसी हो रही है ।

बराह करम इन डभूर से सगुपुप कर्माइये ।

'तहजीबे मिसबा' और 'फूम' अभी तक गोरखपुर जाते हैं । वहाँ घेजने की मुमानियत कर दें और जब तक मैं अपना कोई मुत्तकिन पना न सिद्ध करूँ कपूर के पते न ही मिजबाने की इलाफत करें । और तो कोई हास ताबा नहीं । इलाफत मिजबाज है अस्त मुत्तला कमर्शिये । गजत तत्तसीम है ।

आपका

बल्लभाम

२२६

मारवाड़ी स्फुल, मधामन, कानपुर

२६ जून १९२१

जगाने मोहतरम को मकरमे क्या

उसनीम । मित्रावे भकदस ? कई माह से मुझे धाप चाहिनों के लैरियते मित्राज की खबर न मिली । मफ युनां तरबुब है । मई इयतिमाज धनी साहब के पास कई छत लिखे मगर जानूम जही वपों उन्होंने गैर-मामूनी सुकूत^१ से काम लिमा । मुझे मुतलफ खबर नहीं कि 'बाबारे हुम्प' की इरायत का काम कितना हुआ है और इसमें कितनी बेर है । 'प्रेम बलीसी' की बिर्से यहाँ मार की बिबरमत में सेबी जाने के लिए रली हुई है । लेकिन धापके किसी रिस्त में इसका इरिहदार तक नजर नहीं धालता । कुछ राज समझ में नहीं धालता । बराहे करम मुफस्सल डालाण से खरखराज करमारों । ऐल एहसान होणा । 'तह बीवे लिखबा' मेरे पास मुफ्तबी वाला^२ पते से इरखान करमारों । मैंने उन्हें मबानात करके सरकारी मुलाजिमसे से इस्तीफा दे दिया और अब हम कीमी पाठ्यतमा की हेइमास्त्री पर धा नया हूँ । हजरते 'ताज भीर कई किताने साया कराने वाले थे । इरायत का बामरा बसीह करना चाहते थे । मगर यह दुस्खनी सामोरी कुछ भीर ही बहती है । उम्मीद है अबाने छत से महकम न रता जावंगा ।

निमाजमंड

अनपतराय प्रेमबंद

मैनेजर

बास्म धलायत पंजाब

साहौर ।

२२७

मारवाड़ी हाई स्फुल, कानपुर

३ अगस्त १९२१

बरखरम

उसनीम ।

मकमूल मेजा या । रलीद नहीं आई । क्या मकमूल पसन्द नहीं धापा । मुत्ताग करमारों ।

कम रेश से 'प्रेस वस्तीमी' रवाना होगी। क्याह मास से क्याह पार्सेज स। सबकुछ न होया। मास का इन्तजार न करेगा। किताबें बक्स में पड़े-पड़े मड़ रही हैं। इश्तिहार जारी क्रमबिं।

तहजीब और 'फन' सब नहीं पाते। क्या बनाएंगे बात है? क्या सब दीस करे द तो एहसान होगा। और अगर बन्द कर दिया हो तो कोई बकरत नहीं।

निवाबमन्द
बनपतराय

११८

मातबाड़ी हाई स्कूल बालपुर
२७ अगस्त १९२१

कराचरम

ठममीम। कत कई दिन हुए आया। मेरा किस्सा पसन्द न आया। मुझे खुश भी नहीं छोड़ था। इसकी तनकाब आगने मुनासिब की है। बेतक किस्सा सब मया है। आइया एह्तियात रखूँ। 'जमना' क जुलाई नम्बर में नाम फीठा एक किस्सा है। इनके मुतासिक भी घरनी राय तहरीर फरमाइयेगा। क्या सबकी बार भी किस्सा सब मया या मैं कुछ कामयाब हुआ। कम से कम मैंने कामयाब होने की कोशिश करके की थी। सबकी राय का बताबी से मुस्तबिर रहूँगा। 'मन्जून' क्यों नहीं आया? आपके लतके लिए मैं बरम बराह हूँ।

घाप इस किस्से को 'मन्जून' में लाया नहीं कर सकते ना इतनी तफ्तीक कीजिए कि इसे 'बन्धुमालरम' याकिम म भेज दीजिए। वहाँ निम्न जायगा। 'मन्जून' के लिए मैं जम्द निर्गुना। किम्मा होगा या कुछ और सब नहीं कर सकता।

जिवाश बम्बलाम

निवाबमन्द
बनपतराय

२२६

मारवाड़ी हाई स्कूल, बानपुर

१६ दिसम्बर १९२१

मुमिफके मग

उपसीध ।

अब तो आपक लडा के लिए महीनों तरस जाता हूँ । म समझता हूँ मैं ही धरीमुख फुसल हूँ । पर आप मुझसे ज्यादा मसकटोकार नजर आते हैं । या यह बेएतनाई तो नहीं है ।

'बाबारे हुस्न का बाकी कितनात घमी खत्म हुई या नहीं । कितना के शाया हान का बर तक इन्तजार करें ।

'अम वर्तानी की बिन्नी बंती हा रही है । आपने किसी बख्शार म शामिल बन इरितहार नहीं दिया । आपने उर्दू निटारनर की निरमस का बीड़ा उठाया है तो क्वाश बिन्दारिलाला जोश क साथ काम करना चाहिये । हम बाप बाना^२ मराबिर के निध मुघलक कर्माइसगा ।

उम्मीद है कि आप बलीरा शामिलित जुग ब खुरम होसे ।

निवाजमंद

बनपतराय

२२०

महावीर विद्यालय बानपुर

२६ दिसम्बर १९२१

बराबरम

उससीम । नवाबिशानामा मिला । बहुत छुपीनाम हुमा । दफ्तरे 'जमाना' में 'अम बलीरी' हिम्मा बोम की सीमल में सरसीम करने क निय कह दिया । 'मलकन' के निय मजबून मिला हुमा तैयार है । खुश ही मैं मिला बा । लालीम के बाइन नहीं जाता नहीं जाता । महरमा खुलते ही मजबून नेज्जा । ममर हिम्मा बहुत मुक़्तसर है । बाबकन बाहीरी रिमातो में निजते हुए लबी-पत हिचकिचाती है । मैं वह जवान मही निज सजता बिलका बाबकन अकमर रिमातो में नमूना नजर आता है और निजका पेहरी अगर कोई एक शक्य है

मुसलमानों को कि मेरे जिम्मे और कितना निकलता है। प्रेम पच्चीसी बीसवीं सदी के बाद कमिशन बाइस रुपया बाइस मजामीन बर्गरह अइतिर रुपया मीजान कुल साठ रुपया।

आपके हस्तर से मुझे अइतिर रुपये की कितनी पायो है। वह इस हिसाब में शामिल नहीं है। बहरहाल हिसाब भिन्नते बाइस बराह करम मयों की लखवीन की वे दीजिएगा।

निवाजमन्

बनपतराम

बनाइ पाते ही रुपय रवाना हाने।

१२६

गोरखपुर

१६ नवम्बर १९१७

मुकरमे बनाइ बनाइ मीनेजर साहब जमाना

तसलीम। नवाजिलामा साबिर हुआ। हिसाबत से भाजूम हुआ कि मुझे अपने तिस्र की शराबत के लिए अइतिर रुपया मेजने की जरूरत नहीं है। छपाई का रुपया कितना अब जाने के बाद बाकिरुस मय हाना और जो कुछ मरे जिम्मे निकलेगा मय कर हुआ।

बाससाम

निवाजमन्

बनपतराम

१२७

बार्थन स्कूल, गोरखपुर

११ दिसम्बर १९१८

बनाइ मुकरमे बनाइ मीनेजर साहब जमाना

तसलीम। आपने अपने नवाजिलामा मुकरिखा २७ दिसम्बर में मरे जिम्मे जमाना के हस्तर की दम रुपये तीन जाने की कितनी मागइ कर दी है। आपकी रुपया होगा आपने मेरे नाम कुल सबह रुपये की कितनी भेजी थी। मेने आपसे मोलह रुपये की भालियत की कितनी माग कर दी है। इन तरह माया में दइतर का मिर्ज एर रुपये का और मकमल है। आपसे उन में दइतर

की कई किताबें लगी हैं सज्जन उनके एबज में धल गाजिर प्रस की किताबें रख
री है जो धापको एबेसी से फरोछत हो रही है । बराहे जरम इसे मोट फर्मा से ।

निवाजमन्

जनपतराय

१२८

नार्मल स्कूल घोरखपुर

३ जनवरी १९१८

जनाब मुकरमे बन्दा मैनेजर जमाना

तमलीम । प्रम पञ्चीसी हिस्सा बीम की छिपारी में धसी किताबी बतर
बाकी है । कुछ मजीब काम हुआ या प्रूफ तक ही मुधायना बका हुआ है । मैंने
धापके दफ्तर से धसी हुआ बतरह रुपये की किताब मंगवायी थी लेकिन यहाँ उनकी
फराबत का माजूम इतनाम न होने के बावजूद उन्हें फिर रवाना सिद्धमत करवा
हूँ । महसूस पामल धरत कर दिया है ताकि धापको ठाबाल न हो । इनमें कुछ
किताबें धल गाजिर की भी हैं । उनके सेने ने गालिबन् धापको एवयब न
मोगा ।

जबाब से सरफराज फर्मायें ।

निवाजमन्

जनपतराय

१२९

नार्मल स्कूल घोरखपुर

१ अप्रैल १९१८

जनाब मुकरमे बन्दा मैनेजर सख्त जमाना

तमलीम ।

प्रेम पञ्चीसी हिस्सा बीम की बेलकर बेहब सफरत हुई । कागज बकर हस्का
है लेकिन किसी तरह प्रेस से किताब निकल तो गयी । इस जमाने में यही हवा
गामीम है । इसलिए मैं कारखाने का ममलू हूँ । धब मुझे यह बतसाइए कि कुल
किताबें बर्बा हुआ । बपतर जमाना पर मेरे मतानिमत हस्के बल है ..पञ्चहतर
रुपये हस्के तहरीर धापके धीर प्रेम पञ्चीसी की पञ्चस धीर सताइस बिन्दों जिनकी
कीमत बार कमीशन साथे धर्जितम बने होती है । एक रुपया लार्थ मुकामकर
मात्रे मैं तौत हूँ । इस राज्य को पञ्चहतर रुपये दस धाम में शायिल कर सीबिए ।

एक सी तरह कपड़े धो धाले होते हैं। अब घाप अपना मतलब बता रहा है कि मुझे माफ़ हो कि मुझे क्षमा देना या पाना है। अब प्रेम बत्तीसी हिंसा प्रखल की क्षमातुल्य कराने का इरादा है। इसमें जैसे ने कसस होंगे

१ रोमाए हस्त २ तिरिया बरितार ३ निपाहे नाब ४ पचायत ५ बीये सहर, ६ सरे पुरपुर, ७ बोका ८ बाबबापत ९ राजपूत की बेटी १० ईमान का कससा ११ कुबानी १२ नेकी का बखसा १३ सौत १४ जुगनू को चमक १५ दुर्गा का मन्दिर और १६ छोटेह।

मुझे माफ़ हो जाय तो क्षमातुल्य के लिए तबकीर कहें।

आपका
बनफनराम

१३०

मोरछपुर

१४ सितम्बर १९२०

जनाब मैजिस्ट्रेट साहब जमाना
तमलीम।

आपका १ सितम्बर का जवाब मिला। प्रेम बत्तीसी पंद्रह रोज़ में तैयार हो जायेगी यह कुछकदरी आस करहूँ का बाइस हुई। मैं माहौरवासों को हिंसा बत कर ही है कि वो हिंसा बोल बत्तीसी की पाँच ही दिनों बपतर जमाना को भेज दें। आपके यही हिंसा प्रखल तैयार हो जाये तो आप भी पाँच में बिस्व कहकशाँ के बपतर को रवाना करवा बीजियेगा। प्रेम पच्छोसी का कससा बत्तीसी के निकलन पर होगा। दोनों हिंसे पच्छोसी के साथ ही निकलने। हिंसा बोल की वह बिस्व हों तो उन्हें सस्ते बामों में निकालन की कोशिश करवाइए। क्या हर्ज है अगर बजाय बारह भाग के जमाना में एक ज़ीर सफे पर इसकी छिमत घाट धाले कर ही जाय। शायद इसमें कुछ बिस्व स्वादा छोटेलत हो जायें।

बत्मसाम

बनफनराम

१३१

नामन स्कूल, मोरछपुर

३ सितम्बर १९२०

जनाब सुभाष साहब बन्दा नवाब
तमलीम।

आपका जवाब मिला। अगर माहगाड़ी के कपड़ों में बहुत खयाल दानी एक

एन से आइ की बैर हो लो आप बराहे करम सी जिस्से देखे पारसल से बाहीर नेम हें। बहाँ से बार-बार छकावे था रहे हैं बीर मुके महजुब होना पड़ता है। वे बहाँ भी सी जिस्से कामपुर मेकने के लिए लाहीब कर रहा हैं। बकिया जिस्से मामपाही से रकाना फर्माइएगा। जम्मीद है कि आप हस्तुन इसकाम उरमत तमयिगे।

धुमरी गुजारीश है कि मने हिसाब आमदनो बीर लच का मपम्सम सिख मेरें। एन नबाबिश होगी।

ज्यादा बसमजाम

निघाजमम

जनपतराय

१३२

गोरखपुर

१० जनवरी १८९१

जनाब मुकरम

तयसीम।

हुकिया। लाहीरवाना की आप लाकीरी बात सिख दिया है। हुफते धरते न फिटार पहुँच आयेगी। मेरे पास हिसाब के साथ पाँच जिस्से बटार रकाना फर्माइएगा। मेरे नजामीन का बजतर के जिस्से कुल बीस रुपया लाया है।

बसमजाम।

मामपाही का इन्तजार कीबिएगा ताकि फिर देखे पासल न मेकना पड़े।

निघाजमम

जनपतराय

१३३

बालमपकस, बनारस

२४ जून १८९२

जनाब मुख्तियार बहादुर जनाब साहब

तयसीम।

प्रेम बलीमी का हिसाब देखा। समझ म न थाया। लाहीरवाना कहते हैं कि प्रेम बलीमी हिस्सा बीम की पाँच सी जिस्से बजतर जमाना मे था चुकी है आप कमलि है धिक एक सी सीतानिस जिस्से बायी है। इस ऊदर तफावुत क्या? या तो लाहीर की सजती या आपसे महज हुया है। हिस्साए मजबल एक हुआ उबा

हुई। पाँच सौ कहकशां को भी गयी प्यारहू मेरे नाम बख है दो पाबिले बयामत है, बाकी बउतरे बमाना में बार सौ मत्तासी रह गयी। क्या तथा के बख मे मकुम मई तक तिरपन जिन्दे परेकृत हो गयी ? मुझे बीस रुपये आ माच में मिले थे वह कुतुब के मुतास्सिक न थे मन्नामीन के मुतास्सिक थे। अब बराह करम इतनी तकसीफ और कीजिए कि ३१ दिगम्बर १२२१ से ३१ मई १६२२ तक का हिमाब और तहरीर कर्माइए। बयामत मतकूर होऊँगा। उम्मीद है कि धार बरौर मो आफियत होंगे।

हर अम्बेष्ट

बनारसराय

१३४

आता मवल कबीरचौध बनारस

१ अप्रैल १६२३

मुसिकरे बन्ना बनाव बवाबा साहब
तमसीम।

इसके अन्ध एक घरीबा बाबू दयानरामन मातब को माछत घाफकी लिबमत मे इरसात कर चुका हूँ। अबाम मे मरकम हूँ। मरी किताबा का हिमाब एक मुइत मे महीं हुषा। बराहे करम माच १६२३ तक के अचाइम मुरतब करम का तकसीफ गवाग कर्माइए। बग हिमाब नफमीन के माच हो जियम मुझे समझने मे बिककल न हो। मैं नुर हाबिर होमबाबा या मयर बर बर बर परीछानिवा व बाइम अभी तक न आ सका। उम्मीद है कि अबाम मे बख मुस्ताब कर्माइए।

मैरामन्दरा

बनारसराय

१३५

सरस्वती शन मरामेरबर, काशी

२६ जुलाई १६२३

मुकरम बग बनाव बवाबा मातब

तमसीम आ लियाह।

बराह करम बवाली तक जिन्द की बरबरा भंजकर ममनून पर्माइए।

उनकी मरत बखत है।

उम्मीद है कि धार नूब नुरा होंगे। हैलू बर नर घापन मुलाइत होनी है।

मैरामन्दरा

बनारसराय

बराबर धरतीदमन मस्मयहु

बार हुआ । कम मुम्हारा वत मिला । हासात मासुम हुए । बत्ती सादिका का सत्य अन्त्रा किया । यहाँ भी सब सब खीरियत है । बन्नु भी सब अच्छे है ।

प्रम के मृतास्मिन् तुमने जो लखीब की वह मुझे बहुत पसन्द है । मैं भी यही चाहता हूँ कि प्रेम एक पाशवी का हो जाये । मैं तुमसे जो कहा था कि प्रेम बन्द कर दो उसके मानी भी यही थे कि मैं पाशों के रूपों को मुरी रूपों का नमस्कार कुछ धमी के देता और कुछ बाद का और प्रेम का काम जारी रखता । बेचने का इरादा तो हम हाथ में था जब मैं भी आश्रयास्त कर लूँ उनके पहले नहीं । लेकिन सब बूँच समन कुछ उनका अपना कर लेने का इरादा किया है बहुत अच्छी बात है । मैं बड़ी खुशी से तुम्हें इसकी समाह देता हूँ । अगर प्रेम से नज़ा ठठाने के लिए तुम्हें बनारस रहना पड़ेगा । जब तक जो फारम रोज मैं छापीये काम अच्छा न निश्चोना । और लोगों से मिलने-मिलाने न रहोये नफा फिर न होना । पर रहकर तुमको भी खमार होया या नफा होना तो इनका ही कि अपना गुजर कर लो । अगर जो फारम रोज छपे तो कोई बखर्क नहीं कि माकूम नका क्यों न हो और कोई बखर्क नहीं कि बार हवार बाण्ड भी रोजाना न छपे । इसे मैं इन्तजाम की खराबी करता हूँ । कम्पोजीटरों से भी एक पर काम नन का इन्तजाम करो । बड़ी कम्पोज करे बड़ी डिस्ट्रीब्यूट करे और बड़ी पहला करोशन भी करें । यहाँ तो नमस्कारिओर प्रेम मैं बड़ी इन्तजाम है । इन्दिपन प्रेम मैं भी यही इन्तजाम है । और । अब यह दंतो कि तुम्हें अपना एक कितने रुपये का इन्तजाम करना पड़ेगा ।

मार्च माह की घमम दो हजार दो भी पचास रुपया मूल दो भी नतर रुपया कुम या हजार पाँच भी बीस रुपया । खुपति महाम की घमम दो हजार रुपया मूड इद धाज का एक भी घमम रुपया कुम दो हजार एक ती घमम रुपया । कुम मीजान बार हजार पाँच भी रुपया ।

क्या तुमने बार हज़ार साठ सौ रुपये का इन्तजाम कर लिया है। साफ़-साफ़ बतमाने की ज़रूरत है। मैं सात भर तक रुपये का इन्तजाम कर सकता हूँ। घोड़ा पारसाम कुसाई में मुझे बार हज़ार पाँच सौ रुपये धीरज सौ पञ्चहत्तर रुपये (तीन सप्ताह का सुद) मानी पाँच हज़ार एक सौ पञ्चहत्तर रुपये देने पड़ेंगे। मानी तुम्हें बार हज़ार साठ सौ धीर पाँच हज़ार एक सौ पञ्चहत्तर मानी नौ हज़ार साठ सौ पञ्चहत्तर रुपये का इन्तजाम करने की ज़रूरत है। मेरा सुझाव अभी न करो जब भी बार हज़ार साठ सौ रुपये का इन्तजाम तो करना ही पड़ेगा। अतस्त तक तुम इसका इन्तजाम कर सकते हो तो करो धीर अगर किसी ने तुम्हें मरब देने का यही वादा कर लिया है तो उसके बोझों में न पड़ो।

मैं इसके लिए भी तैयार हूँ कि तुम मरबा के रुपये सब सुद के वापस कर दो। इस तरह प्रेस में हम धीर तुम यह कार्य करें। रघुपति सहाय का क्या इस्ता-बेदी कर लिया जाये धीर उन्हें बारह रुपये सैकड़ा सुद हम लोग देते रहें। लेकिन उस हालत में हममें से कोई भी ठगवाह न लेगा। काम हम भी करेंगे काम तुम भी करो। हम सब कुछ काम न करेंगे तो अपनी तरफ से एक आदमी रख दें जो प्रूफ़ देखेगा धीर बज़ार का काम मुनाबिजों की हाजिरी बर्दाश्त, हिदायत क़िताब ठीक रखेगा। अगर यह मूर्ख पसन्द न हूँ तो तुम सब को धमका करके प्रेस बनाना कर दो। लेकिन जब तक रुपये मिलने की पूरी ज़म्मीब न हो वार्डों पर न टाँको क्योंकि अब की धगस्त में कुछ-न-कुछ इन्तजाम ज़रूर करना पड़ेगा। मेरे कूट का जबाब धीर धीर करके देना।

तुमने कमरा बनवाने की ज़रबीब भाई साहब से की थी। ज़रबीब अच्छी है बरतों कि क्या हाल में हो। जब तक आम्बानी का माफ़ूम इन्तजाम नहीं हो जाय सब पैदा करने से निवाय परेशानी के धीर क्या हाल थापना।

धीर सब खैरियत है। अगर तो मिनहा साहब से मुसाफ़ात नहीं हुई। बच्चों का धीर चाची साहिबा की सलाम।

अमरपतराब

१३७

गंगा पुस्तकालय लखनऊ

पराक्रम

बाबू बुधा :

मुझ्जारा नाल मिला जबाब में डेर इस बख़्त में हुई कि मैं लोच रहा था क्या जबाब हूँ। एक हज़ार रुपये तो मैं तुम्हें अभी महीने में दे दूँगा लेकिन मुझे लोच

है कि बघावों की बूझाव अस न सकेगी। बनारस में बघावों को घुसाने बहुत है। फिर तुम्हें सुबह से घाठ बजे रात तक बूझाव पर रहना पड़ेगा। अगर ऐसा मकान तो जिसमें बघावों का घोर रहने का मकान भी हो तो सड़क पर ऐसे मकान का किराया जानीस-पचास रुपये से कम न होया यह सोच लो। ऐसा न हो कि बघाव भी हाथ से जाय और फिर उसी नौकरी का सहारा लेना पड़े। मेरे लयान में तुम्हारे मित्र बेहतरीन सुरत यह है कि माई बलदेवदास के रुपये से वो हम और तुम धामे-धामे के हिस्सेदार हो जायें एक प्रफरीटर लकवाहवार रत लिया जाये हम दोनों दिन सगाकर काम करें धन्दे से धन्दे काम निजाना जाये मैं अपनी डिम्मेवारी पर काम लमाश करने की कोशिश करूँ बनारस ही में रहूँ और कारोबार को चलाऊँ। अपनी किनाये जो धन लिखू अपने यहाँ धनबाई और कितानों की बूझाव कर लू। इसमें शायद दो धरम रोज का धीमत्त पड़ जाय। कम-से-कम मैं कोशिश ऐसी ही करूँगा लेकिन बूँकि तुम्हें यह इन्त जाम पमन्व नहीं है इसलिए मैं मई में तुम्हें एक हजार रुपया दे दूँगा और बाकी एक हजार रुपया अगस्त में। अगस्त में मैं बनारस या बाईगा और वहीं रहूँगा। और तो कोई ठावा हाल नहीं है।

तुम्हारा
धनपतराय

१३८

नवमी नवम, गोरखपुर
२ जून

बराबर सबीब सम्ममठ

बुधा। मैं यहाँ पहुँचा तो बाबू रजुपतिप्रदाय बम्बई में नहीं जाये थे। एक दिन के बाद जाये और जाये भी तो बीमार। डाक्टर की बधा हो रही है। बाबू उनकी सबीबत अच्छी है। इसलिए अभी रुपये के मुतासिलक कोई कार्रवाई नहीं हो सकी। मुझे शायद यहाँ दो-तीन दिन यहाँ और ठहरना पड़े। इस असना में अगर यहाँ बाबू बयानारायण का कोई बात जाये और उनकी बापिदा साहिबा बनारस या रही हों तो तुम जरा तकसीक करके उन लोगों को बुसानामे के बमशासा में ठहरा देना और हिन्दी पुस्तक एजेन्सी के माओप्रसाद से तारीफत कह देना कि उन लोगों की आसाइत का जरा खयाल रखें। यह काम जरूर करना बर्ना बाबू को बयानारायण लिखायत करेंगे।

यहाँ महावीरप्रसाद पोद्दार न भी एक प्रेस बिगका नाम पीछा प्रस है

सोना है। मैंने उनसे अपने प्रेस के लिए भी काम देने को कहा है। मुमकिन है कुछ काम मिलता रहे। मैं वहाँ से नीटकर सीधे इलाहाबाद जाऊँगा और हिन्दी के टाइप साने की फिक्र करूँगा। मगर तुम्हें यह मानून रहे कि यह सब कोशिश तुम्हारे ही भरोसे पर की जा रही है। इस वक़्त तुम्हें बायो नुकसान का खयाल एक कर देना पड़ेगा। रोजगार में पहले मफ़ा तो होता ही नहीं। बहुत धाड़न्ता मफ़ी के ब्यापार से काम किया जाता है। तुम इस प्रेस की विप्लव अपना समझ कर ज़ातानो और जब तक तुम्हें इतना न मिलने लगे कि तुम्हारा बर्ब ब्याप्तानी से चलने लगे तब तक मुझे या भाई बलदेवसाहब को कुछ देने की उम्मीद नहीं और न हम तुमसे इसका तकाना करेंगे। ईश्वर बड़ा कारसाब है। अगर काम बढ़ गया तो धाड़न्ता के लिए सबकों को भी रोजगार को एक सूरत निकल आयेगी। मैं पब्लिशिंग भी करने का मुसम्मम इरादा रखता हूँ। एक हज़ार से इस काम को शुरू करूँगा। इसमें जो लफ़ा होगा उसके एक बीघाई के हक़दार तुम होगे। प्रेम में एक बीघाई तुम्हारा है ही। क्या इन दोनों सूरतों से साल या दो साल में पचास रुपया माहवार भी न मिलेगा। तुम्हारी काम करने की तनकाह या मुझारा जो बाहे समझो सारा रुपया कैपिटल से उस वक़्त तक निकलेगा जब तक इतनी गुज़ाह्त प्रेम में न होने लगे। मुझे यकीन है कि तुम्हें इसमें कोई पतवार न होगा। इस वक़्त बजाहिर ज़ातानो रुपया माहवार का तुमनात ख़बर है। भक्ति कीत बत मक़ता है कि तीन बार साल में हमको प्रेम से दो सौ रुपया माहवार और पब्लिशिंग से भी दो सौ रुपया माहवार न मिलने लगेगा। इस लिए वहाँ तुम्हें तुरमुक़्तारी हो जायगी वहाँ धाड़न्ता के लिए जो काबरे को सूरत हो जायगी। तुम्हें इसलिए ज़ार देता हूँ कि वह धारमी रूपरे के काम अपना नहीं समझ सकता बर्ना मैं पचास रुपये में मामूली फ़िराये का टर्दू आमागी से दस्तयाब हो सकता हूँ। तुम पहले खुसाई में अगर उस वक़्त तक टाइप या बायो इस्तीफ़ा देने का इरादा मजबून कर लो। औरता के रहने में न आना। सब तो तिम ऊपर बरक़ काम शक़ बर दिया जाये उनका हो धख़्ता है। मुमकिन हो तो बीरोशकर जी को भी मिलना कि फ़ुक़ान में उनके कुछ पद रहने के क्या माने हैं? क्या वह उसका विराया लेंगे? ऊपर के कमरे में भी उनकी के लॉग रहते हैं। यह तहफ़ीक़ कर लेना बाहिर कि वह लॉग गीरीशकर जी मर्जी में रहते हैं या तुर-ब-तुर। मगर गीरीशकर जी मर्जी में तो तो उन लॉगों में मक़ान जागी करन को कहना होगा। ऐसा न हो कि हम ता मजदूँ हम बीरो शंकर पर एज़मान कर रहे हैं और वह बहूँ मैंने कब कहा या कि घाट इन घाट मियों को रहने बीजिब। ग़ाहिरिय विद्यालय ज़ातानो में भी बजना होगा कि वह लॉग

हम लोगों की मर्जी के बीर वहाँ क्यों आते हैं। उन लोगों में इतनी इन्तानियत तो बरकर होनी चाहिए की जिसके घर में आकर बैठने की पत्र है एक मतवा उससे पूछ तो में।

धीर क्या सिद्ध। शायद मैं यहीं से जानपुर जसा बाऊ धीर आने में डेर हो इसलिए तुम्हें यह सब बातें मिला दी हैं। बन्नी का ब्यापार रखना। तुम्हारे सिवा वहाँ धीर कौन है। एक बार रोज प्रेम में बाकर देव आया करना। ईश्वर धीर रोक कर लेना। सब जान मगल से डरने की जरूरत नहीं। धीर कोई ताजा हुस्न नहीं। यहाँ गर्मी बहुत कम है। मानुस होना है देखतूना है।

कुछ।

तुम्हारा—

बनपतराय

२३६

१ अक्टूबर

बराबर

बाँ कुछ। जल एक बाँ मिला बुद्धा है। बाय फिर प्रेम के मुताबिक तुमसे कुछ मराबित करना चाहता है। बसारे में आ बाधा तो सब बाँने मफ़्स्मस तय हो जावें। यहाँ मरे दोस्ती की धीर नीब बरबासों की राय बसकने में प्रेम करने की नहीं होती धीर मैं भी हमने कोई क्वाश प्रयत्न नहीं देखता। पोहार की ही ने वयान के मुताबिक उसका मामला मध्य सोमह सी क करीब है। हम हिंसा से हम लोगों को बाँने निम्न पर छाठ सी मामला मिसमें। पाँच हबार का सूब सामाना माई बार भी लाया। सोमा कुस मामला प्रयत्न बाय् सी के करीब होगा। कुछ कम या क्वाश होना या मुमकिन है। क्या अगर हम सोय अपना बानी प्रेस पाँच हबार क सरमामे से बनारस में कोसें ता भी रपना माह बार या बाय् सी सामाना मध्य न होया ? मेरा खयाल है कि बरकर होना। हमसे कम किसी तरह नहीं हो सकता। यहाँ हमने छोटे-छोटे प्रेस का बो-बाई हबार से खुने हुए है। सी क्वाया माहबार कमा रहे है। मैं यह चाहता हूँ कि तुम किसी नये प्रेम की तलाश में रहो जिसमें टाइप ट्रेडिस मशीन बगीरह सब सामान मुकम्मल मौजूब हो। अगर सेनेखडूँए में मिल सके तो कमकत क किसी कम से नये सामान का आहर करा। बस कोशिश यह होनी चाहिये कि बरकर पाँच हबार से क्वाश न होने पावे। मर पास हम बहुत सीम हबार मौजूब है। प्रेस मई तक एक हबार धीर हा आपका क्योंकि रघुपति महाम से धीर

साहौर के पञ्चिखारों से बपया बनस ही जायगा। इधर में भी कानपुर इलाहाबाद
 बगीरह में तलाश करता रहूँगा। बनारस में भी सुराज बनाता हूँ। यहाँ अभी
 हास ही मैं भी थावमी बनारस से सामान लाये हैं और बूब मर्दा। फेंबाबाद
 का तात्पुकेवार प्रेस बिक रहा है। तीग हजार में सब सामान मिलता है। मुंशी
 गुलहजारीनाम से बरियापत किया है। देखूँ क्या बयाव पाता है। अब इस इरादे
 को मुस्तकिल समझो। तुम्हारे कलकत्ता रहने से मुझे ऐसा मामूम होता है कि
 मैं बिलकुल धकेला हूँ। मुझे हमेशा एक मधदवार की जरूरत मामूम होती है।
 मेरी सेहत कुछ बन्धी होती मामूम होती थी लेकिन अब फिर ज्यों की त्यों हो
 रही है। कम-बिक्रिस्ता से भी कोई छपदा क्या नहीं हुआ। ऐसी हासत में
 मेरी बिली धारण यह है कि बनारस में तुम्हारे मुस्तकिल रहने का इन्तजाम हो
 जाने ताकि तुम हर हासत में बर को समझा सको। कलकत्ते में रहकर तुम बर
 को हरगिज नहीं समझा सकते। बुधा न क्यास्ता मैं न रहा तो तुम्हें कितनी
 मुश्किल पड़ेगी। तुम रहोवे कलकत्ता मेरे बाम-बन्धे रहो बनारस कुछ भी न
 हा मकेगा। इसलिये मेरी तुमसे बगलगायत है कि बनारस जाने की छिद्र करो।
 अब तुम्हें पाँच हजार रुपये मिल सकते हैं। उसकी छिद्र नहीं। माच-मग्रेत तक
 अगर प्रेम का इन्तजाम हो जाय तो मई-जून में हम लोग मकान बगीरह सेकर
 बनारस में बस जायें। ऐसा मकान लिया जाय कि उमर में प्रस भी रहे और तुम
 भी रहो। मेरे बन्धे कबो बनारस रहें कभी मेरे साथ। छुट्टियों में मैं भी बनारस
 जाया करूँ और कुछ तुम्हारी मदद किया करूँ। साम-ख महीने में बर काम
 चल निकले तो मकान बनवाना शुरू कर दिया जाय। तुम एक लायकिल से भी
 और अपनी निगरानी में मकान बनवाओ। इस तरह ब्राइन्दा का इन्तजाम पूरा
 हो जायगा और मुझे इत्मीनान हो जायगा कि मैं कच्ची गृहस्त्री छोड़कर नहीं
 गया। कलकत्ता में काम करने से यह बातें एक भी पूरी न होंगी और मैं इस
 छिद्र में नजान न पाऊँगा। कानपुर में बयागरायन और रामभगैने मुझे शरीर
 कम्पा चाहते हैं और बीस हजार से प्रेस खोलना चाहते हैं लेकिन अब मैं बना-
 रस के निवाप और अपने लिये कहीं मुभीठा नहीं पाता। बनारस में बाहे नया
 कुछ कम ही हो लेकिन मुझे यह इत्मीनान रहेगा कि मेरे बाद नानदान भूला
 नहीं मरेगा और इरकत के नाच निबाह होता जायगा। यह भी मुमकिन है कि
 मैं बनारस तबाबता कर सकूँ। तब ता बीन ही हो जायगा। हम-दोनों माच रहें
 और एक दूसरे की मदद करते रहेंगे। जो कुछ अपने पास बपया जमा होगा वह
 बारोबार बढ़ाने में लक्ष्य करेंगे। और मुमकिन हागा तो इस-पाँच बीपा जमीन
 में लगे ताकि एक हम की छोटी वा भी सामानी से इन्तजाम हो जाये। नाने

को गल्ला बन पर हो जाये बीगर मसारिछ के लिए प्रेस से धामगमी हो जाये । कोसिश यह करेंगे कि प्रेस मदेसर या बेतर्गज के भासपास खुले । शुरू में कुछ बीड़-भुप करनी पड़ेगी जो कमकठे में न करनी पड़ती लेकिन घाहत्या की बेह-तरी के जयात से इसे बर्बरित करना पड़ना । तुम पोहार भी से इन बातों का साफ-साफ समझ देना और उनसे रुपये लेकर नहीं धमागत रख देना । अगर कहीं प्रेस का सीरा पट जाये तो यह रुपये बचाने का काम देंगे । हमहरे में घामो बकर घामो इस बारे में और भी सलाह हो जायगी लेकिन अब अपनी सेहत की हानत देखते हुए मैं तुम्हारा कमकठ रहना पसन्द नहीं कर सकता । और तो कोई हानत साका नहीं है । माना साहब के यहाँ बार थकटूर को बड़ा मोब है । अगर तुम आ जाते तो उसमें शरीक होते बना मुझे जाना पड़गा और बहुत तकसीर सजानी पड़ेगी । तुम बनारस रहोगे तो कुछ मेरे लिटरेरी काम न भी भव करोगे । हम लोग अपनी किताबें भी खुद ही छाप लिया करेंगे । अब तक इसका इन्तजाम न हो जाय तुम नौचरी करो चाहें पोहार भी के प्रेस में चाहें किसी दूसरे प्रेस में । लेकिन अग्रस न तुम्ह हमेरा के लिए कमकठ सौदना पड़ेगा अगर गृहस्थी और ज्ञानबाम की तुम्हें फिज है । बस यही मेरा आशिरी फ़ैसला है । अब इसमें किसी किस्म का रहोबरन मैं न करूँगा । तुम खुद इसका फ़ैसला कर सजते हो कि प्रेस के लिए नया सामान खरीदना बेहतर होगा या सेक्रेटरीईबड । क्या-क्या सामान बरकार हागे इस बारे में मुझे किसहाल कोई जनुर्बा नहीं है ।

और क्या मिर्छे यहाँ सब खरियत है । ऊहठ का सामान हो गया । दुप्रा । जाई बतदेबनात से मैने पाँच सौ पाँगे के लेकिन मेरा सत पहुँचने के पहले ही बहु एक हजार की फ़िज कर चुके थे । कोई शक नहीं कि वह निहायत मेकनिबत और साफ बिल जायमी है ।

तुम्हारा

धनपतंगय

२४०

पगा पुस्तक माता, लखनऊ

१० अगस्त १९२६

बनारस सस्तमह,

बन दुप्रा । तुमने मेरे सत का अभी तक जबाब न दिया । मैने यहाँ से चलने की इन्तजारी में घोड़ी को कपड़े देना बन्द कर दिये आटा बाजार से मँग-

बाठा हूँ कि पचास पिस बापगा तो गया होया । बुम्बू का नाम नहीं जिसका और तुम मेरे जहाँ का बनाव ही नहीं देते । बाकिर तुमने क्या फ़ैसला किया ? जिस तरह काम चलाना चाहते हो । मेने कई सूरतें लिकी । तुमने एक भी न पसन्द की । बाकिरी सूरत मेने यह लिखी कि ठेका का इन्तजाम करो या तुम ठेका लो या न । अपना सैकड़ा साहूबार सूख चार रुपया सैकड़ा सामाना भिटाई । इस बात पर धगर ठेका लेकर काम करना चाहो तो करो बर्ना कोई दूसरी सूरत बतलाओ जिससे किसी का नुकसान न हो । मैं इसी शर्त पर ठेके पर काम करने को तैयार हूँ । धगर तुम ठेका लोवे तो मैं लखनऊ से अपना सितसिमा न छोड़ूँगा । तुम न ठेका लोवे तो खूब धाँककर काम करूँगा । जबाब मे देर न करो । अपनी गुजिरता सास का हिसाब देना है । यह सब तुमने तैयार किया या नहीं । बापसी डाक छठ लिको । सेना मंजूर हो तो साफ़-साफ़ सिख बो न से मक़्ते हा तो साफ़-साफ़ सिख दो । इस तरह बो सास भोजपास करते हो गया । कब तक नुकसान उठाया जाय । जब तुम तफ़्ता नहीं हासिल कर सकते तो ख़ामसाह हम लोगों को क्यों खरबाद करते हो । हाँ ठेके का हिसाब साहूबार करना पड़ेगा ।

मे कई दिन स चारपाई पर हूँ । पैर में फोड़ा निकल थापा है । कल नस्तर दिखाया है । उठ-बीठ नहीं मक़्ता हूँ सेने-सेटे छठ लिखता हूँ ।

उम्मीद है कि अब ज़रूर जबाब दोगे जिसम पहली सितम्बर से बनारस का इन्तजाम हो जाय बर्ना मजबूरन मुझे प्रस बन्द करना पड़ेगा । क्यादा हुआ । उम्मीद है कि तुम सोम अपनी तरह होवे ।

तुम्हाप
धनपठाय

२४२

बराबरन

प्रेम का हाथ यह है कि सितम्बर से जनवरी तक तो बेकारी रही । बही एक दिताब मम्कितीर की और एक दिताब बीबरी की बसी । मजबूरी पान से बनी पड़ी । करीबन तीन गी रुपया मजबूरी में मर्क़ हो गये । जनवरी में कुछ टाइप निय तब से मामूनी तौर पर काम चल रहा है । बाँद इलाहाबाद मे कुछ काम दिया और कुछ और देनेवाला है । लाहौर से बाम मँदवाया था । मगर उनका बहमुआममनी की बजह से धाज बापम किये देता हूँ । मुझे मालूम हुआ है कि लाहौरवाले मजबूरी देने में बहुत रंग करते हैं ।

अब लहरियासराय स काब मिलने की उम्मीद है । मेरी जो चिट्ठी भायब

के मठों में बस रही है। टाइप के लिए चार सौ रुपये मैंने सफ़्त किये एक सौ साठ रुपये आई साहब तीन सौ नन्दकिशोर से लिये चार सौ भागवत साहब से। भागवत के रुपये मैं अब दो सौ और बाकी है। नन्दकिशोर का जितना भेजा-भेजा था मासिकन बेबाक हो गया है सिर्फ तीन सौ रुपये जो गऊ के वे बही बाँझे हैं। बमूस मासिक से हुए चासीस रुपये मानिक स और कामर एक सौ पचास और रुपये बसूत हुए होंगे। और किमी से बमूस न हुआ। तुम्हें मने जतनरी से बायह सैकड़ा सूब बा हबार रुपये पर पन्द्रह रुपये साहवार देने का फैसला किया है। अगर काम खातिरक्याह चल गया तो सूब एक रुपये मकड़ा हा जायदा मगर अभी तक तो कामवनी चल बराबर ही है। तुम्हारे चासीस रुपये हुए मात्र के आसीर तक। उसमें इस रुपये नेकता है और जब-जब मिसला जायगा वेता जाईगा। अगर मन्दिर में हाथ लगा दिया होता तो वह इस रुपये भी तुम्हारे सूब के मद में जाते। और, अब तो उसे किसी तरह पूरा करना है। धाय सहदेव से पचास फुट जून के लिए कर्हूया।

मैं तुम्हारी तरफ से विलकुल बेफिक्र नहीं था। लेकिन क्या कर्म पुराने मकान का किराया भी बीस रुपये साहवार दे रहा है। माता प्रसाद के कब में अब उनके हिसाब से नौ रुपये और तुम्हारे हिसाब से तीन रुपये और बाँझे रह गये हैं। हजिर नाब को भी इस माह में कुछ देना है। रजुपति सहाय की बहिन की शादी मई में है। दो सौ रुपये माँग रहे हैं। धाय बाई को लिखियेगा कि हमारी छपाई में से दो सौ रुपये उन्हे दे दें।

तुम्हारा

बनपतय

१४२

सरस्वती प्रेस

बनारस सिटी

बराबरम

तुमने मुझे पहले भी रुपये के लिये लिखा था और अपनी तिहीबस्ती का उबर किया था। तुम्हें मासूम है कि मैंने प्रेस के लिए एक हजार तीन सौ रुपये के टाइप खनवाये थे। वह रुपये अभी तक पूरे भरा नहीं हो सके। बमुरिकत प्रेस का खर्च निकाल कर टाइप के रुपये भरा कर रहा हूँ और जो तुमने नन्दकिशोर के सौ रुपये कब पर लिये थे वो सब भरा कर रहा हूँ। बाबू हरिहरनाथ का सूब भरा कर रहा हूँ। पुराने मकान का किराया बीस रुपये साहवार भरा कर रहा हूँ फिर भी इस कोसिस

मैं हूँ कि मुमकिन हो तो तुम्हारी मदद करूँ। मुगुलजासी हो जाने पर तुम्हें एक ठो फ़र्स्टी रुपये जहाँ से हो सके हूँ। धीर हूँगा। तुमने प्रेम म इतना फ़ैसल घोज़ रखा है कि उससे फ़ुरसत ही नहीं मिलती। और पीर कुछ मति बरसाह कहीं से लगे। मेरी हममत खुद ही बमतार है। तुम्हें खुदा खुदा रखे। तेज बहादुर तो मौजूद है। मैं किसकी आम को बुझा करूँ। प्रेम म इतना गफ़ा कहीं कि पाँच महीने में एक हजार तीन सौ रुपये टाइप का एक सौ रुपये पुराने मकान का छ सौ रुपये नंबकिशोर का पचास रुपये तुम्हारी माता जी का पचास रुपये शिब नंदन प्रसाद और माता प्रसाद का इर्जा ज़रा करके अपना गुजर भी कर भूँ और तुम्हारी फिर भी रहूँ। निबत बकर यह है कि काम सबका चलता रहे। मगर सब काम निबत है ही तो नहीं हो जाते। इसका तुम मकीन रखो कि म सप्त आखिर तक तुम्हें कुछ हजने बापदा जिस तरह मुमकिन होगा हूँगा। धीर तो मेरी हालत इस आखिर नहीं कि तुम्हारी और कुछ मदद कर सकूँ। मैं खुद ही अपने सत्तराजात से बर बार हूँ और मामूम नहीं होता कैसे ज़िदवी पार सवेगी। खान्द फिर नौकरी करनी पड़ेगी या क्या होगा। इस बस्त ता मैं भी तंगदान हूँ। धीर क्या लिखू।

तुम्हारा

बनपराय

२४३

गोरकपुर

७ जनवरी १९२०

बराबर मजीबमन सलामत।

बाब हुआ।

तुम्हारा खत मिला। पढ़कर कुछ खुशी भी हुई कुछ रंज भी हुआ। खुशी इसलिए कि तुम्हारे दिल म बराबरमा मुहम्मद के ऐसे ढँके नाम मौजूद है रंज इसलिए कि तुमने मेरी बातों का मंशा एतल समझा। मेने पोहार जी को जा खत लिखा है जसमें मेरा मंशा लिख यही है कि मैं भीपतराम के नाम से साम्म आहूता हूँ अपना या तुम्हारे नाम से नहीं। हम धीर तुम अपनी ठिक कर सपते है और बच्चे ही के चाहता क खयाल से यह सब इत्तजाम करने की ठिक है। इसलिए बही साम्मेश्वर भी रहे। चूँकि तुम वही मौजूद हो और तुम्हारी निय रानी में उसकी आमदार रहेगी इसलिए तुम जोया समकी बापदार के रूनी धीर माजिपन हो। इन्हीं बजुत में मैं तुम्हारे ऊपर समकी पक्करिश की जिम्मे दारी का बार दानना नहीं आता था। मैं इने बजुत (जसकी समझता हूँ)

हैं कि तुम्हारे बिम्ब उसकी ट्रस्टीशिप रहे। मैं क्या अगर सब क्या तुम्हीं से तो भी यही कहता कि साध्वी श्रीपतराय के नाम से हो क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम उसे अपने या मेरे नाम के मुकामसे में क्या पसन्द करोगे। और यह तो मैं भी कहता हूँ कि जिस आग्रह को मैं तुम्हारे लिए लेता उसके लिए भी तुम्हें कुछ सेने की सहाय न देता और मैं तुम्हारे ऊपर उसका भार दासता। अतएव मैंने ने कहा था कि मेरे पास सात सौ रुपये हैं, वह मैं तुम लोगों को दे सकता हूँ। बाकी साहिबा सिर्फ़ नाम के अरोसे पर बाधा करती भी लेकिन अब नाम साहब मुझे वो सौ रुपये वापस नहीं दे सके (मैंने सात सौ रुपये माँगे थे मगर उन्होंने पाँच ही सौ दिये) तो मैं कैसे उम्मीद करता कि वह तुम्हें या हम एक हजार दे दये। इसीलिए मैंने लिखा था कि महतावराय वाले में है बानी हम लोग दोनों बोखे में हैं। नाम बही करना चाहिए जो अपने सम्हाले सम्हाल सक। अब सेना मुझे किसी तरह पसन्द नहीं सासकर ऐसे काम में।

मैंने पहले भी पोद्दार जी को जो लिखा था उसका संज्ञा बहुत इसके और कुछ न था कि चूँकि महतावराय कसकते में एक धनकी धारमी है और बुनिया की मजदूरिया से धनी बकिफ़ नहीं है इसलिए मैं तुम्हारी ट्रस्टीशिप को उठना ही बहरी समझता हूँ जितना पोद्दार या किसी ऐसे ही मोतबर शक्त की मदद को। अब तुम खुद लिखते हो कि मैं अपना नाम नहीं रखना चाहता था और बार-बार मुझे लिखते थे कि आप तरीक़ हो चाहते तो अब मैंने तुम्हारे हुक्म की तामोप की ता तुम क्यों बहमुमान होते हो। पोद्दार जी हर एक लट में लिखते थे कि बाबू महतावर राय मेरे सामेभार होंगे। आप पंच बनियगा। अब मैंने और उनके इरमियान कोई इकलताफ़ हो तो आप कैसमा कीजियेगा। मैंने पंच बनने से बचने के लिए लिखा कि महतावर राय सामेभार मैं हूँ मैं बल्कि श्रीपतराय होने और मैं पंच नहीं बनूँगा बल्कि प्रोफ़सर रामदास गौड़ को पंच बना दूँगा। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे दिम में मेरे और मेरे बच्चों की निश्चय ऐसे जैसे क्यासता है। मैं हमेशा तुम्हारी सहायतमबी की तारीफ़ किया करता हूँ। अगर मैं जानता कि तुम इस बात के लिखने से इतने बहमुमान हो बाधोप ता हरपिब न लिखता। अगर तुम्हारा बच्चा होता तो मैं इस सामे को अपने और तुम्हारे बच्चे दोनों ही के नाम से लेता या कोई दूसरी आग्रह सेता तब भी और अगर ईस्वर ने बिम्बयी बाकी रखी तो मैं इसे साबित कर दूँगा। हाँ एक बात जरूर है। चूँकि मेरे घर में भी औरत है और तुम्हारे घर में भी औरत है मैं यह नहीं चाहता कि बुबा न क्यास्ता अगर मेरी बिम्बयी बच्चा न कर तो औरतों में तामाजनी हो और एक दूसरे पर रोष या सख्ती बताने। मैं यह साध

कर देना चाहता हूँ कि मैं अपने सड़के के लिए जो कुछ करता हूँ वह सब अपनी कूँतेबाजू से करता हूँ और उसके बचा पर महज उसकी सरपरस्ती और निग रानी का भार बरसना चाहता हूँ। महज तुम्हें इस बात का मौका देने के लिए कि तुम अपनी सप्ताहवर्तमंशी का हज्जदार बन सको मैं कम्पकते के कारोबार में शामिल होने पर राजी हुआ। हालाँकि मेरा शुरू से इरादा था कि तुम बनारस रहते और यहीं कामबान को अपने साथ रखकर मुझे हर एक छिद्र से घाबारा कर देते। यहाँ फैजाबाद में एक ताम्बुकुणार प्रेस बिछ रहा है। उसकी बान्त मैंने मुसी गुमहबारीनाम का सिखा भी है। कुनास्ता यह है। मेरा मक्का पोद्दार को इस जगह सिखने का और कुछ न था कि श्रीपत राय उसका मालिक और महताब राय उसके ट्रस्टी रहे। इसके लिए तुम्हें बरमुमानी की कोई बजह नहीं है। प्रेस का जो मक्का होना (या मुकसान न हो सकना है) उसके कर्ज की मैं यह सूरत सोचती है कि मक्कान बनमाज्मा क्योंकि हम तच्छ हम लोगो के पास काफ़ी खप्या बसा होना मुश्किल है। इसा खयाल से मैंने तुम्हें प्रेस के काम में लगाया और अब भी हमेशा इसी कोशिश में रहूँगा कि तुम्हारा प्रेस किसी तच्छ बनारस बना घामे। एक और बात याद रखो। तुम्हारा दिन में जानता हूँ बहुत माल है, लेकिन औरतों का रिल अक्सर तंगजमान होता है। तुम्हारी बीबी को तामिबन मामूम हो कि तुम इनया कर्ज ले रहे हो महज इस लिए कि श्रीपतराय के नाम में प्रेस खरीदो तो वह इसे इफ़ीज पसन्द न करेगी। तुम सप्ताहवर्तमंशी से ब्याह उस डीठे रहो लेकिन बहुत मुमकिन है कि हमने तुम्हारी आफ़ियत में जलस पैदा हो और तुम्हारे घर में एक घर बने। इन सब बातों का खयाल करते मैंने यही इरादा किया कि खप्या सब मेरा हो जा मैंने अपनी मेहनत से बहुत किया है। वह तुम्हारी निगरानी में सड़के के नाम से लगा दिया जाय। गाया तुम उसकी आवशाय के ट्रस्टी रहो। और अब तुम भी माहिबे बीसाद हो जाओ (ईश्वर करे कि मैं वह मुखारक दिन देखूँ) तो हरेक आवशाय में दामों माइया की भीमारों बराबर की हिस्सशर रहे होना का माय नाब नाम बढ़। इमीलिए तुम्हारे दिन में मेर उन जगह में अब भी मजान हो तो उसे निकाम खाने। क्याकि तुम मेरे पत का संसा पूरी तरह समझ गये हाने। ईश्वर ने जाता ठाँ बो-तान साथ में हम याग इन प्रेम के पूर मानिद ह। आर्यो और उसे बनारस में आकर काम करोगे।

आज मामा माइब का जग घाबा है। तयनराबन नाम की बीबा का इज्जतान हा बना। २ घनदूबर को बहामाज होगा।

अभी पोद्दार जी का राज नहीं घाया। तुम घाने पर मैं खया मेखूँगा।

तुम्हारे पास बाई सौ रुपये मौजूद होंगे पाँच सौ बसदेवसाय भेजनेवाले हैं। मैं सिर्फ़ बाई हजार हूँवा। रघुपति सहाय से कसूम नहीं हुए। कस रुपये पोहार भी ने पास पहुँच जायेंगे। घण्टूबर से जगवरी तक दो सौ तुम्हारे पास हो जायेंगे बाई सौ मेरे पास तनवाह से होंग। दो सौ जसमे ईसारे' से मिलेंगे और साठे तीन सौ रुपये 'प्रेम बत्तीसी धीर 'बाग़ारे हुस्न' के मिलेंगे। माया एक हजार हम सोय जगवरी तक पूरा कर देंगे। फ़रवरी में रघुपति सहाय से सात सौ रुपये मिल जायेंगे। इस तरह शरीर तक हम सब हिस्साब साफ़ कर देंगे। तुम धामे प्रेस के मासिक हो जाओगे। बसदेव जाल का रुपया पाइया घण्टूबर तक पहुँच जायगा।

क्याशा हुआ।

तुम्हारा दुभागो

बनपतराय

२४४

सरस्वती प्रघ, बनारस

१ जुन १९३१

बराबर प्रबीबमन

बाद हुआ। मैं यहाँ बाहर गई की था गया था। बल्लू पीर बल्लू बेटी के साथ फ़रह को सामर के लिए रवाना हुए। सोमह को इलाहाबाद पहुँचकर बल्लू को पेशिज हो गयी। मुझे तार मिला। जल्दीस को हम और बल्लू की बानिवा यहाँ से इलाहाबाद गये। बल्लू की हानत सराब भी। जून के दस्त धा रहे थे। २७ तक वहाँ रहना पड़ा। २७ की हम बल्लू के साथ बर लौट गये। बल्लू बामुदेव प्रसाद ने साथ सामर गये। यहाँ आकर मैंने दो-तीन दिन प्रेस का हिस्साब-किताब देखा। धाब फिर आ रहा हूँ। ९ जून को यहाँ से इलाहाबाद होते हुए सोराम जाले का इराया है। ११ की मुझे लखनऊ पहुँचना है।

कस माई साहब से बातचीत हो रही थी। उनसे मुझे यह मामुम करक कुछ हँसी भी आयी कुछ टांगुन भी हुआ कि तुम धमो तक उस लपड़ी दूएस को जो धाम से छ-साठ साल पहले यहाँ मेरे और तुम्हारे दरमियाज हुआ था तमस्तुक की तरह महज़ूब रले हुए मुझने अपने रुपय के लिए एक रुपया सँकड़ा ध्याय की उम्मीद रखते हो। यही बात एक बार मुझने रामकिशोर ने भी कही थी। मगर मुझे उनकी बात का यकीन न आया था। मगर माई साहब की

जबान से सुनकर सब मासूम होता है कि तुमने उनसे भी कहा होगा और मुझे इस वक्त इस मामले की साझ करना जरूरी मामूम होता है ।

जिस वक्त हमारे और तुम्हारे बरमियान यह लफ्फो होइ हुई थी न तुम्हारे पास रुपये थे न मेरे पास । तुमने भी अगर मेरा हाकिमा समझी नहीं करता तो हजार बार सी बोली बोली थी । क्या तुम कह सकते हो कि उस वक्त घर में तो हजार बार सी पर पानी हो जाता तो तुम मेरे और रघुपति सहाय के हिस्से के रुपये इसी परते से क्या कर बेते ? हरगिज नहीं । न तुम धरा कर सकते थे और न मैं ही इस काबिल था कि तुम्हारे एक हजार तो मैं रुपये भी इस परते से होते धरा कर बेता । नतीजा यह होता कि प्रस तुम्हारा ही निगरानी में रहता और जिस तरह काम बनता था उसी तरह बनता रहता । मेरा महा प्रेस को अपनी निगरानी में लेकर उससे कुछ नफ़ा करने का था । मुझे पकोन था कि मैं नफ़ा कर सकूंगा इसलिए कि मुझे अपने ही रुपये की फ़िक्र नहीं रघुपति सहाय के रुपये की भी फ़िक्र थी । मुझे प्रस को अपनी निगरानी में रखने की जरूरत महसूस होती थी । मुझे यह भी महसूस हो रहा था कि प्रेस से धनहवा होकर तुम अपने लिए इससे बेहतर कोई सबीन निकाल सकते हो । प्रेस में पड़े-पड़े न तुम्हारा ही भना हो रहा है और न हिस्सेदारों का । इन जपानों के जेने प्रसर ही मन तुम्हारे हाथ से इन्तजाम लिया नहीं तुम भी जानते हो और मैं भी जानता हूँ कि उस वक्त भी बाजार में प्रेस की कीमत उसनी किसी तरह नहीं मय सकती थी ।

अगर यह मान लिया जाय कि तुम रुपये धरा कर लें और तुम्हारे पास उस वक्त से हजार रुपया मौजूद थे (हालांकि यह और-मुमकिन मामूम होता है) तब भी तुमने प्रेस के सेग और देने की जा फ़र पेश की थी और जिसकी बिना पर मैंने तुम्हारे रुपये चुका देने का इरादा किया था वह नहीं निभयी । उसकी प्यास रकने ऐसी थी या बसूल न हो सकती थी और न बसूल हुए और कई रकमें उसमें से ऐसी छूट गयी थी जो औरत धरा करनी पड़ी । मेरा ज़मान है कि इस फ़र के मुताबिक प्रेस को दो हजार दो सौ रुपये मिलने चाहिए थे । मुझे दो हजार दो सौ रुपया मिल जाते तो मैं तुम्हें एक हजार तो सी रुपया देकर बेचिक ही जाता । अगर हम दो हजार दो सौ रुपये में शब्द मुश्किल से पाँच सौ रुपया बसूल हुए होये । देने में कई बड़ी-बड़ी रकमें निकल आयीं जहाँ धरा करनी पड़ी । इसलिए जिन बैलिस पर ये रुपये धरा करने का इरादा कर रहा था वह ही भगत निभता । अगर नाबलून्नुश रुपये तुम्हारे नाम जानें हैं और या और आपर मुझे तुम्हारे जमाने के लिए देने पड़े तो तुम्हारा हिरा ही धावक हो जायगा । मरे

पास तुम्हारे जमाने के लेने घीर देने की सही गणना मौजूद है जिसके एतबार से मेना एक हजार तीन सौ रुपया ठहरता है घीर देना एक हजार छ सौ पत्तीस रुपया। लेने में एक हजार तीन सौ बीस रुपया भी बसूत नहीं हुए। मुस्लिम से पाँच सौ रुपया बसूत हुए होंगे। देने में शायद एक हजार छ सौ पत्तीस रुपया से कुछ जायज ही देना पड़ा। इसलिए मुझे राजमुक्त होता है कि तुम जिस कानून इस्तेमाल से अपने रुपये के सूब के हकदार हो सकते हो।

यह जरूर है कि तुम्हें प्रेस में फँसने घीर रुपये लगाने का बख़्शोश हो रहा है। मुझे भी हो रहा है। भाई साहब को भी हो रहा है। रघुपतिशहाय को भी हो रहा है। सब के सब मिर पर हाथ बरे दो रहे हैं लेकिन तुमने कम से कम प्रेस से दो साल की तनखाह तो भी क्या से स्पाश तुम्हारा सूब का मुक़्तान हुमा को घाट रुपये सैकड़े के हिसाब छ साल का घात सौ रुपये की कटौत होता है। मेरे मुक़्तान का बख़्शोश करो। मैंने दो साल तक प्रेस से एक पाई लिये बर्रर काम किया घीर अपना कम से कम पाँच सौ रुपया उसमें घीर लगाया जो हिसाब म मौजूद है। उसके बाद से घात तक मैंने हवाते रुपये का काम प्रेस को दिया खुद अपनी किताबें प्रेस में छपवायीं घात भी अपनी किताबों की बिक्री से प्रेस चला रहा हूँ। अगर मैं अपने सारे मुक़्तानात जोड़ तो पन्द्रह सौ रुपया तो ज़ाली तनखाह न हो जायें पाँच सौ रुपया जो उबार दिये घीर को जब तक बसूत नहीं हुए इस तरह की हवात रुपये खिर अपनी किताबों की बिक्री के रुपये जो प्रेस में लग गये हैं जोड़ तो तीन हजार रुपया से कम न होंगे। इस तरह मुझे तो घनाबा सूब के कोई पाँच हजार रुपया का मुक़्तान हो चुका है घीर सूब भी जोड़ तो एक हजार तो सौ रुपया बच जाये है। पोया प्रेस जोसकर मने घात हजार रुपया का मुक़्तान उठया घीर मैं इसे हज़र-हज़र सही साबित कर सकता हूँ। हिसाब प्रेस म मौजूद है। तुम्हारा मुक़्तान तो सिर्फ सूब का हुमा। रघुपतिशहाय को भी इतना ही मुक़्तान हुमा अगर अपनी तक सब से बदरित किसे बरत है। भाई साहब भी प्रेस की हस्तत से बाकिठ है घीर ज़ामोरा है। सब समझ रहे हैं कि प्रेस जोसना चलती भी घीर अगर तक्रारी में होंगे तो मिलेंगे मही बूब मने। मैं अपनी बिस्तेवारी को समझकर अब भी हर तरह का मुक़्तान उठाता हुमा उसे कामयाब बनान की क्रिब म पड़ा हुमा हूँ। बार-बार बीड़-बीड़ घाता हूँ हिसाब-किताब देखता हूँ कपाकि मेरे दिल से लगी हुई है कि किसी तरह मफ़त हा घीर हिस्तेदारों को कुछ दे सकूँ। मैंने अगर बेईमानी की होती घीर कुछ का मया होता तो हिस्तेदारों को मुफ़्ते बख़्शुमाली हाती लेकिन मैंने तो प्रेस में पाल तक नहीं खाया। मेरा कांशत बिमकुल साफ़ है। जब तक मेरी बिन्दगी है

ये अपना नुकसान उठाता हुआ प्रेस के लिए जान देता रहेगा और कामयाब होगा। यद्यपि मैं मित्रा है तो कामयाब हूँगा।

तो अब इसका तसफिया कैसे हो ? या तो बीयर हिस्सेदारों की तरह तुम भी बामोही से मुझ पर एतवार करते हुए बैठे रहो। जब देखा कि मेने प्रेस से कुछ लिया है तो मेरी नयन पर सवार होकर अपना हिम्मा से सौ अपर देखो कि मैं नुकसान उठा रहा हूँ तो सब से वर्धित करो या जुर प्रेस में आकर कुछ काम उठाओ। गुबार के लिए जो कुछ प्रेस दे सके वह ले लो या प्रेस के लिए बीरा करके काम लाया किताबें बेचो और अपनी मुनासिब तनखाई ले लो। प्रेस की नफा देने के काबिल बनाने में मेरी मदद करो या बाजिरी मूरत यह कि एक पंच बनाकर प्रेस की कीमत घीक लो और तुम्हारा हिम्मा बितना निकले उठना या तो मुझे इसी बन्त लड़े-लड़े काग पकड़कर ले लो या मुझे ले लो। पंचों में बाबू सम्पूर्णानन्द बीरकाश और नयकिशोर को रख लो और या ट्रेडिग और कटिंग मशीन को घससी बामों पर समझकर अपने बाकी रुपये मुझसे ले लो। इस तरह तुम्हें तस्कीन हो जायगी कि तुमने बितने रुपये लयाय ले उठने मिल गये क्योंकि अगर इन चीजों को उनकी मौजूदा कीमत पर लोने तो इस हिस्सा से सारे प्रेस की कीमत बन जायगी। प्रेस में तीन ही चीजें तो कीमती ही उनमें से का हान तुम्हारा सामने है। रही मशीन वह यही सल हो सल में बचाव दे देगी। टाइप पुराने बोटे ही रह गये हैं अगर पुराने सामान सब ट्रेडिग और कटिंग मशीन के बाजार में रखे जायें तो मुश्किल से दस-बारह हजार मिलेंगे। कुल प्रेस बार हजार रुपये या बार हजार पाँच भी रुपये में बिक जायदा तो मायत के काम मिलना तो अब और मुमकिन है। तुम जिन तरह अपना इत्मीदान कर सको कर लो मैं धामारा हूँ। तुम्हें नुकसान पहुँचाकर या तकलीफ में देन कर मुझे मरख्त नहीं होती और न हो सकती है। तुम्हें कुराहान देयकर मुझे मिलनी लुरी होवी उनका धन्दावा तुम सामर में कर सको। अगर मैं इस काबिल होता कि तुम्हारी क्याय हमशाय कर सकता तो हरगिबखरेन न करना न कर मुझे हम प्रेस में बिमकुल मुयमिल बनाना। किताबों में मुझे जो कुछ मिल जाना या वह जब प्रेस की मर हो रहा है। अब मेरा इरादा हो रहा है कि मायत में आकर फिर प्रेस में डर्टू और जिन तरह भी हो मके उसे कामयाब बनाऊँ। तुम बाही तो अब भी हम काम में मदद दे सकते हो। यह न मजूर हो तो प्रम की मौजूदा कीमत को देकर उनकी कीमत का धन्दावा कर लो और यह जिन तरह चाहें समझ लो। या तुम्हारे लबाम में प्रेस से और का कुछ तुम्हें पाने हिम्मे में मिलना चाहिए वह ले लो। मेरे पाम प्रम की हर एक चीज का मोयद

रमा गया है। उस बीजक को बेदाकन वो हजार रुपये की बीज निजाम सा। बीजें बंजर पुरानी हो गयी हैं मगर उनका नफा मन नहीं उठाया म तुमने उठाया यह मनमंजु को कि बारोबार म नफा-नुकसान खोना होता है और इसमें नुकसान हुआ। तुम्हारे वो हजार रुपये इस बखत तुम्हारे पास होते तो तुम उससे एक छोटा सा पूरा प्रेम खोज सकते थे। मेरे बार हजार पाँच सौ रुपये मरे होते तो मैं उससे पक्का प्रेम खोज सकता था। अगर हमने या तुमन बक म रख दिये होते तो तुम्हें अब तक एक हजार रुपये के करीब खूब मिल गया होता और मुझ की वो ढाई हजार मिल गये होते। मैं और जो हजारों का नुकसान उठाया उससे बच गया होता। लेकिन अब इन बातों को याद करके पछताने से क्या हानि मिलेगी ता गल की हाल को बचाना ही पड़ेगा। मैं तो इन प्रस के पीछे बर्बाद हो गया सिर्फ इसलिए कि मैं हिम्मेदारों के नुकसान को नहीं देख सकता बाहे अपना कितना ही नुकसान हो जाये। रघुपति महाराज और भाई साहब मुझ पर तक्रिया किये बटे हुए हैं। मैं अपने बीते-ओ उन्हें नुकसान से बचाने की कोशिश करता रहूँगा। कामयाबी का हाना न होना ईश्वर के हाथ है।

उम्मीद है कि तुम बखरियत हो। बच्चों को बुधा।

P S म बाएँ हैं कि तुम इन मुता में जो बाह्र ज़बुन कर लो या दूब उसफिय की कोई सुरत पेना करो और ज़बुद। प्रेम की कीमत अब भाभी भी नहीं रही और तुम्हारे वो हजार अब मुश्किल से एक हजार रहेंगे। मैं तुम्हारे बचाने का हस्तकार करता रहूँगा। मैं निस्क लेने की तैयार हूँ अगर कोई दे। रघुपति साहब और मेरे हिस्से के छ हजार पाँच सौ रुपये होते हैं मैं उसे सवा तीन हजार पर बे दूँगा मगर नकद की शर्त है। प्रेम म जो नयी ट्रेडिंग घापी है उसका अभी काम देना बाकी है। भाई साहब निस्क पर राखी होये या नहीं मैं नहीं कह सकता।

बनपत राय

हसामुद्दीन गोरी, हैदराबाद

१४५

अर्जता सिनेट्रीन, बम्बई ।

१३ नवम्बर १९३४

मकरम बम्बा लसलीम ।

'निमारिस्तान' में जनाब का मजमून 'हिन्दुस्तानी' फ़िल्मों में बतवरीज^१ इम्ताह^२ बड़े लोक से पड़ा और मुस्तफीब हुआ । मुझे आपके जमान से सफ़्त व सफ़्त इत्फाक^३ है । अगर जिन हावों में फ़िल्म की किस्मत है वह बहकिस्मती से हम इंडस्ट्री समझ बैठे हैं । इंडस्ट्री को मजाल^४ और इम्ताह से क्या निस्वत ? वह तो एकस्पाष्ट करना जानती है और यही इम्तान के मुकद्दरतीन^५ जबजाल^६ का एकस्पाष्ट कर रही है । बख़्ता^७ और नीम-बख़्ता^८ लस्वीरें काल-मो-जून और अब की बारबानें माग्पी^९ गुस्सा और ग़बब और मफ़्मानियत^{१०} ही हम इंडस्ट्री के मीबार है और इसी से वह इम्तानियत का जून कर रही है । उम्मीद है आप यूँ ही अपने बेरोबबा जमानात से पब्लिक को पैर पहुँचात रहने ।

नियामत बहकर

प्रमर्ब

१४६

अर्जता सिनेट्रीन, बम्बई

१४ फरवरी, १९३५

मकरम बम्बा लसलीम ।

आपका ग़मान सही है । फ़िल्म को नायक अशोकरो का अक़रत है और वहाँ एने मुबाका^१ भी मिल सकते हैं कि दो-बार यात्र में आप किसी कम्पनी का बाहरनगर हो सकें । लेकिन इससे लिए आपकी जून बाहर मिलमिसा-जुम्बानी^२ करनी पड़गी । अभी आपमिया की हमेता अक़रत रहनी है । मेरी कम्पनी तो हम

१ लसलीम २ मुबार ३ बहकिस्मती ४ पैर ५ बहकिस्मती ६ लसलीम ७ अब बह-मज
८ जमाना ९ लोक १० निजमिया बैठला

बल्ल नाजुक हावत में है। इसकी तस्वीर एक भी मश्रूम न हो सकी। घोर हमर ऐंस्टों के मातुल हो जाने से घोर भी मुकसालात हुए हैं। बुतांचे उनके प्राबभुवाकर ऐंकर बीराब बिम्बो ताराबाई यमरा किनाराकत हो गये

मैं तो बिम्बगी में एक नया तजुर्बा हासिम करने के लिए यहाँ साम भर के लिए आया था। यहाँ मैं बह मुद्दत करम हो आयेयी घोर मैं अपने बलन बहारम लोट बाईंगा घोर इसबे-साबिक^१। पक्की मरसिम^२ में बकिमा बिम्बगी सफ कर दूंगा। बम्बई की प्राबोद्गा घोर फिजा बोनो ही मेरे मुषाफिक नहीं।

आप यहाँ आयेगे तो आप से मिलकर बड़ी खुशी होगी। एक अपना हमनबा^३ तो मिलेगा। यह तो दुनिया ही गई है।

नियाबमन्त्र

प्रेमचंद

२४७

१९५ सरस्वती सदन, बाबर, बम्बई

१६ मार्च १९१५

बाराबरम

तत्सलीम

ईय मुबारक।

मेरा तस्किमा हूँ गया। मैं पक्कीस तारीख को बमारस अपने बलन आ रहा हूँ। प्रज्जटा कम्पनी अपना कारोबार बन्द कर रही है। मेरा कंट्रेक्ट तो साम भर का था और अभी ठीक महीने बाकी है। लेकिन मैं उनकी बेरबारी में इन्कार नहीं करना चाहता। महज इसलिए उका हुआ हूँ कि करबरी घोर माण की रकम बसूत हो आये घोर जाकर फिर अपने मिठरेरी काम में मसकूफ हो जाऊँ।

मेरी दो फिताबें आमिन्ना गिमिमया देहली के एह्तमाम से छप रही हैं। एक का नाम 'मैबाने घमज' दूसरी का नाम 'बारवात' है। तीसरी बेरे तत्सलीक^४ है। मेरे लिए बड़ी काम बयाबा मौजू है। सिनेमा में किसी इम्माह की तबकको करना बेकार है। यह सनत^५ भी उसी तरह सरमायाचारों के हाथ में है जैसे शराब-क्रोमी। इन्हें इससे बहस नहीं कि पम्सिक के मज्जाक पर क्या पसर पड़ता है। इन्हें तो अपने पैसे से मतलब। बरख्ना रखस^६ बासा-बाबी घोर मयों का धीरतों पर हमसा। यह सब उनकी मजरो भ जायज है। पम्सिक का मज्जाक इतना गिर

१ कट २ बरबे की तरह ३ आधिकारिक कार्यों ४ एक-ही रात उठनेवाला ५ किसी का छोटा बच्चा ६ ज़िन्दगी

गया है कि जब तक य मुबारिक^१ और हयासोड^२ मबारे न हों उसे तस्वीर में मजा नहीं आता। मजाक की इस्तेहा का बीड़ा कौन चढाये ? सिनेमा के बरिये मगरिक की सारी बेहूदगियाँ हमारे अन्दर वाकिस् की आ रही है और हम बेकस हैं। पम्पिक म तंजीम^३ नहीं म नेक-यो-वय का इम्तियाज^४ है। आप अलवारों में किठनी हो पुरियाव कीजिए वह बेकार है और अलवारवाने भी ठा साफजोई मे काम नहीं लेते। जब ऐक्ट्रेसों और ऐक्टरों की तस्वीरें मझाबब छपें और उनके कमास के कसीदे पाये जायें तो क्यों न हमारे नीमवानों पर इम्का असर हो। साईस एक बरकते एजवी^५ है मगर नाघहभो^६ के हाथों मे पडकर मानत हो रहा है। मैंने कुछ सोच लिया और इस बाबरे छ निकल जाना ही मनासिब समझता हूँ।

मुस्तसिब
प्रेमचंद

१४८

हंस आकि, बनारस
२१ मई १९३३

मुहब्बी व मुल्समी
तस्सीम।

बादमाजरी का मममूल है। मैं बम्बई से आकर अपने तमनीफ व तामीफ म ममकफ हा गया। मेरा मातुवारी रिमाना हमें तो निरुजता ही था। इम्का मरुसद धार पर मुंदर्जा-बाला उनवान^७ मे बाबे^८ हो जायगा। बानी वह सिन्दी रस्मुलबत^९ के बरिये हिन्दुस्तान की मभी जवानों की बरबियात^{१०} से बेहतरिन मबारे^{११} पराहम^{१२} करके पम्पिक को देना और इम तरह डीमी अरब की बुनियाद आयेगा बिमम हर एक जवान के मुमसिफ और धरीब मौजूब होंगे। फिलहाल एर जवानवालों को भूसरी जवानवालों से एक बेगानगी-भी होती है। बंगलादेशों को गुजराती की कुछ जबर नहीं और न भरहटों को बंगला की कुछ मबर होती है। मूबेजाती बरबियात में मया-मया जबाजूर मरे हीने हैं, धीर रोज व रोज पैदा होने जाने हैं इसकी तरफ किसी की तबज्जो नहीं। 'हम ने यह त्रिरमम धरने डिम्मे की है। इनमें सेमगु कमाही बंगला मराठो गुजराती जू ममबा मम बगीर जवानों के बाकमाती के तजसीकी कारणाने रहत हैं और कीसित की

१ पलक २ चित्तौड़ ३ बंगला ४ पदवान ५ पैसी परवान ६ अशोक जीन्टो ७ उपरीद ८ डीर ९ कपट १० शिबि ११ बाकि १२ जामनी १३ दफ्त

जाती है कि सभी जवानों के झरीबों से हम बाजिफ हो जायें। जवान की हूय^१ के बाइस^२ किमी बाकमास मुमुश की घड़बियात से फ़ैज^३ उठाने से हम क्यों महज्जम^४ रहें। उर्रू के लिए भी एक हिस्सा बनक है। पहले नम्बर के लिए हमने डाक्टर इकबाल डाक्टर जाकिर हुसन साहब और मय्यत मुहीउद्दीन क़ादरी साहब जार के मजामीन शाय्या किये हैं। मैं यह तफ़्तीस इसलिए बे रहा हूँ कि बंबई से घाऊर बेकार नहीं बेग और तफ़्तीस^५ प्रीकात^६ नहीं कर रहा हूँ।

धगर मौलाना अबुमक़्क़ाम घाया^७ मुक़ाममे^८ सिखें ता फ़िल्मों में जान प^९ जाए मगर घाप तो जानते हैं फ़िल्म की कदर बर्बा पंजुम क उभाशाइयों पर है और यह अन्धे मुक़ाममे की कदर नहीं कर सकते। मगर खर यह भोग कदर न कर समझनेबाने तो करते ॥

इस इनायत और करम के लिए आपका ठहरे दिल में शुक्रिया।

मुल्कनिस

प्रमथव

२४६

बनारस।

सितम्बर, १९३६

बराबरम

आपका खत और रमायन^१ पहुँचे। ऐक्ट्रेस और सहेली के सुनूत^२ पढ़। आपने अवाकारों की ज़िन्दागी और निगारखानों^३ के अम्बकमी हाजात की सफ़्फी व इवरत-मामोब^४ तस्वीरें जिस मुवस्सर^५ व किसपिबीर^६ अम्बाब में लीकी है वह आप ही का हिस्सा है। इससे करम अपने किसी खत में लिख चुका हूँ कि महज्ज ज़िन्दागी में एक नया ठमुर्बा हासिस करने की तरज से बंबई गया बा। अपने मसाहूदात^७ की बिना पर मैं आपके सयासात का सफ़ज व सफ़ज साईद करूँगा। मेरे सयास में तरीफ़ ख़ासीन^८ का फ़िल्मसाबी में हिस्सा लेना हूँगिज दुस्स्त नहीं क्योंकि निगारखानों की फ़िजा जनक लिए रास नहीं पा सकती और न धाइन^९ इसमें किसी किस्म की इससाह मुमकिन है। सिनमा की बबोलत हमारे नौजवानों पर जो बुरे असरात मुरतब^{१०} हो रहे थे अब अलबारात के मुफ़्त जनमें दिन व दिन तरक़्की होती बा रही है। अब अलबारात में ऐक्ट्रेसों की तस्वीरें

१. लोमाओ २. आत्म ३. खाम ४. मफ़िद ५-६. कमाव की परबख़ी ७. वास्तवीत, वावसाव ८. पत्रिकाएँ ९. फ़िल्म-कंपनिओ १०. फ़िजा-तरक ११. रमायनखानी १२. आकर्षक १३. बिरोजक १४. फ़िजो १५. पढ़ रहे थे

जैसे और उनके कमास के कसीबे बाये जायें तो क्यों न मौजबानों पर घसका घसर हो। आप जल्द धन जल्द 'ऐकट्रेस और 'सहेली के कृत' किताबी सूरत में शायद कर बीजिए, ताकि मौजबानों पर फ़िस्मी दुनिया की हकीकत बाये हो बाये। मुझे तकली है कि आपकी उसनीफ अपने फायदाबस्त घसर से घोरों के दिनों पर चकर घसर करेगी। ऐसी मुफ़ीद किताब जिस कवर जल्द शायद हो मन्ना है। कृपा आपको इस कारे खीर^१ का उया^२ बे और कौम को इससे फायदा बस्ते। आजकल मेरी सेहत निहायत कमजोर हो रही है। भिन्नता-यद्ना तक कर दिया है। लेकिन आप अपनी किताब का मुकम्मिल मसबिदा सेज बीजिए। बसुरी मुकद्मा^३ सिद्ध हुआ।

मुकम्मिल
प्रेमचंद

रामचन्द्र ठन्डन

१५०

१० पब्लिशिंग सेट रोड परेल, बम्बई १२

४ दिसम्बर १९१४

प्रिय रामचन्द्र जी

बंदे ।

पत्र का कटिंग मिला । इसके साथ बम्बईवाले मेरे जमाने में लेखक संघ का एक कलम यह भी होगा कि वह लेखकों के स्वतंत्रता की रक्षा करे, प्रकाशकों को ज्यादा व्याप का व्यवहार करने पर मजबूर कर । अगर जब तक प्रकाशकों और पत्र निकालनेवालों को दया एसी न हो कि वे लेखकों का पारिश्रमिक दे सकें तब तक आप उन्हें मजबूर करके इसके सिवा और क्या कर सकते हैं कि वे पत्र का प्रकाशन बंद कर दें । अभी तक मेरा जमाना है साहित्यिक प्रकाशकों में कोई भी लफड़े से अपना काम नहीं कर रहा है । अधिकार ऐसे हैं जो नफे के जमाने से प्रकाशन का काम शुरू करके धीरे-धीरे इसमें पड़े हुए हैं कि उनका बहुत-सा बल प्रस और पुस्तकों में फँस गया है और वे उसे छोड़ नहीं सकते । हाँ स्कूली पुस्तकें छापनेवालों की बात आता है । अगर प्रायः सभी प्रकाशकों ने साहित्य की पुस्तकें छापनी बंद कर दी हैं । यही कारण है कि पुस्तकों की खपत नहीं होती । कागज और छपाई नहीं निकलती तो लेखक को कहीं से दें । हाँ जिन प्रकाशकों को काम हो रहा है उन्हें संभव इसकी प्रेरणा देना कि वे लेखकों के साथ व्याप करें और जब ऐसा समय आयेगा कि हिन्दी में पत्रों और पुस्तकों के प्रकाशन से नफा होने लगेगा तो संभव हम प्रश्न को बचकर हल में लेंगे । मैं आपसे विनम्र-सहमत हूँ कि सब को लेखकों के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए सहना पड़ा पर पहले यह समय तो आये । लेखकों ही का यह काम होगा कि वह उस समय को जल्द निकट ला सकें ।

कुछ समय हुआ हमने (छापने और देने) हिन्दी में अच्छे लेखकों के अनुवाद की एक योजना बनायी थी । क्यों न संभव में वह योजना भी शामिल कर दी जाय ।

रुस में भी सीमित राष्ट्रों मूनिमन है। और देशों में है या नहीं मुझे मामूम नहीं। लेकिन मुझे लेखकों को केवल कालगी मजूर समझने में कष्ट होता है। लेखक केवल मजूर नहीं बल्कि धीर कुछ है—यह विचारों का धाबिज्कारक और उत्तेजक धीर प्रचारक भी है। जिस तरह आप उपरोक्तको धीर प्रचारकों को सच के रूप में नहीं सा सकते उसी तरह आप लेखकों को भी उस रूप में नहीं बांध सकते। हाँ सच यह कर सकता है कि लेखकों और प्रकाशकों के बीच में भ्रम और मरुत के व्यवहार को बन्द करने का उद्योग करे, लेखकों में ऊँचे धारित ऊँचे धावरण और कला की उन्नति की व्यवस्था करे।

मैं इस विषय में मिलने पर आपसे बातें करना। धारा है आप प्रसन्न है। मैं तो ठेके जाता हूँ।

महवीम

बनपठ एव

२५२

सरस्वती लखन, बाबर, बम्बई १४

३ फरवरी १९३५

प्रिय बन्धु

पत्र के लिए धीर उन कठोरताओं के लिए जो आपने हृत्पापूर्वक भजा है बन्धुवाद। डा० सत्र का लेख मैं पढ़ चुका था और उसमें बहुत कुछ की बातें कही गयी हैं। उसमें एक भी एमा शब्द नहीं है जिस पर कोई आपत्ति कर सके। लेकिन मिस्टर धीरान्न के विचार पृथक्तावाधियों के हैं और मैं उनका समर्थन नहीं कर सकता। शायद आपने इस विषय पर बारहों व नामी के लेख पढ़े हों। 'उद्गु र्ममुमन तरनिक्ये उद्गु का मुलपन उन्हे किस्तों में धाव रहा है। हाथ में प्रगतिन लेनों में से एक मैन पड़ा। उसमें इतनी लाजवी धीर धात्रगीर्द धीर दूरन्देशी पाकर मुझे लाग्गुन हुआ। नैन जाने मिस्टर बर्मा ने उसको पड़ा है या नहीं। उसने हम समस्या का समाधान बहुत उस्ताधी रंग से किया है। उसकी राय है कि निधि को छोड़कर हिन्दी और उद्गु एव ही भाषा है। उनमें केवल निधि वा प्रेक्ष है। नहीं पर भाषा उद्गु की सीमा को लाँचकर हिन्दी के क्षेत्र में पहुँच जाती है रखा नीचकर बतसाना धमम्मव है। उर्दूबासी जिनका मन बाई धरबी और धरामी से है। हिन्दीवाने भी उनका अनुकरण करें। उनकी भाषा प्राथमिक उद्गु और हिन्दी बनी रहेगी। हमारी हिन्दीवासी जनता के राज्य पर चलेगी और पबान उसे बोधी जानी है विस निराने की कोशिश करेगी। जनता के मेरा मतभ

स्वभावतः वे लोग हैं जो लिख-पढ़ सकते हैं और जिनके पास साहित्यिक सस्कार हैं।

हिन्दुस्तानी एकदमो का काम इसी समस्या से जुड़ता था। ऐसे ही मेम्बर मीत्रिये जो एक मिली-जुली भाषा में भाषा रखते हों। उसे मिली-जुली भाषा में मसम-मसम मिश्रणों में एक पत्रिका निकालनी चाहिए थी। यह एक सच्ची सेवा होती। सम्प्रति उसकी कार्यवाही साम्प्रदायिक है और उसने अपने अस्तित्व को अरिहारी नहीं किया।

लिस्सब्रेह हिन्दुस्तानी अपने कम और बेमजदूरी और शब्द सम्पदा में साहित्यिक भाषा नहीं है। साहित्यिक भाषा बोल-चाल की भाषा से अलग समझी जाती है। मेरा ऐसा विचार है कि साहित्यिक अभिव्यक्ति को बोल-चाल की भाषा के निकट से निकट पहुँचना चाहिए। कम से कम नाटक कहानी और उपन्यास साधारण बोल-चाल की भाषा में हम लिख सकते हैं इन्हीं में हम जीवनी और यात्रा-वर्णनों को भी शामिल कर सकते हैं और साहित्य की ये शाखाएँ सम्पूर्ण साहित्य का तीन चौपाई ठहरती हैं और ऐसा तीन चौपाई जो सचमुच महत्व रखता है। आपका विज्ञान और रसम सस्कृत में लिखा जाय या प्राकृत में मुझे कोई परवाह नहीं। ऐसा कि भारत में बोलनी कठिन है 'हिन्दी को उसके पुराने भाषा के पल लौटकर न जाना एक बेसी ही बकार कोशिश है बेसी जि नही की बारा को मोड़कर वापस उसके उद्गम स्थल पर से जाना।

मित्राजी के बार में मैंने अपने लड़के को लिखा है कि वह आपको बाहर बतलाने कि वह किताबें उसने किसके पास बना कीं। आपको शायद पता न हो मेरे दोनों लड़के कामरूप पाठशाला इस्टरमीडिएट स्कूल में हैं और उसी इमारत में रहते हैं जिसमें हिन्दुस्तानी एकेडमी है। लेकिन दोनों बेहब फँसू हैं, जो मुझ उम्होन शायद मुझने सिखा है, यानि अगर ये मान लें कि मैं उनका बाप हूँ। उसका नाम भीपतराय है, अगर ध्यान उसे बुझा लें और उससे पूछें तो वह आपसे बतलावेगा कि उन किताबों का क्या हुआ।

सेलक सच। मेरी राय में उसका एकमात्र उपयोगी काम सहायक प्रकाशन है जिसमें कि हर सेलक का उसका मयस है तीस से लेकर चासीस छ सनी रायस्ती पाने के लिए धारणस्त हो जाय। हिन्दी का बाजार इतना मँदा है और सेलक अपनी पुस्तकें छपवाने के लिए इतना अशुभ है कि वे प्रकाशकों के साथ कोई भी समझौता कर लेंगे। वे अगर अपनी शर्तों पर अब रहें और प्रकाशक अपनी पुस्तकें प्रकाशित करने से इनकार कर दें तो फिर बचारा कहीं का न रहे जायगा। यह भीख बेसी ही है बेसी कि भागों का घर को रहने देने से रोचना।

लेकिन जब मुबका की कमी हो और कन्या का पिता सुरक्षित अपनी कन्या का विवाह कर देने के लिए बाधुर हो तब फिर दूषित दहेज प्रथा के घाते घुटने टेक देने के अभाव कोई चारा नहीं। वह तब तो किस विरते पर। लेकिन सड़कारी प्रकाशन के लिए क्या चाहिए और संगठन चाहिए और स्टाफ चाहिए और यह काम हमी हाथ में लिया जा सकता है जब सब के पास आवश्यक प्रमाण और प्रतिष्ठा हो। लेकिन कोई कारण नहीं है कि वह लेखकों की जब प्रकाशक अनुचित रूप से उनका शोषण करते हो सहामता न करे। हमारी वर्तमान आवश्यकता समस्या को बढ़ाना है ताकि सब साहित्यिक काम करनेवालों की ओर से उनके प्रतिनिधि की हैसियत से बोल सके। हमें उसको परवाना बढ़ाना है और उस बगह पर पहुँचाना है, जहाँ वह घसर कर सके। आप भीतर रखकर उसे जिस रूप में चाहें विकसित कर सकते हैं या बिबर जाहे ब्यादा आसानी से मोड़ सकते हैं। जब उनके बहुत से सदस्य होंगे तब हर घातमी के लिए यह मुमकिन होगा कि वह अनमत को संगठित करके उसमें बेसी रब-बाल जाड़े कर सके। अंततःक आलोचनाओं से केवल प्राम-प्रामग पक्षों की कटुता और भी बढ़ती है।

मुझे कभी कहाँगिया का आपका संघर्ष नहीं मिला। मुझ यकीनन उगम यज्ञा धर्मवा और मैं उनकी समालोचना करूँगा।

बचप मेहरबानी मेरा आवाज मोक्षी असगर हुसैन साइब ॥ प्रब कर दें।

आशा है कि आप पूरा स्वस्थ होंगे।

आपका

बनपत राम

पुनरब—

मैं शायद मिस्टर बर्मा के विचारों का खंडन करते हुए हिन्दुस्तानी में एक छोटा लेख लिखूँगा।

रामचन्द्र सिनहा

१५२

लखनऊ

१२ दिसम्बर, १९२६

प्रिय राम जी

तुम्हारा लख पत्रर लखी हुई। अगर तुम्हें अपनी संभावनाओं लिखनी पड़ती हैं तो तब बिदेस भेजे जाने के लिए अपनी रजार्पनी जाहिर करो।

मुझे उसमें कोई प्राप्ति नहीं है। साथ रूपा और जाना और मकान बुरा घाँवर नहीं है क्योंकि अगर तुम पाँच साल रह गये तो करीब तीन हजार रुपया बचा लोगे। यहाँ पर ऐसी कोई उम्मीद नहीं है। फिर तुम्हें घनमान देशों के देखन का नया मार्ग से मिलने का मौका मिलेगा और जब तुम घर लौटोगे तो काफ़ी जहाँशोश प्राप्त होगे। मैं बहुत करके वसंत पंचमी मे एक भागिक पत्रिका निकालने जा रहा हूँ। जान्हवी सहयोग देनेवाला है। तुम्हें बिदेशों के रूम-रिबाज पर निम्नले के लिए ममाना मिलेगा।

तुम्हें मौका न छोड़ना चाहिए

तुम्हारा

जनपथ राय

स्वर्गीय प्रेमचंद जी की एक योजना

१

दो शुद्ध

१५३

कुछ दिन हुए पुराने कागज-पत्रों की सफाई करते हुए मुझे एक कागज मिली जिसके अन्तिम को मैं भूल चुका था। इस कागज में प्रेमचंद जी की अनुबाधक मंडल सबसे एक योजना का लेकर मेरा उनका पत्र व्यवहार है। कागज पर कुछ मंश में बीमका की कृपा हो चुकी है। इस पत्र-व्यवहार पर फिर से लखर डालते हुए, इसे प्रकाशित कर देने का विचार हुआ—वह इस बहरेष से कि ममबत साहित्यिक मित्रों को इस योजना में दिलचस्पी उत्पन्न हो और वह इसे प्रचलन करना चाहें। प्रेमचंद जी वास्तव में बहुबन्धी आदमी थे और उन समय मेरे पास भी जलना अवश्यत नहीं था जितना कि इस योजना को सफल बनाने के लिए अपेक्षित था। इसलिए हम लोगों ने आपस में विचार करके इस किसी धामे के समय के लिए स्वीकृत कर दिया था। खैर है कि वह धामे का समय उनके जीवनकाल में न आया। प्रेमचंद जी के म्यारक के रूप में यह योजना धामे बढ़ाई जाय तो भी अनुचित नहीं।

प्रेमचंद जी का और मेरा पत्रव्यवहार अंग्रेजी में है। हमका अनुबाध कृपा करते ही इलाक़ बोरी जी ने हिन्दी में कर दिया है। मैंने कागज क्यों की क्यों सम्मेलन महासम्मेलन को भेंट कर दी है जिसमें कि सुरक्षित रह सके।

रामचन्द्र टण्डन

१५४

आवरण कार्यालय
सरस्वती प्रसन्न कम्पनी
१८ मई १९३३

प्रिय रामचन्द्र जी

व्यवहार। मैंने 'अर्जुन' के द्वारा अपना जो सुमन्य उपस्थित किया था उसकी एक कापी भेज रहा हूँ। यदि इसे कार्यान्वित किया जा सके तो निश्चय ही हमसे हमारे संवाचकों का स्तर ऊँचा हो सकेगा। इसके लिए विशेष परिश्रम की आवश्यकता है। यदि भाव साहस को जुटा सकें तो कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है। योग्य व्यक्ति प्राप्त हो सकते हैं। हमारे संवाचन दीर्घकालीन धार्मिक दुर्रता से जूझ रहे हैं, और इस कारण किसी नयी योजना के लिए संभवतः सम्मत न होंगे। फिर जो प्रयत्न तो करना ही चाहिए। हवा चल पड़ने से संभव है कुछ मुक्त निकल पावे।

धन्य करता हूँ आप सलाम हूँ।

मौलाना असदुल्लाह को मेरा सलाम कह दोजियेगा।

आपका
जनपद राम

१५५

अनुवादक-मण्डल की आवश्यकता

हिन्दी में ईतिहास पत्रों का मुख्य दो पैरों पर खड़ा है। जब अंग्रेजी वर्ष १९२० पुष्टों के बार पैसे में मिलते हैं तो हिन्दी के आठ पुष्टों के पत्र के लिए दो पैरों से ज्यादा जगह का पत्र खरीदने लगे।

बिना या नाम तो है दो पैरों से कम कठिनाई का किन्ती है? 'कटर' 'अयो-नियन्ट' 'धर्म प्रसन्न' सभी गहरा पहुँचानेवाली अस्पायें तार द्वारा लगे हैं। अंग्रेजी पत्र तार पात्र ही उद्योगों के नामान्वय कुछ विराम बिन्दु बना-बनाकर या उद्योग के अनुचित तार की वास्तविकता को दर्शाकर करने के लिए भेज रहे हैं। हिन्दी पत्रों के इन तारों का हिन्दी में उद्योग होना चाहिए। इसके लिए

४ से ६-८ तक अनुवादक रख जाते हैं। तार मिला है हम बने या म्याहू बने रात की। उसे एक बजते-बजते कम्पोजिग म जला जाना चाहिए, नहीं तो वह धप न सकेगा। इसी चंटे-चो-चंटे में अनुवादक को तेजी के साथ अपना काम करना पड़ता है। खबर छोपी-सो हुई या कोई बात नहीं। लेकिन कहीं वह बायम राम या महात्मा गांधी की स्वीच हुई या एसेम्बली या कौंसिल के बैठक की रिपोर्ट हुई तो एक दो तीन बार कागसों को खबर हो सकती है, और एक बंटे के अन्दर उसका अनुवाद होना परमावश्यक है, नहीं वह खबर रह जायगी। ऐसी हड़बड़ों में अनुवाद कैसा होगा इसका अनुमान किया जा सकता है। बाक्स के बाक्स और पैरे के पैरे छोड़ देने पड़ते हैं और भाषा इतनी जमझमे हुई इतनी बेसिर-पैर की हो जाती है कि बहुत उसका मतलब समझने के लिए अनुमान से काम लेना पड़ता है। यह कठिनाई सभी भाषा पत्रों के सामने है। एक तो हिन्दी पत्र दो पैरे में बिकें दूसरे अनुवादकों का बेज्ज है। तो वह क्यों न घाटे पर जैसे और क्यों न उसका जीवन संकटमय हो। परिदृष्टा के कारण पत्रों को सुयोग्य अनुवादक भी नहीं मिलते। जब बायीं छापे से लेकर, पचास साठ सत्तर अस्सी छापे तक अनुवादकों का बेतन होगा तो फिर ऐसे धायमी कहीं से धाएँ जा सुन्दर अनुवाद कर सकें। अनुवाद करना आसान काम नहीं है। एक-एक शब्द के लिए चट्टी दिमाग टटोलना पड़ता है और निमाग से काम न चलने पर कोरा के बरत उसटना पड़ते हैं। मेरा बिचार है कि स्वयं कोई लेख लिखना आसान है अनुवाद करना कठिन है और यह काम हम बड़े बेतन के कमचारियों से लेने पर नज़रूर है।

किन्तु धात्रकम कोई समाचारपत्र केवल खबरों ही के बल पर सफल नहीं हो सकता। उसमें जनता और भी चीजें चाहती है जिनमें उसका बिचार कैसा उसकी जानकारी बढ़े उसके भावों का परिष्कार हो वह संसार के बिचार प्रवाह में मिल सके। ऐसे लेख दो पैरे के पत्र में कहीं से धावें। उनकी सारी शक्ति खबरों के अनुवाद करने में ही खर्च हो जाती है। इसलिए यह धाम शिक्षा-मत सुनने में धाती है कि हिन्दी पत्रों में कुछ होता नहीं। हिन्दी पत्र बड़ी पड़ता है जो धंधेजी नहीं जानता और धात्रकम का कुछ पढ़ा-लिखा ॥ वह कुछ धंधेजी भी जानता है। ऐसे हिन्दी जाननेवाले जो धंधेजी निमकुल न जानते हों अधिक नहीं है। और जो सम्मन है वह तो धंधेजी धारण ही जानते हैं। जनता को हिन्दी पत्रों से प्रेम ॥ धारण मगर जब उस उसमें संतोषजनक मसाला नहीं मिलता तो वह बिचरा होकर धंधेजी पत्र पढ़ती है धंधेजी व्यापक भाषा है। उसके द्वारा भाषा संसार की सीर कर सकते हैं। कल जर्मनी आस धारि बेटों क

विचारक और विद्वान क्या कहते हैं यह जानने के लिए आपको संघर्षों पर अपना ध्यान देना है। अगर हम इन लोगों को हिन्दी पत्रों में दे सकें तो इन पत्रों को उपयोगिता मनोरंजकता और व्यापकता बहुत बढ़ जाय। अगर ऐसे लोगों का अनुबाध करना हिन्दी पत्रों के सामर्थ्य के बाहर है। खबरों का टेढ़ा-सीधा अनुबाध कर देने से भी काम चल जाता है लेकिन एक कम्पोज़र ऐडम का अनुबाध तो मात्र समझ कर ही करना पड़ेगा। इसीलिए हमें एक अनुबाधक-मंडल की आवश्यकता है। इस मंडल का यह काम हो कि वह पश्चिमी पत्रों से विचारपूछ ज्ञान बढ़क लोगों का अनुबाध करके हिन्दी पत्रों को दे। यह जरूरी नहीं कि मंडल के सभी काम करनेवाले अपना पूरा समय दें। अपने मुख्य काम के साथ वे मंडल में कुछ सहयोग दे सकते हैं। लेकिन कुछ ऐसे धार्मिकों को जरूरत तो होती ही जो अपना पूरा समय दे सकें। अगर मंडल को ऐसे धार्मिकों की सहायता मिल सके जो फेंच बमन और अद्वैती धारि जानते हों तो क्या कहना। मंडल संसार भर के मुख्य पत्र संग्रहे यह निश्चय करे कि कौन-कौन से लेख अनुबाध के योग्य हैं पत्रों से पत्रव्यवहार करके वह निर्धारित करे कि कौन-कौन से पत्र कौन कौन से लेख स्वीकार करते हैं। या यह हो सकता है कि मंडल पत्रों से मासिक लेखा तय कर से और रोड-रोड की अनुबाध सामग्री पत्रों के पास भेज दें। पत्र अपनी सुविधा अवकाश और इच्छा के अनुसार जो अनुबाध चाहे प्रकाशित करे। इस तरह की सामग्री देने से हिन्दी पत्रों की क्षमता बढ़ सकती है और संभव है कि वे भी अपना मुख्य एक माना कर सकें। सभी वे अंग्रेजी पत्रों का सामना कर सकते हैं और सभी उनका बाहर होगा।

(अर्जुन)

२५६

४

१० लाइव रोड, इलाहाबाद

२० मई १९३३

प्रिय प्रेमचंद जी

आपने हिन्दी अनुबाधक-मंडल के संरक्षण की योजना के साथ जो पत्र भेजा उसके लिए धन्यवाद। मैंने यह अनुमान किया था कि आपकी योजना का उद्देश्य कुछ दूसरा ही — वर्षान् पुस्तकों का अनुबाध — होगा। पर अब मान्य हुआ कि यह संवादाश्रमों में संबंध रखता है। आपको वह योजना जिस खेज तक भीमित है वही तक वह बहुत सुन्दर है, और उसके बाहर बहुत-सी सर्वप्रभावनाएँ निहित

हैं। हम कार्यनिष्ठ करने की चेष्टा अवश्य की जानी चाहिए।

आपने अपने भविष्य की किस रूप में उपस्थित किया है उनमें कहीं अधिक विस्तार के साथ आपने उस पर विचार कर लिया होगा ऐसा लगता है। आपके लेख में एक विशेष कार्यक्रम की आवश्यकता पर जोर दिया गया है पर उसके संगठन की कपरेखा के संबंध में उसमें कुछ भी नहीं कहा गया है। क्या आप कृपा करके अपनी योजना के संगठन का स्वरूप मुझे बता सकेंगे? उनमें काम करनेवाले किस प्रकार के कार्यकर्ता प्राप्त हो सकते हैं? काय का सीमा-क्षेत्र क्या रहेगा कार्यकर्ताओं को पारिवर्त्मिक क्या मिलेगा और काय-विभाजन किस रूप से होगा?

आपका उत्तर मिलने पर मैं चाहूंगा कि हम काय में दिलचस्पी रखनेवाले कुछ संरचना की एकत्र किया जाने ताकि आपकी योजना की एक निश्चित कपरेखा तैयार हो सके। यदि समिति का संगठन हो जावेगा तो निश्चित योजना के विस्तृत विवरण और कार्यक्रम पर विचार लिया जावेगा। मैं और यहाँ के कुछ मेरे मित्र इस कार्य में पूर्णरूप से सहयोग देने के लिए तैयार हैं। कृपया उत्तर में विनम्र न करें।

हम बीच में स्वयं भी आपकी योजना की एक कपरेखा आपके विचार के लिए तैयार कर रहा हैं।

आशा करता हूँ आप सन्तुष्ट होंगे।

आपका
रामचन्द्र टण्डन

२५७

२

सरस्वती प्रेस कान्ची,
२२ मई १९३३

मिस्टर जॉर्ज साहब

प्रत्यक्ष। यह योजना हिन्दी के साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के सामाज्य — जनकी उपयोगिता प्रकार तथा महत्त्व बढ़ाने के क्षेत्र से — तैयार की गयी थी। जब मेरे मन में उसका कोई विस्तृत या स्पष्ट स्वरूप नहीं था। पर हमें पहले अपनी समस्त शक्तियों का संश्लेष तथा लेना होगा — एक ऐसा ज्ञान तैयार कर लेना होगा जिससे यह पता चल सके कि कौन-कौन-सी पत्र-पत्रिकाएँ हमारी योजना को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं किन्तु भी सामाज्य की आवश्यकता उन्हें

प्रति दिन प्रति सप्ताह व्यवसाय प्रति मास पड़ेगी। इस संबंध में पत्र-पत्रिकाओं के नाम का एक प्रचार-पत्र भेज देने से काफ़ी दिलचस्पी पैदा की जा सकती है। हिन्दी में इस समय पत्रों की संख्या अच्छी है, यद्यपि बहुत से पत्र समुचित व्याप्ति न पाने के कारण दिन पर दिन नीचाबस्ता को प्राप्त होते जाते जा रहे हैं फिर भी यह भाशा की जा सकती है कि वे अपने पत्रों को बचकाने के उद्देश्य से विरुद्ध व्यावसायिक दृष्टिकोण से इस योजना के पीछे कुछ खयाल सपाने को तैयार हो जावेंगे। यह मामूम हो जाने पर कि कितने पत्र हमारी योजना से सहमत हैं, तीन व्यवस्थियों की एक समिति का संयोजन करना होगा। इस समिति का काम अनुवादक के लिए उपयुक्त सामग्री जुटाने का होगा। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ या तो बरीबरी पहुँची या किसी दूसरे रूप से प्राप्त करनी होंगी और उनमें से महत्वपूर्ण तथा जानकारीपूर्ण सामग्री चुनकर एकट्ठा करनी पड़ेगी। इसके प्रतिरिक्त अनुवादकों की एक समिति की भी आवश्यकता है—ऐसे अनुवादकों को प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष विषयों के विशेषज्ञ हो। प्रबन्ध समिति अनुवादकों को बराबर-बराबर काम बाँट देगी और उन अनुवाचित सामग्रियों को पत्रों में प्रकाशनाय भेज देगी। प्रबन्ध समिति को बहुत से काम करने पड़ेंगे। बहुत से पत्रों को पढ़कर उनमें से अनुवाद योग्य सामग्री चुनना कोई आसान काम नहीं है पर धम्याप हो जाने से काम बहुत कुछ आसान हो जायगा। यदि तो पत्र-पत्रिकाएँ भी इस काम के लिए इस रूप में प्रतिमास खर्च करने को तैयार हो जावें तो काम को आगे बढ़ाने के लिए मोह तैयार हो सकती है। सच्चा यह चुनाव करनेवाली समिति का निश्चय ही पुरस्कार दिया जायगा यद्यपि पुरस्कार सामान्य ही रहेगा। इस काम के लिए पचास अनुवादक नियुक्त किये जा सकते हैं जिनके पारिश्रमिक के सम्बन्ध में यह तय कर लेना होगा कि एक खर्च पर कितनी पंक्तियाँ उन्हें मिलनी होंगी। यदि कुछ पत्र एक ही प्रकार की सामग्री चाहते हों तो बितरक में कुछ पड़बड़ो पैदा हो सकती है। ऐसी हालत में उन पत्रों के बितरक का पूरा भार हम लोगों के हाथ छाड़ देना होगा या धीरे धीरे दूसरा उपाय लाज निकालना होगा। मेरा विश्वास है कि इस योजना को बढ़ाया जा सकता है और यदि कोई व्यक्ति समय के साथ इन पर चला रहे तो उसे हमारे पत्रकार-वर्ग की स्थिति को ठीका करने का योग्य और मंजूर प्राप्त होगा। चाप निश्चय ही इन काम के लिए योग्य व्यक्ति है। मैं तो एक हुरकारा मान हूँ और साथ ही कामों में हाथ डालने की सैदा करना चाहता हूँ जिनके लिए मैं नहीं बनाया गया। पत्रकार कला में मेरा स्वभावगत विरोध है पर परिस्थितियों में विवश होने के कारण मैं उसे स्वीकार करने को बाध्य हुआ हूँ। मेरी यह अनुमति कि मैं किसी बात में कोई स्थायी चिन्तन प्रकट

कान्ते में प्रसन्न हैं मुझे मुक्ततापूर्ण कामों के लिए उत्कण्ठाहीन रहती है। पर धैर्यहीन में एक कहावत है— जियो धीर सीखो।

यदि मेरी योजना का कोई योग्य व्यक्ति हाथ में ले ले तो हमसे अधिक प्रयत्नता मुझे धीर जियो मान में नहीं हो सकती।

आपका भाई

रामचन्द्र टंडन

१५८

१

१० साठव रोड, इलाहाबाद

२७ मई १९३३

प्रिय प्रेमचन्द जी

आपके हृत्पात्र के लिए धन्यवाद। मैं योजना तैयार कर रहा हूँ जिसे दो दिन के भीतर मैं आपके पास भेज दूँगा। योजना की सफलता के लिए मुझमें आ कुछ भी हो सकता है। मुझे विश्वास है कि धन में निश्चय ही सफलता मिलेगी। पर प्रारम्भ यदि सामान्य भी हो तो हमें चबरासा नहीं चाहिए।

मेरे पास हिन्दी के वैज्ञानिक तथा साप्ताहिक पत्रों की सूची बहुत समृद्ध है। यदि आपके पास कोई सूची हो तो भेजने का कृपा करें, ताकि एक पूरी सूची तैयार की जा सके।

मैं आपके नए अनुसार पत्रों में प्रकाशित एक समीक्षा भी भेजूँगा।

आपका

रामचन्द्र टंडन

१५९

७

१० साठव रोड, इलाहाबाद

१ जून १९३३

प्रिय प्रेमचन्द जी

मुझे इन बातों के लिए खबर है कि मैं आपकी प्रिय योजना की योजना का अध्ययन किया था उस हमने पहले न भेज पाया। मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं था और इन बीच मेरा आकस्मिक जाना भी बंद रहा। इस समय भी मैं आपको अनुसारक-मग्न के समूह से संबंधित वैज्ञानिक समीक्षा नहीं भेज रहा हूँ। इस संबंध में मैंने अपने दो विचार भोट कर रखे हैं। अक्सर उन्हीं को भेज रहा हूँ। अंतिम समीक्षा

उस तैयार किया जायगा जब आप मेरे सुझावों के संबंध में अपनी सम्मति देंगे ।

मैं यह पसंद करूँगा कि एजेंसी का प्रेषी नामकरण किया जाय प्रार्थना उसका नाम 'हिन्दी ट्रांसलेशन बोर्ड' रहे न कि अनुबादक मंडल ।

इसका उद्देश्य हिन्दी के वैज्ञानिक तथा साप्ताहिक पत्रों को विभिन्न विषयों पर अनुबाधित लेख भेजते रहने का होना चाहिए । मन्त्र तथा राजनैतिक क्षेत्रों से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए । ऐसा होने से मासिक तथा पारिवारिक पत्र भी उक्त एजेंसी द्वारा काम बठा सकेंगे ।

बोर्ड का मुख्यालय बनारस में होना चाहिए । उसके हावाएँ दिल्ली इलाहाबाद लखनऊ कसकता और जबलपुर में बनी जा सकती हैं । किन्नाम सखनऊ और जबलपुर को बोर्ड भी जा सकता है ।

प्रत्येक मासिक पाठ्य वह प्रधान मासिक ही या साप्ताहिक किसी एक संचालक के व्यक्तिगत निरीक्षण के अधीन रहे ।

संचालक के ऊपर इन बातों का उत्तरदायित्व होगा—१—मासिक तथा विदेशी संचालकों तथा मासिक पत्रों से लेख भेजना लेखकों का चयन करना और उन्हें अपने मासिक से संलग्न अनुबाधकों को अनुबाध के रूप में देना २—पत्र-प्रकाशक द्वारा प्रधान कार्यालय के मसर्ग में रहना और उनके साथ परामर्श करके अनुबाधित सामग्री को प्रत्येक पत्र की विशेष आवश्यकता के अनुसार भेजते रहना ३—प्रकाशकता पत्रों पर अनुबाधों का संपादन करना जबकि अपने मोट उनके साथ जोड़ देना मासिक से संबंधित विभिन्न अनुबाधकों को वा पारिवारिक रिवाजाय उनके क्लर्कों की जाँच करना किसी एक विशेष शाखा में विशेषज्ञता प्राप्त करना और एक ऐसी काइल रखना जिसमें बाह से संलग्न अनुबाधों की योग्यताओं का विस्तृत व्योरा रहे ।

डाइरेक्टर को कुछ और भी जिम्मेदारियाँ दी जा सकती हैं, पर इस समय मैंने केवल उन्हीं बातों का उल्लेख किया है वा बिना किसी प्रयास के मुझे मूक गयीं ।

बोर्ड की निम्नलिखित विषया का प्रयत्न होना चाहिए—१—राज नीति (सैद्धान्तिक) २—साहित्य तथा शिक्षा ३—भौतिक-प्रवर्धित विज्ञान ४—स्वास्थ्य-सुधार ५—कृषि ६—माध्यामिक ज्ञान ।

जी पत्र-पत्रिकाएँ मासिक चन्द्रा देना स्वीकार करें वे उक्त विषया में मेरी आवश्यकता के विषया की चुन लें ।

कैना कि पहले कहा जा चुका है प्रत्येक क्षेत्र को किसी एक शाखा के संबंध में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए यद्यपि प्रत्येक शाखा के अनुबाधकों का साथ

एकागीय होगा ठीक न होगा। कुछ विशिष्ट शाखाओं को अपने विशेष विषय-संबंधी सामग्री इकट्ठा करके बोर्ड के ग्राहकों के पास भेजते रहना चाहिए।

संचालकों को पचास रुपया प्रति मास बेतन मिलना चाहिए। उन्हें बोर्ड के मामलों का अधिकार रहेगा। संचालक समिति की वार्षिक बैठक में इस बात की घोषणा कर दी जायगी कि बोर्ड को कितना लाभ हुआ है। कार्यस्थलों को भेजने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं को प्राप्त करना तथा डाक-टिकट आदि के लिए संचालकों को प्रतिमास पच्चीस रुपया से लेकर पचास रुपया तक भत्ता दिया जाना चाहिए। प्रधान कार्यालय को पचास रुपया प्रतिमास इसके प्रतिरिक्त देना होगा। उसे शाखा कार्यालयों को आफिस संबंधी आवश्यक चीजें पहुँचाते रहना होगा।

एक सेल में शौचतल साठ घंटे खल रहने चाहिए। पाँच घंटे से एक हजार शब्द तक के सेल चल सकते हैं।

यदि कोई पत्र किसी विशेष विषय पर सेल जाहे तो उसके लिए विशेष दर भी तय की जानी चाहिए।

धनुबादकों को साठ घंटे शब्दों के लिए डढ़ रुपये पारिषमिक दिया जाना चाहिए। विशेष-विशेष प्रवस्था में इस दर में परिवर्तन किया जा सकता है।

ऐसे सेलों पर जो मास्यमात्र लेकर लिखे गये हैं साठ घंटे शब्दों के लिए एक रुपया दिया जाना चाहिए।

धनुबादकों की योग्यता सहित उनके नामों की एक सूची प्रत्येक आफिस में रखनी चाहिए। प्रत्येक आफिस के पास बोर्ड के समस्त ग्राहकों की पूरी सूची रखनी चाहिए जिसमें प्रत्येक ग्राहक की आवश्यकता का भी उल्लेख रहे।

बोर्ड को यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपने ग्राहकों को जो कोई भी सामग्री भेजे उसे पुस्तकालय में संगृहीत कर सके।

अपने हुए सेलों की दो 'कॉपि' प्रधान कार्यालय को भेजी जावें एक प्रधान कार्यालय के लिए और एक शाखा कार्यालय के लिये।

ग्राहकों को कम से तीन खेदियों में बिभक्त किया जा सकता है—तीस रुपया प्रति मास देनेवाले ग्राहक पन्द्रह रुपया प्रति मास देनेवाले ग्राहक और दस रुपया प्रति मास देनेवाले ग्राहक।

प्रथम खेदी के ग्राहकों को प्रति मास आठ सेल ऐसे मिलेंगे जो केवल पच्ची के लिये धनुबादित किये गये हों द्वितीय खेदी के ग्राहकों का प्रति मास चार सेल ऐसे दिये जावेंगे और तृतीय खेदी के ग्राहकों को केवल दो विशेष सेल दिये जावेंगे।

यह धारणा की जाती है कि प्रथम खेदी के पन्द्रह ग्राहक प्राप्त हो जावेंगे

द्वितीय श्रेणी के बीस और तृतीय श्रेणी के पचास ग्राहक प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार बीस को कुल एक हजार दो सौ पचास रुपया मासिक धन्य हो सकेगी।

यह मोटे तौर पर तैयार की गयी योजना है। मेरी राय है कि आप प्रबल कार्यालय का भार लें। इलाहाबाद के कार्यालय का प्रबन्ध मैं कर लूँगा। श्री बनारसीदास चतुर्वेदी कसकटों का धोर 'घञ्जुल' के प्रोफेसर इन्द्र रिम्नी का भार सम्हाल लेंगे। इस बात का ध्यान में रखते हुए आप स्वयं उन लोगों से पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

मैं आपकी जुलाई से इस कार्य का भीगबोस हो सक तो बहुत धन्य हो बहुत सम्मन है, प्रारम्भिक व्यवस्था में एक पूरा महीना बीत जाये। पर समय नष्ट नहीं होना चाहिए।

मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने इलाहाबाद प्रांतिम के लिए अनुवाचकों की सूची तैयार कर ली है। एक प्रचार-पत्र संस्थानकों के हस्ताक्षर सहित शीघ्र ही समाप्त पत्रों को भेज दिया जाना चाहिए जिसमें योजना समझ दी जाय। प्रचार-पत्र के साथ चर्चे का ध्यान भी रहे। प्रचार-पत्र तब तैयार किया जाय जब श्री बनारसीदास भी तथा इन्द्र जी के उत्तर आपको मिल जायें। इन बीच धन्य—और मैं भी—इस बात पर विचार कर लें कि प्रचार-पत्र में क्या क्या जायें रखें।

आपने अभी तक मेरे पास दिल्ली के दैनिक साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों की सूची नहीं भेजी।

एक बात अभी तक धुँगी रह गयी है, वह है कानून-संबंधी विवेचना। यह तो स्पष्ट ही है कि हम लोगों की संस्था का उद्देश्य चाहे कितना ही क्यों न हो वह व्यावसायिक ही होगी और केवल व्यावसायिक ढंग से उसे चलाया जा सकता है। पारंपारिक देशों में इस प्रकार की बहुत-सी एजेन्सियाँ हैं। हम साथ एक ऐसा प्रयोग करने जा रहे हैं जो मेरी राय में केवल हिन्दी क्षेत्र के लिये ही नहीं बल्कि भारत के लिए नया है। कुछ भी हो चाहे प्राप्त है कि धार एजेन्सी क कानूनी पक्ष पर विचार करके अपनी सम्पत्ति की सुरक्षा मुझे भी बीजिबेगा।

पत्र जाँचो सम्मन हो गया है। अधिक ध्यान पत्र मिलने पर।

२६०

५

आगरस कार्यालय बनारस

१ जुन १९३३

प्रम भाई माहब

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। आपकी योजना मुझे बहुत उपयुक्त लगी।
 १। कार्यालय से ही काम चल जायगा। शाखाओं की आवश्यकता ही क्या है ?
 २। नान कार्यालय किसी एक ऐसे केन्द्रीय स्थान में होना चाहिये जहाँ प्रिन्सिपल पत्र
 रिजिस्टर्ड ग्रामपञ्ची से प्राप्त हो सकें। इसाहाबाद इनमिये प्रारंश स्वरूप है। प्रधान
 कार्यालय में एक संचालक तथा एक या दो क्लर्क रहें। 'मर्चेंट' और अनुबंसी
 की दो छोरों से क्या कर सकते हैं ? संचालक ऐसे व्यक्ति को होना चाहिये जो
 स्थानीय जनबर्जक और बिहारोत्प्रेषक सामग्री का अच्छा ज्ञान करने को
 योजना रखता हो। वह स्वयं इस बात का निश्चय करेगा कि अनुबाद के लिए
 फेल-सी सामग्री किस व्यक्ति को दी जावे। वह इस बात पर ध्यान रखेगा कि
 किस अनुबादक की योग्यता किस हद तक है और कौन इस संबंध में किन्ती
 सहानुभूति रखता है। अनुबादकों के चुनाव का आधार यही होना चाहिये। जब
 पत्र से बचने के लिए एक प्रकार की वृत्तानुक्रमिक व्यवस्था होनी चाहिये। बाकी
 सब बातें ठीक हैं। यदि संचालकों को सच्चा बढ़ाकर रखी जावे तो प्रारम्भिक
 भार के निर्वहण का प्रबन्ध नहीं हो सकेगा। कार्यालय का प्रारम्भिक व्यय प्रति
 मास पचास तीस बीस चासीस तस पन्नाह, और एक सौ रुपये से अधिक नहीं
 होना चाहिये। संचालक की प्रति मास पचास रुपया दो क्लर्कों को ज्ञान से तीस
 रुपया और बीस रुपया आकृति का किराया चासीस रुपया एक अपरासी का वेतन
 दस रुपया रोरसी पन्नाह रुपया और एक सौ रुपया पत्र-पत्रिकाओं के लिए।
 तम प्रकार कुल मिलाकर तान सौ रुपया का लख बठठा है। बाकी रुपया आपकी
 योजना के अनुसार अनुबादकों में बाँट दिया जा सकता है। अनुबादक निरवम
 नीय होने चाहिये। प्रचार-पत्र में अनुबादकों के नामों का उल्लेख रहना चाहिये।
 यदि हम भोल जू संसार को जी लेवें तो आपकी योजना का जेब विस्तृत हो
 जावेगा। किसी लेख का अनुबाद हिन्दी में हो जाने पर जू में वह बड़ी आसानी
 से प्रकाशित किया जा सकता है। जो सूची आपने माँगी थी मैं उसे भेज रहा
 हूँ। वह पूरी नहीं है, पूरी के करीब है। यदि जनता सहयोग दे तो सब कुछ हो
 सकता है। कुछ बातें सहयोग पर निर्भर हैं। अब कार्यालय का व्यय तान सौ

रूपमा है तो अनुवादको का पारिभाषिक एक ओर पाँच के अनुपात में होना चाहिए। यदि हमें प्रति मास एक हजार रूपया भी प्राप्त हो जायें तो योजना बड़े मज्जे में चलाई जा सकती है। पाँच सी रूपया भी कोई निरुत्साजनक रकम नहीं है। एसी हालत में हमें कार्यालय का व्यय बढ़ाना होगा। किमहास मकान के भाड़े का कोई प्रश्न नहीं उठेगा। इस सम्बन्ध में कुछ अनुभवी व्यक्तियों से भी कृप्यडाराम मेहता अथवा श्री बिरबनाथ प्रसाद से बात करने में क्या हर्ज है? दो-एक व्यक्तियों ने इस विषय में मुझे पत्र लिखे हैं। प्रचार-पत्र इस रूप में तैयार किया जाना चाहिए जिससे लोगो पर प्रभाव पड़ सके और वे यह अनुभव करें कि उन्हें सेवा के बर्तीर नहीं बल्कि स्वयं अपने हित में सहयोग देना है। प्रारम्भ में निम्न व्यक्तियों को हमें अपने साथ लेना होगा—१—प्रोफेसर इन्द्र २—बनारसीदास श्री ३—डा० हेमचन्द्र जोशी ४—मिस्टर श्रीप्रकाश श्रीर ५—आगरा के श्री पानीवाल भी।

प्रारम्भिक अवस्था में जमीन को तैयार करने के लिए बहुत परिश्रम-माध्यम काम करना पड़ेगा। व्यय भी काफी करना पड़ेगा टिकटों का खर्च खास तौर से रहेगा। प्रायः ऐसे बजट माध्यम व्यक्ति हमारा मान देने को तैयार हो जायें तो प्रचार-पत्र तैयार करके विस्तृत योजना सम्मितियों के साथ समस्त महादपत्रों के सम्पादकों तथा नासिकों के पास भेज दी जाय। यदि योजना का स्वागत हुआ तो समझ लेना चाहिए कि हम लोगों ने बाड़ी मार ली सम्पदा नहीं। प्रारम्भ में बड़ी सामान्य परिमाण में कार्य चलाना जा सके तो मुझे कोई आपत्ति न होगी।

उर्दू संवादपत्रों की सूची मुझी बमानारायण नियम से प्राप्त की जा सकती है। मेरा ऐसा खयाल है कि समय-समय को सब पत्रों के नाम बार नहीं होंगे। मुझी बमानारायण तथा श्रीर दो-एक सत्रकों की भी सम्मितियाँ हम योजना के संबंध में जान लेनी चाहिए। उर्दू का खर्च काफी बड़ा है और घर में लोग सहयोग दें तो वह बचाई का विषय होगा। प्रारम्भिक व्यय के लिए घर में एक कमरेज काट सकते हैं जो हिन्दुस्तानी एकेडमी से धुंधे प्राप्त है। प्रायः बीस रुपये मुझे पाने हैं। किमहास इस रकम में कार्य चिट्ठी छपवाया किया जा सकता है।

यदि धन समय निजाल सके तो आपने अच्छा मकानक हमरा नहीं मिल सकता। अभी किसी योग्य व्यक्ति का पूरे समय के लिए नियुक्त नहीं किया जा सकता। धन पढ़ने योजना के संबंध में कुछ लोगों से बार्तापार कर सें। उनके बार मुझे बुसा सें। वे आपके साथ आपके घर पर जीवन करते हुए योजना के

सर्वथ म बिस्तार से बातें कर्नेया । इसके लिए मै एन दिन का समय दे सकता हूँ ।

आपका स्नेही

बलभद्रराय

१६१

६

१० साउथ रोड, इलाहाबाद

६ जून १९३३

प्रिय प्रमचंद जी

आपके पत्र के मिले बहुत धन्यवाद । मै आपकी सावधानी से पूर्णतया सहमत हूँ । प्रान्तीय छात्राघों के बोमन के संजय में मैने जो प्रस्ताव किया था उससे मेरा उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना था । हम लोग अब उस स्थिति पर पहुँच गये हैं जब कि इस विषय पर बातचीत करके कुछ निश्चित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं । यदि आप भयसे सप्ताह के अन्त में इलाहाबाद या सर्फे तो रविवार ११ जून को हम लोग योजना को निश्चित रूप देकर कार्यवाही शुरु कर सकते हैं । कृपया अपने जाने की सूचना मुझे पहले से दे दें ताकि यहाँ वो-एक व्यक्तियों को भी समय पर सूचना मिल जाये ।

आपका

रामचन्द्र टण्डन

१६२

१०

सरस्वती मेड, बनारस

प्रिय भाई साहब

आपका काब कई दिन हुए, मिना था पर मेरी तबीयत इस बीच ठीक नहीं रहती है और इस समय भी कुछ विरोध अच्छी नहीं है । मै उम्मीद करता हूँ कि रविवार या इतवार को मै इलाहाबाद पहुँचूँगा । एक तो बीघ रोड ठिठ पर बाँस का बर इन दो कारणों से आपके यहाँ आने का प्रसंग बहुत कुछ भट्ट हो गया । मै आपके यहाँ के मुस्ताफ़ु व्यक्तियों का रख लेने से बंथित ही रह जाऊँगा । यदि इस बीच कोई विरोध कारण न आ जड़ा हुआ तो मुझे उम्मीद है कि इलाहाबाद या पहुँचूँगा ।

आपका

बलभद्र राय

(काब पर ११ जून १९३३ की राक मुहर है)

विनोद शंकर व्यास

१६३

लखनऊ

७ मार्च १९९७

प्रिय महाशय

आपका पत्र मिला। उत्तर में निवेदन है कि मेरी कहानियों का कापीराइट छूटे प्रकाशकों के पास है और मुझे उनके प्रकाशन की अनुमति देने का अधिकार नहीं है। माता है आप प्रकाशकों से ही तय कर लेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

बनपत राय

प्रमर्श

१६४

माधुरी कार्यालय

४ जुलाई १९९७

प्रिय महाशय

पत्रोत्तर में निवेदन है कि मेरी कहानियों का सर्वाधिकार प्रकाशकों की ओर है। मैं उनमें हस्तक्षेप कैसे कर सकता हूँ ?

एही मेरे जन्म की तिथि आदि। मेरा जन्म सं० १९३७ में हुआ। काशी के उत्तर की ओर पाँडेपुर के निकट समही ग्राम का निवासी हूँ। श्रीमन्त काल में घेंघेरी पड़ी। शिक्षा विभाग में रहा। पहले १९७० सी में 'प्रभा' मिला फिर उद्गम में प्रेम पञ्चीली आदि और 'बसबस' इमार मिला। मई ९६ में 'मृगाल' सेनमारी मिला। उसी साल सरस्वती में एक कहानी मिली और तब से ग्यारह साल से बराबर कुछ न कुछ लिखता आता हूँ।

माधुरी के लिए आप कुछ सिधने की कृपा क्यों नहीं करते ? क्या धारा कई ?

भवदीय

बनपत राय

१६५

सप्तमः

६ सितम्बर १९२६

प्रिय व्यास जी

कृपा पत्र मिला। 'मनुकरी' पहले ही मिल गयी थी। संग्रह अच्छा है। कहानियों का चुनाव सुन्दर, छपाई में धृष्टियाँ और निरामों का समावेश इस संग्रह की विशेषता है।

आलोचना की दो-एक बातों से मैं सहमत नहीं हूँ मगर मैं कोई धाधप नहीं करता। आपको अपनी राय प्रकट करने में उतनी ही स्वाधीनता है जितनी मुझे या किसी दूसरे को है।

मनदीप

बनपत राव

१६६

सप्तमः

१० सितम्बर १९२६

प्रिय व्यास जी

बड़े

आपने 'मनुकरी' पर मेरी सम्मति पूरी है। संग्रह सुन्दर हुआ है और कहानियों के चुनाव में सुश्रुति से काम लिया गया है। ऐसे सुन्दर संग्रह पर मैं आपको बधाई देता हूँ। मेरे और आपके साहित्यिक भाव्यों में किन्हीं अंतर हैं पर वह ऐसे आरा की जा सकती है कि सभी लोग एक ही जैसे विचार रखें हों। यह मेरा स्वामयिक है। इससे संग्रह की सुन्दरता में कोई बाधा नहीं पड़ती। संग्रह में बनारसवालों के साथ आपने ककरत से क्या-क्या बहारता की है, पर साथ ही मैं संग्रह करने बैठता तो मैं भी ऐसा ही करता। मेरा 'गल्प समुच्चय' तो एक प्रकाशक के संकेत पर केवल स्कूली कक्षाओं के लिए, उसी क बताने हुए लेखकों से किया गया था। उससे मैं उन लेखकों को कैसे ला सकता था जिनको प्रकाशक ने स्वयं प्रसंग कर दिया था। स्कूल के लिए बटल भाषा और ज्ञानी से छसकती हुई कहानियों की तो जरूरत न थी। वहाँ तो बरिज का विचार ही प्रबल रहता। मैं मेरे विचार में—सभी के विचार में—साहित्य के तीन लक्ष्य हैं—परिष्कृति, मनोरंजन और उद्घाटन। लेकिन मनोरंजन और उद्घाटन भी उसी परिष्कृति के अन्तर्गत जा सकते हैं क्योंकि लेखक का मनोरंजन केवल भावों का लक्ष्यों का

शाम नहीं मानूम। हिन्दी-भाषी जनता संख्या में अक्षर नहीं है लेकिन हमारे समाचार सरीख लोग हैं। मैं अपने अनुभव से तुमको बताना चाहता हूँ कि किसी पुस्तक के एक संस्करण की दो हजार प्रतियाँ बेचने में पूरे बार बरख लव जाते हैं। एक नये लेखक के लिए उसकी पुस्तक किसी भी अच्छी क्यों न हो वह भी और भी नहीं सज्जित हो पाता है। मैं कोई प्रकाशक नहीं हूँ हूँ एक मासिक और साप्ताहिक और कितने आपता हूँ अगर एक-दो मित्रों को छोड़कर मैंने और किसी लेखक की कोई किताब नहीं छापी है। मेरे लिये वह व्यवसाय क्याबेश एक तरह का पानमपन है। मेरी किताब अक्षर बिखरी है लेकिन जल्दी धामदनी पत्रा का पेन भरने में बना जाते हैं। तुम्हारे किताब मुझसे बहुत पसन्द पायी है और मुझे तुम्हारे अगर सम्भावनाओं के बीच दिखायी पड़ते हैं इसलिए मैं तुम्हारे लिए एक प्रकाशक होने की कोशिश करूँगा और यह भी कोशिश करूँगा कि तुमको अच्छी से अच्छी शर्तें हासिल हो लेकिन मुझे डर है कि किसी शुरुआत में वह खत्म ज्यादा कुछ न हो सकेगी। जो शर्तें मुझे हासिल होगी मैं तुमको निर्भूँगा और अगर तुम मंजूर करोगे तो किताब प्रकाशक को दे दी जायगी। अगर यह किताब बल पाती है जैसी कि मुझ जम्मीव है तो धनसो किताब के लिए समझिन है उपाय अच्छो शर्तें हासिल हो सकें। दूसरे बाजारों की तरह वह बाजार भी धीरे-धीरे बनाना पड़ता है। हिन्दी जनता के सामने उपाय से उपाय आने की कोशिश करो। यही एक उपाय है कि जो मैं भी तुम्हें सुझ सकता हूँ। मैं तुम्हारे सङ्ग्रह की महत्व देता हूँ और मेरी बड़ी इच्छा है कि तुम पृथ्वी पंक्ति में आ जाओ।

तुम्हारा
प्रेमचंद

२१२

सरस्वती प्रेस, बनारस
२७ अप्रैल १९३२

प्रिय हनु

तुम्हारा बात पानर बहुत लुची हुई। तुम्हारी किताब पूरी हो गयी है। मैं आज इसकी प्रशामात्मक भूमिका लिख रहा हूँ। अगर तुम भी कोई धायुक्त बना जाओ तो जल्द से जल्द भेज दो। किताब को सी सप्ताहिस पाने की हुई है। तुम्हारा मनीषाकर मुझ सम्झैं में मिल गया था अगर बिद्विषी नहीं किसी और में तुम्ह

जवाब नहीं दे सता क्योंकि मुझे तुम्हारा पता जानुम नहीं था । हम लोग ३ अग्रेज को वहाँ से जसे धीरे-धीरे ऊपर-ऊपर जूमत जामते २४ तारीख को यहाँ पहुँचे । मैं परीक्षा में तुम्हारी सफसता के लिए प्रार्थना करता हूँ । अगर तुम प्रस्तावना हफ्ते भर के अन्दर भेज जा तो किताब पत्रह दिन में तुम्हारे पास पहुँच जायगी । तुम्हारी कैरियर हमेशा हमारे दिमा में रहेगी । मैं तुम्हें अपने ही बच्चों में से एक समझता हूँ । अगर मैं किसी तरह तुम्हारी मन्नत कर सकूँ तो बड़ी खुशी से करूँगा । तुम्हारी माता भी तुम्हें आशीर्वाद देती है ।

सस्नेह

तुम्हारा
प्रेमचंद

हंस क मार्च धंक में तुम्हारा भेज है ।

२२३

सरस्वती प्रेस, बनारस
१८ मई १९३१

प्रिय हनु

तुम्हारा पत्र । पचास प्रतियाँ देजने पागल से तुमको भेजी जा रही है । एक प्रति बड़ीका के पते पर रखना की गयी है । इन दिनों मैं अपने गाँव में हूँ । चैचक का बीरा मेरे घर में हुआ है । पहले बड़ा लड़का विरफ्तार हुआ उसका भार छोटा । वह घर भी बिम्बर में है ।

'घर की राह मेरी भूमिका के साथ छपी थी । तुम्हारी प्रस्तावना देर में पहुँची और नहीं ही जा सकी लेकिन तुम्हारा समग्र मुझका भज्जा नहीं लगा । तुम्हारी किताब मेरे बच्चों ने पसली ने मित्रों ने पसन्द की है । जिनने भी पत्री तारीफ की । समाजोचना के लिए उसे पत्रों के पास भेजा जा रहा है । मैं धारता करता हूँ कि समाजोचनाएँ जगजाह्निक होंगी । कुछ दो हजार प्रतियाँ छपी है । किसी हुई प्रतियों पर हर बार तुमको पत्रह की सही रायस्टी भिजेगी ।

मैं अपनी प्रस और कार्यालय इलाहाबाद में जा रहा हूँ और इसमें भारी राख जगेगा बर्ना मैं तुमको पेशगी कुछ भज्जा । तुम्हें पूरी सँजीवनी के साथ अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए । अगर तुम इस तरह की सिर्फ तीन बिनाबे सिंग लो तो अपनी जीविका भर के लिए काफी कमा लोगे । तुम्हारे भीतर बर चीज है मेरा मतलब बौद्धिक नामची मे है । संकल्प की तुममें बधी है । उसको समाधी ।

तुम्हें हंस में बराबर मिलते रहना चाहिए और मैं अपनी शक्ति में तुम्हें पुरस्कार देने की कोशिश करूँगा। तब दूसरे पक्षों में भी जल्द मित्रों। मगर कम-से-कम ऐसे सेवक अपनी अच्छी-से-अच्छी आज्ञा इस की मेरी इस उसकी इजारेगारी समझे।

मैं तब बाठाबरण में जा रहा हूँ इस उम्मीद में कि शायद मैं वहाँ पर कुछ बेहतर हालत में हो सकूँ। मगर मैं पनपता हूँ तो मेरे साथ तुम भी पनपाने।

बहु कितना बौटा में लगवाने के लिये क्वादा से क्वादा काटित करना।

हम लोग अच्छी तरह हैं बस यही बेचक का भरोसा है। तुम्हारी अम्मी की तुम्हें पाल बगती है और तुम्हें पालीप देती है।

सस्नेह

तुम्हारा

प्रेमचंद

२१४

हंस कार्यालय बनारस कैंट

१८ अगस्त १९३५

प्रिय इन्द्र

जानकर खुशी हुई कि तुम्हें काम मिल गया। अस्माजी ही सही धाने चल कर स्थायी हो जायगा। एक बन्धु ने अभी हाल में तुम्हारी पुस्तक की एक प्रत-छा-त्मक समालोचना लिखी है। जहाँ तक दूसरी समालोचनाओं की बात है उनमें से कोई भी काटकर रखने लायक नहीं। हमने उनमें से एक-दो अच्छे वाक्य निकालकर अपने विज्ञापन में बाल दिये हैं। शीघ्र उसे पसन्द कर रहे हैं लेकिन अब तक बाहर बहुत कम आये हैं। पुस्तक बिछोटाओं को हम तैयार प्रतिलिपि देते हैं। मगर तुम इस पुस्तक के बाहर से सबो तो हम दोनों मुलात्के को बाँट सकते हैं। उसकी लायक अच्छी प्रतिलिपि है। तुमको हम पत्र-ह प्रतिलिपि देने पुस्तक बिछोटाओं को तैयार प्रतिलिपि। विज्ञापन अच्छे पाँच प्रतिलिपि। धन्यवाद प्रतिलिपि इस प्रकार निकल गया। हमारे पास बस बाइस प्रतिलिपि बचा उसके साथ कैसा फँस जाने का कतरा लगा हुआ। इस बाइस प्रतिलिपि में से मैं तुम्हें कोई भी हिस्सा दे सकता हूँ। बितने बाहर तुम्हारी भावना मिलें उन पर तुम पत्र-पत्र प्रतिलिपि से सकते हो जिसमें तुम्हारी रायस्टी भी शामिल होगी। तैयार प्रतिलिपि तुम व्यापारियों को दे सकते हो और पत्र-ह प्रतिलिपि अपने रायस्टी को दे सकते हो। और साथ प्रतिलिपि और। तैयार प्रतिलिपि को बचे उसमें से तीस प्रति

एक छपाई और बिज्जी के कार्यों में जिसका बापसा और प्रकाशन संस्था के पास मुमकिन है पत्राक्ष प्रतिलिपि बन रहे हैं। इससे क्या बाकी कोई बात हो सकती है ? जैसा कि मैंने तुमसे कहा था मैं पेरोवर प्रकाशक नहीं हूँ और मैं कुछ स्टाफ तुम्हीं को पत्रपत्र प्रतिलिपि पर दे देने के लिए तैयार हूँ। जिसने आइए ले सको जा। एक-दो प्रतियों से काम नहीं लगेगा। छोटे आइए पर हम क्या कमीशन नहीं देते।

शक्ति-पूजा' तुम्हारे पास भेजी जायगी। पता नहीं मैंने जेने ले सब तक क्यों नहीं भेजी। शायद उस प्रक की प्रतिरिक्त प्रतियाँ नहीं हैं।

'जमती' बहुत सुन्दर है। मगर जैसा कि तुम जानते हो सब मेरे पास हिन्दी के लिए बहुत कम जगह है। अगर मुमकिन हुआ तो मैं उसे पहले ही प्रक में से भूँगा वहाँ बाइ के किसी प्रक में।

तुम्हारी माता जी ठीक हैं।

तुम्हारा
प्रमथर

२२५

अन्तर्गत बनारस

१३ दिसम्बर १९३६

प्रिय हम्

तुम्हारा पत्र कीई दो दिन हुए मिला। मैं पिछले दो महीनों के बिस्तर पर रुक हुए हूँ। बीर-बीरे मेरी बहुत ठीक हो रही है लेकिन इन कारिब हाने में कि मैं कुछ काम कर सकूँ अभी बहुत बजज लगेगा।

मैं जमानत जमा करके फिर हूँ निकालने जा रहा हूँ। और एक नयी पत्रिका निषाप्त का विचार मैं भी छोड़ दिया है। मुझ धारा है कि तुम बरा-बरा उसमें लिखते रहा करावे।

हात्परस की मुजराती कहानियों के बारे में मैं कुछ जानकारी चाहता था क्योंकि मैं भारतीय हात्परस पर एक पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित कराना जा रहा था। उनके अनुवाद का नाम मैं तुमका देना चाहूँगा। इन नाम के लिए मैं तुम्हें कुछ पुरस्कार भी दे सकूँगा। क्या तुम क्या करके इन पाँच कहानियों में से तीन सबसे अच्छी कहानियों का अनुवाद करके एक पत्रपत्र के भीतर मुझकी भेज सकोगे ? क्योंकि पुस्तक प्रम में जा चुकी है ? पूरा ध्यान लगाकर इन नाम को करना।

तुम्हारा

प्रमथर

शिवपूजन सहाय

२१६

सप्तमः

९ जनवरी १९९५

प्रिय शिवपूजन सा

हि ।

मिथा भी से धापके कमकता में सकुशल रहने का समाचार पत्र प्रसन्न हुआ । धापके बने जाने का बुन तो बकर हुआ क्योंकि अब मैं भी यहाँ बो-बार महीने रहना चाहता हूँ लेकिन यह कम कुली की बात नहीं कि धाप सानम है ।

‘फूलों की डाली’ यदि धापने देन भी हो तो कृपया उसे प्रेस में देने के लिए भेज दें । यदि धानी समाप्त न हुई हो तो सूचित कर कि कम एक भेज सकेंगे और यदि अवकाश न हो तो कृपया बिजें ताकि मैं ही टेढ़ा-सीधा देन बाब कर सकन करूँ । इस कष्ट के लिए जमा प्रदान कीजिये ।

मदबीम

बनपतराम

रंगमूमि के ४ फ़ोन बप बुने हैं ।

२१७

सप्तमः

९९ जनवरी १९९५

प्रिय शिवपूजन सहाय भी

हि ।

मुझे तो धाप भून ही गये । बीजिए जिस पुस्तक पर धापने कई महीने विमरु रेखी भी भी बहु धापकर ग्रहस्तन धरा करती हुई धापकी बिबमल में जाती है और धापसे बिबती करती है कि मुझे बो-बार बंटों के लिए एकल का समय बीजिये और एक धाप मेरी निस्तन भी राम काम करें बहु धपनी मनोहर भावा में कहूँ बीजिये ।

मैं अभी यही हूँ। बाबू बिनीश माता के निकालने के लिए पकड़ लिया गया हूँ। फास घाप होते तो बेसी बहार रहती। और इस माता के लिए यदि बाप कोई छोटी-मोटी इसन-हँसानेवासी चूहे जिसकी बीस-तीस की कमाती मिले तो बड़ा एहसान करें। मैं रंगभूमि पर घापकी धालोचना का बड़ी बेसबरी से इंतजार करूँगा।

मकड़ी

बनपठराय

२२८

लखनऊ,

१७ मार्च १९२२

प्रिय शिवपूजन जी
बरे।

रंगभूमि की धालोचना आपने अब तक न लिखी। इसकी मुझे आपसे रिक्ता मत है। मित्रा इसके प्रोग्राम क्या समझें कि आप उसे इस बोम्ब नहीं समझते। धारा है अब माधुरी या किसी अन्य पत्रिका के लिए अक्षर्य लिखेंगे।

एक बात धीरे धीरे की जरूरत मानूँ हूँ। वो तो 'मठवाला' मैं माधुरी पर लिख बो-बार छोटे उड़ा दिने जाते हैं पर अब की होली के धक में तो अपने सुबह धीरे सम्मता का धक ही कर दिया। धालके देखते यह धर्म ही इसका मुझे दुःख है। धालस की बोड़ी-सी चुहल जिसमें जिस बुरा हो बुरी नहीं लेकिन जब यह चुहल साहित्यिक मनीरजन की सीमा से निकलकर होय की हक तक पहुँच जाती है तो यही कहना पड़ता है कि यह हिन्दी भाषा का दुर्भाग्य है जहाँ ऐसे-एसे गंदे अपमानजनक 'अच्छ' सेवा निकालने में मरपारको को आपत्ति नहीं होती। मानूँ नहीं मठवाला के पाठको को हम लखों के कोई विराय दबि है या इस धमकल प्रकाश का धीरे कोई कागज है। बहरहाल जो कुछ हो यह बात बुरी है और अब उस हक से कभी भागे बड़ गयी है जिसे निश्चयी बरकर धर्म धमका जाय। दुलारे नाम धीरे माधुरी के धीरे सेवक कितन ही पण-गडरे हों पर वे हिन्दी की कुछ न कुछ सेवा धमक कर रह है और उनका नाम की बड़ न बरके लिये लिखी पड़ते रहना धालने को गुलामावता में धर्म सिद्ध करना है। मैं धालको यह धमक हमलिए लिखने का साहस कर रहा हूँ क्योंकि मैं धालको बहुत धाँके रिशों का परिचय होने पर भी धाला मित्र समझता हूँ और धालकी शिष्टता और सम्मता का ज्ञापन हूँ। यदि मठवाला की धालिनी में धालको कुछ दगल हो (धीरे धमका हमारे धाम प्रमाण है कि है) तो गुरा धीरे परमेश्वर के लिए

आप इस विमर्शिते को बद कर दें या करा दें। आप उस भावधी को जिसने यह सेवा लिया है फिर मठवाला म ऐसे सेवा मिलने का मौका न दोजिये। इस सेवा में उसने कुम्भी-कुम्भी चोर्टे की है और यहाँ कुछ लोगों की सलाह हो रही है कि मठवाला पर अपमान करने का बीजानी और छिन्नकारी अभियोग बताया जाय। अगर आपसे मे यह मौकत था यही तो क्या मजा रहा। मठवाला भी ईरान होना जवका मरा भी हिरन हो नामका और यहाँवासों को भी काफी मानसिक बदला होयी। मैं नहीं चाहता कि मित्रों में झूठियाँ चलें। लेकिन इसका रोकना मठ वाला के अपने हाथ में है। पारदर्श्व तो यह है कि यहाँ से कोई उत्तेजना न मिलने पर भी मठवाला को क्यों लगातार एक side box पर ऐसे मरसीस धाक-मका करने का सहास होता है। क्या उसमें महिमा-सम्मान मिलकुल नहीं रहा ?

माता है आप मुझे जमा करेंगे। मैंने का कुछ लिखा है मित्रभाव से लिखा है और आप उसे इसी भाव से देखियेगा।

माता है अपने कुटुम्ब महित सज्जुतल होंगे।

नवदीप
प्रेमचंद

२२६

बनारस सिटी

१२ जून १९९५

प्रिय शिवपूजन सहाय जी

दो दिन से बरे भीमर पर हाजिरी दे रहा हूँ पर दुर्जयनरत बरतन नहीं होते। इस वकत यह कहना है कि 'परीक्षा प्रस्तावनी' समाप्त हो गयी। इसके टाइमिंग देख कर फिक्र है। टाइमिंग पर क्या लिखा जायगा कामका कैसा लगाया जायगा ? कृपया ये बातें बरतना दीजिये। दूसरी कोई निष्ठाव नहि दे सकें तो पैका जामी है इसमें जमा हूँ। आप का बिल आपकी हूँ या सीधे महेरिमासराय भेजना होमा ?

आपका
बमपठ राय

२२०

सरस्वती प्रेस काशी

१६ जून १९९५

प्रिय शिवपूजन सहाय जी

यदि यह पुस्तक पैका मुझे हों तो कृपया भेज दें।

महेरिमासरायवालों ने मेरे पत्र का सब ठक जवाब नहीं दिया। मैं आप

उन्हें लिखकर यह पुस्तकेंगे कि परीक्षा प्ररमावली के लिए कैंसा कजर दिवा बायना ? और उस पर क्या सिखा जायगा ?

किन्नाय टीया हो जाती तो क्षपाई का बिल बगुल होता बरना मुक्त में देर होनी ।

घापका
बनपतराय

२२१

लखनऊ

६ अगस्त १९२१

प्रिय शिवपूजन जी

कृपा पत्र मिला । घाप 'उपन्यास' तरंग निकालने का रहे है, यह जानकर खुशी हुई । इस वक्त ठो मरने की भी फुलत नहीं है लेकिन मिर्झंगा बकर बग अवकाश मिल जाय तो ।

घापकी पाली की बीमारी का हाल सुनकर बहुत दुःख हुआ । इसके पहले पत्रों में भी यह समाचार पढ़कर चित्त दुखी होता था । घाप ही ऐसे जिन से सब कुछ है कि इतने कष्ट और बर्बके सहकर भी अपना काम किन जाने है । मैं तो कम का कंवा डाल चुका होता । सख्तों को उनकी सख्तता का यही पुरस्कार मिलता है ।

मैं भी ११ अगस्त तक बनारस जाता थाईना और तब लिखने का अवकाश प्यादा मिलेगा ।

और ठा सब कुशल है ।

घापका
बनपतराय

२२२

लखनऊ

१ अगस्त १९२०

प्रिय शिवपूजन महाय जी

बन्दे ।

घापका कृपा पत्र मिला । घापक सग क बिज ता बन गये सब सब का रैवहार है । घापकी सब खंडो में छुट्टी मिल गयी है बा-मीन रिज में मिग बापिण रिममें बैशान में अवरध छाया जाय ।

२२५ / शिवपूजन सहाय

इसके बाद और कोई लेन सोचिये । बंगला साहित्य पर एक मुन्तर सचित्र लेख की बड़ी जरूरत है । आप ही उसे लिख सकते हैं । मेरे प्रेस का ध्यान रखियेगा । यदि बेनीपुरी की धामे हों तो उनसे माबुटी के लिए 'विद्यापति' पर लिखने की याव विन्ता दीजिएगा उन्होंने बादा किया था । धारा है आप सानन्द होंगे ।

मधुरीय
धनपत राय

२२३

लखनऊ

१५ मार्च १९२७

प्रिय शिवपूजन सहाय
आपके लेख के बिना काम गये हैं । वैशाख का मीटर प्रेस में देने की जल्दी है । कृपाकर लेख शीघ्र समाप्त कीजिए । इस पत्र को तार समझिए ।

२२४

आपका

धनपत राय

लखनऊ

१६ मार्च १९२७

प्रिय महाशय
आपने अभी तक लेख नहीं भेजा । धाम वैशाख का मीटर प्रेस को दे दिया गया है । कोई सचित्र लेख तैयार नहीं था । इसलिए आपके लेख के आने की धारा से मैंने उसका नाम भी लिख दिया है । लेख न आया तो बड़ी बेर हो जायगी । इपा करके जल्द से जल्द और श्रैरम से पहले भेजिए ।

मधुरीय
धनपतराय

२२५

लखनऊ

१३ मई १९२७

प्रिय सिद्धपूजन सहाय धीर रामकृष्ण शर्मा जी साहबान

सुधा मे सारी सुनिमा का बोल धाप ही दोनों देवताओं के कंधों पर डाल दिया है क्या ? बाधे करके उन्हें पूरा न करना किताब बड़ा दुःख है । निराशा में जीव तो घाती है बाधे मे तो ठरप धीर कटक सब कुछ है । बंगमा स्नेह के लिए अब तक आशा कर ? भना एक पत्र ही लिखिए ।

आपका

बनफराज

२२६

लखनऊ

२ जून १९२७

प्रिय सिद्धपूजन सहाय

सेस मिमा फिर जी बचुरा । हमे मे धापाइ में हुँगा धीर एक ही बार धापाइ बयोंकि नये वर्ष मे नयी सौमसामा शुभ होती चाहिए । पर परि आप इतना ही धीर लिखें तो मे साधन धीर भागों के धकों न निकाल हूँ । हाँ उरा जल्दी कीमिएना । हम तो मे न लीटाऊंगा । आसके पास से फिर मिलेमा कैते । अगर धाप न लेबें तो बिबरा होकर इतना ही धापना पड़ेगा तब धाप कहें कि धापने धनुर सेस धाप दिया । भाव लीमिये अब धाप मेरे हाथ में है ।

धीर ता नब कुराल है ।

भवदीय

बनफराज

२२७

लखनऊ

१७ अक्टूबर १९२७

प्रिय सिद्धपूजन जी

आशाब ।

हृदयान्वित । धापने वरों यह लभक दिया कि धाप मेरी माता के लिए

कमो कुछ न मिल सकेंगे ? क्या आप ही अपने जीवन के बहाना हैं ? मैंने तो इधरी धारा से आपका नाम डाल दिया था । आप अगर आपह करेंगे तो निकालुंगा धम्यथा नहीं ।

श्री बाबस्पति पाठक का सेल मैंने पसन्द करके रख लिया है । ज्यों ही मौका मिला दे दूँगा । सेल के उत्तर होने में मन्देह नहीं । आपके बिना जो प्रशंसासिद्ध ये सीटा दिये गये हैं ।

आपने संबंध में मैं आपको क्या नोट्स दूँ । सिवाय मोटी-मोटी बातों के और क्या बातता हूँ । यह बातें आप भरे भाई साहब से पूछ सकते हैं । स्वभाव और चरित्र आदि बातें तो सम्पक ही से जानुम हो सकती हैं । दो-बार बार आपसे मेरी सेंट हुई है उसी आधार पर आप मुझे जो चाहे रूप दे सकते हैं । अगर कृपा करके कड़ी पाठक को उत्तु न बना होजियेगा ।

शेष दुःख है ।

भवदीय
जनपतराय

२२८

सकाय

१० दिसम्बर १९२७

प्रिय शिवपूजन जी
आज भाई बसदेव लाल के पत्र से यह शोक समाचार मिला कि आप जोठे से मिर पड़े हैं और आपके एक घर में कड़ी जोठ आयी है । नहीं तो वं० इच्छा बिहाटी जी ने यह शुभ सूचना दी थी कि आप ब्रजा बनन जा रहे हैं कहीं यह खबर । कौनी जोठ है ? क्या हड्डी पर तो खरब नहीं पहुँचा है ? ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपको शीघ्र ही चंगा कर दे ।
१८ ता को कारी धा रहा हूँ । ईश्वर करे उध बनन तक आप बनन रने समें ।

मिय जी भी आपसे सहबेचना प्रकट करते हैं ।

भवदीय
जनपतराय

२२५

सप्तमः

१३ मई १९२७

प्रिय शिवपूजन सहाय और रामकृष्ण तर्का जी साहबान

बुदा ने सारी बुनिया का मोम घाय ही दोनों बेलताघों के कंबों पर
झाल दिया है क्या ? बाहे करके उन्हें पूरा न करना किटना बड़ा जरूर है । निरुत्सा
में नींद तो आती है । बाहे में तो लड़प और लटक सब कुछ है । बंजला स्टेज के
लिए अब तक धासा करें ? मया एक पत्र तो लिखिए ।

आपका

बनपतराय

२२६

सप्तमः

२ जून १९२७

प्रिय शिवपूजन सहाय

सेब मिठा फिर भी घबूरा । इने में आपात में गुंवा और एक ही बार
घातूना बयोनि नवे वर्ष में नयी सेबमामा शुभ होनी चाहिए । पर यदि आप
इतना ही और सिर्फ ता में साधन और मावों के धंका व निकाल दूँ । हाँ उता
जल्दी कीजिएगा । इने तो मैं न लौगाऊँगा । आपके पास से फिर मिलेगा कंठे ।
भगर आप न मेरे लो बिबरा होकर इतना ही आपना पड़ेगा सब आप करेंगे
कि आपने घबूरा सेब घाय दिया । तोच मोजिये अब आप मेरे हाथ में हैं ।

धीर तो सब कुत्ताम है ।

अबदीश

बनपतराय

२२७

सप्तमः

१७ अक्टूबर १९२७

प्रिय शिवपूजन जी

आपका ।

इतनाच मिठा । आपका वनों यह गुमछ दिया कि धार बरी माना के दिए

कभी कुछ न निकल सकेंगे ? क्या आप ही अपने जीवन के बड़ा हैं ? मैंने तो इसी आशा से आपके नाम जान लिया था । आप धनर आग्रह करने का निकामेंगा सम्भव नहीं ।

श्री बालस्पति पाठक का लेख मैंने पसन्द करके रख लिया है । क्यों ही मोटा दिना है हुआ । लेख के उत्तर होने में मन्त्रेष्ट नहीं । आपके चित्र को सम्प्रसारित से जीटा दिये गये हैं ।

अपन लेख में मैं आपको क्या नोट्स हैं । विषय मोटी-मोटी बातों के और क्या जानता हूँ । यह बातें आप मेरे भाई साहब से पूछ सकते हैं । स्वभाव और चरित्र प्राप्ति बातें तो सम्पर्क ही से सामुह हो सकती हैं । दो-बार बार आपसे मेरी चेट हुई है उसी आशार पर आप मुझे जो चाहे रूप दे सकते हैं । मगर कृपा करके कहीं पाठक को उलझ न बना दीजियेना ।

शेव कुशल है ।

मन्वीय
जनपतराय

२२८

लखनऊ

१० दिसम्बर १९१७

मित्र शिवपूजन जी

आज भाई बलदेव मात के पत्र से यह शोक समाचार मिला कि आप कोठे में गिर पड़े हैं और आपको एक पैर में कड़ी चोट आयी है । कहीं तो पं० हृष्य बिहारी जी ने यह शुभ सूचना दी थी कि आप बड़ा बगने जा रहे हैं कहीं यह खबर । कैसी चोट है ? क्या हड्डी पर तो डरन नहीं पहुँचा है ? ईश्वर से आशना करता हूँ कि आपको शीघ्र ही चम्पा कर दे ।

१० ता० को जाती था रहा हूँ । ईश्वर करे उध वस्तु तक आप चमने ठिकने भयें ।

मित्र जी भी आपसे सहभेदना प्रकट करती है ।

मन्वीय
जनपतराय

२२६

सप्तमः

२६ अगस्त १९२८

प्रिय शिवपूजन सहाय जी

कृपापत्र मिला । आत्माओं का यथासाध्य प्रबंध कर लिया जायगा ।

प्रेम पर आपकी कृपाश्रुति होगी ही चाहिए । बर्मबाते का काम है । कुछ मजदूरों की रोटियाँ बनती हैं । आप भी इस घर के भाली हों ।

आपको यह सुनकर आनन्द होगा कि मेरी कई कहानियों के आपानी भाषा में अनुबाध प्रकाशित हुए हैं और वहाँ की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं । आपानी बनना ने उनका वही सम्मान किया है जो टामस्ताव और बेखन की कहानियों का करते हैं । पत्रों में खूब बरबा रही । मेरे पास जो पत्र आया है उसमें लिखा है—your stories were the sensation in the month of June.

आस्ता है, आप सलाम है ।

भवदीय

बनपत राम

२३०

बर्मबा

११ जनवरी १९३३

प्रिय बंधुवर

बंदे ।

आपका पत्र मुहल बरात के बाद मिला । बड़ी खुशी हुई । मैं बरात मना था । हिन्दी प्रचार लमा का बीछाल भाग्य था । वहाँ मे बर्मबा, मैमूर की मैर करता हुआ कम लीमरे पहर वहाँ पहुँचा । इगमिये उत्तर में डेर हुई । यह मर्यादा के चुनने पर बिलम्ब का अग्रगण्य जो आप न मनावेंगे ।

बालक का आग्नेयु धीक निरुप राहा है । पक्षी बाग है । बर्मा श्री जेम का आग्नेयु धीक निरुपने का प्रस्ताव कर रहे हैं । देनिंग बरा होता है ।

बालकों के लिए मेरा वही निवेदन है कि हमारा घर ही हमें अनुप्यता विगामे को सबसे बड़ी पाठशाला है । स्नेह और त्याग और खमा और शान्तिमता को

भावनाओं के विकास के लिये सुन्दर अवसर बार में मिल जाते हैं। उतने धीर नहीं मिल सकती। भावकों के सामने यही आवश्यक होता चाहिए कि वे अपने धर्मों को स्वर्ण बना दें अपने प्रेम से, नियम से, सद्भावपूर्ण से। इसी पाठशाला में कामयाब होकर वे संसार के विकास का काम में यत्न धीर धारण-संयोजन मात्र करेंगे।

भासा है आप सपरिवार सगर्भ है।

प्रमोद

२३९

शिवशक्ती सदन

बाबर, बम्बई १४

२६ जनवरी १९६५

प्रिय बंधुवर

नमः।

मेरी दो तस्वीरें लिखी हैं। एक तो बम्बई में दूसरी मैसूर में। एक आपके पास भेज रहा हूँ। भेज रहा हूँ।

बालक नये शीत से पशुधर धीर हंस में पीठ ठोकरा।

मेरा भापस आया तो है लेकिन आप इस में पड़ियेगा। दो-एक दिन में हंस भी पहुँचेगा।

उप ही से मेरी मुलाकात करीब न हुई धीर इस्वर करेगा ही। जो भावनी माँ-बहन की वाणी बता है उसे मैं इन्तजार ही नहीं समझता। है किसी तरह अपना निवाह किया जा रहे हैं। उनका कोई सिनेरिजो तो इन्तर मन्दर नहीं आया। मन्दर सुनता हूँ बुरा हाल है। मुझे तो यह साहज पसन्द नहीं आई। तीन-चार महीने किसी तरह धीर कर जायें तो घर को राह हूँ।

हंस में क्यों कोई दो पैर का सिमसिमा शुरू नहीं करते ?

भगवद्

शनपत राम

सद्गुरुशरण अवस्थी

२३२

सप्तमः

२५ नवम्बर १९३१

प्रिय सद्गुरुशरण श्री

काब मिला । जरा पटना चला गया था । मुम्बईसिटी के विद्यार्थियों के एक उत्सव में बुलाया था ।

इस लेख में बहुत से बिच परकाग होये । नास-बास संस्थाओं के नाम व्यक्तियों के । मैं चाहता हूँ कम से कम पाँच बिच तो दिखें ही जार्ज कौन-कौन से हों वह मैं छाँटकर निकालूँगा ।

हुँस का जनवरी का शंक 'आत्मकथा' होया । घाप भी घाय बीटी कोट बटना या कोई impression या कोई अनुभव भिन्न भेजने की कृपा कीजिएवा । १५ दिसम्बर से ही मैत्र छपने लगेगा । आपके पास जब तो बार्मान्त में घावेका ही पर मैं बिशेषरूप से घाघह कर रहा हूँ ।

मेरी पुस्तकों में या तो उपम्यास है या गल्प व मंचह ।

उपम्यास मेरे यह है—

१) सवन २) प्रतिमा ३) बाबाबन्ध

गल्प मंचह यह है—

१) प्रेम प्रतिमा २) प्रेम-डाइरी ३) प्रेम-तीर्थ ४) पाँच कृत ।

इसका प्रकाशक मैं खुद हूँ । प्रेम-डाइरी तो यह खुदी । अब यदि प्रेम-तीर्थ या जाय तो मुझे कुछ लाभ हा लगता है । आपके पास हमकी जाती निजबाई ? हम बिगम में जा खाणा हो वह बताइए तो वह बागबाई वगैरे । आपके पास ना प्रति मेत्र ही रहा हूँ । इस मंचह य एसी कोई बजानो नहीं है आ धारनिदरन हा ।

भवदीय

बनारसधर

२३३

सप्तमः

१५ मार्च १९३२

प्रिय सद्गुरुसरण्य जी
बंदे ।

कृपावश । बन्धुवाश ।

आपके पत्र से यह जानकर हृय हुआ कि मेरी कोई किताब स्वीकृत हुई । लेकिन यह नहीं जानूँ कि कौन-सी किताब ? बन्धु रघुपति महाय ने भी संसयवाचक शब्दों में पत्र कृप की स्वीकृति का समाचार लिखा था । यहाँ महात्म्य ओवर सिंह ने कहा 'सप्त मुमन हुआ । वास्तव में कौन किताब हुई यह आपने भी लिखने की कृपा न की । इंटर के लिए तो मेरी कोई किताब न हुई होगी । हाथरी के उठने का मुझे खेद नहीं है । वह तीन मास लगी । अब दूसरी पुस्तक के लिए स्वागत मिलना ही चाहिए ।

मैंने पं० मन्मदुलारे जी के लेख का अभाव 'हंस' में दे दिया । छप भी गया । २ तक था भी बायमा । साहित्य-समाज पर ऐसे आचार का सहन न किया जा सके इस धर्हकार को कोई हय है । मुझे आता है मेरा अभाव पड़कर धार प्रत्यक्ष होवे ।

मैं अग्रज के अंत तक यहीं रहूँगा फिर काशी जाता जाऊँगा और आभ्य-निवास के साथ कुछ लिखता रहूँगा । 'हंस' अभी जाने में है उसे स्वामी बनाने का संघोष करूँगा । अभी तो वह मेरी पुस्तकों की विषय भी जाने जाता है ।

आप कसमः कब तक था रहे हैं ?

भवनीय

वनवतरण

२३४

सप्तमः

१६ मार्च १९३२

प्रिय सद्गुरुसरण्य जी
बंदे ।

काश मिली । मेरी दो पुस्तकें स्वीकृत हुई । यह बड़े हर्ष की बात है । मन्मदुलारे स्वीकृत हुआ तो अच्छा ही है । इनमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं ।

आपको कहानी मने मँगवाकर पढ़ो और भेज दी। कहानी बच्चन-आत्मक हो गयी। अब कुछ आपने ही कहा। पार्श्वों को कुछ कहने का अवसर ही न मिला। जिस कहानी में पार्श्वों के सम्भाव्य से प्लाट बनता है वही अधिक रोचक होती है। कहानी कुछ सच्ची भी थी। कहीं-कहीं दिने परिवर्तन कर दिया है। यह प्लाट मैंने Justice Landray की किताब में देखा था लेकिन मिल न सका। इसके बाद आप जो कहानी लिखें उसमें वास्तवीय अधिक और कथा कम रखने की चेष्टा कीजिएगा।

आपके कलास में यदि साहित्यिक दृष्टि के छात्र हों तो उन्हें कुछ लिखने की प्रेरणा करते रहिए। मुश्किल कभी-कभी सुन्दर रूप लिख जाते हैं, जो इन लोगों से नहीं बन पड़ती। हमारी भीत प्रशंसा में है। गंभीरता और विचित्रता ही उनके मार्ग हैं।

राम पुस्तक है।

भवदीय
बनपनराय

२३५

हंस कार्यालय बनारस कैंट
१५ दिसम्बर १९३५

प्रिय मन्मथराय जी

धन्य है आप प्रत्यक्ष है। उन पुस्तकों की आलोचना आपने अभी तक भेजने की क्या नहीं की। मित्र जी का वक्तव्य है और काव्यात्मक कौमुदी की आलोचना भी इन जनवरी के अंक में जानी चाहिए। अब तो आपका म्युनिमिपल चुनाव में फुलमिल मिल गयी होगी।

आपका आलोचना गैर-वैय लख जनवरी अंक में जा रहा है।

भवदीय
बनपनराय

२३६

गणेशधर्म, लखनऊ

प्रिय मन्मथराय जी
बड़े।

मैं तो भ्रमणी न जा गया। एक छोटे से बट्टा रंग कर रहा है। फिर भी

२३३ / सद्गुरुसरस अचम्बी

बोलना नहीं जानता साहित्य के विषय में मये विचार भी मेरे पास नहीं हैं। जिसका प्रतिपादन करने के लिए चाठा।

मैंने अपने पत्र में अपनी रचनाओं और उनके प्रकारों के नाम लिखे थे जो आपने पूछे थे फिर लिखता हूँ।

पत्रक

१) सप्त सरोज शेष सादी प्रेम-पुष्पिमा

प्रेम-पञ्चीसी सेवासदन प्रमाणम

२) रंगभूमि प्रेम प्रसून कर्जसा

३) आकाश कथा (दो भाग) कायाकल्प
प्रम-तीर्थ प्रेम-प्रतिभा गजन पाँच पूज
प्रतिभा मत्प रत्न।

४) नवनिधि

५) निमला प्रेम-प्रमोद

६) बरदान

मेरी कहानियों का एक संग्रह सप्त सुमन है जो बनारस युनिवर्सिटी के दसवें सत्र में था। उसकी एक प्रति और प्रमतीर्थ की एक प्रति मैंने आपके पास भेजने का हूँ। साथ ही जगहों में भेजा हो।

सेप कुशल।

प्रकारक

हिन्दी पुस्तक एजेंसी कलकत्ता
मया पुस्तक भासा सलनऊ

सरस्वती प्रस काठी।

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कामलिय बंबई
बाँद कामलिय प्रयाग

हिन्दी ग्रन्थ मंडार बम्बई
हिन्दी ग्रन्थ युनिवर्सिटी के दसवें

मयवीर्य

जनपद राम

इन्द्रनाथ मदान

२३७

एल्जेनेड रोड, बम्बई
७ सितम्बर १९१४

प्रिय इन्द्रनाथ जी

अब मैं आपके प्रश्नों पर आता हूँ।

१) अपने घर की मेरी बचपन की स्मृतियाँ जिसकुल साधारण हैं न बहुत सुखी न बहुत उदास। मैं बाठ सास का था तब मैं भी नहीं रही। उसके पहले की मेरी स्मृतियाँ बहुत सुखी हैं, कब मैं बैठ कर अपनी बीमार माँ को देखता रहता था जो उसी ही मुहम्मदी और मौझा पड़ने पर उसी ही कठोर धी मितनी कि सब धन्नी मोएँ होती हैं।

२) मैंने उर्दू साप्ताहिकों में और फिर मासिकों में लिखना शुरू किया। लिखना मेरे लिए बस एक शौक की चीज थी। मुझे अपने में भी उदास न था कि मैं साप्ताहिक एक दिन लेखक बनूँगा। मैं सरकारी मुसाविम का और अपनी छुट्टी के बन्त सिला करता था। उपन्यासों के लिए मेरे घर पर एक न मुम्बईवासी मूक थी जो कुछ मेरे हाथ लगता मैं पढ़ कर आता उसमें कोई असे-बुरे का सुझाव करने की समीक्ष मेरे घर पर न थी। मेरा पहला लेख सन् १९०१ में और मेरी पहली किताब सन् १९०३ में आयी। इस साहित्य-रचना से मुझे अपने घर के लिए की मुठि क धनसा और कुछ न मिलता था। पहले मैं नममात्रिक बदलावों पर लिखता था फिर धर्म बतमान और अतीत बीमों के चरित्र के स्वर। १९०७ में मैंने उर्दू में कहानियाँ लिखना शुरू किया और मकपना न प्रोत्साहित शहर लिखता रहा। १९१४ में मुमर्ग में मेरी कहानियों के अनुवाद बिने और वह हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। फिर मैंने हिन्दी भाषा को और सरम्भनी में लिखन लगा। उसके बाद मेरा 'सिबायश्म' निकला और मैंने अपनी मौझी छोड़ दी और स्वतन्त्र साहित्यिक जीवन बिमाने लगा।

३) मरी मेरा किसी से कोई प्रणय नहीं हुआ। हिन्दी बहुत उपभोगे कारी थी और राटी बसना इतना जन्म का कि उसमें रोमान के लिए जगह

न थी। कुछ बहुत छोटे-छोटे मामले थे जैसे कि सब के होते हैं, पर मैं उन्हें प्रेम नहीं कह सकता।

४) स्त्री का मेरा भावार्थ त्याग है, सेवा है, पवित्रता है, सब कुछ एक में मिला-जुला — त्याग जिसका अर्थ नहीं सेवा सर्वत्र सह्य और पवित्रता ऐसी कि कोई कभी उस पर उंगली न उठा सके।

५) मेरे सामर्थ्य जीवन में रोमांच किसी कोई चीज नहीं है। बिमकुल साधारण ढंग की चीज है। मेरी पहली स्त्री का देहांत १९०४ में हुआ वह एक अमासी स्त्री थी तब मैं मुवर्जन नहीं और यद्यपि मैं उससे संतुष्ट नहीं था तो भी बिना सिकन्हा-शिकायत निग्रामे बस रहा था जैसे कि सब पुराने पति करते हैं। वह बच मर गयी तो मैंने एक बाल विधवा से विवाह किया और उसके साथ काजी चुकी है। उससे कुछ साहित्यिक अभिरुचि था गयी है और वह कभी-कभी कहानियाँ लिखती है। वह एक निरुद्ध साहसी समझौता न करनेवासी सीधी सच्ची स्त्री है दोष की सोमा तक बालित्वहीन और अत्यधिक धानुक। वह अत्यंत योग धान्दोलन में शरीर हुई और खेल गयी। मैं उसके साथ चुकी हूँ ऐसी कोई चीज उससे नहीं माँगता जो वह नहीं दे सकती। टूट गले बाप पर आप उसे मुका नहीं सकते।

६) — 'विष्णुजी मेरे लिए हमेशा काम रही है, काम काम काम। मैं जब सरकारी नौकरी में था तब भी अपना सारा समय साहित्य को देता था। मुझे काम करने में मजा आता है। पत्नी के साथ आते हैं जब वैसे की समझा था लड़ी होती है बर्गों में अपने नाम से बहुत संतुष्ट हूँ अपने प्राप्य से अधिक मुझे मिला। आर्थिक दृष्टि से मैं असुख हूँ, व्यवसाय में नहीं आगता और तभी से मुझे कभी सुटका नहीं मिलता। मैं कभी पत्रकार नहीं रहा लेकिन परिस्थितियों ने मुझे जबरन बनाया और जो कुछ मैंने साहित्य में किया था जो कि बहुत नहीं था सब पत्रकारिता में नष्ट हो गया।

७) कबालक मैं इस दृष्टि से बुलता हूँ कि मानव चरित्र में जो कुछ सुन्दर है, मर्यादा है वह समझकर सामने आ जाय। यह एक उलझी हुई प्रक्रिया है, कभी इसकी प्रेरणा किसी व्यक्ति से मिलती है या कभी किसी कृपा से या किसी स्वप्न से लेकिन मेरे लिए जरूरी है कि मेरी कहानी का कोई मनोवैज्ञानिक आधार हो। मैं मिथों के सुझावों का सर्वत्र सह्य स्वागत करता हूँ।

८) मेरे अधिकांश चरित्र बास्तविक जीवन से लिये गये हैं, जो उन्हें काफ़ी अच्छी तरह पहले में ढँक दिया गया है। जब तक किसी चरित्र का कुछ आधार-वास्तविकता में न हो तब तक वह सावा-सा अनिश्चित-सा रहता है और उसमें

बिश्वास पैदा करने की ताकत नहीं पाती ।

६) मैं रोमें रोमा की तरह नियमित रूप से काम करने में बिश्वास करता हूँ ।

१०) हाँ मेरा गोदान जल्दी ही प्रेस में जा रहा है । वह लगभग छः सौ पृष्ठों का होगा ।

भापका

प्रेमचंद

२३८

१६५, सरस्वती सदन, बाबर बगई—१४

२६ दिसंबर १९३४

प्रिय श्री इन्द्रमाध

भापका १९ तारीख का जवाब पाकर खुशी हुई । भापक सबासो के जवाब उसी रूप से नीचे देने की कोशिश करता हूँ —

१) मेरी राय में 'रंमभूमि' मेरी कृतियों में सबसे धम्यी है ।

२) मेरे हुए उपन्यास में एक आधार बरिज है जिसमें मानव दुर्बलताएँ भी हैं और गुण भी पर मूलतः आधार । प्रेमचंद में आत्महंकर है, रंमभूमि में सुरक्षा है । उसी तरह कामाक्ष्य में आकर्षण है कर्मभूमि में अमरकान्त है ।

३) मेरी कहानियों की कुल संख्या लगभग साईं भी है । अप्रकाशित कहानियाँ मेरे पास एक भी नहीं हैं ।

४) हाँ मेरे ऊपर टास्टर हूँ जो भी रोमा रोमा का असर पड़ा है । जहाँ तक कहानियों की बात है शुरू में उनकी प्रेरणा मुझे डाक्टर रबीन्द्र नाम से मिली थी । पीछे मैंने स्वयं अपनी शैली का विकास कर लिया ।

५) मैं अभी मंत्रीवर्गी से नाटक लिखने की कोशिश नहीं कर रहा । मैंने एक ही कहानी की कल्पना की थी कि भरे बिचार में नाटक के लिए अधिक उपयोगी हो सकते थे । नाटक का महत्व समझा हो जाता है अगर उसे रोमा न जाय । हिन्दुस्तान के पास रंमच नहीं है बिशेषतः हिन्दी और उर्दू के पास । रंमच के नाम पर मुर्दा पारसी स्टेज है जिसके नाम में मुझे जीन होना है । इनके अभाव में अभी नाटक की टेबनीज और रंमच की कला के लक्षण में नहीं आया । इसलिए मेरे नाटक लिखे पड़े जाने के लिए य । क्यों न मैं ध्यान उपन्यासों में ही बिषय रखूँ जिसमें मुझे नाटक से नहीं प्यारा गुंजाइश करने बरिज के उद्घाटन के लिए मिलती है । इसीलिए मैंने अपने बिचारों के बाह्य के रूप में

रूपम्यास को पसन्द किया है। धन भी मुझे उम्मीद है कि एक-दो नाटक लिखूंगा। जहाँ तक धार्मिक सफलता को बात है हिन्दी या उर्दू में यह लिख बूढ़े से नहीं मिलती। धाप बदनाम हो सकते हैं पर धार्मिक रूप से स्वतन्त्र किन्हीं प्रकार नहीं। हमारे बनता में किताब करीरने की कम्पजोरी नहीं है। एक तरह की मुश्किल उशासीनता मुस्ती और बौद्धिक घातस्थ छाया हुआ है।

१) सिनेमा ग्राह्यिक व्यक्ति के लिए कोई बगह नहीं है। मैं इस साइन म यह तोचकर धाया कि इनम धार्मिक रूप से स्वतन्त्र हो मरने का कुछ मौजा बा लेकिन धन में बेकता है कि मैं थोड़े म बा धीर में बापम धपने साहिर को लौटा बा रहा है। मय तो यह है कि मैंने सिक्का कभी बन्द नहीं किया उसको मैं धपने जीवन का मध्य ममम्ना है। मिलेमा मेरे लिए बीवी ही बीज है बीवी कि बकातत होती धमर इतना हो है कि यह धार्मिक स्वस्थ है।

७) मैं कभी जेल नहीं गया। मैं कर्मजोष का धासी नहीं हूँ। मेरी रचनाओं न कई बार सला का भाषेता बगाया है। मेरी एक-दो किताबें जस्त हुई थीं।

८) मैं सामाजिक विकास न विरबाम रबता हूँ हमारा उद्देश्य जनमत को शिचित करना है। व्यक्ति क्याश समझदार जपाओं की धसफलता का नाम है। मेरा धायस समान वह है जिसमें सबको समान धवसर मिले। विकास को सोइकर धीर किट करिये से इस इन मंजिम पर पहुँच सकते हैं। लोगों का धरिष ही लिखायिक रूप है। कोई ममाज-बजबत्वा नहीं पमप सकती जब तक कि इन ध्यनितस समत न हों। कहना सम्बेहात्य है कि ज्ञान से हम कहीं पहुँचने। यह हो सकता है कि हम उनके धरिये धीर भी भुरी डिक्टेटरशिप पर पहुँचें जिसन रंजनाय व्यक्ति-स्वाधीनता न हो। मैं रंग-रंग सब बरल देना चाहता हूँ पर ध्वंस नहीं करता चाहता। धमर मुझमें पूर्ब ज्ञान की शक्ति होती धीर मैं समझता कि ध्वंस के धरिये हम स्वममोक में पहुँच जायेंगे तो मैं ध्वंस करने में भी धायन-रीधा न करता।

९) सबहारा बग में तसाक एक धाय बीज है। तयाकचित ऊँचे बगों में ही इन समस्या ने ऐसा मन्मीर रूप से लिया है। धपने धन्धे-से-धन्धे रूप म बिबाह एक प्रकार का समझीठा धीर समपण है। धमर कोई ध्यनित मुसी होना चाहते हैं तो उन्हें एक-दूसरे का मिहाज करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे भी लोग हैं जो कि धन्धे-से-धन्धे परिस्थितियों में भी कभी सुनी नहीं हो सकते। धारप धीर धमरिका में तलाक धनहोमी बीज नहीं है। बाबनुप सारी काटशिप धीर धाधारी के सान एक-दूसरे से मिलने-जुमने के। पति-पत्नी में से किसी एक को मरने के लिए तैयार होना ही पड़ेगा। मैं यह मानने से इनकार

विश्वास पैदा करने की ताकत नहीं होती ।

६) मैं रोम रोमाँ की तरह नियमित रूप से काम करने में विश्वास करता हूँ ।

१०) हाँ मेरा योदान अच्छी ही प्रेस में जा रहा है । वह लगभग साँ सौ पृष्ठों का होगा ।

भापका
प्रेमचंद

२३८

१६५, सरस्वती लवण, बाबर बंबई—१४

२६ दिसंबर १९३४

प्रिय श्री इन्द्रनाथ

भापका १६ तारीख का खत पाकर खुशी हुई । आपके सवालों के जवाब उसी रूप से नीचे देने की कोशिश करता हूँ —

१) मेरी राय में 'रंगभूमि' मेरी कृतियों में सबसे अच्छी है ।

२) मेरे हर उपन्यास में एक भावना चरित्र है जिसमें मानव बुद्धिताएँ भी हैं और कुछ भी पर मूलतः आधारित । प्रेमाश्रम में जानलकर है, रंगभूमि में शूरपाव है । उसी तरह कामाक्ष्य में बल्लभ है कमभूमि में अमरकान्त है ।

३) मेरी कहानियों की कुल संख्या लगभग साँ सौ है । प्रकाशित कहानियाँ मेरे पास एक भी नहीं हैं ।

४) हाँ मेरे ऊपर टास्टराट बिकर हूँ गो और रोम रोमाँ का असर पड़ा है । वहाँ एक कहानियों की बात है, शुरू में उसकी प्रेरणा मुझे बाल्जर रवीन्द्र नाथ से मिली थी । पीछे मैंने स्वयं अपनी छोटी का विकास कर लिया ।

५) मैंने कभी मंजीरगी से नाटक लिखने की कोशिश नहीं की । मैंने एक दो बाल्जरों की कल्पना की थी कि जरे विचार में नाटक के लिए अधिक उपयुक्त हो सकते थे । नाटक का महत्त्व समझा हो जाता है अगर उस योजना का आय । हिन्दुस्तान के पास रंगमंच नहीं है विशेषतः हिन्दी और उर्दू के पास । रंगमंच के नाम पर मुझी पारसी स्टेज है जिसके नाम में अच्छे लोग होना हैं । इसके अलावा मैं कभी नाटक की टेबनीक और रंगमंच की कला के सम्पर्क में नहीं आया । इसलिए मेरे नाटक सिर्फ पढ़ जाने के लिए थे । वहाँ मैंने अपना उपन्यासों में ही बिना राहूँ जिसमें मुझे नाटक से नहीं उठाना मुझारत करने चरित्रा के उद्घाटन में प्राप्त मिलती है । इसीलिए मैंने अपने चिन्तनों के बाह्य के रूप में

जाम्प्यास को पसन्द किया है। धन भी मुझे उम्मीद है कि एक-दो माटक मिलूँगा। जहाँ तक धार्मिक सफलता की बात है, हिंदी या उर्दू में यह लिख डूँके से नहीं मिलती। आप बरनाम हो सकते हैं पर धार्मिक क्यूसे स्वतन्त्र किसी प्रकार नहीं। हमारी जगता में किताबें लीखने की कमजोरी नहीं है। एक तरह की मुबनी जमातीयता सुस्ती और बौद्धिक धामस्य छाया हुआ है।

१) मिनेमा माहिरियक व्यक्ति के लिए कोई जयह नहीं है। मैं इस लाइन में यह सोचकर धाया कि इनम धार्मिक रूप से स्वतन्त्र हो मरने का कुछ मौना का मेकिंग धन मैं देखता हूँ कि मैं धोके म का धीर मैं आपम अपने साहित्य को लौटा जा रहा हूँ। मज तो यह है कि मैंने लिखना कभी वन्द नहीं किया उसको मैं अपने जीवन का सच्य ममम्ता हूँ। मिनेमा मेरे लिए बीटी ही बीज है जैनी कि बकाजत होती अन्तर इतना हो है कि यह धार्मिक स्वस्थ है।

७) मैं कभी जेल नहीं गया। मैं कर्मचोन का भादमी नहीं हूँ। मेरी रचनाओं में कई बार सला का धात्रपेश जगामा है। मेरी एक-दो किताबें बन्द हुई थीं।

८) मैं सामाजिक विकास म विरबाम रजता हूँ। हमारा उद्देश्य जगमज को सिखित करना है। ज्ञानि क्याना समझदार जपायों की बसकमता का नाम है। मेरा धादश समाज बहु है जिसमें सबको समान धाबसर मिले। विकास की धोड़कर और किस जरिये से हम इस मौजिल पर पहुँच सकते हैं। लोगों का जरिब ही निर्लायक तत्व है। कोई ममाज-जबस्था नहीं पमप सकती जब तक कि हम व्यक्तिता उभाव न हों। कहना समेहमस्य है कि ज्ञानि से हम कहाँ पहुँचेंगे। यह हो सकता है कि हम उनके जरिये धीर भी बुरी डिजिटरशिप पर पहुँचें जिसमें रचनाय व्यक्ति-स्वाधीनता न हो। मैं रंग-रंग सब बदन देना चाहता हूँ पर ज्वंस नहीं करना चाहता। अगर मुझमें पूव ज्ञान की शक्ति होती धीर मैं समझता कि ज्वंस के जरिये हम स्वगलोक में पहुँच जायेंगे तो मैं ज्वंस करने में भी धामा-धीक्षा न करता।

९) सवहाय धम में उभाव एक धाम बीज है। तपाकजित ऊँचे जगों में ही इस समस्या में ऐसा मग्गीर रूप से लिया है। अपने धम्मी-से-धम्मी रूप म जिवाह एक प्रकार का समझौता धीर समपण है। अगर कोई ब्यक्ति सुखी होना चाहते हैं तो उन्हें एक-दूसरे का निहाज करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे भी मौम है जो कि धम्मी-से-धम्मी परिस्थितियों में भी कभी सुखी नहीं हो सकते। योरप धीर अमेरिका में तलाक धनहोमी बीज नहीं है। बाजबूब सारी शोटसिप धीर धाजारी के साथ एक-दूसरे से मिलने मुझने के। पति-पत्नी में से ज्यी एक को मरने के लिए तैयार होना ही पड़ेगा। मैं यह मानन से इनकार

करता हूँ कि केवल पुण्य ही चोपी है। ऐसे भी सवाहरण हैं जहाँ स्त्रियाँ मगड़ा पैदा करती हैं तरह-तरह की शिकारियों की कल्पना कर लेती हैं। जब यह निश्चय नहीं है कि तलाक से हमारे वैवाहिक जीवन की मुरादों का इलाज हो पायगा तो ऐसी हालत में मैं उस बीज को समाज पर लाटना नहीं चाहता। यह ठीक है कि ऐसे भी केस हैं जहाँ तलाक अनिवार्य हो जाता है। मगर 'मेस न बैठना' मेरी समझ में नफ़्तेपन के बसाला और कुछ नहीं। तलाक जिसमें बेचारी पत्नी के लिए कोई व्यवस्था नहीं है—यह माँग केवल कम्पा व्यक्तिवाद की धोर से आ सकती है। समता पर आधारित समाज में इस बीज के लिए कोई जगह नहीं है।

१०) पहले मैं एक परम सत्ता में विश्वास करता था विचारों के निष्कर्ष के रूप में नहीं केवल एक जले घाटे हुए कड़िबारी विश्वास के तले। वह विश्वास अब खंडित हो रहा है। निस्सन्देह विरल के पीछे कोई हाथ है लेकिन मैं नहीं समझता कि उसको मानव व्यापारों से कुछ लेना-देना है। उसी तरह जने उसे चींटियों या मक्खियों या मच्छरों के झमेलों से कुछ लेना-देना नहीं। हमने अपने आप को भी महत्व दे रक्खा है उसके पीछे कोई प्रमाण नहीं है।

मुझे समीह है कि किमहास इतना काफ़ी होना। मैं धर्मवी का पंडित नहीं हूँ इसलिए मुमकिन है कि मैं जो कुछ कहना चाहता था उसे व्यक्त न कर सका होऊँ लेकिन उस पर मेरा कोई बल नहीं है।

आपका
प्रेमचंद

उपेन्द्रनाथ अश्व

२३६

गणेशगङ्गा, लखनऊ

२१ फरवरी १९३२

प्रिय बंधु

आशीर्वाद : माफ़ करना तुम्हारे दा खत आये । मिस्त्री की बेंचो मैंने पढ़ा था और बहुत पसंद किया था । तुमने उर्दू का एक छोटा-सा चुल्हूमा देखा था मैं उसे हिन्दी में देख रहा हूँ मगर हिन्दी में वो बीजें तुमन सेबी हैं उनमें अभी जवान की बहुत आमी है । हिन्दी के पत्र देनेने रहोये तो माफ़ छ महीने म य भुटियाँ दूर हो आवेंगी । कोई कहानी हमारे लिए हिन्दी में लिखो अगर कहानी हो कौसी नहीं या अगर किसी महान् व्यक्ति का जीवन-चरित्र हो वा उससे भी काम चल सकता है, मगर मेरी सलाह ता यही है कि अभी बहुत खाना लिखने के मुकामल में मिस्टरजर और क्रिस्तासको का अध्ययन करते जाओ क्योंकि इस बक़्त का अध्ययन ज़िन्दगी भर के लिए उपयोग होगा ।

और तो सब सैरियत है ।

शुभैषी

बनपतरान

२४०

गणेशगङ्गा, लखनऊ

२३ मार्च १९३२

मिस्टर उर्दे

आशीर्वाद ।

कई दिन हुए, तुम्हारे हिन्दी कहानी मिल गयी । हमके पहले 'फूँव का संशय' उर्दू की बीज मिली थी । मैं इस हिन्दी कहानी में अच्छी सुधार करके इस में देख रहा हूँ लेकिन तुमन ग़रेज़ का बिना किसी कारणों के शारी करत पर आमाश कर दिया । यह शारी सं बेखार है, बिबाहित जीवन का पूरा बेकफ़र उसकी लबीयत और उरामोन हो जाती है, फिर यक़ीनक यह शारी करत पर

करता हूँ कि केवल पुरुष ही बोपी है। एमे भी उदाहरण है जहाँ स्त्रियाँ भगवाँ पैदा करती हैं तरह-तरह की शिकमशर्तों की कल्पना कर लेती हैं। जब यह निरर्थक नहीं है कि समाज से हमारे वैवाहिक जीवन की कुराहियों का इमान हो जायगा तो ऐसी हस्तत म में उस चीज को समाज पर लागू नहीं चाहता। यह ठीक है कि ऐसे भी केस हैं जहाँ समाज अनिर्धार्य हो जाता है। अगर 'मेल न बैठना' मेरी समझ में मरकचड़पन के घनावा और कुछ नहीं। समाज जिसमें बेचारी पत्नी के लिए कोई व्यवस्था नहीं है—यह माँग केवल सम्यक् व्यक्तिवाद की ओर से आ सकती है। समाज पर आचारित समाज में इस चीज के लिए कोई जगह नहीं है।

१०) पहले मैं एक परम सत्ता में विश्वास करता था विचारों के निष्कर्ष के रूप में नहीं केवल एक जैसे घाटे हुए कड़िबारी विश्वास के तले। वह विश्वास अब खंडित हो रहा है। निस्सन्देह विश्व के पीछे कोई हाथ है लेकिन मैं नहीं समझता कि उसको मानव व्यापारों से कुछ लेना-देना है। उसी तरह जैसे उसे चींटियों या मक्खियों या मच्छरों के धमेलों से कुछ लेना-देना नहीं। हमने अपने धर्म की जो महत्व है रखता है उसके पीछे कोई प्रमाण नहीं है।

मुझे उम्मीद है कि किमहाल इतना काफ़ी होया। मैं आगे की बातें पेश नहीं हूँ इसलिए मुमकिन है कि मैं जो कुछ कहना चाहता था उस व्यक्त न कर सका होऊँ लेकिन उस पर मेरा कोई बल नहीं है।

आपका
प्रेमचंद

उपेन्द्रनाथ अशक

२३६

पालेसमन्त्र, लखनऊ

२६ फरवरी १९३२

प्रिय बन्धु

आशीर्वाद । माफ करना तुम्हारे बाँझ बंधे । 'मिरती की बीबी' मैंने पढ़ा था और बहुत पसंद किया था । तुमने उन्नी का एक छोटा-सा चुन्नी-सा मेरा था मैं उसे हिन्दी में दे रहा हूँ मगर हिन्दी में जो बीबी तुमने भेजी है उनमें धर्मो ज्ञान की बहुत तारीफ है । हिन्दी के पक्ष देखते रहोगे तो सारा धर्म महीने में य भुटियाँ दूर हो जायेंगी । कोई कहानी हमारे लिए हिन्दी में लिखी मगर कहानी हो कैसी नहीं या धर्म किसे महान् व्यक्ति का जीवन चरित्र हो तो उससे भी काम बन सकता है मगर मेरी सलाह तो यही है कि धर्मो बहुत क्लेश लिखने के मुकाबले में लिटरेचर और फिमासली का अध्ययन करते जाओ क्योंकि इस बंधु का अध्ययन हिन्दी भर के लिए उपयोगी होगा ।

और तो सब खैरियत है ।

शुभैषी

जनपदपत्र

२४०

पालेसमन्त्र, लखनऊ

२३ मार्च १९३२

द्विज उर्दू

आशीर्वाद ।

कई दिन हुए, तुम्हारी हिन्दी कहानी मिल गयी । इसके पहले 'पूज' का प्रकाश उर्दू की बीबी मिली थी । य हम हिन्दी कहानी में अच्छी सुधार करके इस में दे रहा हूँ लेकिन तुमने नरेंद्र की बिना काफी कारखानों के शरीर बन पर प्रामाण्य कर दिया । यह शरीर से बेखार है, बिबाहित जीवन का वृत्त देखकर धर्मो तबीयत और उदासीन हो जाती है फिर यकामक वह शरीर करने पर

बिंदी-पत्री | २४०

तैयार हो जाता है। मनुष्य इसलिए कि उसकी योग्यता ही यही है। शारी के बाव
का जीवन बहार संवर है लेकिन यह कौन कह सकता है कि जिन मिर्चा-बोरी को
उसमें मड़ते देखा था उनका जीवन भी जीवन की पहली मनुष्यता में इतना ही
आकर्षक न रहा होया ? मुझे कोई ऐसा सीन दिखाना चाहिए था जिसमें इसल
की अपना प्रेमसापन घसड़ा हो जाता था मिर्चा-बोरी में जंग होने पर भी उनमें
कुछ ऐसा आरिक्तिक सौंदर्य होता जो इंसान को शारी की घोर फुफ्फुले पर बिजग
करता। मौजूदा हावत में किम्सा Convincing नहीं है। 'फूल का संजाम
इसमें प्रस्था है, उसमें एक मुकता है, एक चिरंतन सत्य है लेकिन उधू लेकर मैं
क्या करूँ।

पढ़ने के लिए लाइब्रेरी में से साइकासोबी पर कोई किताब ले ली स्तूनी या
कोई की किताब नहीं। बनी एक किताब निकली है The Aspects of a Novel
इस विषय पर अच्छी किताब है। मतलब सिर्फ यह है कि इंसान उबार बिचारी
बाला हो जाय उसकी संवेदनाएँ व्यापक हो जायें। डाक्टर टीयर के साहित्यिक
और बालीनिक निबंध बहुत ही प्राला हों के हैं रोमाँ रोमाँ का 'बिबेकमन
बकर पडो उसकी 'याबी भी पढ़ने के काबिल है मार्स के साहित्यिक जीवन
वरिज नाकबाव है डाक्टर राजाकुण्डु की बर्तन संबंधी किताबें टात्मदार्ढ्य का
What is Art बरीर किताबें बकर देखनी चाहिए।
डाक्टर साहब से मेरा मतलब कहना। मैं एक हिन्दी किम्सा जिन रहा हूँ
बहु आपके लिए बकर है।

गुम्हार वीरप्रवेश
बनपराय

२४१

सरस्वती प्रेस काशी
१४ फरवरी १९१४

प्रिय ज्योत्सना जी
भारतीबाब। एक मुहल के बाद गुम्हार लत मिला जिसे पढ़कर डूनी बिना
पैसा हो गयी। मेककों के लिए यह बड़ी आश्चर्यजनक बात समझा है। बामदा जब
सहल कराय हो जाये। हिन्दी में प्रबुधारी की हावत उधूँ से बेहतर नहीं है। मैं
मुद हो प्रमदाग निकल रहा हूँ और दोनों में बराबर जाया था रहा है यही तक
कि प्रब जी बेकार हो गया है और बाहता है कि किसी तरह खूबसूरती में नवाज
या जाऊँ। आपको मैं इसके निचा और क्या मतबिरा दे सकता हूँ कि हम-गीब

अजमाने हिन्दी में निकल जाने कीजिये इसके बाद गालिबन् आप से एडिटर साहिबान अकसाने मांगने लगेंगे और शायद कुछ मिलने की जगह मगर आपत निहायत हीसतापमत्त करनेवासी है। बुकसेलरों का तबुर्बा आपको बीसा कहना हुआ उससे ज्यादा कहना मुझे हो रहा है। यह तीरभराम मेरे डेढ़ ली रुपये दबाये बैठा है पचास रुपये महज धनबापत के उसके बिम्बे निकलते हैं मगर देने का नाम नहीं लेता। एक दूसरा बुकसेलर सादीर ही न मेरे करीब सत्त ली रुपये हजम करना चाहता है। धनबापत का यह हाल है और बुकसेलरों का यह हाल बेबापत सेलक क्या करे। मेने तुम्हारा अजमाना 'हुंस' में दिया है कहीं-कहीं बकल की इसलाह करनी पड़ी मगर दस-पाँच अकसाने निकले मगर किताब के निकलने में भी विफल होगी। और क्या लिखू मुझे तुम्हारी जो कुछ हमदार हो सकती है उसके लिए हाजिर हूँ।

मुभाफासी
प्रमर्ब

२४२

सरस्वती प्रेस, बनारस
६ जुलाई १८९६

प्रियर उपेन्द्रनाथ

हुमा। तुम चाम्मुख कर रहे होगे कि मन मुम्हारे बात का जबाब क्यों नहीं दिया। बात यह है कि मैं पंद्रह दिन से कैरिय बिस्तर हो रहा हूँ। हाजमे की शिकायत है जिनर और तहाल की जराबी कोई काम नहीं करता। तुम्हारी परेशानियों का किस्सा पढ़कर रब हुआ। इस महाजमी दौर में पैसे का न होना बडाब है, जिन्दगी खराब हो जाती है लेकिन हमके साथ यह भी न चलना कि करीबी और मुसीबतों का एक धक्काभी पहनु भी है इन्हीं आबमाशतों में हमान इन्मान बनता है उसमें मुर-एतमाही पैदा होती है।

हिन्दी में जो बही कैम्पिल है जो उबू में। किताबें नहीं बिकतीं। पब्लिशर कोई भरी किताब आपते नहीं। असम पर जिम्मा रहना मुश्किल हो रहा है। बन किसी बखबार में जान देने के निवा और कोई रास्ता नकर नहीं धाता। मगर भावनी का कानू हो तो किसी बेहात में जा बीठे। जो एक आनवर पाल में कुछ खेती कर से और जिम्बगी गाँववालों की जिद्दमत में गुजार दे। सहर में रहकर सासकर बड़े सहर में तो सहर जिन्दगी सब कुछ तबाह हो जाती है। दिन हाज इतना ही। बक गया हूँ। सब सेटूँगा।

मुभाफासी
प्रमर्ब

मदत आनन्द कोसल्यायन

२४३

काशी

१४ फरवरी १९३५

प्रिय आनन्द जी

आपका नोट मिला। बन्धुवाद। इसकी बकरत भी। आपूँसा। हाँ सिरम साहित्य के विषय में अगर कोई सेल सेल सके तो बड़ा अच्छा हो। उसे तो हम कुछ जानते ही नहीं। उसका कुछ आलोचनात्मक इतिहास ही हो ही कोई हुआ नहीं।

अगर इंग्लैण्ड आये तो वहाँ से बीस साहित्य पर एक अच्छा-सा लेख मिले केवल उसके कम-साहित्य पर नहीं बल्कि बीसकाजीन साहित्य पर। ऐसे लेख की बड़ी बकरत है।

आशा है आप प्रसन्न हैं।

आपका

प्रेमचंद

काशी

अगस्त १९३५

प्रिय आनन्द जी

क्या आप समझते हैं अंग्रेजी की गुलामी से भारतीय परिपक्व मुक्त हैं? जब कावेस की सारी लिखा-पढ़ी अंग्रेजी में होती है, तो भारतीय परिपक्व तो चंदी का बच्चा है। मन्त्री की हिनगी नहीं जानते अगर हिन्दी के बहुत अक्षर्य हैं। अगर आप ऐसे भक्तों को बचाएँ तो वह भाग लगे होंगे।

‘हंस’ सितम्बर से सस्ता साहित्य देखनी सं प्रकाशित होगा। मैंने उसके सम्पादन से इस्तीफ़ा दे दिया है। मैं इस पर एक महीने से बीमार हूँ।

अगर अच्छा हो गया तो यहाँ में अपना एक नया पत्र प्रायतन सेलक मंड की बिचारबारा व अनुसार निकालूँगा।

मुझे आशा है, इस नयी योजना में आपकी मदद पर भरोसा कर सकूँगा।

आपका

प्रेमचंद

विष्णु प्रभाकर

२४५

सरस्वती, प्रेस काशी

१७ दिसंबर १९३२

प्रियवर

'मत्तुतोडार' नामक गल्प मिल गई थी। स्वरक्षित है। मैं चेष्टा करूँगा कि उसे जल्द प्रकाशित करें। कार्यालय में मर्पें बहुत घाटी हैं, इससे किताबें ही मिर्चों की रखनाएँ पड़ी रह जाती हैं।

मधवीप

प्रेमचन्द

२४६

सरस्वती प्रेस काशी

१३ जनवरी १९३३

प्रियवर

आप के लेख और पत्र मिले। कविताओं में तो खूब श्रम है और कहानी चरित्रात्मक हो गई है। यह तो गल्प न होकर गल्प का सुबह प्लाट है। आप इन गल्प के रूप में निम्न लेखें। गल्प में समापन का भाग (अधिक) बखान लय होना चाहिए। खर है इसे न छाप सकूँगा।

हिम्मत में जायराण का प्रचार निम्नी मातबर एजेंट द्वारा करने की चट्टा दीजिए।

मधवीप

प्रेमचन्द

२४७

आखी

२१ अप्रैल १९३३

प्रियवर

बन्धुवन्धु । आपके सेवा ध्यापना तो चाहता हूँ पर जिस रूप में वह है उस रूप में नहीं । चाहता हूँ कि कुछ बना कर आपूँ सेकित बनाना समय चाहता हूँ और समय का यहाँ बड़ा टोटा है । बहुत जोबता हूँ वही नहीं मिलता । ईश्वर की भाँति धनुर्य हो गया है । इतना ही समझ लीजिए कि अच्छी बीज पाकर सप्ताह तक तुरंत खापता है । बिनाम नहीं करता । जब कोई बीज उसे नहीं बँबती तभी वह बेर करता है । अच्छी बीजें इतनी ज्यादा नहीं आती कि उनको प्रतीक्षा करनी पड़े । और कहानी तो बड़ी मुश्किल से अच्छी मिलती है । बस और क्या लिखूँ ।

सप्रेम

प्रेमचंद

ललिताशंकर अग्निहोत्री

२४८

सरस्वती प्रेस, काशी

१६ अगस्त १९३३

प्रियवर,

Journabam पर बाबू रामानन्द चैटर्जी के विचार मिले । २६ अगस्त के जागरण में जाग्रता ।

हैं आप ट्रांसलिनेशन के समाचार और अन्य विषय पर समय-समय पर लिखते रहें । मैं सहर्ष सार्पूना । पर जो कुछ लिखो काफी ध्यानबीन के बाद ।

शुभाकांक्षी

प्रेमचंद

२४९

सरस्वती प्रेस, काशी

६ सितंबर १९३३

प्रियवर,

बन्धुवार ।

आपके यहाँ से लेख का अनुबाध म देर ही जाने के कारण मैंने इसे 'साध' के मुही कालिका प्रसाद से करा लिया । मुन्कर अनुबाध हुआ है । वह हंस का पहला लेख था और उसका मात को प्रेम में जाना जाहरी था नहीं हमारे सिव बिना किसी राजवारी सम्पादक के आने १२ पृष्ठ की पत्रिका निजापना कठिन हो जाता ।

आप Quarterly भेजवा दें । ये उगली बड़े शीक से आसोचना करूँगा ।

भदरीय

प्रेमचंद

हंस कार्यालय बनारस

१४ अक्टूबर १९३२

प्रिय सल्लितार्थकर जी

आपका पत्र मिला । मध्यरात । मैंने भी नेहरू जी का मेल प्रत्यक्ष में देखा था पर उनका पता मासूम न होने के कारण उनके पास हंस न भेज सका था । आपके पत्र से पता मासूम हो गया और हंस उनके पास भेज दिया गया । पैम्पसेट आपने भेज लिये थे । मैंने भी भेजवा दिये ।

हंस में मैंने निरवभारती की आलोचना कर दी है । आपने देखी होगी ।

श्री चंदोला जी का अनुबाध आपसे भेज रहा हूँ । कई दिन बेर में पहुँचा नहीं अवश्य आपका । अनुबाध मुझे बहुत अच्छा लगा । काशिकाप्रसाद भी मे शक्ति का अनुबाध किया है, चंदोला जी ने भस्मानुबाध किया है । मैंने दोनों अनुबाधों को मिलाया । कहीं यह अच्छा मासूम हुआ कहीं वह । मुझे इसके न आप सकने का श्रेय है ।

धारा है, आप प्रसन्न हैं ।

आप यहाँ तक आकर चले गये और मुझसे न मिले इसकी आपसे शिकायत करने का अधिकार आप मुझे देना स्वीकार करें तो अवश्य करूँगा । आपने इतनी गति न कीजिएगा । बनारस पुराने डग का केन्द्र है । बाहर से प्रकाश मिलता रहता है तो मासूम होता है हम भी बिम्बा हैं ।

मनदीप

प्रेमचंद

सरस्वती प्रेस बनारस

२३ दिसंबर १९३५

प्रिय सल्लितार्थकर जी

आपका पत्र मिला । श्री गोपाल रेड्डी का मेल अवश्य भेज दीजिएगा । या बेहतर हो मेरे पास न भेजकर बम्बई के पते से भेजिए । पर्याप्त १११ एस्प्लेनेट रोट फाई बम्बई । क्याकि बहिष्कार आचार्यों के भेज बम्बई से एडिट होकर यहाँ आते हैं ।

निरवभारती तो वही नहीं आई इसलिए आलोचना कैसे चलता ।

श्री बजाहूरसाल नेहरू जब यहाँ या पार्येंगे तब सेसक सब जान उन्हें जाने की चेष्टा करेंगे ।

मनवीर

प्रेमचंद

२५२

सरस्वती प्रेस, बनारस

३ जनवरी १९३६

प्रिय समिताशरकर

कार्ड । भारती मिली । इस पर नोट पढ़कर चिंत प्रसन्न हुआ । किसे धन्यवाद हूँ । अपने पास तो रख नहीं सकता । तुम से लो या बदोमाजी से लें ।

बहु तब अवश्य भेज दो । हिन्दी अनुवाद आये तो अच्छा । यहाँ अनुवाद एक न हो सकेगा ।

सेक हिन्दी हूँ तो मरे पास भेजिए । बंगला भी उड़िया भी उर्दू भी । यह विभाग यहाँ है । मुबराती मराठी और बलिया मापामों का विभाग बम्बई ।

मनवीर

प्रेमचंद

२५३

सरस्वती प्रेस बनारस कैंट

२७ फरवरी १९३६

प्रिय समिताशरकर जी

तुम्हारा २२ फरवरी ३६ का पत्र मिला । तुम्हारा भेजा हुआ सेक छप गया । उसे मैंने पहला स्थान दिया है । अब उसके *reprints* कैसे मिलेंगे । उसे छपे तो एक हफ्ता हो गया । पहले तुमने मिला नहीं कुछ निकलना सेता ।

मैंने तो तुम्हारे धारेछों को कभी नहीं टाला । जगदीश जी के लेखों पर मैं क्यों जाने लगा । वह कौन होते हैं । क्या तुम सीधे मुझसे यहाँ कह सकते । तुम्हारे यहाँ अब कोई ऐसा व्यवहार आये मुझे बुलाना मैं आऊँगा । हाँ यह तो मुझ जानते ही हो कि मैं जर में भकेला धारमी हूँ और बिना व्यवहार कहीं नहीं

आता जाता। मुझे न वशनों की इच्छा मुझे भी है। समय आयेगा तो वह भी पूरी हो जायेगी। मित्रों को मेरा बंदे कहना।

सुभाषचंद्र
प्रेमचंद

२५४

सरस्वती प्रेस बनारस

२ जून १९३६

प्रियवर,

इस बार आपने बहुत दिनों से 'हंस' के लिए कोई लेख लिखने की कृपा नहीं की। अगर आप ही लोग उसका यों तिरस्कार करेंगे तो वह बर्बाद होकर। हमने आप ही जैसे महात्माओं के भरोसे यह सेवा स्वीकार की है। आपको मालूम ही है अब वह भारतीय साहित्य परिषद् का पत्र है। आपकी कृतियाँ केवल हिन्दी भाषी प्रांतों में ही नहीं अन्य प्रांतों में भी रुचि से पढ़ी जायेंगी। मुझे आशा है, आप उसके लिए शीघ्र ही कोई लेख भेजेंगे। आभोजनार्थक तुलनात्मक और चरित्रात्मक लेखों की हमें विशेष आवश्यकता है। हम हंस को कुछ साहित्य का पत्र बना देना चाहते हैं। आशा है आप हमें निराश न करेंगे।

सबकीम
प्रेमचंद

दुर्गासिंहाय 'सरूर' जहानाबादी

२५५

नया चौक कानपुर

१६ नवम्बर १९०७

जनाब मल्लूमी श्री मुकरमी

तसलीम । मित्राबे अहमद ?

मुझे तो आप शायद भूल गये । अब यादवेल्ली करता हूँ । माह जनवरी १९ न से इमाहताव के इण्डियन प्रेस ने एक आमा बर्ष का उर्दू रिस्सामा शायद करने की नीमत की है और इसकी एडिटरी की खिदमत मैंने आप लोगों की एमानत के भरोसे पर अपने ऊपर ली है । पहला नंबर १५ जनवरी को निकल जायेगा । रिस्सामा बातसबीर होगा । तसलीबीर और उम्मा लिखाई अर्पाई और कागज का खुसूसियत से लिहाज रखा जायेगा । आप जानते हैं इण्डियन प्रेस कैसा मालदार है । वह जिस ऊपर चाहे चर्क कर सकता है । मैं चाहता हूँ कि पहले नंबर में मरम खास और पर खोरबार हों और ऐसी मरमों के लिए आपके विबाम और किस्से इस्तिमा करें । मुआजिबा जो कुछ मुनासिब होगा या जो कुछ आप कर्मिये अकब से हाबिरे खिदमत होगा । और रिस्सामों के मुकाबिले मैं आप इसे क्पाश कर आसानी पावेंगे । यह इस्तिमास करने की जरूरत नहीं कि पहली नरम आप ही की होगी । हाँ यह रिस्सामा पोलिटिकल न होगा ।

जनाब का मुन्तजिर,

आपका नियाबमन्द

बनपतराय लाल नवाबराय

मास्टर गवर्नमेन्ट स्कूल कानपुर

अख्तर हुसेन 'रायपुरी'

२५६

बंगाल

२७ अक्टूबर १९३६

दियर अख्तर

तुम्हारा पत्र मिला। मैं इसी क्रिक में था कि तुमने मेरे पत्र का पत्र तक जवाब क्यों नहीं दिया। अब मानूँ हुआ कि तुम 'प्लेडों' की चर कर रहे थे।

अब मेरा किस्सा सुनो। मैं करीब एक माह से बीमार हूँ। मेरे मे रैस्पिड बल्लर की तिकायत है। मुँह से खून या आता है। इसलिए काम कुछ नहीं करता। बसा कर रहा हूँ। मगर धीमी तक कोई इफाका नहीं। अबर बच गया तो 'बीसवीं सदी' नाम का रिस्सा अपने लोगों के खयालात की इराफत के लिए बकर निकालूँगा। इस से तो मेरा तात्कालिक टूट गया। मुत्त की सरमन्दी बर्नियों के साथ काम करके शुक्रिये की जगह यह सिखा मिला कि तुमने 'हंस' में क्या-क्या खयाल खर्च कर दिया। इसके लिए मैंने दिलोजान से काम किया किम्बुन अकेला अपने बहुत और मेहनत का इतना खून किया इसका किन्ती ने लिहाज न किया। मैंने 'हंस' उन लोगों को इस जगह से दिया था कि वह मेरे पत्र में धपता

हमा और मुझे प्रेस की जातिब से यूना बेफिक्री रखेगी लेकिन अब वह दिल्ली में सस्ता साहित्य मंडल की जातिब से निकलेगा और इस जगहले में परिपक्व को अन्तर्गत पचास रुपये महीने की बचत हो जायगी। मैं भी खुश हूँ। 'इंस' जिस मिटरेवर की इराफत कर रहा था वह हमारा मिटरेवर नहीं है वह तो बड़ी भक्तिवाला महावनी मिटरेवर है जो हिन्दी ज्ञान में काफी है।

मेरा नया माबेल 'गोदान' धमी हास में निकला है। उसकी एक बिल्ब जेब रहा हूँ। 'उर्' में रिख्म करना। मेरले धमल' का मुस्का तो तुम्हारे वहाँ पहुँचा ही होगा। अब गज्जाल के लिए भी एक पब्लिशर तलाश कर रहा हूँ मगर उर् में तो हासत जैसी है, तुम जानते ही हो। बहुत हुआ तो एक खयाल भी सफ़र कोई दे देगा।

और सब खेरिमत है। मीसवी अभुल एक साहब क्रिबसा की खिरमत में मेरा आशय कहना।

मुक्तसित
अनपठय

मुहीउद्दीन कादर 'जोर'

२५७

हंस कार्यालय, बंगारत

३१ अगस्त १९६५

मजबूत मुकर्रमे बंश

तसलीम । 'इकल को उडू शायरी' के लिए शुक्रिया । चूंकि बम्बई में बपतर में कोई उडू क्वा आसमी नहीं है, उडू मजामोन के तर्जुमे की जिम्मेदारी मुझ पर धायर की गयी है । मैं बहुत अल मजमूमेहाला का हिन्दी तर्जुमा धापकी सिन्मत में भेज दूँगा । खयाल यही है कि बेर न हो बाय क्योंकि पहली सितम्बर से पर्थ की तबायत शुरू हो जायगी । अगर मुझ पर एतबार कर सकें तो मैं इसका जिम्मा से लूँगा कि आपके मजमून का बेहतरीन तर्जुमा होया और अल से किमी तरह इतहाद न होया । हाँ अल की खूबियाँ तजु मे में धानी मुसिकन हैं बा शायर धाप खुद तसलीम छमाएँगे ।

हंस ने अल के इस बरीह मीरान में काम करने की बुरत की है, देखें उसे कहाँ तक कामयाबी होती है ।

प्रमथद

पद्मकान्त मालवीय

२५८

३ जनवरी १९३६

प्रिय पद्मकान्त जी

आपसे किस्त मने आबसी ने कह दिया कि मैं सम्बुद्ध से नाराज हूँ। निराश न होना दुखी बात है, नाराज होना दुखी बात है। मैं कोशिश करने कि कुछ लिखूँ। कहानी तो डिमहात्म लिखना कठिन है लेकिन कोई लेख लेखने का प्रयत्न करूँगा। मैं तो तुम्हारे घर भी हो आया हूँ। पाल खा आया हूँ। हाँ परीख बीर बनी मैं जो एक मरत होता है वह मुझसे बीर तुम से है। मैं गरीब वर्ग को बिसाग करता हूँ तुम बनी वर्ग को। नहीं इतना पाल क्यों खाते। मैं भी पाल खाता हूँ मगर मेरा मरत ठाकी है, तुम्हारा ठेरी।

मालवीय

प्रेमचंद

माणिकलाल जोशी

२५६

सरस्वती प्रेस, बनारस

२० दिसम्बर १९३३

प्रिय महोदय

आपका पत्र धीरे धीमे की प्रति मिली। मेरे धीरे 'कमभूमि' के बारे में जा लेख निकला है। उसकी विषयवस्तु का मुझे पता चला। हर लेखक को आकाशी है कि वह किसी लेखक को तारीफ करे या उसे नीचे गिरावे धीरे मुझे इस संबंध में कुछ नहीं कहना है। मिस्टर किरान सिंह की कथाविज्ञ यह बाराखा है कि मैं ही स्वयं उपन्यास सत्राट की उपाधि हविषा ली है। मुझे क्या कोई भी इस उपाधि से बूझा न करता होगा और मैंने कभी किसी को प्रेरित नहीं किया कि वह मुझको इस नाम से पुकारे और मैं खुद नहीं जानता कैसे यह उपाधि मेरे नाम के साथ जुड़ गयी और क्यों इसे बार-बार इतना बुराया जाता है। तुलनाएँ हमेशा बहुत सज्जे की चीज होती हैं और मिस्टर किरान सिंह का कहना विमलकुल नहीं है कि जो मेरी तुलना वाल्मिकी और टागोर और साहित्य-मंदार के बूझने महान ग्रन्थियों से करते हैं वे निश्चय ही मेरे साथ धन्याय करते हैं। अपने संबंध में ऐसी मूर्खता को बाराखा रखनेवाला मैं प्रतिम व्यक्ति हूँ। अगर एनी बीजों में रोखूँ मैं तो कैसे ?

मिस्टर किरान सिंह की यह राय विमलकुल सही हो सकती है कि मेरी स्थापना बहानियों बहुत पिटो-पिटानी है और उनमें कोई औन्नत्य नहीं। धन्यद जो बहानियाँ उन्होंने धनुबास के लिए ली हैं वे धन्यद-स्वरूप हैं। इनके बारे में मैं क्या कह सकता हूँ ? ऐसे भी पाठक हैं जो मिस्टर ह्यूमर और टागोर को भी बर्बर नहीं कर पाते। मैं विनयपूर्वक इतना ही कह सकता हूँ कि मैंने कभी किया है जो कि अपनी प्रतिभा को देखते हुए अपने से धन्याय कर सकता या धीरे इसके बड़ी किसी चीज के लिए मेरा बाध नहीं है।

मिस्टर किरान सिंह की मुझ धारणा यह बात पड़ती है कि 'कमभूमि' राष्ट्रीय आन्दोलन को पृष्ठभूमि में रखकर लिखी गयी है। वह इस बात को पूरा

जाते हैं कि सगमन सब महान् उपन्यासों का कोई-न-कोई सामाजिक उद्देश्य होता है या कोई न कोई महान् आन्दोलन उसकी पृष्ठभूमि में रहता है। टास्टरम का बार एडव पीस भास्को पर नेपोलियन की बढ़ाई के इतिहास के समाना धीर गया है ? मगर उसने अपने पत्रों में उस सचय को बिम्बा कर दिया है। उसने ऐसे चित्र धीर ऐसी बट्ठाएँ प्रस्तुत की हैं जिनसे पातक प्रकृति में उसकी आश्चर्यजनक अन्तर्दृष्टि का पता चलता है। सबसे महत्वपूर्ण वस्तु अरिजो का विकास है। अगर लेखक को इसमें सफलता मिली है तो फिर उसे आलोचकों से डरने का कोई कारण नहीं। क्या लेखक सुकुमार धीर बन्नीर भावा को समार सदा है ? अगर वह ऐसा करता है तो उसकी पृष्ठभूमि चाहे जो हो वह शास्त्र सत्तों को लेकर कारबार कर रहा है धीर उसे बहुत बिनों तक बीम्बित रहने का अधिकार है।

मिस्टर रंगीलबास कामिया ने कुछ दिन हुए मुझको लिखा था कि उन्होंने मेरी रचनाओं पर 'कौमुदी' के लिए एक लेख लिखा है। पता नहीं उस लेख का क्या हुआ। मेरे कई पुस्तकालय मित्र हैं जिन्होंने 'कर्मभूमि' की खूब प्रशंसा की है। मराठी पत्रों ने उसकी अच्छी समालोचना की है, 'केसरी' ने सुनकर प्रशंसा की थी। मैं नहीं समझता कि उन्होंने सिर्फ मेरी आपसुची करने के लयाव से मेरी टापीठ की थी। मगर ऐसा कि मेरे शुरू में ही कहा है हर आदमी को अपनी राय रखने धीर उसको व्यक्त करने का अधिकार है धीर कभी कोई अच्छी कृति नहीं रही जिसकी बुराई नहीं हुई। मुझे विश्वास है कि कोई न कोई गुजरती साहित्यकार मेरे प्रति व्याप करेगा और मुझे गुजरती जनता के सामने स्वादा अच्छी पोखनी में पेश करेगा। जिन्ही में एक-दो पत्रों ने मेरे खिलाफ आन्दोलन शुरू कर दिया है। बड़े खेद की बात है कि साहित्य का सब भी व्यक्तिगत राय ड्रेप से अत-विच्छेद हो रहा है। अनेकअनेक बस धीर विरोध है धीर अगर आप उनमें से किसी एक बस की प्रशंसा करते हैं तो बिश्वास रखिये कि दूसरा बस इस व्यक्ति प्रवेश में कुछ धाम के लिए आपकी दया दिये बिना न रहेगा। इलाहा बाद की 'सरस्वती' ने मेरे खिलाफ एक लेख लिखा है धीर ऐसा लगता है कि मिस्टर किशन सिंह उसी लेख से अनुप्राणित हुए हैं। 'कर्मभूमि' का अनुवाद करने के लिए आप मिस्टर किशन सिंह को बुनिये धीर तब हो सकता है कि वह शाब्द हो जायें। काफ़ी सम्भव है कि उन्हें यह बात बुरी लग रही हो कि यह काम उनको नहीं सौंपा गया।

अच्छा बिज्ञापन सफलता का प्राण है धीर आपको ऐसी व्यवस्था करनी

बाहिए कि 'कर्मभूमि' जैसे ही निकले कई पत्र-पत्रिकाएँ और साहित्यकार उसकी समालोचनाएँ लिखें। मैंने कि आपने स्वयं ही अनुभव किया होगा यह कबम सठाने से आपका यह उद्योग निश्चय ही सफल होगा।

आपका

प्रेमचंद

माखिमलाल की बोरी कर्मभूमि पत्रिका निर्मला प्रतिज्ञा और रंगभूमि के पुष्करांती अनुबाधक हैं।

‘भारत’-सम्पादक के नाम पत्र

२६०

प्रियवर,

आपने अपने सम्पादित पत्र के २२ सितम्बर के अंक में सरस्वती प्रेस की हड़ताल के विषय में प्रेस कमिटी की संघ की शानदार प्रतिक्रिया का जो हाल बताया है उसके बारे में मैं भी कुछ निवेदन करने की आपसे अनुमति चाहता हूँ और मुझे आशा है आप मुझे निराश न करेंगे। सरस्वती प्रेस के प्रोप्राइटर होने के नाते हड़ताल की कितनी जिम्मेदारी मुझ पर पड़ी है उसे स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि आपके पाठकों को उससे भेरे बारे में जो धनसञ्चयी हो सकती है वह दूर हो जाय।

सरस्वती प्रेस लगातार कई साल से बाटे पर चल रहा है। पहले ‘इस’ निकला और उससे तीन साल तक बराबर चला होता रहा। अब भी कुछ न कुछ चला ही है। इसके बाद प्रेस में काम की कमी को पूरा करने और बांति की कुछ सेवा करने के लिए मैंने ‘आगरा’ निकालने का भार भी ले लिया। यद्यपि काम मेरे बूते का न था लेकिन इस आशा से कि शायद यह सयोग सफल हो जाय और प्रेस में बग़माव का जो रोग लगा हुआ है वह दूर हो जाय मैं न यह भार भी सिर पर ले लिया और जो साल अपने समय का बहुत बड़ा भाग खर्च करके उसे चलाया रहा लेकिन वो भी बराबर चला ही रहा यहाँ तक कि प्रेस पर कोई बार हड़ताल का आँकड़ो पया जिसमें कमिटीयों का देना और कागज़वालों का बक़्ता दोनों शामिल हैं। फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारी और जब अपनी बिगड़ी आर्थिक बंश से तंग आकर मैं जाती में बसने लगा तो मैंने ‘आगरा’ का सम्पादन-भार बाबू सम्पूर्णान्त को सौंपा जिसे उन्होंने मनुष्यता के साथ स्वीकार किया। अगर बाटा बराबर होता रहा। मेरी पुस्तकों की बिक्री के रुपये भी प्रेस के खर्च में आते रहे, फिर भी खर्च पूरा न पड़ता क्योंकि इतर पुस्तकों की बिक्री भी बंद गयी है। बाबू सम्पूर्णान्त जो के हाथों में ‘आगरा’ से सोशलिस्ट नीति की जैसी जोरदार बक़्मत की वह हिन्दी संसार भरी भांति जानता है। मैं जब सोशलिस्ट विचारों का शत्रु हूँ और

मेरी सारी जिन्दगी सरीबों और दलितों की बकालत करते गुजरी है। हिन्दी में 'जागरण' एक ऐसा पत्र था जिधने बाटे की परवाह न करते हुए बीरता के साथ सोशलिज्म का प्रचार किया। जब प्रेस की धामदमी का यह झाम था तो कमचारिया का बेतन कहीं से पावरी के साथ लिया जा सकता था ? मेरी किताबों से जो कुछ धाम-मी होती है वह इतनी भी नहीं है कि उसके मेरा निबाह हो सकता। न मुझमें यह क्रम है कि बजिकों से धपीस करके कुछ बन सग्रह कर सकता। एसी दशा में प्रस कमचारियों और कावजवालों दोनों ही से मुझे मजबूरन बाधा-सिनायी करनी पड़ी। मुझे ऐसी दशा में 'जागरण' को धवश्य बद कर देना चाहिए था जैसा मेरे धनेक मित्रों ने कहा 'लेकिन दुनिया जम्मीर पर क्राम्य है और मैं बराबर यही सोचता रहा कि साम्य धव पत्र का प्रचार बढ़े। उसका पीछे कई हजार का मुहनाम उठा बुकने के बाद उसे बंद करते मोड़ घाना था। मरे कई मित्रों ने प्रस को हो बंद करने की सलाह दी क्योंकि प्रस के बचन में मुक्त होकर मैं धपनी पुस्तको धीर लेखों से नस्टम-पस्टम धपना निर्बाह कर सकता हूँ। कम से कम उन दशा में मुझ पर किमी का डक ठो न रहा। लेकिन मुझे यही संकोच होता था कि ये २५१० धादमी बेकार होकर कहीं धायेंगे। बना से मुझे कुछ नहीं मिलता मेहनत भी मुक्त में करनी पड़ती है मगर इतने धादमियों की रोखी ठो जमी हुई है। महज इस खयाल से मैं हर तरह की जरबारी उठा कर प्रस धीर पत्र चलाता रहा। रिम म समझता था कमचारियों को प्रस का मान है ही क्या वह मेरी मजबूती नहीं समझते ? जब उन्हें मामूम है कि मेरे धाव तक प्रेस से एक पैसे का लाभ नहीं उठया धीर तो उनको मेरे नाबिहन्ड होने की कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। मैं तो उनसे धपने को उनकी हमदर्दी का पाव समझता था। मैं मानता हूँ कि धपीबों को समय पर बेतन न मिलने से बड़ा कष्ट होता है लेकिन क्या मैं धुद ही इस प्रेस के मासिक होठे तो वे भी मेरी ही तरह धिर घोटकर न रह जाते ? उन्हें कम-चारियों में स्थिते ही किमान है। क्या उन्हें किताबी में बाटा नहीं हो रहा है धीर मैं प्रेस की मजबूती करके समान नहीं मना कर रहे हैं ? धर्मचारी को मासिक से धर्वतोप तक होता है जब मासिक धुद तो धायशमी हजम कर जाता है धीर उन्हें मुधा रखता है। जब उन्हें मामूम है कि मासिक धुद बेगार में राठ-रिम पिन रहा है, उसकी जेब में एक पाई भी नहीं जाती तो उनको मासिक से शिकायत करने का कोई धायज् मौडा नहीं है। धिर भी इन परिस्थितियों पर धरा भी विचार न करके प्रेस र्चने प्रेस में हड़ताम करवा दी। मैंन खबर पाते ही

मंद के समापति महीनय को सारा हाल समझ दिया और निवेदन किया कि मैं कर्मचारियों को exploit नहीं कर रहा हूँ बल्कि खुद उनके द्वारा exploit किया जा रहा हूँ और प्रेस में जो कुछ भायेगा वह कर्मचारियों को दिया जायेगा मैंने खुद न प्रेस से कभी एक पैसा लिया है न घब भुंजा लेकिन उन्हें तो अपनी खानपान फटेह की परी भी मेरी गुजारियों पर क्यों ध्यान देते? उन्हें यही एक विचार न हुआ कि इस प्रेस को साहित्य या समाज की सेवा ही के कारण यह घाटा ही रहा है, और यही प्रेस है जो मजदूरों की बकायत कर रहा है, और इस सिंहास से मजदूरों की हमदर्दों का इकठार है ऐसी कोशिश करे कि वह सफल हो और क्वाचा एकाग्रता से उनकी बकायत कर सके। उनके सोशलिज्म में ऐसे तुच्छ विचारों के लिए स्थान ही नहीं था। वहाँ तो सीधा-साधा बुला हुआ सिंघास था कि प्रेस ने मजदूरी बक्की लगा रखी है इसलिए इकठाल करवा दी। मैं अब भी प्रेस को बंद कर सकता था क्योंकि मैं पहले ही कई बार कह चुका हूँ कि प्रेस से मुझे कोई आर्थिक लाभ नहीं है बल्कि हमेशा कुछ न कुछ खर्च में देना पड़ता है, लेकिन फिर यही जमान करके कि इतने आसानी उसी प्रेस से कुछ न कुछ पा रहे हैं उसे बंद कर देने से उन्हीं का मुकसल होगा और उन्हें अपने बाकी बैठन के लिए कई महीनों का इंतजार करना पड़ेगा प्रेस को जारी कर दिया। यह है उस खानपान विजय का बुतास जो संघ की सरम्बती प्रेस पर प्राप्त हुई है। अपने बक्कीस का मला बँटना अगर विजय है तो बेशक उसे विजय हुई क्योंकि इस झमेले में 'बाबरख' बंद हो गया। जिन मजदूरों के लिए वह सैकड़ों का माहवार बाटा सह रहा था अब उन्हीं मजदूरों को उस पर क्या नहीं पारी तो फिर उसका बंद हो जाना ही अच्छा था।

रह गई अन्य शर्तें। वे सब अच्छी हैं और मैं हमेशा से उनकी पालवी करता आया हूँ। मेरे कर्मचारियों में से किसी का साह्य नहीं है कि वह मेरे विरुद्ध अपराध या डाँट-बपट का आशय कर सके। मैं खुद मजदूर हूँ और मजदूरों का दोस्त हूँ। उनके साथ किसी तरह का अत्याय या सक्ती देखकर मुझे दुःख होता है। और मेरे मैनेजर ने मार-पीट की भी तो कर्मचारियों को मुझसे कहना चाहिए था अगर मैं मैनेजर की तन्ही न करता तो उनका जो जो चाहता वह करते। लेकिन संघ में अपनी खानपान फटेह की धुन में मुझे सूचना देने की जरूरत न समझी और इकठाल करके प्रस का मुकसल और बढ़ाया। प्रस की १३ दिन की कमाई मजदूरों के मुँह से खीन ली। इन शर्तों में एक भी एसी नहीं है जो मैं सच्चे हृदय से न मान लेता बल्कि मैं तो मजदूरों को आधे महीने की पैशगी देने की शर्त भी मानता अगर कोप में रुपये होते। मैं खुद चाहता हूँ कि वह समय

२५६ / 'भारत'—सम्पादन

धाने जब मजदूरों को (जिममें मैं भी हूँ) कम से कम काम करके अधिक से अधिक मजदूरी मिले कुछ छुट्टियाँ मिलें और जितनी सुविधाएँ हो जा सकें हो कार्यो मपर शर्त यही है कि धामधमी काफ़ी हो। चाटे पर बसनेवाले सघोन को बड़ी-बड़ी सबिन्धाएँ रखने पर भी सबनाम होगा पड़ना है और उस पर कोई भी बड़ी धावानी से सागदार फटेह पा सकता है।

धरंता सिनेटोन

परेल बम्बई

२५ सितम्बर १९४४

प्रसन्न

जे० पी० भार्गव

२६२

२१ मारवाड़ी गली लखन

प्रिय परिवर्तनी

मुझे खेद है कि यद्यपि मैंने अपने पिछले पत्र में आपसे बख्ती बचाव देने के लिए कहा था तथापि आपने मेरी प्रार्थना पर कोई ध्यान न दिया। न मुझे हिंसित मिला और न क्षमा। क्या आप इस भी ऐसा सोचते हैं कि मुनाफा तब बढ़ेगा जब कुछ लाभ पूर्वकी नोट धारणी ? मैं ऐसा नहीं सोचता। हमारा इकरारनामा यह था कि चारों तरफ काटने के बाद मुनाफा बराबर बराबर बाँट लिया जाए। क्या इसका मतलब यह है कि मुनाफा बाँटने के पहले कुछ लागत बहुत ही बानी चाहिए। मेरी समझ में यह एक भ्रान्त बारछा है। मान लीजिए मैंने इस वर्ष पुस्तक मात्रा में एक और पुस्तक जोड़ी होती जिसमें तीन हजार रुपये की लागत लगती तो शायद मुझे तब तक रुकना पड़ता जब तक कि आपके यह तीन हजार भी बतूल न हो जाते। फिर मान लीजिए अपने साल एक और किताब निकल जाती तो फिर नयी पूर्वकी लगानी पड़ती। अगर आपका ऐसा ध्यान है तो मुनाफा बाँटने का वक्त कभी न धारणी क्योंकि आपका कुछ क्षमा हमेशा स्टॉक में लमा रहेगा और मुनाफे का विभाजन कभी संभव न होमा।

और जब आपकी कुछ लागत निकल धारणी तब आपकी किताबों की बिक्री को धारणी बचाने में क्या बिलचस्पी रहे धारणी। समय बीतने के साथ-साथ बिक्री बीबी पड़ती धारणी और आप अपनी धारणी निकालकर पूरी तरह बचे रहेंगे एकदम सुरक्षित मुझको मारी मुझमान उठाना पड़ेगा। आप धारणी तरह जानते हैं कि मैं इन पुस्तकों को बेच सकता था और इनसे मुझे कुछ भी नहीं तो दो हजार दो सी रुपये के करीब मिले होते। प्रूफ के संशोधन से मुझे कोई मतलब न होता। यह क्या मेरी और से लागत में हीन बढ़ेला नहीं है ? क्या मेरी महन्त की कोई कीमत नहीं है ? इस दो हजार दो भी रुपये में मुझ एक भी बलीस क्षमा सासला मूर भी धारणी होती।

पिछले साल आपने जो हिस्सा दिया था उससे पता चलता था कि नई

सी रुपये का मुनाफ़ा हुआ। कुछ बीबी का हिस्सा जगत समाय गया था ज़ाहरस के लिए कुछ बिबी पर तैयार प्रतिसाद काटा गया था जब कि कुछ बिबार्ने फुटकर पाइकों के हाथ भी बिकी होंगी। जायत को देखते हुए सभे घाट सी रुपये का मुनाफ़ा किसी तरह बरसोपजनक नहीं कहा जा सकता। कुछ समय पांच हजार रुपये की भी। यह सब नक़द नहीं था। काग़ज़ उधार खरीदा गया। अगर काग़ज़ नक़द खरीदा गया होता तो बार फ़ी सबी को छूट समान इस्तेमाल होनेवाले काग़ज़ के कमीशन के रूप में हुई होती। फिर बिज्ञापन के खर्च में भी कुछ मानुपातिक कमी हो गयी होती क्योंकि बिज्ञापन में गुणकमाना के समाना भी कुछ पुस्तकों सामिल कर ली गयी थीं। इन बातों का ध्यान में रखते हुए और एक स्वयं सूझ काटने के साथ भी काफी सफ़ाया मार्गिल बच जाता है और कुल पूँजी का करीब एक तिहाई हिस्सा बचूज हो चुका है।

मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि मेरी बेटी की शादी इस साल उप ही जायगी और मुझे धरने धप-दू-बेट मुनाफ़ की रकम की ज़रूरत होगी।

मैं आपसे आपना कहूँ कि आप हम दोनों ही की वृष्टियों से बिचार कर और धपना ही बेह भरने की ज़रूरतवादी न बिखलायें। स्टॉक आपके पास है। यह क्या काफी भारबंदी नहीं है।

मैं १ सित्तरी को ज़ागरस धरने की सोचता था लेकिन जबकि मुझे आपकी बात से कोई खत नहीं मिला और मुझे लक है कि आप यह रकम मुझे देते इसलिए मैं रुपये का इस्तेमाल लज्जनक न कहूँगा।

मेरे एक दोस्त मुखर्जी साहब ने इसी तरह का इस्तेमालमा मैकमिमन एवढ कंपनी के साथ किया है। उन्होंने धपना आपा मुनाफ़ा हर ज़रत महीने मिल जाता है। मैं समझ नहीं पाता कि आप अभी इस्तेमालमा को उसकी धरस लकन से मुखर्जीक डंग से बेश कर रहे हैं।

आता है कि आप मने म हैं।

आपका

धमपतरम

यह पत्र भी मेरा नहीं था। ज़ागरस मार्गिल कुल ज़ेक के पीछे मैं भी ज़ागरस को लिखा था था बिबार्ने इसी समय ज़ागरस का कुछ इस्तेमालमा हुआ था बिबार्ने ज़ागरस 'जार्ज' 'मार्ज' 'मार्ज' 'मार्ज' के नाम से कुछ पुस्तकों लकालित हुई थीं। यह पत्र मनेवी से है।

बहादुर चन्द छाबड़ा

२६२

सरस्वती प्रेस, काशी

१५ अक्टूबर १९१३

प्रिय बहादुरचंद जी

बदिनासरम ।

यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि आप साइबेन विरवविद्यालय में अध्यापन कार्य कर रहे हैं । आप लोगों को बम्बई जो विदेशों में भारत का नाम रौशन कर रहे हैं । मैं यहाँ से 'हंस' नामक एक मासिक पत्रिका निकालता हूँ । यदि प्रकाश मिले तो कभी-कभी वहाँ का कुछ ह्रास उसके लिये लिखने की कृपा कीजियेगा । सचिव हो तो और भी अच्छा ।

यदि जब प्रेमियों को मेरी कहानियाँ कुछ अच्छी लगती हों तो आप बड़ी कुरी से जिन कहानियों का अनुवाद करना चाहें करें । हूँ उनकी भाषा निम्नी जब साहित्य प्रेमी को दिखाने कीजियेगा जिसमें आपकी और मेरी अपकीर्ति न हो । मेरी भाषा बोलचाल की होती है और उसका अनुवाद तो कठिन न होना चाहिये । मेरी यही कामना है कि आप अपने उद्योग में सफल हों और मुझे भी मेल मिले ।

कभी-कभी पत्र लिखते रहा कीजिए ।

भवदीय

प्रेमचंद

श्री बहादुरचंद छाबड़ा के नाम की गली की भारतीय पुस्तकालय विभाग के बहुत कुछ कथा-लिखारी बने ।

इस पत्र की कोटो-वर्तिमिति 'काब लरीव' के कोलेक-कुल रूप अतुषार में लगी है ।

राम किशोर चौधरी

२६३

सरस्वती प्रेस, काशी

४ नवम्बर १९१२

प्रिय रामकिशोर जी

मे समी प्रयाग गया तो यह सुनकर जबड़ाहट हुई कि तुम बीमार हो गये हो। पुन्नी की माँ ने कहा कि बुद्धिमान को बुझा लेना। मुझ बड़ी जल्दी थी। सोचा था मन्ना को भेज दूँगा पर यह समाचार पाकर न भेजा। अब कृपया लिखाई देनी तरीकत है। बुद्धिमान के स्वास्थ्य का क्या बंध है ?

हम सोम कुरान से हैं। गैटी बेबरी से चित्तबर में बावेली।

मेरा कुशल।

सुप्रसन्न

कनकचरण

सुदर्शन का खत प्रेमर्णद को

२६६

36 Chakrabera Road (South)

Bhawanipur Calcutta

16 May 1935

माई जान

नमस्ते । कुछ दिन हुए मेने सुना था कि आप बंबई छोड़कर बनारस चले आये हैं । परमात्मा करे, यह सत्य हो । बिना श्रुवहा हमारे निगारखानों की छिन्ना इस काबिल नहीं कि वहाँ कोई जुदवार और छाबिल आवमी क्या करे सके । लेकिन मेने मननागी साहब की मिस्त्र कथा काटीछ भुनी थी । इसलिए यकीन नहीं आता कि आपको सग लोयो ने छोड़ दिया हो । इधर लिटरे चर का भी बुरा हाल है ।

मे भावकस्त मू बिपटर्स में हूँ । इसका मानिक बेहद खरीफ़ वक्तव्य हुआ है । काम भी कम है । पैसा भी मिलता है । लेकिन जो मचा चर में बैठकर अफसाने सिखने में था वह यहाँ नहीं । पर वहाँ पैसा नहीं है । क्या करें । अन्तरागत किसी बीमार बुढ़े की कमबोरी की तरह बहते चले जाते हैं । मजबूरन ।

मिसेब प्रेमर्णद को नमस्ते । मिसेब मुखरन बीमार हो गयी थी । पहाड़ पर भेज दिया है । हम कमकले की जमी में फुलस रहे हैं ।

सुदर्शन

रघुपत सहाय 'फिराक' के दो खत प्रेमचंद को

२६७

Tilak Mahal,

Cawnpore.

10 February 1939

भारि बान तसमीम ।

आपने कार्ड और इसपार के जवाब में एक समूह मजदूर मराहूर उहू शायर 'फानी' पर मेक रखा हूँ । कई माह पुडर घरे बर हमे शुक किया था । तकमीन^२ इसको सब तक न हुई थी । मगर किसी काम का हो ता पहले नंबर में इसे मजदूर की पहली क्रिस्त करके आप साया कर दें । बकिया अक्षर अर्पित तक भ्रम सहेगा । उसके पहले कैसे भ्रम सहेगा ?

जो सबल मैंने भेजी है उसका एक शेर शायर छुट गया है । मुमकिन है आपके काम का हूँ । जो ये है—

हूँ जोट सी जोट मुश्किल की है बरें ता बरें मुहरबत का
घरिं मी न बड़ने आयो बी और सुहू ये हवाई छुट यमी ।

मिसेक बिमका मैं एडीटर या और जा जर हजतों के बार बंद हो गया उसमें मेरे कुछ मजामीन हैं । उन्हें पैर-मनबूधा^२ ही समझना चाहिए । बजल तो उसको बंद हुए तीन साल हो गये दूसरे उसकी इताफत भी नाम को थी । बसता या बलमा जाता तो बजली आमी इताफत हो जाती । इनमें से कहिए तो कुछ मजामीन मेक हूँ । इनमें के लिखे कुछ बिलबस्य भ्रमजाने और नरनें भी हैं जो आपके काम आ सकती हैं ।

'हंस' का पहला नंबर कम तक निकल आया ? मेरा जवाब है कि कोटिस्ट^३ न्यम रही तो बस 'हंस' कामयाब और मुनक़मत-रमा^४ साबित होगा । इम्तहान बहुत कठीन है । और क्या घरें करें । जवाब से धनभूत फर्माइया ।

आपका

रघुपत सहाय

१ कच्चाहरी रोड, इलाहाबाद

१० विस्तारम्बद्ध १९३६

मार्गजान लक्ष्मीम् ।

हज्जों हुए थापका लत मिला था। थापको सापस इसका एहसास भी नहीं कि मुझमें डबले-बराही^१ करीब-करीब बिल्कुल मर चुका^२ हो चुकी है और चहवाब^३ की बब कोई पत्नीइत कुझ भी लिकने पड़ने की होती है तो एक सवमा^४ होता है। थाप तो मुतमिठ^५ है मपर वो मुसफिफ नहीं है या जिनके जिन-ओ-दिमान को बम बब कम तसनीफ की मरक या मराएत नहीं है और जिसने कभी यू ही कुझ लिख-पढ़ दिया हो सुमुसन जब बेमिनी^६ का जल पर बटस ठसलमुत^७ हो चुका हो वह बमा लिख पड़े। इसके बसापा पाँच ज बरखो से सिबा कुझ उडू मरठमार के हिन्दी के पाँच सतर भी वो बिलकली और इनहमाक^८ से न पड सका हो ऐसा शकस करे तो बमा करे। यकीन मानिए अगर मे खुद हिन्दी में कुछ लिखूँ तो जिन उमे पढ़ने का न उभरेगा। इस मुआमले मे मेरी खुली भीत हो चुकी है।

हिमालय में हम यह हैं कि मुभाजिमत यहाँ पर अभी मुस्तकिस नहीं है। जिम्मेदारियाँ यहाँ यामूनी नहीं। लोग अपने बच्चे हैं जो सब एक बच्चे हैं। दो भाई एक-एक म हैं जिसकी जिम्मेदारियाँ उसकी उम्मीदों और खुशियों या दुःख-वाकियों हैं बसाया है। बालियाँ बीबी और मैं खुद। इन सबके अन्दर बात।^१ किसी तरह काम चला रहा है और सुकून की तरफ से इरमाजल की तरफ से नाउम्मीद हो चुका है। जो छड़ी लिपा है, उनका खमिबाबा^२ अजब मुयात रहा है। इन्सान यह सब उठा ले बसते कि कोई मरकब^३ उनकी दिल-ब-बाबी का हो। यही मरकब सहाय होता है। ऐसा बड़ा सायर भी नहीं है कि जिम्मेदारियों से मरकर घर में जिम्मा रखने की कीर्ति कहीं या उध-तर्बाई^४ की बितकुल सज्जदगी^५ बना दालू। इस मिमरे को दुहराया तो पैवार करने है सेतेज कितने पते की बात है—

⁴न क्षया ही मित्रा न विसाये मतक न इतर के रूप न उतर के ह्या ।

बहुराग मूकूत-शाम^{१५} को ही गनीमत्त बालकर लब्ध किये जा रहा है परन्तु
बाई बहुत धीरे लज्ज का एक क्षण व्यस्त होता है और एक अमलक धीरे लज्ज

१ इन्द्राक्षणि २ मयापा ३ विमो ४ वसेह ५ क्षेराक ६ उद्वलीम्बता ७ अश्विपन्न
८ कृष्ण ९ दध्नी १० हयग्रास ११ मरु १२ मातिका नीलक १३ नालभक्ति १४ चिराम्या १५ शीत

बीकानेर नगराहट घक्कर कह का गना बोट बेतो है और साँस रुक जाती है। उम्र भर बेचिन रहने का एक तकसोफदेह घसर यह हुआ करता है कि कहने के लिए नहीं बल्कि बरहलीकत पीते हुए सम घाटी है। और लुक्करोमोसी^१ की मरक मरक मार किये जाता है। इन सुनूर^२ को रसम टापमटोल या हमदर्दी हामिस करने का बहाना शायद आप न तसम्भूर करेंगे।

मार्जान गुप्तजी के कर्जे के लिए वो सौ रुपय मान आप जकर दिये जाए। आपकी कर्जसनासी का बहुत सहाय है। हाँ मुझे अब तक का खिलाफ घसर मुमकिन हो तो निज भेजिए। मुझे बदहामी में इसका भी पता नहीं कि आपसे कितना मिलना है। और वह भी भिक्षिए कि दो सौ रुपये अब तक आप भेज सकेंगे।

प्रेस से आपको इतना खुशाल हो रहा है। क्या निष्क^३ नुकसान उठाकर आप उसे निजान बना घप्पा नहीं समझते?

आपके बच्चे कहीं पड़ रहे हैं। धानका मुसाजिमत अब तक कायम रहने को उम्मीद है? नवलकिशोर प्रेस के लिए आप किनहाल क्या काम कर रहे हैं। गुर क्या निज रहे है। अफसाने या कोई नाबिल।

कमी इलाहाबाद घाने की इजर उम्मीद है या नहीं।

वेबिए Round Table Conference में क्या होता है। यही बात मुल्क पर और सारी दुनिया पर नाबुक है। कभी ऐस में फिर 'हंक्साव बिन्दाबाद' हुआ तो कम घब्र कम हम सारों की बिन्दागी भर तो खुदा ही खुदा नजर आयेगा। और वो तो हिन्दोस्तान सक्त्मान मुल्क है बिन्दा रहेया और फिर मुमकिन है, बल्कि भगसव^४ है कि मुकून के दिन भी आपसे-मुल्क^५ को नसीब होने। मगर अब?

धानका

रघुपत सहाय

मौलवी अब्दुल हक का सत प्रेमचंद को २६६

अस्तित्व लेखन सैफाबाद,
हैदराबाद (दक्कन)
११ जनवरी १९३०

मेरे इनामस्त फ़र्मा
तुमसीम ।

आपने सब एही करम एक इस्ते म बनारस पर मजबूत सिद्ध होने का वादा
करमाया था । मैं सब तक उसका मुताबिक रहा । सब बात बिहानी करता हूँ ।
मुझे उसकी बहुत ख़ास बख़्तर है । इनामस्त फ़र्माकर जहाँ तक जल्द मुमकिन
हो रवाना फ़र्माइए । बहुत ममनून हुँगा ।

निवाजमंद
अबुलहक

अमरनाथ झा का पत्र प्रेमचंद को

२७०

२२ ईस्टर्न ब्रिटेन रोड

बैरुत, लुबन

१० जून १९२३

प्रिय प्रेमचंद जी

रंगभूमि के विषय में आपको पत्र लिखने में जो अक्षम्य देरी हुई है उसके लिए क्षमा करा कर दें। मैंने अब उसे समाप्त कर लिया है। मैंने उसका एक-एक शब्द पढ़ा है और अब पहले से भी ज्यादा आपकी अद्भुत सृजनशक्ति प्रतिभा का प्रशंसक बहुत बड़ा प्रशंसक हो गया हूँ। पुरुषार्थ को अपना नायक बनाना अत्यंत सश्रुत का काम था लेकिन उसके चरित्र को आपने कितनी सुन्दरता से चित्रित किया है। अमर आप एक-ही सुझावों के लिए मुझे मालूम करें तो वे ये हैं। पृष्ठ ७८३ पंक्ति १ में 'सोचक' की स्पष्ट ही भूल है। उप-न्यास में दो कथा प्रसंग मुझे काफी कमबोरी जान पड़ते हैं—रेलगाड़ी में विनय और सोफिया नामा पुरुष और बीरपाल सिंह के गुप्त घड़े पर विनय का वह अत्यंत मुका-मुका दृष्टि पड़ा-सहसा सा भाव। इन्हें सोचकर मेरे हृदय में घेरे पास घुसरा कोई आलोचना का शब्द नहीं है। रंगभूमि आधुनिक हिन्दी का एक मोरच बनेगी।

समस्त शुभकामनाओं के साथ

आपका

अमरनाथ झा

मौलवी अब्दुल हक का सूत प्रेमचंद को

२६६

सत्समत रंजित बैरामाव,
हैबराबाद (बकल)
२१ जनवरी १९३०

मेरे इनायत कर्मा
सचसीम ।

मापने सब राहें करम एक हुणें म बनारस पर मखमूल सिख देने का बाबा
करमाया बा । मैं सब तक उसका मुक्तजिर रखा । सब थाप बिहाभी करता हूँ ।
मुझे उसकी बहुत सहीद बकरत है । इनायत कर्माकर जहाँ तक सब मुमकिन
हो रवाना कर्माइए । बहुत ममनून हूँगा ।

निमात्रमंद
मन्सुमहा

अमरनाथ झा का पत्र प्रेमचंद को

२७०

११ ईस्टर्न कैनाल रोड

बेङ्गलूरु

१० जून १९२५

प्रिय प्रेमचंद जी

रंगभूमि के विषय में आपकी पत्र मिलने में जो आश्चर्य देरी हुई है उसके लिए क्षमा माग कर रहे हैं। मैंने जब उसे समाप्त कर लिया है। मैंने उसका एक-एक शब्द पढ़ा है और अब पहले से जी ख्याल आपकी अद्भुत सुकनितमक प्रतिभा का प्रशंसक बहुत बड़ा प्रशंसक हो गया हूँ। सूरदास को अपना नामक बनाना अत्यंत साहस का काम था लेकिन उसके चरित्र को आपने कितनी सुबख्ता से चित्रित किया है। अगर आप एक-दो सुझावों के लिए मुझे माफ़ करें तो मैं यों हूँ। पृष्ठ ७८३ पंक्ति ६ में 'सिद्ध जी' स्पष्ट ही भूल है। उप-न्यास में दो कथा प्रसंग मुझे काफी कमजोर लग पड़े हैं—रेमपाड़ी में बिनय और सोनिया बाला दूरय और बीरपाल सिंह के गुप्त सहे पर बिनय का वह अत्यंत झुका-झुका बलिष्ठ दबा-सहसा का भाव। इन्हें छींककर मेरे लपान में मेरे पास बुराई कोई आलोचना का शब्द नहीं है। रंगभूमि आधुनिक हिन्दी का एक बीरव बनेगी।

समस्त शुभकामनाओं के साथ

आपका

अमरनाथ झा

नरेन्द्रदेव के दो पत्र प्रेमचंद को

२७१

काशी विश्वपीठ

वाराणसी

१६ फरवरी १९२५

प्रिय श्री प्रेमचंद जी

श्री बहादुरसाह नेहरू ने अपनी पुत्री के नाम कुछ पत्र अंग्रेजी में लिखे थे। इन्हीं पत्रों द्वारा उन्होंने संसार का इतिहास बताने का प्रयत्न किया था। H.G. Wells की Outline of History का रंग है। इतिहास समाप्त न हो सका। केवल रामायण-महाभारत कास तक का इतिहास दिया है। कुछ लोगों की राय है कि यदि इन पत्रों का हिन्दी-उर्दू में अनुबाव कराके प्रकाशित किया जाय तो हिन्दुस्तानी बालकों का बड़ा उपकार हो। माया सरन और सुबोध होनी चाहिए।

मुझसे उन्होंने इस संबंध में परामर्श किया कि किन्हीं महाशय से इसके लिए प्रार्थना की जाय। हम लोगों की राय में आप से बहकर कोई लेखक नहीं है जो इस कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कर सकें।

घर आपसे प्राप्ता है कि इस कार्य को आप स्वीकार कर लें। अनुबाव Allahabad Law Journal Press से प्रकाशित होया।

यदि अनुमति देने के पूर्व आप अंग्रेजी पत्र देखना चाहें तो मैं उनकी प्रति-लेपि आपकी सेवा में भेज दूँ। पुस्तक का नाम क्या होना चाहिए इस संबंध में मैं कृपया अपनी सम्मति प्रदान करें और पुस्तक को देखकर यह भी निर्णय कि पुस्तक को और सुन्दर तथा उपयोगी बनाने के लिए क्या करना चाहिए।

आप अपने letters भी कृपया लिखें।

आपका

नरेन्द्रदेव

२७२

काशी विद्यापीठ

बनारस

१६ दिसम्बर १९२६

प्रिय श्री प्रेमचन्द श्री

सप्रेम मयास्कार,

भापका कृपावश मिना : मैं इधर दस-ब्याह दिन से बीमार हूँ। इस कारण उत्तर अब तक न दे सका था। क्षमा कीजिएगा। जिस वक़्त मैं कलपुर में रहता होने लगा उस वक़्त श्री ह्रीरामाजी के जीवन में घाव हुआ कि भाप भाये हुए थे। दुःख में ही कुछ लकीरें छटा हो गयी। मुझको खास रोग है। आगे में इमका दौरा हो जाता करता है। जब होता है तब दस-पन्द्रह दिन लगा है।

भापका अनुवाद बहुत अच्छा है। मैंने कुछ घंट बैसे हैं। अनुवाद सीधे ही छपेगा। पुरस्कार के संबंध में जवाहरलाल जी से कानपुर में बातें हुई थीं। प्रकाशक इनको राखली दे रहे हैं। उसी राखली में से भापका भाग होगा। यदि भाप राखली न पसंद करें तो एक मुरत रकम भाप ले लें। प्रेमचन्द जवाहरलाल को बोड़ी ही राखली दे रहे हैं। भाप विचार करके लिखें। अब कापेस के बाद ही इसका कुछ निरचय हो सकेगा।

भवदीय

नरेन्द्रदेव

कन्हैयालाल मुन्शी का पत्र प्रेमचंद को

२७३

प्रिय भाई प्रेमचंद जी

माप तो इंसोर नहीं घाले। बीनेर भाई बीनेर प्रसाद घाबि ते मीस के हमारी योजना को भागे बहाद। इसका परिणाम एक प्रस्ताव से घामा बीससे घांतर प्रान्तीय परिवद् बुझाने में सुगमता होगी। सब सवास रद्द मासिक पत्र का। बीनेर कुमार ने क्हा बा के माप 'हंस' को इस काम में ले हेंगे। बरि माप 'हंस' को इस प्रवृत्ति का मुख पत्र बना सकते हों तो हमारा काम बहुत ही सरल हो जायगा। माप मुझे सीधे बीबीयेगा कि इस बारे में आपकी क्या राय है। पांभी बी भी इस बातत में बडे प्रसन्न है और बख्खा सहकार दे हेंगे एसी मुझे आता है। आपका उत्तर की राह देखता हूमा

ममदीय

कन्हैयालाल मुन्शी

मे बो बीन मे पंचगनी का रद्द हूँ। वहाँ पत्र सेजीयेमा।

(मुख पत्र हिन्दी में ही है। उसे ज्यों का त्यों दिया जा रहा है।)

हजारी प्रसाद द्विवेदी का पत्र प्रेमचन्द को

२७४

आत्मिकित्तन

२९ मार्च १९३३

मज्जमोहमहात्म्यकार वसति सङ्गमपुष्पैर्मज्जन्
 वैदिक्यं प्रथमं सुसङ्गममनोवार्तानिधिं हृत्पथम् ।
 ध्यान्तोद्भासकान् विराजनुविष्टं ध्यान्तप्रियां चोभयम्
 चन्द्र-कोटिपि वकास्त्वसावमिनव-श्री प्रेमचन्द्र सुखी ॥
 प्रेमचन्द्रश्च चन्द्रश्च न कदापि समाधुमी ।
 एकं पूर्णकर्मो निगमपरस्तु यथा कथा ॥

मायबर, उस दिन पे० बनारसीनाथ श्री के साथ गुस्सेब (कविहर रवीन्द्रनाथ ठाकुर) से मिलने गया था। बातों ही बातों वसन्त हिन्दी साहित्य के सम्बन्ध में चर्चा चली। ऐसे अवसरों पर आपका नाम सबसे पहले आता है। उस दिन भी आपके रचित साहित्य की चर्चा बड़ी देर तक चलती रही। हम लोगों की इच्छा थी कि नव वर्ष के अवसर पर आप जैसे आदरणीय साहित्यिकों का निर्मित करें और गुस्सेब से परिचय करावें। गुस्सेब ने हम लोगों के विचार का उत्साह के साथ स्वागत किया। इसलिए हम लोगों ने निश्चित किया कि स्थानीय हिन्दी समाज का वार्षिकोत्सव नव बर्ष (१४ अप्रैल १९३३) को मनाया जाय। उस दिन गुस्सेब का प्रवचन होता है। उसके पहले दिन भी मिल दिन बय मनाया होता है। उनका व्याख्यान होता है। कुछ और भी समारोह रहता है। गुस्सेब और आपन की ओर से निर्मल तो बराबरमय आयवा ही इसके पहले ही हम हिन्दी समाज की ओर से आपको निर्मित करते हैं। इस बार धाय बकर पधारें। हमारे आग्रहपूर्वक निमन्त्रण को आप धखीकार न करें। आपको गुस्सेब से मिला कर हम सब धनुमन करेंगे।

आपके साहित्य ने हिन्दी को समृद्ध किया है और हिन्दीभाषियों को दुनिया में नई दिक्काने लायक। इसीलिए आपके यश को हम लोग निश्चित बँट मिया करते हैं। जब हम रमभूमि या कमभूमि को दूसरों को दिखते हैं तो मन ही मन

गवपूवक पूछा करते हैं—हैं तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज ! और इस प्रकार का गव करते समय हम प्रेमचर्च नामक किसी अज्ञात अपरिचित व्यक्ति की याद भी नहीं रहती—मानो सब कुछ हमारी ही इति है ! आर उस व्यक्ति को वर सिद्धते समय उसकी अनुमति के बिना उसके सम्पूरा वरा को स्वायत्त कर लेने के अप-राध क लिए आ हम जमा नही मानते वह भी गव का ही एक दूसरा रूप है ।

भारतीयता का इससे बड़ा प्रमाण हम क्या वे सकते हैं ?

आप हमाग आदर और अभिनन्दन ग्रहण कीजिए ।

आपका

हवायी प्रसाद द्विवेदी

अशफाक हुसैन

२७५

मिरत कालीब धरमेर ।

३ फरवरी १९३३

बंगारम तसमीम ।

घाफका छत मय खुतब^१ के मिला । खुतबे म घाफने जिन जवालात का इजहार किया है उनसे मुझे क़रीब-क़रीब पूरे तौर पर इत्फाक है और म समझता हूँ कि अमर इसका तजुमा उदू रसाइम^२ में लाया किया जाये तो बेहतर होगा । येरी मजर म बो रसाइम है और घानिरी छत जो मीने घाफको लिखा वा उसकी गरज यही थी कि यह तहरीक इन रसाइम के जरिये उठाई जाये—
(१) कामिया है (२) मानुमात । मानुमात को लायन घाफको मानुम हो मिया कासी ने फिर से बिम्बा किया है । विस्तर मे कासी से मसमऊ मे बाग़चीत भी हुई थी । उनकी राय हुई थी कि वह गरती छत 'मानुमात' को घेब है और वह उस पर अपनी राय बाहिर करके दूसरों को बाबत देंगे कि वह भी अपने सम-सात का इजहार करें । इन दो रसाओं के अलावा अगर राय हो तो किसी पंजाबी रसाते को भी शामिल कर लिया जाये । यन अयालात मे घाफके खुतबे की छबर म पढ़ने । अब गानिबन यही बेहतर हो कि पहले घाफके खुतबे का उदू तजुमा इन रसाओं को मेजा जाय और उसने बाद वह गरती छत । घाफकी क्या राय है ?

मिलमा के बारे मे मैं घाफसे इत्फाक नहीं करता हूँ । घाफकन को हमारे सिममा की हासत है वह यकीनन मकरतघिब है मगर साथ ही हमका समारा रखने की जरूरत है कि इसका असर हमारी मसालरत^३ पर बहुत बनीह^४ और गहरा होगा । वह असर बुग हो या मला यह सन भोगों पर मुल्हसर है जो सिनेमा बसते है । यह बाहिर है कि यह काम सिवारत का है । कापबारी घाफो की मजर रूपे पर होगी और लपवा भोगों को जुश करने से ही हासिल हो सक्ता है । जिकहाक अबकि यबाम की तालीम और तरबियत^५ इतनी मिरि

१ भाषण २ बहिकाली ३ बीजग मन्तवा ४ ब्यापक ५ तर्ककार

हुई है उनका मजाक^१ भी घोंडा होना । मगर इसी सिनेमा से वह मजाक बहुत कुछ दुस्त भी किया जा सकता है । जब अगर तमाम भाकूत लोग जो इसमें शामिल हैं माहौल^२ की गश्ती के लिये से चल रहा हो तब तो फिर मजाक का मजाक सुधारनवाला या उनके लिये दुस्त कामवाला कौन होगा । एक इसी घट्टम चौक सिर्फ सुबकरक बाहिनों के हाथ रह जायेगी । जोर जो काम इस बात आपके ऐसे नजर है उसमें सिनेमा से बेहद मदद मिल सकती है । इसी ही निश्चयत क्या कम होगी । मेरी तो राय यह हरमिज न होगी कि आप आबिज होकर सोइ दें । आप रजता-रजता एक लम्बा बड़ा काम भी कर सकेंगे । यह मेरी राय है मगर आप हमारा से मेरी बनिस्बत कहीं स्वारा बाकिर है और मुझे बेहतर राय कामम कर सकते हैं ।

इस कुतबे का उलू ठरुमा जल्द भेज दीजिए । या तो कुछ बराहें गस्त रसालों की भेज दीजिए या (एक और खयाल आता है) वह गश्ती कर और यह कुतबा मुझे भेज दीजिए । वह बात कतीर इस कुतबे के बनीने^३ के न अपनी तरफ से राय ही भेजें, बँसी आपकी राय हो ।

आपका मुकमिल

मस्तक हुसैन

स्वाजा गुलामउस्सैयदेन

२७६

प्रतीपद

१२ नवम्बर १९२५

मुकरमी तसलीम ।

मुझे प्राप्त जाती तीर पर शर्क-नियाह^१ हासिल नहीं है लेकिन मैं बहुत प्रसन्न
 से आपकी दिनगामी तसलीम और अछसानों को लौक से पकटा रहा हूँ और
 आपके प्रबवी चौक और क़ाबलियत का मज़ाह^२ रहा हूँ । मैंने अभी हाल में अपने
 मुहतरम^३ दोस्त सैयद अज़्बाह हैबर साहब के तबस्तुत^४ से आपका गया नाबिल
 'बीगाने हस्ती' पढ़ा । मैं इस तसलीम पर आपको निहायत खुश और गमबोशी
 से मुबारकबाद देता हूँ । मैंने अंग्रेजी और दूसरे योशवी ममानिक के अफ़साने
 बहुत बड़ी तादाद में पढ़े हैं और मैं खुशक^५ के साथ कह सकता हूँ कि आपका यह
 नाबिल उनके सके अफ़सान के नाबिलों से किसी तरह कम नहीं है । गुज़िरता बन्ध
 माल में हिन्दुस्तान की *Orissa* *hustian* ने दो अवयव बीजों पैदा की है—
 एक नेहरू रिपोर्ट दूसरी बीगाने हस्ती । मेरी क़ादिरा और इस्तुधर^६ हैं कि आप
 ज़रूरी दरब की ख़बरत और सरपरस्ती को जारी रखें । अगर आपने इस तरह
 से अपनी तबज्जो को हटा लिया तो यह न सिर्फ़ तर्जुमद पर खुश होना
 बल्कि खुद अपनी पैर-आमूनी प्रबवी क़ाबलियत के साथ नानुकी होगी ।

अम्मीर है कि आप इस पुरखुस्त और दिली इवियए तहनिवत^७ को ख़ुश
 करेंगे ।

नियामम

स्वाजा गुलामउस्सैयदेन

१ नैक-मुबारक २ मरिफ़त ३ आदरणीय ४ नामक ५ विरवाह ६ मार्जना ७ अद्वितीय ।

मौलवी अब्दुल माजिद दरियावादी

२७७

दरियावादी, भारतवादी

२८ दिसम्बर, १९२५

बन्तानबाब उसभीम

आपकी 'बौगाने हस्ती' को खत्म किये कई हफ्ते हो चुके। भी बहुत था कि हमदर्द के लिए खुद ही रिब्यू लिखूँगा लेकिन जिस तकसीम से लिखने का भी चाहता था उसकी प्रसन्नता न मिलना भी न मिली। आखिर आज हारकर एक बोस्ट के पास भेज देता हूँ कि वह मेरी मर्जी के मुवाजिक रिब्यू कर दें।

आजारे हुस्न की छंद अलबत्ता अभी तक नहीं की। आन्ते यह दरयाप्त करना धूल गया था कि वह मिलेगी कहीं ?

एक ड्रामे का मुख्यमन्त्रि प्लाट अच्छे से जेहन में है। आपसे बेहतर इस कौन लिखेगा। ऐसा हो कि स्टेज पर चकराया सके। आज नाम ही से सारे प्लाट को समझ लेंगे — 'विनिस्मे क्रिरेग' या क्याहा छाया व आमफहम नाम 'गोरी बत्ता'। बस वही जानसबकबासा कैरेक्टर जरा खूब खोलकर दिखा दिया जाये। मेहक निपोर्ट और सलमऊ कार्पेस के सिनसिने में मुझे पूरी तरह आश्चर्य हुआ कि हमारे यहाँ के बड़े-बड़े आचार्यमान भी अपनी सादी बंद 'अप्रेज' के खिलाफ यहबूद रखना चाहते हैं, न कि 'अप्रेजियत' के खिलाफ। अप्रेज को निकालकर खूब अप्रेजियत के रंग में रंग हो जाना चाहते हैं। अप्रेजियत का सिस्टम की बुराई अब तक हमारी समझ में नहीं आई है। पन्नेपुर वाली तरकीबों और जल सेवकबासे उससे ज़िन्दगी सारे हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानियों के हाथों फैलाने की फिक्र में मग्न हुए हैं। इस जहनिमत की पूरी तरह तर्जुमा करना है।

इस रंग के ड्रामे को आपसे बेहतर कौन लिख सकता है और आज जाहें तो बहुत जल्द मिल जान सकते हैं। क्यावा उसभीम।

अब्दुल माजिद

करममुस्तर १

आके परधाना पहुँच गई थी। शुक्रिया धवा करना धन्य रहा धान के पक्ष रसोद तक लिखने की तौफ़ीक न हुई। बहरहाल रसोद व शुक्रिया धान दोनों धन है। रिष्म भी धन कृपा को मन्बूर है कुछ रोड न निकल जायेगा।

'बीगले हस्तो' मैंने एक मुसलमान बीगबान पोस्ट को दे दी थी जो कसबता मुनिबसिटी के ताका एम० ए (हिस्ट्री) है और उर्दू धरम का भी धन्धा सासा मजाक रखते हैं। उनसे और कई किताबा पर भी रिष्म लिखवा चुका हूँ। धापकी किताब जब उनके पाम भेजी तो मुसलमानों ने बाब Points लिख दिये थे कि इन पहलुओं को रिष्म में दिखायें। बरकिस्मती से उन्होंने किताब के मुताबिक एक बिस्कुल दूधरी राम कायम की और धान चुबा चुबा करके रिष्म निकलकर भेजा। मैं इस रिष्म का बिगबानी धापकी खिन्नता में रवाना कर रहा हूँ। बाहिर है कि मैं इससे मुतक़िफ नहीं और इसलिए इसे धान्य भी न कराऊँगा। ताहम मैं कहता हूँ कि धापके मोटिस में यह बात धा जाये कि मुसलमानों का एक लवडा इस किताब को इस पहलु से भी देख रहा है। मैं रिष्म निवार के बाने का हरगिज तस्मीम नहीं करता। मुझे वहाँ भी Anti-Islamism और Aggression क्रिम की दिगुद्वय नजर नहीं आई (हालाँकि मैं रिष्म-निवार साहब से कहीं ज्यादा Islamic क्रिम का मुसलमान हूँ)। ताहम धापके हस्त में यह लवडा धा जाता चाहिए कि एक जमात के लवडोक धापकी इबारत से ऐसा मजहूम भी निकलता है।

बाद मुलाहका यह रिष्म वापस करमा दिया जाये। मैं उन साहब को वापस करके किसी दूसरे साहब से लिखवाऊँगा। बुर लिखने की फुगत वहाँ से निकलूँ। क्यादा लवलोय।

अजुम माबिब

माऊँत मौलवी सेयब हाशिमि साहब,
जाल डेकरी हैरराबाद (बकल)

मुहतरम बन्दा तसलीम ।

आपने अपने इनामखानामे मुबारिका २ जनवरी मे बापदा करमाया था कि एक हप्ते के अन्दर काशी पर सबक लिखकर भेज दिया । उस वक़्त से मुझे उसका इंतज़ार रहा । उसके बाद मैंने यहाँ से बहारिये तार आपकी लिखत में पावबिहानी की । उसका जवाब भी नहीं मिला जिससे मुझे बेहद उछली है । इस सबक की ककह से काम उठा पड़ा है । मैं आपका निहायत मन्मूँन^१ हूँ। अगर आप अजराहेकरम^२ जहाँ तक असर मुमकिन है लिखकर भेज देंगे । अब क्या बेर न लगाने । इससे बड़ा हज़ हो रहा है ।

हमाहाबाद मे आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई लेकिन इस सरसरी मुलाकात मे सेटी^३ न हुई । अगर लखनऊ आता हो तो जरूर हाबिर-लिखत होगा ।

इसका जवाब जल्द इनायत फर्माइये ।

मियाजमन
अबुल हक

जबारा रोड, करमाबाद
हैरराबाद (बकल)
१४ फरवरी १९३०

आपरे मुहतरम तसलीम ।

आपका इनामखानामा मुबारिका २१ जनवरी मुझे कल मिला । पर यह धीरंगाबाद से झोठा हुआ यहाँ पहुँचा । आपकी इस इनायत धीर राक़बत का मैं उसे बिल से शुक्रनुबार हूँ । काशी का सबक आपने बहुत खूब लिखा है । उस पढ़ कर बहुत खुशी^४ । धीर आग ही मैं लिखने के लिए दे दिया है । मतबता मुसयना^५ सफ़ात^६ से किसी ज़रूर बड़ा हो गया था इसलिये कहीं-कहीं से जल्द मतरे^७ कमा कर बी है लेकिन इससे उसकी शान में छक नहीं आन पाया ।

मियाजमन
अबुल हक

किदवाई

२८२

सुसलिय मुनिवर्षिटी

अलीगढ़ ।

२१ नवम्बर १९२०

मुकरमी

आरत काड मिला । यात्र करमाने का शुक्रगुबार हूँ । मन आपने छठ का हस्तार करके सज्जाद हुंदर साहब से 'बोमाने हस्ती' धारियतन्^१ लेकर पड़ी और मैं आपको एक ऐसी अजीबुरशान उसनीक पर लम्बे दिल से निहायत मुग्धि बाना^२ मुबारकबाद पेश करता हूँ । आपकी तमानीक के मुतास्सिक मेरा कुछ अन्न करना छोटा मुँह बड़ी बात है लेकिन फिर भी यह अन्न किये बंदर नहीं रह सकता कि मुझे उबू में बहुत कम ऐसी उम्मा और कामयाब नाबिलें पड़नी लसीब हुई है बल्कि बाबू हैमियात की दिना पर सानिबल में उन्नत नहीं कहता कि यह उबू का सिर्फ एक बेहतरीन नाबिल है । अगरचे बाबाए हुस्न भी आपकी एक माजत-उम-आरा^३ तमनाफ हूँ लेकिन 'बोमाने हस्तो' उससे कहीं स्वादा बड़ी हुई जोब है । अगर 'बाबाए हुस्न' एक नास तकके एक महबूब^४ जमल के इम्साह^५ और मक्राब^६ के लिए कामयाब मज^७ है तो 'बोमाने हस्ती' एक क्रीम एक मस्क के महबूब^८ और बेहतरी की राह में एक कोशिश है जो एक तकके की इम्साह स स्वादा मुज्जब कपाश बल^९ एक जोब है और इस सिलसिले में भगी-निलपटी बाठों में मेर खयाल म तमाम का मसामल आने पेश कर दिये हैं जो हमारे जिन्दगी से मुतास्सिक^{१०} है और हमारी मघासरत के इम्साह और कामयाबी के लिए अन्न-अन्न^{११} अकरी है । तकनीसी राम का हम बलत गुवाइश नहीं । सिद्दाह मैं एक मज्जा फिर मुबारकबाद पेश करता हूँ । मुझे अल्लास इस अन्न का है कि उबू ने भगनी जवान के इतन बड़े मुहसिन^{१२} की तरफ से एसी बे परबार्

१ उबार २ किनीत बाब से ३ अन्नकोटि की ४ बोमित ५ सुबल ६ दिल = बोधिप
७ इन्नाति ८ बबस्मार् ९ अन्नद १० नितान्त ११ अन्नकल

भरती है। लेकिन मैं मायूस नहीं हूँ और उम्मीद रखता हूँ कि बहुत जल्द उन्हें को इस जुगाह का कफ़ारा दया करना पड़ेगा। मैं उस दिन का इंतज़ार कर रहा हूँ जब आप डा० टैगोर के हम-यत्ना^१ होंगे और नोबेल प्राइज के मुस्तहक समझे जायेंगे।

इसका अफ़सोस है कि आपको मेरा बात देर से मिला लेकिन इसे क्या कीजिए कि मुझे किताब की इलायत की ज़रूरत देर से मिली? बहरहाल अब धान मकसूर है तो मैं भी लामोस हो जाऊँगा। 'आके परबाना' और 'ज्वाबो ज्वाबो' देखने की आरजू बाक़ी है।

असलमे ज़वाली इन्ताअन्नाह जश्न हाजिरे-निश्चयत हागी।

आफ़सार
.. किरबाई

आजम करहेवी

२८२

हस्तानुवाद कोमटा

त्रिभुविस्ताव ।

९१ अक्टूबर

मूहवी व मुत्तिका तसलीम ।

मुझे हाल में आपके कई नाबिलों (दिव्यी) की पढ़ने का इच्छाक हुआ । कम 'काबाकल' ज्ञान की । किन्तु धारण करना मेरा शेषा^१ नहीं है लेकिन 'काबाकल' पढ़कर मेरे दिल पर भी असर हुआ उसका इबहार न करना भी मुश्किल है । यूँ तो "बकपार" 'मूँही भी' और 'मनीरमा' धरक कि नाबिल के समान अक्षर^२ का गहरा आपने मिश्रण लूरी से सीखा है लेकिन सबसे बधाई जिसकी सीरत^३ ने मेरे दिल पर असर किया वह 'नीली' है । आपने उसका इतना नैचुरल कैरेक्टर दिखाया है कि मुस्तछनी अक बाद है ।^४

बचन की तरह आपने की कोशिश कर रहा है । अगर मेरे हस्ते-मन्त्रा लखनऊ का उधारना हो गया तो शर्त-निमात्र हासिल करनेवा ।

अजीबतकेत

आजम करहेवी

१ आद्य २ अक्षरों ३ चरित्र ४ दाह नहीं दी जा सकती ।

हरिहर नाथ

२८३

माधुरी कार्यालय, लखनऊ,

२५ जनवरी, १९१०

प्रिय हरिहर नाथ जी

मैंने बड़े चाव से आपकी सुन्दर धीर अत्यंत आनंदपूर्ण चिन्त पढ़ी। इसमें बहुत आग है धीर बहुत शक्ति पर कहानी के आश्चर्यक उत्पन्न—कोई विचार कथानक धीर चरित्र—इसमें नहीं है धीर इसलिये यह चीज सब काम्य है कथानी नहीं। अगर आपकी रचि इसी धोर हो तो चकर मिलिए, पर बोधी भावुकता से बचिए। सुजनशील मन को सुजन करना चाहिए—किस चीज का? चरित्रों को उजागर करनेवाली परिस्थितियों का। मुझ को आशावादी मानना से निवृत्त चाहिए, उसकी आशावादिता संशयक होनी चाहिए, जिसमें कि वह दूसरों में भी उसी भावना का संचार कर सके। मेरा खयाल है कि साहित्य का सबसे बड़ा उद्देश्य उपपन्न है, अगर उठना। हमारे मर्यादावादी का भी यह बात धीरे से प्रोत्साहन करनी चाहिए। मैं चाहता हूँ कि आप 'मनुष्या की मूर्ति करें साहसी ईमानदार, स्वतंत्रचेता मनुष्य जान पर खेलनेवाले जोखिम उठानेवाले मनुष्य उन्हें आनन्दित करने मनुष्य। आप इसी की बकरत है। निश्चय ही मानव प्रकृति चुक नहीं गयी। इस तरह की रचनाएँ मुझे आनंदित हैं, मोक्षप्रिय नहीं हो सकतीं। माधुरी में तो और मैं इसे आपूर्ण ही।

मैंने समय-समय पर पढ़ते-पढ़ते सिखाया कि हूँ क्या है धीर क्या करने जा रहा हूँ। मैंने इसके लिए कहानी लिखने धीर अपनी सुविधानुसार जल्दी से अपनी मेहनत देने का अनुरोध आपसे किया था। मेरा लक्ष्य है समाजोपकारार्थी धीर दूसरे विषयों के ध्वस्तिकृत हर महीने प्रथम दोषी की चुनी हुई जगजगत् कहानियाँ देना। अगर एक कहानी मिलिए। हिन्दी साहित्य के हमारे मध्यमवर्ग लेखकों का भविष्य उज्ज्वल है। लेकिन आप भी जानते हैं कि अपनी खाम अपह्न बनाने के लिए निरपेक्ष रूप से सगल से धीर धीर के साथ काम करना जरूरी है।

आशा है मुझे आपका आश्वासन मिलेगा कि आप हंस के लिए तैयार रहे हैं।

भवदीय

जनकनाथ

APPENDIX

168 Saraswati Sadan

Dadar Bombay 14

26th December 1934

Dear Mr Indarnath

Glad to receive your letter of the 16th The answers to your questions are herewith attempted in their order

1) Rangabhoom is in my opinion the best of my works.

2) I have in each of my novels an ideal character with human failings as well as virtues, but essentially ideal. In Premasram there is Premabankar in Rangabhoom; there is Surdas. Similarly in Kayakalp there is Chakradhar in Karmabhoom; there is Amarkant.

3) The total number of my short stories reaches an approximate figure of 250 Unpublished stories I have got none.

4) Yes, I have been influenced by Tolstoy Victor Hugo and Romain Rolland As regards short stories I was inspired originally by Dr Rabindranath Since, I have evolved my own style.

5) I never seriously attempted drama I have conceived of one or two plots which I thought might be better utilised in a drama. Drama loses its importance when not staged India has not got a stage, particularly Hindi and Urdu What passes for stage is the office Parsi stage, for which I have a horror

Then I never came in touch with drama technique and stagecraft. So my dramas were only meant as reading dramas. Why should I not stick to my novel where I have greater scope to reveal my characters, than I can possibly have in a drama. This is why I have preferred novel as a vehicle of my thought. I still hope to write one or two dramas. As far as financial success (is concerned) this commodity is rare in Hindi or Urdu. You may get notorious, but by no means financially independent. Our people have not the weakness of buying books. It is a pathy dull-headedness and intellectual lethargy.

6) Cinema is no place for a literary person. I came in this line as it offered some chances of getting independent financially but now I see I was under a delusion and am going back to my literature. In fact I have never ceased contributing to literary work which I regard as the aim of my life. Cinema is only what pleaderships might have meant for me, only healthful.

7) I have never been to jail. I am not a man of action. My writings have several times offended Power one or two of my books were proscribed.

8) I believe in social evolution, our object being to educate public opinion. Revolution is the failure of saner methods. My ideal society is one giving equal opportunities to all. How is that stage to be reached except by evolution. It is the people's character that is the deciding factor. No social system can flourish unless we are individually uplifted. What fate a revolution may lead us to is doubtful. It may lead us to worse forms of dictatorship denying all personal liberty. I do want to overhaul, but not destroy. If I had some prescience and knew that destruction would lead us to heaven I would not mind destroying even.

9) Divorce is common among the proletariat. It is only in

the so-called higher classes where this problem has assumed a serious shape. Marriage even at its best is a sort of compromise and surrender. If a couple mean to be happy they must be ready to make allowances while there are people who can never be happy even under the best of circumstances. In Europe and America divorces are not uncommon in spite of all courtship and free intercourse. One of the couple must be ready to bend, male or female does not matter. I refuse that only males are to be blamed. There are cases where ladies create trouble, fancy grievances. When it is not a certainty that divorce will cure our nuptial evils, I don't want to fasten this on society. Of course there are cases when a divorce becomes a necessity. But misfit is in my opinion nothing but fastidiousness. Divorce without any provision for the poor wife—this demand is only made by morbid individualism. There is no place for it in a society based on equality.

10) Formerly I believed in a supreme deity not as a result of thinking but simply as a traditional belief. That belief is being shattered. Of course there is some hand behind the universe; but I don't think it has anything to do with human affairs, just as it has nothing to do with the affairs of ants or flies or mosquitoes. The importance which we have given to our own selves has no justification.

I hope that will be sufficient for the present. Not being an English scholar I may have failed to express what I wished to say but I can't help it.

Yours truly

P Chand

Then I never came in touch with drama technique and stagecraft. So my dramas were only meant as reading dramas. Why should I not stick to my novel where I have greater scope to reveal my characters, than I can possibly have in a drama. This is why I have preferred novel as a vehicle of my thought. I still hope to write one or two dramas. As far as financial success (is concerned) this commodity is rare in Hindi or Urdu. You may get notorious, but by no means financially independent. Our people have not the weakness of buying books. It is apathy dull-headedness and intellectual lethargy.

6) Cinema is no place for a literary person. I came in this line as it offered some chances of getting independent financially but now I see I was under a delusion and am going back to my literature. In fact I have never ceased contributing to literary work, which I regard as the aim of my life. Cinema is only what pleaderships might have meant for me, only healthier.

7) I have never been to jail. I am not a man of action. My writings have several times offended Power one or two of my books were proscribed.

8) I believe in social evolution our object being to educate public opinion. Revolution is the failure of saner methods. My ideal society is one giving equal opportunities to all. How is that stage to be reached except by evolution. It is the people's character that is the deciding factor. No social system can flourish unless we are individually uplifted. What fate a revolution may lead us to is doubtful. It may lead us to worse forms of dictatorship denying all personal liberty. I do want to overhaul but not destroy. If I had some prescience and knew that destruction would lead us to heaven I would not mind destroying even.

9) Divorce is common among the proletariat. It is only in

the so-called higher classes where this problem has assumed a serious shape. Marriage even at its best is a sort of compromise and surrender. If a couple mean to be happy they must be ready to make allowances, while there are people who can never be happy even under the best of circumstances. In Europe and America divorces are not uncommon in spite of all courtship and free intercourse. One of the couple must be ready to bend. Male or female does not matter. I refuse that only males are to be blamed. There are cases where ladies create trouble, fancy grievances. When it is not a certainty that divorce will cure our nuptial evils, I don't want to fasten this on society. Of course there are cases when a divorce becomes a necessity. But mischief is in my opinion nothing but fastidiousness. Divorce without any provision for the poor wife—this demand is only made by morbid individualism. There is no place for it in a society based on equality.

10) Formerly I believed in a supreme deity not as a result of thinking but simply as a traditional belief. That belief is being shattered. Of course there is some hand behind the universe; but I don't think it has anything to do with human affairs, just as it has nothing to do with the affairs of ants or flies or mosquitoes. The importance which we have given to our own selves has no justification.

I hope that will be sufficient for the present. Not being an English scholar I may have failed to express what I wished to say but I can't help it.

Yours truly
P. Chand.

Madhuri Office

Lucknow

22 January 1930

My dear Hariharanathji

Your beautiful and intensely passionate piece I read with much interest. This is full of fervour and pathos, but the essentials of story—an idea plot and character—these are lacking and hence it is a *वक्ताव्य* and not a story. If your taste has that way do it by all means but avoid sentimentalism. A creative mind should create—what? Situations to illustrate characters. A young man should write in an optimistic mood his optimism should be infectious. It should infuse the same spirit in others. I think the highest aim of literature is to uplift elevate. Even our realism should not lose sight of this fact. I would rather see you creating men bold honest, independent men adventurous, daring men and men with lofty ideals. This is the need of the hour. Certainly human nature has not been exhausted. Such pieces I am afraid cannot be popular. I shall publish it in Madhurin of course.

I wrote about a week ago what Hans was and what it was going to do. I requested you to write a story for that and send it to me at your earliest leisure. My ideal is to give first class choice stories about half a dozen every month besides reviews and other subjects. Do write a story. There is a bright future before our young authors in Hindi literature. But you know as well as I that distinction is the fruit of systematic devotion and application and patient work.

Hoping to get an assurance that you are writing for Hans

Yours Sincerely
Dhanraj Rai

Hans Karyalaya

Benares

1st December 1935

My dear Benarsi Dasji

I had your card and thank you for it. How I wish I could attend Noguchi's lectures but can't help. How to leave the family is the problem. The boys are at Allahabad and when I go my better half must feel so lonely and helpless. If I take her with me, I must have a decent amount to spend. So it is better to be tied down to home, than feel the pinch of money. And to keep young is a question of temperament. There are youths older than myself and elderly people younger than myself. But I hope, I am growing younger every day. I have no faith in the other world and so the idea of otherworldliness, which is the greatest killer of youth does not approach me. Of course there is a healthy youth and a mad youth. Healthy youth consists of a progressive and optimistic view of life at the same time avoiding the pitfalls. Mad youth consists of rashness and exaggeration of one's own capacities and dreams. I have not ceased dreaming and am a bit rash as well. The exaggeration has happily gone. So even of madness I have the better part. I have come to realise that a contented family is a great blessing. And great minds, there are heaps of them. It requires a great deal of judgment to know real greatness from imitation. I cannot imagine a great man rolling in wealth. The moment I see a man rich all his words of art and wisdom are lost upon me. He appears to me to have submitted to the present social order which is based on exploitation of the poor by

the rich. Thus any great name not dissociated with mammon does not attract me. It is quite probable this frame of mind may be due to my own failure in life. With a handsome credit balance I might have been just as others are—I could not have resisted the temptation. But I am glad nature and fortune have helped me and my lot is cast with the poor. It gives me spiritual relief.

You have passed Moghabarat so many times without taking the trouble to break for a day. And you expect me to come all the way making my wife angry. Peace within is my motto.

the rich. Thus any great name not dissociated with mammon does not attract me. It is quite probable this frame of mind may be due to my own failure in life. With a handsome credit balance I might have been just as others are—I could not have resisted the temptation. But I am glad nature and fortune have helped me and my lot is cast with the poor. It gives me spiritual relief.

You have passed Moghakarai so many times without taking the trouble to break for a day. And you expect me to come all the way making my wife angry. Peace within is my motto.

